

सफ़रे हजा

सफ़रे हजा की मुर्मिकलात और उनका मुर्मिकन हल

क्यू. एस. खान

(B.E. Mech)

अल-क़लम पब्लिकेशन्स
AL-QALAM Publications



244 गली गढ़इया, जामा मस्जिद, बाज़ार मटिया महल, देहली 110006

Phone: 011-2324, 2326 1481, Fax : 2324 1481 (On Demand)
E-mail: alqalam_publications@hotmail.com

No Copyright

इस किताब का कॉपीराइट क्यू. एस. खान के पास है। लेकिन इस बात की आम इजाज़त है कि इस किताब का किसी भी ज़बान में तर्जुमा किया जा सकता है, इस शर्त के साथ कि इस की असल तहरीर में कोई तबदीली ना की जाए। किताब फरोख्त करने या मुफ्त तक्सीम करने के मक्सद से छपवाने की भी आम इजाज़त है। हम इस के बदले में किसी माली मुआविज़ा या रायलटी नहीं चाहते इसलिए इस का कोई कॉपी-राइट नहीं रखा गया है। बेहतरीन क्वालीटी की छपाई के लिए आप हम से इस किताब की असल टाइप की गई सॉफ्ट कॉपी हासिल कर सकते हैं। किताब की छपी हुई कॉपियाँ हमें अपने रिकार्ड के लिए ज़रूर भेजें।

किताब का नाम: **सफ़रे हज़**

ISBN NO. 978-93-80778-06-8

लेखक व प्रकाशक:

क्यू. एस. खान
(B.E. Mech)

प्रकाशक

तन्वीर पब्लिकेशन्स

हायड्रो इलेक्ट्रिक मशीनरी प्रिमाइसेस, ए-13, राम-रहीम उद्योग नगर, बस स्टॉप लेन,
एल.बी.एस. मार्ग, सोनापूर, भांडुप (पश्चिम), मुंबई 400078

फोन: 022-2564 5930/25964075, मोबाइल: 9892064026, 8108000222

फैक्स: 0091-22-25961682, ई-मेल: hydelect@vsnl.com, hydelect@mtnl.net.in

दसवा एडिशन - 2014

कीमत: 50/- रुपये

लेखक की बहुत सारी पुस्तकें इंटरनेट पर पढ़ने तथा डाउनलोड करने के लिए निम्नलिखित वेबसाइट्स पर मुफ्त उपलब्ध हैं

www.freeeducation.co.in और www.tanveerpublication.com

इस पुस्तक को आप इंटरनेट पर निम्नलिखित लिंक से मुफ्त डाउनलोड कर सकते हैं।

<http://www.scribd.com/doc/15223840/Hajj-Guide-Book-Hindi>

मुम्बई में हमारी तमाम किताबें मिलने का पता

Firdos Kitab Ghar,

179 Vazeer Building, Opp. Shalimar Hotel, Bhendi Bazar, Mumbai - 400003,
Ph: 9892184258 (Maulana Anees Quasmi)

Bank account details:

Union Bank of India, Null Bazar Branch. (IFSC Code: UBIN0531871)
Account Name: Md Anis Alquasmi, Account No. 318702010036997

सफरे हज की गुरिकलात और उनका गुरिकन हल

फैहरिस्त

| नं. | उन्वान | पेज नं. | नं. | उन्वान | पेज नं. |
|-----|--------------------------------------------------------------|---------|-----|-------------------------------------------------------------|---------|
| १. | पेश लफज / मुकदमा..... | ४ | २५. | उम्रह कैसे करें | ४८ |
| २. | हज के दौरान मिलने वाले शनाख़ती कार्ड और उनकी अहमियत | ५ | २६. | अय्यामे हज के ६ खास दिन | ५२ |
| ३. | सामाने सफर | ७ | २७. | हरम शरीफ, मिना, मुज्जुल्फा और अरफात का करीबी नक्शा | ५३ |
| ४. | हज के दौरान रास्ता भूलने और खोजाने का मसला.. | ११ | २८. | हज कैसे करें? | ५४ |
| ५. | हज के खास दिनों में सवारी का मसला | १३ | २९. | हज्जे बदल | ५६ |
| ६. | सफरे हज में नमाज़ का बयान | १६ | ३०. | मदीना मुनव्वरा के तारीख़ी मुकामात | ६१ |
| ७. | मसलक का मस्ला | १८ | ३१. | रौज़ा-ए-मुबारक की तफ़सील | ६२ |
| ८. | जम्रात और जान का ख़तरा | २० | ३२. | हुजरा-ए-आइशा और रियाजुल जन्नत की तफ़सील | ६४ |
| ९. | एहराम का बयान | २२ | ३३. | जन्नुल बकी का नायाब नक्शा | ६५ |
| १०. | हरम शरीफ और मिना के क्याम में पर्दे का मसला | २५ | ३४. | मदीना मुनव्वरा का सफर | ६७ |
| ११. | हालते एहराम में मम्तू काम और उनका कफ़ारा ... | २६ | ३५. | रौज़ा-ए-नबवी का नक्शा (आउट लाइन) | ६८ |
| १२. | औरतों का एहराम | २८ | ३६. | दरबारे रिसालत की पहली हाज़िरी | ६६ |
| १३. | हैज़ व निफ़ास के मसाइल | २६ | ३७. | नबी-ए-करीम (स.) का ईसार और हमारी ज़िम्मेदारियाँ | ७१ |
| १४. | हरम और मीक़ात का बयान | ३१ | ३८. | हज से मुतअल्लिक चंद मशहूर ग़लतियाँ | ७३ |
| १५. | कुर्बानी में धोका | ३२ | ३९. | हज का सफर किस के ज़रिए करें? | ७५ |
| १६. | तारीखे मक्का मुकर्मा और काबा शरीफ | ३३ | ४०. | सन १८६८ ई. का एक समंदरी सफरे हज | ७७ |
| १७. | मक्का मुकर्मा के तारीख़ी मकामात | ३४ | ४१. | हज और उमराह की बरकतें | ७८ |
| १८. | हज क्या है? | ३५ | ४२. | सफरे हज में पढ़ी जाने वाली मस्नून दुआएँ | ७६ |
| १९. | नबी-ए-करीम (स.) का हज | ३८ | ४३. | अरफ़ात में मांगने वाली दुआएँ | ८२ |
| २०. | तवाफ़ का बयान | ४१ | ४४. | हज की तालीम कहाँ से हासिल करें? | ८३ |
| २१. | अरकाने उम्रह और हज का बयान | ४३ | ४५. | मुसन्निफ की चन्द अहम किताबों का तआरफ ... | ८५ |
| २२. | सफरे हज का आगाज़ | ४४ | ४६. | आखरी लफज़ | ८७ |
| २३. | हवाई सफर और मक्का मुकर्मा में आमद | ४६ | | | |
| २४. | मस्जिदे हरम, ख़ाना-ए-काबा और मुताफ़ की तफ़सील | ४७ | | | |

पेश लफूज़

सफर ख्वाह कोई भी हो तकलीफ और मशक्कत का सबब है। इमाम ग़ज़ाली (रह.) ने लिखा है के हज के सफर में आदमी जो कुछ ख़र्च करे इस को निहायत खुशदिली से करे और जो नुक़सान जानी या माली पहुँचे इस को बर्दाश्त करे यह इस के हज के कबूल होने की अलामत है। हज के रास्ते में तकलीफ उठाने के बराबर है इस लिए जो मशक्कत उठाएगा या नुक़सान बर्दाश्त करेगा अल्लाह के क़रीब इस का बड़ा अज़र है, वह ज़ाया नहीं होगा।

हदीस में आया है

हुजूर (स.) ने हजरत आईशा (रज़ी) से फर्माया “ऐ आईशा (रज़ी) तेरे हज का अज़र तेरी मशक्कत के मुताबिक होगा”

फरीज़ा-ए-हज अदा करने में जिसे जितनी तकलीफ होती है उसे उतना ही सवाब मिलता है। इसी लिए लोग हज की हर मुश्किल को ख़न्दा पेशानी के साथ खुशी से बर्दाश्त करते हैं और उफ तक नहीं करते। और न ही किसी से अपनी तकलीफ का ज़िक्र करते हैं। लोग हज की तकलीफें किसी से इस लिए भी बयान नहीं करते के कम हिम्मत के लोग हज करने से ध्वनि न लगें।

हज से पहले मैं ने हज की जो तर्बियती तालीम हासिल की उसमें तमाम उल्माएं किराम ने सिर्फ इसी बात पर ज़ोर दिया कि फरीज़ा-ए-हज किस तरह अदा किया जाए, किसी ने यह न बताया के वहाँ के ४० दिन के क्याम में जो तकलीफें पेश आएँगी उन से कैसे निपटा जाए? मैं ने हज के उन ४० दिनों में महसूस किया कि बहुत सारी परेशनियाँ सिर्फ हमारे अनजान होने की वजह से होती हैं, इस से हमारा बहुत सारा कीमती वक्त जो की इबादत में गुज़ारा जा सकता था, ज़ाया हो जाता है। इस लिए मैं ने ये किताब लिखने की जसारत की। इस किताब के ज़रिये से मैं हाज़ी साहेबान को आने वाली मुश्किलों से आगाह करने और उनके मुन्हिक्न हल के बारे में ज़रूरी मालूमात, हिदायत और मश्वरा देना चाहता हूँ।

उम्मीद है कि हाज़ी साहेबान इन मश्वरों पर अमल करें, तो बहुत सी परेशनियों से बच कर अपना सारा वक्त और अपनी सारी कुव्वत सिर्फ खुदा की इबादत में गुज़ारेंगे।

अगर आप इस किताब से फैज़्याब हों, तो अपनी दुआओं में इस गुनाहगार क़म्लदीन ख़ान को ज़खर याद रखें। यह किताब महज़ दौराने हज पेश आने वाली मुश्किलात से महफूज़

रहने के लिए ज़ाब्ताए तहरीर में लाई गई है। गो कि इस में चन्द दुआएँ और नक़शाजात भी शामिल किये गए हैं मगर मनासिके हज के मुकम्मल मालूमात के लिए मुख़तलिफ इदारों की जानिब से जो मजालिस मुन्अकद की जाती हैं उन में शरीक होकर ज़्यादा से ज़्यादा मालूमात हासिल कर लें, ताकि आप ख़ूब बेहतर तरीके पर हज जैसी मोहतिम-बिश्शान इबादत का हक अदा कर सकें। अल्लाह रब्बुल-इज़ज़त से दुआ हैं कि आप को हज मक्क़वूल व मबूर की सआदत नसीब फरमाए। आमीन!!.

वस्तुताम

फ़क्त तालिबे दुआ

क्यु. एस. ख़ान

ΔΔΔΔΔ

मुकदमा

ज़ेर नज़र किताब हमारे मोहतरम दोस्त अल्हाज कमलदीन साहब ने (बेहतरीन इंसान वो है जो दुसरों के काम आए) के मक़ौला पर अमल करते हुए अपने हज के तजुर्बात से हजाजे किराम को आगाह करने के तहरीर की है उम्मीद है कि हुजाजे किराम इस से भरपूर फ़ायदा उठाते हुए अपने औकात को ज़्यादा से ज़्यादा ज़ोहद व इबादत में सर्फ करेंगे। यह किताब आँमोहतरम के तजुर्बात की ही नहीं बल्कि इनके सोज़ व गदाज़ कौम व मिल्लत की दिली हमदर्दी की आईनावार है साथ साथ मौसूफ के ज़ोर कलम का एतराफ़ भी करवाती है। किताब के बावजुद आँजनाब के तस्नीफ़ी मैदान में नौआमोज़ी के हर जगह कहीं न कहीं मशक मुसन्निफ की झलक दिखाती है। अल्फ़ाज़ का हुस्न, जुस्तों की बेहतरीन तरतीब दिल को मोह लेती है। अल्लाह करे ज़ोरे क़लम और ज़्यादा।

रब्बुलआलमीन से दुआ ये है कि इस किताब को मुसन्निफ के लिए ज़खीरा-ए-आखिरत बनाए और आम मुसलमानों को इस से ख़ूब मुस्तफ़ीद होने की तौफीक अता फरमाए।

“इं दुआ अज़ मने व अज़ जुमला जहाँ आमीन बाद”

नाचीज़ फसीहउद्दीन

खादिम दास्तउल्लम हुसैनिया, सोनापूर, भांडुप.

हज के दौरान मिलने वाले शिनाख़ती कार्ड (I-CARD) और उन की अहमियत

हज का फार्म भरने से लेकर आख़ीर तक अलग अलग मर्हलों में आप को मुख्तलिफ शिनाख़ती कार्ड (I-Card) और हाथ में पहनने के कड़े और दस्तऐवज बैगेर ह दिये जाते हैं, जिनको बहुत अहमियत है। अक्सर हाजी साहेबान लापरवाही से इहें गुम करके बहुत परेशानी उठाते हैं, इस मज़मुन में इन का बयान किया जा रहा है ताकि आप इन की अहमियत अच्छी तरह समझ लें, इन की हिफ़ाज़त करें और सही ढंग से इस्तेमाल करें।

हज कमेटी की तरफ से इल्लाअती ख़त और कवर नंबर (Intimation Letter & Cover No.):

हज का फार्म हज कमेटी में जमा करने के बाद आप को एक नंबर दिया जाएगा। जिसे कवर नंबर (cover number) कहते हैं। यह नंबर आपके लिए बहुत अहम है। आप का कोई भी फॉर्म और कागजी कारवाई इस नंबर के बगैर मुक्कमल नहीं होगी। इसलिए इस नंबर को अच्छी तरह याद रखें। अगर आपका नाम कुरआ अंदाजी में आ गया तो हज के सफर के लिए हवाई टिकट, शिनाख़ती कार्ड और कड़ा बैगेर ह इसी कवर नंबर के जरिए (Reference) आपको मिलेगा।

अगर किसी बजह से आपका नाम कुरआ अंदाजी में नहीं आता है फिर भी इस नंबर को याद रखें। और अगले साल हज के फॉर्म में इस पुराने नंबर को भी इस के सही जगह पर लिखें। अगर किसी बजह से तीन साल तक आपका नाम कुरआ अंदाजी में न आया तो चौथे साल पीछे तीन साल के कवर नंबर की बुनीयाद पर बगैर कुरआ अंदाजी के आपका हज का फॉर्म कुतुल हो जाएगा। इसलिए इस कवर नंबर को जब तक आपका हज मुक्कमल न हो जाए बहुत एहतियाद से याद रखें।

पासपोर्ट की अहमियत:

2008 तक हज कमेटी वाले सफरे हज के लिए एक स्पेशल पासपोर्ट बनाते थे। मगर 2009 से सऊदी हुक्मत ने “इंटरनेशनल” पासपोर्ट को लाज़मी करार दिया है, इस लिए अगर आप का हज का इरादा है, तो फौरन पासपोर्ट बनवाने की कारवाई शुरू कर दीजिए। मक्का पहुँचने के बाद यह पासपोर्ट आप से आप का मुअल्लिम ले लेगा और वापसी के वक्त एयरपोर्ट पर वापस करेगा।

हवाई टिकट:

हज कमेटी से पासपोर्ट के साथ आप को आने और जाने दोनों का हवाई टिकट (बोइंग पास) मिलेगा, जिसे दिखा कर ही आप हवाई जहाज में सवार हो सकेंगे, इस लिए हवाई टिकट को वापसी के सफर तक इन्तेहाई हिफ़ाज़त के साथ रखें, और पासपोर्ट से अलग रखें और मुअल्लिम को सिर्फ़ पासपोर्ट दें, टिकट न दें।

शिनाख़ती कार्ड (I-Card):

हज कमेटी से आप को आपका फोटो लगा दुआ एक शिनाख़ती कार्ड (I-Card) मिलेगा। ये काफ़ी बड़ा और ल्लास्टिक के कवर में और गले में पहनने के लिए होता है। इसे आप हमेशा अपने साथ रखें और जो दूसरे कार्ड आपको मक्का में मिलेंगे उन्हें भी इस में पीछे की तरफ रख लें। या दूसरी जगह हिफ़ाज़त से रख लें। (फोटो नंबर 9)

शिनाख़ती कार्ड में निम्नलिखित बातें होंगी:

- (1) आप का नाम (2) आप का पासपोर्ट नंबर
- (3) आप का ब्लड ग्रुप (Blood Group)
- (4) आप का दर्जा (Category)

कड़ा:

हज कमेटी की तरफ से आप को एक स्टील का कड़ा मिलेगा जिसमें निम्नलिखित मालूमात दर्ज होंगी। (फोटो नंबर 2)

- (1) आप का नाम। (2) आप का कवर नंबर।
- (3) आप का पासपोर्ट नंबर। (4) मुल्क का नाम।

इस कड़े को आप हाथ में पहन लें और वापस आने तक हर्गिज़ न उतारें। कड़े के साथ एक चैन भी होती है। अगर आप को तकलीफ़ हो तो चैन निकाल लें मगर कड़ा हमेशा आप के साथ रहे। क्योंकि ज़खरत पड़ने पर इसी के ज़रिये आप की शिनाख़त हो सकेगी।

खुदा-न-खास्ता अगर आप किसी हादसे में बेहोश हो गए या आप का सारा सामान गुम हो गया तब भी कड़े पर लिखे कवर नंबर से आप को पहचाना जा सकता है और आप के मुकाम तक पहुँचाया जा सकता है। मैं ने ऐसे भी वाक्यात सुने हैं कि लोग बैगेर शिनाख़त के हज के पहले गुम हो गए और हज के बाद भिकारियों की शक्ति में पिले, इसलिए यह कड़ा आप हमेशा आप के साथ रखें। नहाते वक्त या बैतुल्खला जाते वक्त या किसी भी हाल में इसे न उतारें।

ज़रे मुबादला (Foreign Exchange):

छठी चीज़ जो आप को हज के लिए रवाना होने से पहले एयरपोर्ट से मिलेगी वह है सऊदी रूपया (रियाल) या ड्राफ्ट।

यह आप के राहत का सामान भी है और जान का दुश्मन भी। हमारे पड़ोस के एक साहब २००४ ई. में हज के लिए गए और मक्का में इंतकाल कर गए। उन के साथियों से पुछने पर पता चला के उन का सारा रूपया एयरपोर्ट पर तलाशी के बहाने पुलिस ने ले लिया था। वह समझे के जिद्दा एयरपोर्ट पर वापस मिलेगा। मगर जब ना मिला तो बहुत फ़िक्रमंद हुए और उसी फ़िक्र में दौर-ए-कल्ब (Heart Attack) की बजह से वह अल्लाह को ध्यारे हो गए। मक्का में जिस कमरे में हम मुकीम थे ठीक उसके समने वाले कमरे में मौं और बेटी रहती थीं उन दोनों के सारे रूपये हरम शरीफ में तवाफ़ करते हुए चोरी हो गए। पुछने पर दोनों ने बताया कि मक्का पहुँचते ही उम्र ह करना था। कमरा नया, कमरे के साथी भी नये, किस पर कैसे भरोसा करें? इसलिए सारे रूपये साथ ही लिए थे और हरम शरीफ में जेब कट गई।

हमारे एक दोस्त मक्का में वकील हैं उन्होंने बताया कि मक्का में जितनी चोरी की वारदातें होती हैं, उन में अक्सर हरम शरीफ के अन्दर ही होती हैं।

हमारे एक और दोस्त ने अपना रूपया इतनी हिफ़ाज़त से अपने सामान में रख लिया के खुद भूल गए के कहाँ रखा है। बहुत परेशान रहे सलातुल्हाजात पढ़ कर खुदा से दुआ की। तब जाकर अपना रूपया अपने सामान में खो जाए।

इस लिए एयरपोर्ट पर मिलने वाले रूपये का खास ख्याल रखें और मक्का में अपनी रिहाईशगाह पर पहुँचने के बाद या तो होटल के काउंटर पर जमा कर दें, और रसीद ले लें, या अपने मुअल्लिम के पास जमा कर के रसीद ले लें। रसीद

लेना ना भूलें वरना वहाँ भी आप रूपयों से हाथ थोड़े बैठेंगे। अपनी ज़खरत के मुताबिक थोड़ा थोड़ा रूपया निकालते रहें। अगर इन दोनों जगह भी पैसा रखना आपके लिए मुश्किल न हो तो अपने सूटकेस में ही रख लें। मगर सूटकेस का ताला मजबूत हो।

जिद्दा एयरपोर्ट पहुँचने के बाद एयरपोर्ट से आप के रिहाईशगाह के सफर के दौरान बस में आप से, आप का पासपोर्ट ले लिया जाएगा और तीन शिनाख्ती चीजें दी जाएंगी वो इस तरह हैं:

रिहाईशी पत्ते का स्टिकर :

हिन्दुस्तान से रवाना होने के एक दिन पहले या एअरपोर्ट पर दो घंटा पहले आप के पासपोर्ट के पिछे एक स्टिकर चिपकाया जाएगा। जिसे तस्विर नंबर एक में दिखाया गया है और आप इसे गौर से पढ़े तो इसमें आपको सारी एहम और ज़रूरी मालूमात दर्ज है। इसमें जो मक्तब नंबर लिखा है वह आपके मुअल्लिम का नंबर है। और जो Build No. है। यह आपके रिहाईशी इमारत या बिल्डिंग का नंबर है और रुम नंबर या आपके कमरे का नंबर है।

| | | | |
|------------------|--------------------------|-----------|------------|
| Passport : | K1998704 | Maktab : | 41 |
| Cover No : | GJR - 967-5 | | |
| Pilgrim Name : | KIFAYATULLAH HABIBBHAI K | | |
| Category : | AZIZYA | | |
| Makkah Acc : | BLDG.No.313 | Room : | 409 |
| Madina Acc : | RAS | | |
| District : | PATAN | Dom Fit : | SV-5481 |
| Arr.Flight No : | SV-5481 | Arr.Dt : | 10/ 4/2013 |
| Dep Flight No. : | SV-5514 | Dep Dt. : | 11/8/2013 |
| Off : 041 | Buld : 31 | | |

वतन से रवाना होते वक्त (Permeant marker pen) पर मनंट मार्कर पेन से आप अपने सामान पर पहले अपने घर का पता और अपना हिन्दुस्तान का मोबाइल नंबर लिखें। दूसरी जगह आपके मुअल्लिम का नंबर आपके बिल्डिंग का नंबर और आपके सऊदी का मोबाइल नंबर भी लिखें। जैरे मुबादला के साथ आपको एक Sim card मिलेगा। इसे मोबाइल में डालकर अपना नया मोबाइल नंबर जान ले और फिर अपने सामान पर भी लिख दें। ऐसा करने से अगर कभी बदकिस्ती से आपका सामान खो गया तो फौरन आपको मिल जाएगा। वरना खोया हुआ सामान कई हफ्तों और कई महीनों बाद मिलता है। और यह वतन से जाते वक्त या हज से वापसी के सफर में कभी कभी एअरपोर्ट से सामान खो सकता है। इसलिए सामान पर पता लिखकर अपने तरफ से अपने सामान की हिफाजत का इतेजाम कर ले।

कलाई पट्टा:

मुअल्लिम की तरफ से आप को एक कलाई पट्टा दिया जाएगा जिस में मुअल्लिम का पता लिखा होगा, इस पट्टा की अहमियत यह है कि आप कभी मक्का में गुम हो गए, तो कोई भी इस पट्टे की मदद से आप को आप के मुअल्लिम के ऑफिस तक पहुँचा देगा। मुअल्लिम के ऑफिस में गाईड (रहवर) होते हैं, जो आप को आप की रिहाईशगाह तक पहुँचा देंगे। (फोटो नंबर ३)

मुअल्लिम का शिनाख्ती कार्ड:

जिद्दा एयरपोर्ट पर मुअल्लिम आप का पासपोर्ट आप से ले लेगा। और आप को अपना एक शिनाख्ती कार्ड देगा, जिस में मुअल्लिम का पता आप के बिल्डिंग का नंबर और आप के कमरे का नंबर लिखा होगा।

जिद्दा एयरपोर्ट से बस सीधे आपको आप के बिल्डिंग तक पहुँचा देगी। और मुअल्लिम के आदमी आप का सारा सामान आप के कमरे तक पहुँचा देंगे। (फोटो नंबर ४)

कमप्यूटराईज़ड शिनाख्ती कार्ड (Computerised I-Card):

ये दूसरा और बहुत अहम शिनाख्ती कार्ड आप को मक्का में एक या दो दिन के बाद मुअल्लिम की तरफ से मिलेगा। यह प्लास्टिक का कमप्यूटराईज़ड कार्ड है। यह एक तरह से आप का पासपोर्ट है। इस में आप के फोटो के साथ वो सारी बातें दर्ज होती हैं जो आप के पासपोर्ट में होती हैं। कानूनी तौर से हर हाजी को यह कार्ड अपने साथ रखना होता है और पुछने पर दिखाना ज़रूरी होता है। अगर आप को मक्का से जिद्दा या और किसी शहर जाना होगा तो इस कार्ड के बगैर नहीं जा सकते।

जब आप मक्का से मरीना जाएंगे तो मरीने में आप का दूसरा मुअल्लिम होगा और रिहाईशगाह भी नई होगी इस लिए मरीना में भी आप को आप का बगैर फोटो का एक कमप्यूटराईज़ड कार्ड मिलेगा और मुअल्लिम का शिनाख्ती कार्ड मिलेगा, जिसमें मुअल्लिम का पता आप की बिल्डिंग का पता और कमरा नंबर लिखा होगा। मरीना के दस दिन क्याम में भी आप ये दोनों कार्ड हिफाज़त से रखें। वतन वापसी के लिए सफर के शुरू में इसी कार्ड को देखकर आप को बस का नंबर दिया जाएगा, इसी बस में आपको आपका पासपोर्ट वापस मिलेगा और यही बस आपको एअरपोर्ट तक पहुँचा देगी। (फोटो नंबर ५)

मुअल्लिम का शिनाख्ती कार्ड (मिना के लिए):

मिना जाने से पहले मुअल्लिम आप को फिर अपना एक शिनाख्ती कार्ड देगा, जिसमें आपके मिना का खेमा नंबर लिखा होगा। मिना में एक मुअल्लिम के बहुत सारे खेमे एक ही मुकाम पर होते हैं, जिन के एतराफ़ हिफाज़त के लिए लोहे के जंगले लगे होते हैं।

गेट पर मुअल्लिम के पहरदार होते हैं जो ये कार्ड देख कर ही आप को जंगले के अन्दर खेमों की तरफ जाने देंगे। इस लिए मिना के क्याम में इस कार्ड को भी अपने साथ रखें और इस कार्ड के पिछे अपने हाथ से अपने खेमे के करीब के खेमे पर पहचान के लिये लिखे गए नम्बर को नोट कर लें और पुल का नाम नोट कर लें। इस से इंशा अल्लाह मिना में अपने खेमे का पता नहीं भूलेंगे। (फोटो नंबर ६)

ट्रेन टिकट:

मिना जाने से पहले मुअल्लिम आपको ट्रेन का टिकट देगा। यह टिकट दरअसल हाथ में पहनने का एक पट्टा है जिसे देखकर ही आपको ट्रेन में सवार होने दिया जाएगा।

मेडिकल सर्टाफिकेट:

हुक्मत सऊदी अरबिया दे सन् २००६ से हज बैतुल्लाह जाने वाले हुज्जाज किराम के लिए ज़ाब्ताए सेहत मुकर्रर किया है जिसकी रु से तमाम आज़मीने हज के लिए मुंदर्जा ज़ैल(नीचे दिये गये) टीके इजेक्शन लगवाना ज़रूरी है।

पोलियो का टीका:

सऊदी वजारते सेहत के हुक्मकाम ने पोलियो की खुराक (बिला तफरीक उम्र) लेने और इस बाबत सर्टाफिकेट हासिल करना लाजिमी करार दिया है, इस सर्टाफिकेट को पासपोर्ट के साथ नथी करना ज़रूरी है, जिसमें बगैर सऊदी हुक्मत वीज़ा जारी नहीं करेगी। यह सर्टाफिकेट हज दरखास्त कार्फ़ के साथ नथी किया गया है। इसलिए वह हजरात जिनका हज करने का इरादा है वह ओ.पी.वी. पोलियो की खुराक लें, इसका सर्टाफिकेट हासिल करें और हज कमीटी ऑफ इण्डिया को अपने कार्फ़ के साथ भेज दें ताकि उनके लिए हज वीज़ा की हुसुलियाती में दुश्वारी न हो।

दिमागी बुखार:

तमाम आज़मीने हज के लिए लाजिमी है के सऊदी अरब में दाखले के लिए हवाई जहाज़ की रवानगी से छः हफ्ता कब्ल दिमागी बुखार की रोकथाम के लिए इन्जेक्शन लगवाने का सर्टाफिकेट हासिल करें जिसके जारी किए जाने की मुद्रत सऊदी अरबिया में आमद के वक्त दस दिन से कम और तीन साल से ज्यादा न हो।

(इस पाठ का बाकी हिस्सा पेज नं २० पर है।)

सामान-ए-सफर

हज के सफर में आप जितना कम सामान ले जाएंगे, आप को उतनी ही आसानी होगी। मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनब्रा के क्याम के हालात और हमारी सलाह मुन्दर्जा जैल (नीचे दिए गये) हैं।

१. खाने पीने का इंतेज़ाम:

रिहाईशगाह (बिल्डिंग) के हर मंजिला पर एक या दो किचन (बावरची खाना) होते हैं, जिसमें गैस और चुल्हा मुअल्लिम या मकान मालिक की तरफ से पहली बार मुफ्त मिलता है। हाजी साहेबान खाना बनाने का पूरा सामान साथ ले जाते हैं और वहाँ खाना बना कर खाते हैं। सजदी हुकूमत कानून के मुताबिक कोई भी खाने की चीज़ सजदी अरब में लाना मना है। मगर मैं ने देखा कि न हिन्दुस्तान के एयरपोर्ट पर किसी ने किसी हाजी को रोका न जिद्दा एयरपोर्ट पर सिर्फ तेल, पानी या स्यूयाल माद्दा (Liquid) दोनों एयरपोर्ट वाले कभी ज़ब्त कर लेते हैं।

मक्का और मदीना में बेशुमार पाकिस्तानी होटलें हैं, जो हिन्दुस्तानी जाईके का खाना बनाते हैं, जिन की कीमतें (सन 2013 में) द से १० रियाल के दरमियान हैं।

अगर आप एक प्लेट दाल या गोश्त या सब्जी लें, तो तीन रोटी मुफ्त मिलती है, यह दो से तीन लोगों के लिए काफी होती है। इस लिए बहुत सारे हाजी खाना बनाने में वक्त जाए करने के बजाए खाना ख़रीद कर खाते हैं और पूरा वक्त इबादत में लगाते हैं और यह बात मुनासिब और दुरुस्त है।

कभी दूसरे और तीसरे दर्जे के हाजियों को अज़ीजिया मुकाम पर ठहराया जाता है, जो नई आबादी है, और वहाँ होटल वैग्रह नहीं हैं। ऐसे हाजी अगर खाना बनाने का सामान साथ ले जाएं तो बेहतर है।

२. कपड़े:

हर मंजिला पर कई बाथरूम (गुस्तुल खाना) होते हैं जिस में आप आसानी के साथ कपड़ा धो सकते हैं। सुखाने के लिए आप घर से रस्सी ले जाएं और लावी या बिल्डिंग के छत पर आसानी के मुताबिक कपड़ा सुखा लें। मक्का और मदीना में लॉन्स्ट्री भी है जो कि एक जोड़ा धोने का ५ रियाल लेते हैं। चूंकि वहाँ नमाज़ के सिवाय और कोई काम होता नहीं, इस लिए कपड़े कम ही गंदे होते हैं। इस लिए दो या तीन जोड़ों में गुज़र आसानी के साथ हो जाता है।

हज के सफर में बुजुर्गों से सुना है कि रोज़ मर्ह के कपड़ों के साथ अगर दो जोड़े नये हों तो ज्यादा बेहतर है। एक ९० ज़िल्हिज्जा के लिए जिस दिन ईद होती है और एक मस्जिद नववी के लिए जिस दिन पहली बार आप हुजुर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की कब्र मुबारक पर हाज़री देकर सलात व सलाम का नज़राना पेश करेंगे।

३. बिस्तर:

मक्का और मदीना दोनों जगह आप को आप के कमरे में पलंग, गदेला, तकिया और एक कम्बल, बेडशीट (चादर) मिलेगी। इसलिए मक्का और मदीना में खुद के बिस्तर की ज़रूरत नहीं होती।

मिना के खेमों में ज़मीन पर कालीन बिछा होता है। मगर तकिया और चादर नहीं मिलती इस लिए मौसम के मुताबिक एक हवाई तकिया और एक चादर ले लें तो बेहतर होगा।

४. दवाएँ:

सजदी अरब में दवाएँ बहुत महंगी हैं और उन के नाम भी अलग होते हैं। इस लिए रोज़ मर्ह की सारी दवाएँ आप साथ ले जाएं। सजदी हुकूमत और इंडियन हज कमीटी की तरफ से भी मुफ्त दवाएँ अपने साथ ले जाएं। ज़रूरत पड़ने पर मक्का और मदीना में हिन्दुस्तानी कॉन्सिलेट के ऊपर हिन्दुस्तानी अस्पताल हैं जहाँ हिन्दुस्तानी डॉक्टर मिलते हैं, उन से अपना मुफ्त इलाज करवा सकते हैं। वहाँ सजदी अस्पताल भी हैं उन में भी मुफ्त इलाज होता है। मिना में भी सजदी अस्पताल हैं।

५. मोबाइल फोन:

हज के मौके पर हाजियों के लिए स्पेशल सिम कार्ड (Sim Card) निकालती है जो के १०० रियाल का होता है। और आप १०० रियाल कीमत खत्म होने तक बात कर सकते हैं। यानी आप को पूरी कीमत का टॉक-टाइम मिलता है। आप को अपना मोबाइल नंबर मिलता है, जिसे आप अपने घर वालों को और साथीयों को दे सकते हैं। मोबाइल अगर सही इस्तेमाल करें तो बहुत से फायदे हैं। आप हमेशा अपने घर और कारोबार से बाख़बार होते हैं, इस लिए इनिमान से इबादत कर सकते हैं। हज के दौरान साथियों से बिछड़ जाने के बाद या किसी तकलीफ में फौरन दोस्तों से राबता कायम कर सकते हैं और गुलत इस्तेमाल करें तो बवाल ही बवाल है। आप वहाँ इबादत के लिए जाते हैं, मोबाइल पर वहाँ से तिजारत या बिज़नेस न करने लगें। मोबाइल हरम शरीफ में बन्द रखें, नहीं तो लाखों के हिसाब से गुनाह होगा। (२०१३ में सीमार्काई एअरपोर्ट पर ही जैरे मुबादला के साथ दे दिया गया था)

पहियों वाला छोटा बँग:

हज के सब से मुश्किल दिन द से १२ ज़िल्हिज्जा के होते हैं। इस दौरान आप को मुन्दर्जाइल (नीचे दिए गये) सफर करने होंगे:

| तारीख | मकाम | दूरी | समय |
|----------------------|--------------------|------------|---------|
| ८ ज़िल्हिज्जा | मक्का से मिना | ५ कि.मि. | एक घंटा |
| ६ ज़िल्हिज्जा सुबह | मिना से अरफात | ६.५ कि.मि. | दो घंटे |
| ६ ज़िल्हिज्जा शाम | अरफात से मुज्जल्फा | ५.५ कि.मि. | दो घंटे |
| १० ज़िल्हिज्जा सुबह | मुज्जल्फा से मिना | १ कि.मि. | आध घंटा |
| १० ज़िल्हिज्जा दोपहर | मिना से मक्का | ५ कि.मि. | एक घंटा |
| १० ज़िल्हिज्जा शाम | मक्का से मिना | ५ कि.मि. | एक घंटा |
| १२ ज़िल्हिज्जा शाम | मिना से मक्का | ५ कि.मि. | एक घंटा |

जो लोग यह सफर पैदल करते हैं वह बस या किसी और सवारी से सफर करने वालों के मुकाबले में ज़्यादा आराम से रहते हैं और हर जगह वक्त पर पहुँचते हैं। खाली हाथ पैदल चलना आसान है और सामान ले कर चलना बहुत मुश्किल। मगर मक्का से मिना और मिना से अरफात के सफर में सामान तो होता ही है इस लिए आसानी के लिए जो छोटा बैग आप ख़रीदें अगर वह दो पहियों वाला हो तो बहुत आसानी होगी। मिना अरफात के सफर में सामान बहुत ही कम होता है (एक चटाई, पानी की बोतल, थोड़ा सा खनों का सामान और एक शाल), इस लिए यह बैग ज्यादा बड़ा न हो। पहियों वाले इस छोटे बैग से मिना और मक्का के सफर में आप को बहुत आराम मिलेगा।

६. रोज़ मरह के इस्तेमाल की चीज़ें:

- रोज़ मरह के इस्तेमाल की सारी चीज़ें आप को मक्का और मदीना शरीफ में दुकानों पर मिल जाएंगी। इस लिए अगर हिन्दुस्तान से कुछ ना ले जाएं या हिन्दुस्तान में कुछ चीज़ें छूट जाएं तो परेशान होने की ज़रूरत नहीं। वैसे अगर आप का सामान ३५ किलो से कम है तो मुंदर्ज़ैल (नीचे दिए गये) सामान एहतियात के लिये रख लें।
१. खाना रखने और खाने के न टूटने वाले बर्टन।
 २. टूथ पेस्ट, साबुन और सिर में लगाने का तेल।
 ३. जा-नमाज़।
 ४. रात के बक्तव्यों के कपड़े।
 ५. रस्सी और पतला पर्दे का कपड़ा। (हो सकता है आप को अपने कमरे में और तो के लिए पर्दा करना पड़े)
 ६. दो अदद एहराम, एक मोटे कपड़े में एक पतले कपड़े का, और कमर पट्टा (Belt)
 ७. मुज़दल्फ़ा में रात गुज़ारने के लिए चटाई।
 ८. पानी की थरमस या बोतल (जिससे आप आब-ए-ज़म ज़म कमरे तक ला सकें)
 ९. ऐसी खाने की चीज़ें जो बहुत दिनों तक खराब न हों, मिना व अर्फात में खाने की सब चीज़ें मिलती हैं मगर एहतेयात के लिये रख लेना बेहतर है।
 १०. अगर आपकी नज़र (बीनाई) कमज़ोर है और आप चश्मा इस्तेमाल करते हैं, तो दो अदद चश्में साथ रख लें।
दो सामान ऐसे हैं कि जिन की ज़्यादा ज़रूरत तो नहीं होती, मगर साथ रख लें तो बेहतर है। एक है धूप का चश्मा, और दूसरा नाक पर लगाने का कागज़ का रुमाल (Nose-Mask)।
धूप के चश्मे से दोपहर के बक्तव्य दूध की तरह सफेद फर्श पर तवाफ करने में आसानी होती है।
अगर आपको नज़ला अक्सर रहता है, या जल्दी हो जाता है तो Nose - Mask इस्तेमाल करने से आप और दूसरे लोग Infection से महफूज़ रहते हैं। नोज़ मास्क सिर्फ़ पांच रुपये में किसी भी मेडिकल दुकान पर मिल जाता है। यह मक्का शरीफ में एक रियाल में मिल जाएगा।

७. हैण्ड बैग:

हज कमेटी या बैंक वैग्रह से एक छोटा हैण्ड बैग आप को तोहफे के तौर पर मिलेगा, जो हज के पूरे चालीस दिन आप का साथी होगा और आप के बहुत काम आएगा, इस में दो पट्टे लगे होते हैं; एक गर्दन से लटकाने के लिए और दूसरा कमर से बांधने के लिए। अगर दोनों पट्टे आप अच्छी तरह पहन लें तो ये आप के जिस्म से चिपका रहेगा और भीड़ भाड़ में भी इस के खोने का ड्र बहोत कम होता है इसमें दो हिस्से होते हैं; एक बाहरी और छोटा हिस्सा जिस में शफ्काफ़ लास्टिक लगा होता है। इसमें आप अपना शिनाखर्ती कार्ड और दूसरे कागज़ात रख सकते हैं। दूसरे हिस्से में आप चप्पल वैग्रह रख सकते हैं। हरम शरीफ के दरवाज़े के बाहर रखी हुई चप्पलों को खादिम वक़्मा-वक़्फ़ा से हटा कर फेंकते रहते हैं। दरवाज़े से लगी अल्मारीयों से चप्पल दूसरे हाजी पहन कर ले जाते हैं। इस लिए चप्पल को लास्टिक की थैली में रख कर बैग में रख लें। हरम शरीफ में दो से चार घंटे तक भी बैठना पड़ता है। इस लिए खाने के लिए कुछ खजुरें और विस्किट वैग्रह भी रख लें, और पीने के लिए आब-ए-ज़म ज़म हरम शरीफ में हर जगह मिलेगा। अगर यह बैग आप को तोहफा में कोई न दे तो इंतेज़ार न कीजिए बल्कि बाज़ार से ख़रीद लीजिए।

८. सफ़री सूटकेस:

हज के सफ़र में तकरीबन आठ से दस बार आप का लगेज कुली हज़रत के हाथों में होगा। जो अक्सर इसे बड़ी बेदरी से इधर-उधर फेंकेंगे। इस लिए आप का सुटकेस और बैग ऐसे हों कि आसानी से न टूटें या तो ऐसे हों कि जिन के टूट जाने का आप को ग़म न हो।

सन् २००६ में हाजियों को हवाई सफ़र में स़ज्ज़ परेशानियां हुई थीं। हाजियों की कई परवाज़ (Flights) छूट गईं। कई कई दिन एयरपोर्ट पर रहना पड़ा। सामान कई हफ्तों या महीनों बाद मिला वैग्रह वैग्रह।

इसकी वजह यह थी कि पहल तो हाजियों ने हुक्मत के कवानीन को नज़र अंदाज करके ज़रूरत से ज़्यादा सामान साथ ले लिया, फिर बैगर ज़्यादा किराया दिए सामान मुफ्त में हिन्दुस्तान लाने पर अड़ गये इसलिए तंग आकर जहाज़ के अमले (Staff) ने बैगर हाजियों के ही जहाज़ रवाना कर दिया। जब ऐसे लावरिस हाजियों की तादाद एयरपोर्ट पर ज़्यादा बढ़ी और हुक्मत को दखल देना पड़ा तो एमरजंसी में इसने सारे शैड्यूल और प्लानिंग को साइड में रख कर जो भी फ्लाइट ख़ली मिली उस से हाजियों को वापस भेजना शुरू किया। इस unsheduled रवानगी में हाजी किसी और जहाज़ से रवाना होते और उनका सामान किसी और जहाज़ से रवाना होता और हफ्तों या महीनों के बाद मिलता।

इस अफरा तफरी की वजह हाजियों की लापरवाही और ज़िद के सिवाय कुछ भी न था इसलिए हुक्मत ने इसका स़ज्ज़ नोटिस लिया है और सूटकेस के साईंज़ और वज़न की पाबंदी को स़ख्ती से आयद करने का तहया किया है इसलिए इस मुबारक और मुकद्दस सफ़र में आप भी इस बात का ज़रूर ध्याल रखें, ताकि आप अपना और दुसरे हाजियों का सफ़र बक्तव्य पर और आसानी से हो।

सामान के सिलिस्ले में हुक्मत के कवानीन मुंदरजा ज़ैल (निचे दिए गये) हैं:

- १) हिन्दुस्तान से सऊदी जाते बक्तव्य हाजियों को ३५ किलोग्राम सामान मुफ्त ले जाने की इज़ाज़त होगी।
- २) वापसी पर ५५ किलोग्राम सामान और ९० लीटर आबे ज़मज़म लाने की इज़ाज़त है।
- ३) वापसी में ५५ किलोग्राम में से ४५ किलोग्राम आप के Check-in-luggage का होगा और ९० किलोग्राम वज़न आप के हैण्ड बैग का होगा। चेक इन लगेज यानि वह छोटे सूटकेस जो आप अपने साथ जहाज़ के अन्दर ले जाएंगे।
४. सऊदी हुक्मत के कानून के मुताबिक ४५ किलोग्राम भी आपके एक ही सूटकेस का वज़न न हो बल्कि २ सूटकेस का वज़न हो और आप का कोई सूटकेस २३ किलो से ज़्यादा न हो।
५. जमज़म के पानी का डिब्बा गोल न हो बल्कि चौकोर हो और प्लास्टिक की थैली में इस तरह बंद किया हो कि सफ़र के दौरान पानी निकलकर बहने का अदैश न हो।
६. हज कमेटी ऑफ इंडिया के मुताबिक दोनों चेक इन लगेज के सूटकेस मुंदर्ज़ा ज़ैल (नीचे दिए गये) साईंज़ के हों:
- पहले सूटकेस की लम्बाई, चौड़ाई और ऊचाई को जमाअ़ किया जाए, तो ६२ इंच से ज़्यादा न हो और दूसरे सूटकेस की लम्बाई, चौड़ाई और ऊचाई को जमाअ़ किया जाए, तो ४४ इंच से ज़्यादा न हो।
७. जहाज़ के अंदर अपने साथ ले जाने वाले बैग या सूटकेस का साईंज़ २२'' X १६'' X ८'' से ज़्यादा न हो और वज़न भी दस किलों से ज़्यादा न हो, इस साईंज़ के बैग को आप आसानी से जहाज़ के ऊपरी ख़ानों में रख सकते हैं।
८. ज़ायद सामान आप को कारों के ज़रिये रवाना करना होगा ५५ किलो से ज़्यादा सामान पर ज़ायद हवाई जहाज़ का किराया भी देना होगा और हज

कमेटी पर इन सामानों की ज़िम्मेदारी नहीं होगी।

(छोटा बैग या सूटकेस अगर पहियों वाला हो, तो आप को मक्का से मिना और मिना से मक्का पैदल सफर करते वक्त आसानी होगी।)

हाजियों के सामान का साईज़ और वज़न सही होना क्यों ज़रूरी हैं?

क्योंकि एयरपोर्ट पर सामान को एक जगह से दूसरी जगह बेल्ट कन्वेयर (Belt Conveyer) ले जाया जाता है, इन बेल्ट कन्वेयर की सामान ढोने की ताकत और साईज़ महदूद है और यह कई खिड़कियों से गुज़रते हैं, इन खिड़कियों की साईज़ भी महदूद है। बड़े सामान अगर कन्वेयर बेल्ट पर रख भी दिये जाएं तो वह खिड़कियों में जाकर अटक जाते हैं और अगर वह आगे ही न बढ़े तो वह जहाज़ में लोड कैसे होंगे?

जहाज़ों में भी हर सामान अलग अलग लोड नहीं किया जाता बल्कि पहले उन्हें छोटे डिब्बों (containers) में पैक करते हैं, फिर उन छोटे कटेनरों को एक जीप या ट्रैक्टर के जरिये खींचकर जहाज़ तक ले जाया जाता है फिर लोड किया जाता है, तो बड़े सामान या सूटकेस को उन छोटे कटेनरों में भरने में बहुत दिक्कत होती है, इस लिए जहाज़ वाले बड़े सामान न मुसाफिरों के साथ ले जाने देते हैं।

आप अपने हर बुकिंग और सूटकेस पर अपना कवर नम्बर और घर का पूरा पता embarkation point या मर्क्ज़ रवानाई लिखना न भूलें वह भी परमानंट मार्कर पेन या पक्की रोशनाई से जिससे कि पता बिल्कुल न मिटे। ताकि खुदा न ख़ास्ता अगर आप का सामान खो जाये, तो कवर नम्बर और पते से आप को वापस मिल जाये।

दूर से एयरपोर्ट पर अपने सामान को पहचानने के लिए रिबन या रंग या और कोई रोशनाई लगा लें इससे सामान ढुँढ़ने में आसानी होगी। वरना सभी सूटकेस दूर से एक जैसे लगते हैं।

दूसरी अहम बात याद रखिये कि आप के लगेज पर दुसरों के लगेज का ५०० किलो से ज्यादा का भी बार पढ़ सकता है। इस लिए आप के सुट केस या बैग में ऐसा कोई सामान न हो जिस के टूटने से आप का और दुसरों का सामान ख़राब होजाए। मक्का और मदीना शरीफ के कथाम और मिना के खेमों में, मस्तुरात पर्दे की बजह से अलग रह सकती हैं। इस लिए आप अपना रोज़ मरह के इस्तेमाल का सामान मस्तुरात के सामान से अलग रखें, वरना दोनों को बड़ी परेशानी होगी और छोटी-छोटी चीज़ों के लिए एक दुसरे को आवाज़ देना पड़ेगा।

आप अपना सूटकेस मज़बूत तरती का लें, ताकि आप रुपया पैसा सूटकेस में रख कर इतिमान से हरम शरीफ जा सकें।

६. परमनंट मार्कर पेन (Permeant marker pen)

इस पेन से आपको एअरपोर्ट पर जब आपके मुअलिम का नंबर मक्का शहर में आपके बिल्डिंग का नंबर और रुम नंबर मिले तो उसे इस पेन से अपने सारे सामान पर अच्छी तरह लिख ले। इससे इन्शा अल्लाह आपका सामान आपको जल्द ही मिल जाएगा।

१०. तराजू (Spring scale)

अगर हज़ के सफर में आपका ज्यादा लोगों का ग्रुप है तो एक लटकाकर वजन करने वाला तराजू भी लेलें। इस तराजू में स्प्रिंग होती है और किमत तकरीबन २०० रुपया होती है। हज़ से वापसी के वक्त यह सामान वजन करने के काम आएगा। वापसी में अगर सामान का वजन ज्यादा हो तो हर किलो पर १०० रुपये से ज्यादा किराया अदा करना पड़ता है। इस तराजू से आप हद के अंदर ही अपने सामान का वजन रखेंगे। और जहानी तौर पर पुरस्कून रहेंगे।

११. अच्छी सेहत

सब से ज़रूरी चीज़ जो आप को अपने साथ लेजाना है वह है अच्छी सेहत, क्योंकि मक्का के कथाम और हज़ के दौरान आप में जितनी ज्यादा कुक्त दोगी आप उतनी ही ज्यादा इबादत कर सकेंगे। तवाफ व सई और रिहाईश गाह से हरम तक आप को जितना चलना है और इस में जितना वक्त दरकार है, अन्दाज़न में यहाँ दर्ज करता हूँ, इस से आप अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि रोज़ कम से कम आप को कितने देर तक लगातार चलना है।

तवाफ़:

काबा शरीफ के गिर्द सात चक्कर या फेरा लगाने पर एक तवाफ़ होता है, चक्कर या फेरा को अरबी में शूत कहते हैं।

सुबह ६ बजे से १० बजे, दोपहर ९:३० से २:३० बजे और रात १२ बजे से ३ बजे के वक्त जब भीड़ कम होती है। काबा शरीफ से ५० फिट की दूरी पर शूत (फेरा या चक्कर) में ३ मिनट और १०० फिट की दूरी से एक शूत में ६ मिनट लगते हैं। इस लिए सात शूत के लिए कम भीड़ के वक्त २० से ४२ मिनट के दरम्यान लगेंगे। भीड़ के औकात में सात शूत यानी एक तवाफ़ में एक घंटा से ज्यादा भी लग जाता है।

ज्यादा भीड़ में जब मुताफ़ में तवाफ़ करना मुश्किल होता है तो पहले मंजिले या छत पर तवाफ़ करना पड़ता है। जहाँ एक शैत के लिए १३ से १५ मिनट लगते हैं। इस लिए सात शूत के लिए ६९ से १०५ मिनट लग जाते हैं। तब जाकर एक तवाफ़ होता है।

सई:

सफ़ा और मर्वाह के दरम्यान ३६५ मिटर का फासला है। सफ़ा और मर्वाह पहाड़ के बीच चलने को सई कहते हैं। सई में सफ़ा और मर्वाह के दरम्यान ७ चक्कर लगाने पड़ते हैं। पहला चक्कर सफ़ा से शुरू होता है और सातवें चक्कर मर्वाह पर खत्म होता है। एक चक्कर के लिए कम भीड़ में ४ से ५ मिनट लगते हैं। इस लिए सात चक्कर में करीब ३० मिनट का वक्त लगता है। भीड़ के औकात में एक घंटा से ज्यादा भी वक्त लग जाता है।

रिहाईश गाह से हरम शरीफ तक आने जाने का वक्तः

आम तौर पर हाजियों का कथाम हरम से ५ से १५ मिनट की दूरी पर होता है। मगर ४ जिल्हिज्जा से ५ जिल्हिज्जा तक लोगों का जबरदस्त हुजूम होता है। इस दौरान ५ से १५ मिनट का ये रास्ता तय करने में १५ से ३० मिनट का वक्त भी लग सकता है।

नमाज़ का इन्तेज़ारः

४ जिल्हिज्जा तक चुंके ३० से ३५ लाख लोग मक्का शरीफ पहुँच चुके होते हैं इस लिए हरम शरीफ में भी ज़बरदस्त भीड़ होती है। अगर नमाज़ से ३० से ४५ मिनट पहले आप हरम में न पहुँचे तो तमाम जगहें भर चुकी होती हैं। इस लिए हर नमाज़ से एक घंटा पहले आप को अपने कमरे से नमाज़ के लिए निकल जाना होता है।

हरम शरीफ से कमरे तक आने जाने में भी काफ़ी वक्त लगता है इस लिए लोग तहज्जुद के लिए आते हैं और कफ़्ज़ पढ़ कर जाते हैं। इसी तरह मस्तिष्क के लिए आते हैं और इशा पढ़ कर जाते हैं। बहुत से लोग ज़ोहर से इशा तक हरम शरीफ में ही रहते हैं और नमाज़, तिलावत और तस्वीहात में मस्तिष्क रहते हैं। और इशा पढ़ कर जाते हैं।

जो लोग मक्का के रहने वाले हैं उन के लिए हरम शरीफ में नफिल नमाज़, नफिल तवाफ़ से अफ़ज़ुल है। मगर जो लोग दुसरे शहरों से आते हैं उन के लिए नफिल तवाफ़, नफिल नमाज़ और दुसरी इबादत से ज्यादा अफ़ज़ुल है। इस लिए हर हाज़ी को पैच वक्त की नमाज़ हरम शरीफ में पढ़ना चाहिए

और ज्यादा से ज्यादा तवाफ़ करना चाहिए।

ऊपर दिए गए वक्त के हिसाब से आप खुद अन्दाज़ा कर सकते हैं कि एक दिन में आप को कितना वक्त चलना और हरम में बैठ कर इतेज़ार करना है।

हुजुर (स.) का इशारा है कि “कवी मोमिन कमज़ोर मोमिन से बेहतर है”। क्योंकि कवी मोमिन दीन के बहुत सारे वो काम कर सकता है, जो कमज़ोर मोमिन नहीं कर सकता।

हुजुर (स.) के इशारे के मुताबिक जो लोग सिर्फ़ जिहाद के लिए घोड़े पालते हैं। उन्हें घोड़े के खाने पैने, चलने यानी उस के हर काम पर सवाब मिलता है। (बुखारी)

हम और आप अगर अपनी सेहत इस मक्सद से बेहतर बनाने की कोशिश करें कि इंशा अल्लाह अच्छी सेहत से हम इस्लाम और मुसलमान के फलाह और बेहवुदी के लिए काम करेंगे तो अपने बेहतर सेहत बनाने की कोशिश में भी हम को सवाब मिलेगा।

डॉक्टरों का कहना है कि हर शख्स को दिन में कम से कम २० मिनट तक तेज़ चलना चाहिए, इस से दिल का दौरा, डायबिटीज़ और दुसरी बहुत सारी विमारियाँ नहीं होती या कन्ट्रोल में रहती हैं।

इस लिए हज़ के लिए जो सब से पहली तैयारी आप को करना है, वह यह है कि सुबह और शाम कम से कम ३० मिनट चलें और अपनी सेहत को बेहतर बनाने की कोशिश करें।

हरम शरीफ पहुँचकर भी अपनी सेहत का ख़्याल रखें। हज़म होनेवाला हलकी गिज़ा लें। फलों का इस्तेमाल खूब करें। हमेशा ज़मज़म का पानी पियें, गरमी के दिनों में जब पानी से प्यास न बुझे तो ठंडे पानी और मशरूब के बदले सुलेमानी चाय या कहवे का इस्तेमाल करें। सुबह ४ बजे से पहले उठे ताकि इस्तिनान से जरूरीयात से फारिग़ होकर आप तहज्जुद पढ़ सकें।

१०. सब से अहम ज़ादे सफ़र:

अल्लाह तआला फरमाता है।

وَتَرْكُوكُفِنَّ خَيْرَ الرَّادِ الْتَّسْوِيْ وَالْقُوْنَ يُؤْلِي الْأَبْدَابِ

(صَرِهَ بِرَبِّهِ بِرَبِّهِ ۝۷۰)

व तज़्व़دू फ-इन्ना खैर-ज़ा-दित-तक्वा, वत्तकूनी या ऊलिल अल्लाब
(सूरह बकरा: १६७)

तर्जुमा : और ज़ादे राह जो बेहतरीन ज़ादे राह है वह तक्वा है और ऐ अक़लमंदों
मेरा तक्वा इश्कियार करो।

हज़रत आदम (अ.) के बेटे काबील की कुर्बानी इस लिए कुबूल नहीं हुई थी
क्योंकि उसमें तक्वा का ज़ज़बा न था।

अल्लाह तआला फरमाता है।

قَالَ إِنَّمَا يَنْتَهِ اللَّهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ۝ ۱۷۱

“का-ल-इन्नामा य-त-कब्वलुल्लाहू मिनल मुल्कीना।” (सूरह माइदाह: २७)

तर्जुमा : अल्लाह मुल्कीयों ही से कबूल कर्माता है।

रसूल अल्लाह (स.) ने हज़तुल्विदा के मौके पर फरमाया:

الشَّوَّافُ هُنُّا وَيُشِيرُ إِلَى صَلَرِهِ ثَلَاثَ مَرَاتِ (سُلْطَان)

तर्जुमा : तक्वा यहाँ होता है आप (स.) ने तीन मर्तबा अपने सीने मुबारक की
तरफ इशारा करते हुए फर्माया:

“इस लिए हज़ के सफर पर जाने से पहले सारी तैयारियों के साथ अपने
दिल की कैफियत को भी सवारों। हाजी कहलाने की चाह, दिखावा, सैर व
तफरीह की नियत, खूब खरीदी की तैयारी वौरह का इरादा भी हज़ की
नियत के साथ हो तो तौबा इस्तगफार कीजिए और ख़ालिस खुदा की

खुशबूदी के लिए हज़ के सफर की तैयारी कीजिए।”

अश्या-ए-ममूआ: यह सामान सऊदी अरब ले जाना मना है:

१. हथियार या उनके हिस्से या फौजी इस्तेमाल की अश्या।
२. तमाम किस्म की धमाका खेज़ अश्या या बास्द।
३. पिटौटी का तेल और पेट्रोल और तमाम किस्म के सय्याल मादूदे और स्टोव वैगैरह।
४. आतिशीरी अश्या, चमक पैदा करने वाली गेम माचिस गेम राकेट वैगैरह।
५. तमाम नशा आवर मशरूबात और दवाएँ जो के ख्याब आवर मादूदे, अफीम, चरस, मारफान, कोकीन या इस किस्म के मादूदों से बनी हुई हों या इन में इन अश्या की मिक्कदार शामिल हो।
६. ऐसी अश्या जिनमें ज़हरीला मादूदा या इसी किस्म की दवाएँ शामिल हों जब तक वज़ारते सेहते आमा से मंजूरी हासिल न हो।
७. तमाम दवाएँ सिवाय जिनकी, वज़ारते सेहते आमा से मंजूरी हासिल हो।
८. तमाम तबा शुदा मुवाद जो के इखलाकी और इस्लामी उसुलों के खिलाफ हो।
९. नंगी तसावीर या इसी किस्म की दूसरी अश्या जो ईसाइयों के मज़हबी क्रोस (पी) की शक्ल में हो।
१०. बड़ी साईज़ की तसावीर जो कि बैरे फरोख्त आप ले जाना चाहते हों।
११. फिल्में सिवाय इस समाजी फिल्मों के टेप जो कि वज़ारते इत्ताआत व नस्तियात ने मंजूर किये हों।
१२. वायरलेस और उसके पुर्जे जब तक के वह हुक्मत के इस्तेमाल के लिए दरअामद किये जायेंगे और वज़ारते ख्बरर रिसानी की मंजूरी हासिल कर ली गयी हो।
१३. खिलौने वाली बंदूकें जो के बच्चों के लिए हों।
१४. बच्चों के वास्ते शूटिंग के लिए तमाम किस्म की बंदूकें जब जक वज़ारते दाखला की मंजूरी न हो।
१५. चाकू, ख़ंजर और हथियार वैगैरह।
१६. वह तमाम किताबें, पम्पलेट या दूसरी अश्या जिनमें कम्युनिज़म का प्रोपेग़ंडा किया हो या सऊदी हुक्मत की पॉलिसी के खिलाफ़ हों या इस्लाम के खिलाफ़ लिटोरेचर।
१७. मछलियाँ पकड़ने के लिए खुशूसी फूल जो कि जहाज़ रानी और इंसानी ज़िंदगी के लिए नुकसानदायक हो।
१८. वह तमाम सामान जिन पर इस्त्राईल का तारा या उन का कोई निशान बना हो।
१९. बच्चों की मिठाइयाँ जो सिगरेट की शक्ल में हों या इसी तरह की अश्या जो सिगरेट की पब्लिसिटी के लिए हो।
२०. तेल और तेल से बनी तमाम अश्या जो के सेहत आमा के लिए मुजिर हों।
२१. काले रंग की तस्बीह के दाने जो प्लास्टिक, कांच या इस किस्म की दूसरी चीज़ों से बने हों।
२२. वीडियो और ऑडियो कंसेट।

मुंदर्जा ज़ैल (नीचे दिए गये) अश्या हर हवाई सफर में हैंड बैग में रखना ममू है:

१. कैची, नेलकटर (नाखून काटने का सामान) ब्लैड, छुरी, चाकू और ऐसे सारे सामान जिन से किसी इंसान को ज़ख्मी किया जा सकता है।
२. आज कल बम बनाने के कैमिकल, सय्याल मादूदे या प्लास्टिक की तरह होते हैं इसलिए अब जहाज़ के अंदर पानी की बोतल और तमाम सय्याल मादूदे ले जाना ममू है। (बकाया पेज नं २५ पर)

हज के दौरान रास्ता भूलने और खो जाने का मसला

मक्का मुकर्मा में खो जाने का मसला :

हरम शरीफ की मस्जिद में ६२ दरवाज़े हैं, जिन पर नंबर लिखे हुए हैं। कुछ दरवाज़ों पर नंबर नहीं हैं। उन्हें भी गिना जाए तो १०० से ज्यादा दरवाज़े हैं। नये आदमी को सब दरवाजे एक जैसे लगते हैं इस लिए जब पहली मर्टबा आप हरम शरीफ जाएं तो जिस दरवाजे से दाखिल हों उस का नंबर नोट कर लें और उसी दरवाजे से बाहर आएं।

जब आप हरम शरीफ के अंदर मुताफ़ (सेहन) में होंगे तब भी चारों तरफ सारे दरवाजे आप को एक जैसे लगेंगे। पहचान के लिए हुकूमत ने पाँच अहम दरवाज़ों पर पाँच अलग अलग रंग की मेहराबें बना दी हैं। जब आप हरम में दाखिल हों तो इन रंगों को अच्छी तरह पहचान लें और इसी तरफ के दरवाजे से बाहर निकलें। दरवाज़ों की मेहराबें और उन के रंग इस तरह हैं।

| दरवाजे का नाम | मेहराब का रंग | सिस्त (तरफ) |
|-----------------------|---------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| १. बाबे अब्दुल अज़ीज़ | हरा | यह दरवाजा नंबर ९ है और मिस्कला इलाके की तरफ है। |
| २. बाबे सफा | सफेद | यह हिज्रे अस्वद के सामने सफा पहाड़ी की तरफ है। जहाँ से सई शुरू की जाती है। |
| ३. बाबे फतह | नीला | यह मरवा पहाड़ी की तरफ है। |
| ४. बाबे उमराह | सिलेदी | यह दरवाजा नंबर ६२ है। इस दरवाजे के पास गुमशुदा लोगों के लिए ऑफिस है। |
| ५. बाबे फहद | पीला | यह दरवाजा नंबर ६२ है। शाह फहद ने हरम के एक दुसरे की बहुत ज्यादा तबसी की है जिस में ८० हजार लोग नमाज़ पढ़ सकते हैं। यह मेहराब उसी हिस्से की तरफ है। |

गेट नंबर ६२ के बाहर गुमशुदा लोगों और सामान का ऑफिस है। अगर आप गेट भूल जाएं और अकेले घर जाने की हिम्मत या एतमाद न हो तो गेट नंबर ६२ के पास ऑफिस में पहुँच जाएं। वह गाइड के ज़रिया आप को आप के घर या मुअल्लिम के ऑफिस पहुँचा देंगे।

जिद्दा एयरपोर्ट पर खो जाने का मसला :

जिद्दा एयरपोर्ट बहुत बड़ी और अंतर्राष्ट्रीय है। और इस एयरपोर्ट पर आप को काफी देर रुकना है और तकरीबन ३०० फीट बस डिपो तक चलना है। इस एयरपोर्ट के हर खंभे पर नंबर लिखे हुए हैं। बस डिपो तक तो गाइड आपको रास्ता बता देंगे। मगर दूसरी किसी जरूरत से अगर आप दूर जाते हैं तो आप का सामान जिस खंभे के पास है, उसे ज़रूर नोट कर लें।

मिना में रास्ता भूलने का मसला :

मिना में अक्सर हर शख्स एक बार रास्ता ज़रूर भूलता है। इस लिए अगर आप मिना का जुगराफ़िया अच्छी तरह समझ लें तो इशा अल्लाह रास्ता नहीं भूलेंगे। मिना दो पहाड़ों के दरम्यान एक वादी का नाम है। इस वादी में मक्का की तरफ से दाखिल होते ही 'जमरात' यानी शैतान को कंकरी मारने का मुकाम पहले है, फिर उस के बाद खेमों का सिलसिला है। वादी के दूसरी तरफ निकलें तो आधे किलो मीटर की दूरी पर 'मुज्दल्फ़ा' है, फिर और आगे जाएं तो ६ किलो मीटर की दूरी पर 'अरफात' है।

मिना लम्बाई में बसा है इसकी चौड़ाई कम है। रास्ता और खेमा न भूलने के लिए सबसे पहले आप जमरात की जगह पहचान लीजिए फिर मिना के ऊपर चौड़ाई की सिस्त में तीन पुल हैं। इन का नाम याद कर लीजिए। जमरात से नज़दीक पहले पुल का नाम है किंग खालिद ब्रिज दूसरे पुल का नाम हैं किंग अब्दुल अज़ीज ब्रिज, तीसरा पुल मिना से बाहर मुज्दल्फ़ा की सरहद पर है। उसका नाम किंग फैसल ब्रिज। ज्यादातर हिंदुस्तानी खेमे पहले और दुसरे पुल के आसपास ही होते हैं। तीसरी और सबसे अहम निशानी की ओर खेमे का पत्ता मिना में लगे खंभे हैं, जिनपर नम्बर लगे होते हैं। अगर आप सिर्फ़ इन खंभों पर लिखे नम्बर भी नोट कर ले तो कोई भी आप को आप के खेमे तक पहुँचा देगा।

एहतेयात और तदबीरें :

- मक्का मुकर्मा और मर्दीना मुनव्वरा पहुँचते ही होटल के कॉउटर से उनका शन्याती कार्ड माँग ले और हमेशा अपने पास रखें।
- एहतेयात के तौर पर एक छोटी सी डायरी और पेन जेब में रखा कीजिए और इस में मुंदरज़ैल बार्टें नोट किया किजिए :

 - आप के क़्याम गाह की सिस्त में हरम शरीफ के दरवाजे का नंबर।
 - आप के क़्याम गाह के पास के मशहुर होटल या दुकानों के नाम।
 - मिना में आप के खेमा के नज़दीक खंभे का नंबर।
 - रोज़ मर्ह का आप का खर्च। इस से आप को अपना ठिकाना तलाश करने में आसानी होगी और खर्च बजट के अन्दर रहेगा।
 - तवाफ़ करते वक्त अगर दो लोग भी साथ हों तो अलग अलग हो जाते हैं इस लिए एक दुसरे का हाथ मज़बुती से पकड़ने के बदले हरम शरीफ में दाखिले के वक्त ही आपस में तय कर लें कि इबादत खत्म कर के कहाँ और कब मिलेंगे। हर एक हरम शरीफ में दाखिल होते वक्त बाहर से दरवाज़ा का नंबर नोट कर लें और मुताफ़ या खाना काबा के सेहन की तरफ से जो मेहराब उस दरवाज़ा की तरफ है उस का रंग नोट कर लें (दरवाजे का नाम और नंबर दोनों तरफ लिखे हुए हैं मगर आसानी के लिए मुताफ़ की तरफ से पाँच अहम दरवाज़ों की मेहराबें भी अलग अलग रंग की हैं इस से भूलने का डर कम रहता है।) फिर अगर तवाफ़ करते करते साथ छुट जाए तो साथी को तलाश करने के बदले इबादत जारी रखें और पहले से तय शुदा जगह और वक्त पर हरम शरीफ के दरवाजे पर मिलें।
 - मिना और अरफात में भी भीड़ में साथ छुट जाने का डर रहता है वहाँ तो आप पहले से जगह भी तय नहीं कर सकते, इस लिए वहाँ लोग मुंदर्ज़ैल(भीचे दिए गये) तदबीर एखंतियार करते हैं।
 - एक ग्रुप का हर फर्द एक ही जैसा कोई निशान अपने कपड़े या टोपी या दुपट्टे पर लगाए रहता है, जैसे लाल रिबन या कपड़े के पूल वगैरह इस से एक दुसरे को पहचानने में आसानी होती है।
 - एक ग्रुप में किसी एक शख्स के हाथ में कोई निशानी की चीज़ होती है जो वह बुलाद किये रहता है, जैसे झंडा, छतरी, लकड़ी वगैरह। ग्रुप के बाकी के लोग उस निशान को देख कर उस ग्रुप लीडर के पीछे चलते रहते हैं और खो जाने

पर दूर से ही पहचान कर आ मिलते हैं।

ये दोनों तरीके लोग तवाफ़ करते वक्त भी इस्तेमाल करते हैं।

- iii) तीसरा तरीका मोबाईल का इस्तेमाल है। मगर इसे उस वक्त इस्तेमाल करें जब कोई चारा न हो। मुताफ़ और हरम श्रीफ़ के अंदर मोबाईल बंद ही रखें और हरम से बाहर आकर इस्तेमाल करें। मस्जिद के अंदर दुनियादारी की बातें करने पर फरिश्ते लाना भेजते हैं और मस्जिद-ए-हरम में किया गया एक गुनाह एक लाख गुनाह के बराबर है।

गुमशुदा आज़मीन किराम और सामानः

अगर आपका कोई साथी खो जाये, तो हिंदुस्तानी हज मिशन के ब्रांच आफिस को फौरन इलाज़ दें, और अगर आपका कोई सामान खो जाये, तो भी पहले अपने ब्रांच आफिस A.H.O. को इलाज़ करें और फिर उन के मशविरे पर सऊदी अरब हुक्मत कि गुमशुदा सामान के ब्रांच आफिस में इलाज़ करें।

रक़म का गुम होना या चोरी होना:

अगर आप की रक़म गुम हो जाये या चोरी हो जाये, तो ऐसी सूरत में शोएब आमिर इलाके में मौजूद हिंदुस्तानी मिशन के सदर दफ्तर में इफाद ऐ आम डेस्क से रुजूआँ करें। आप को आरज़ी इस्दाद हिंदुस्तानी आज़मीने इफादा फोरम I.P.W.F. की जानिक से फराहम की जायेगी।

अपने साथी आजिम की मौत हो जाने पर:

अगर आप के किसी साथी की मौत हो जाये, तो मुअल्लिम के दफ्तर और अपने ब्रांच आफिस का मुल्लाज़ करें। याद रखें कि मरहूम की रिहाईश गाह से कब्रिस्तान ले जाने और तदफीन की सारी जिम्मेदारी मुअल्लिम पर आयद होती है। शोएब आमिर में वाकेअँ हिंदुस्तानी हज मिशन का सदर दफ्तर का राब्ता डेस्क इस ज़मन में N.O.C. जारी करता है।

तिब्बी इमरजेंसी इम्दादः

इमरजेंसी की सूरत में हिंदुस्तानी मिशन के ब्रांच के दवाखाने या अस्पतालों से दवा ली जा सकती है, मज़ीद मुश्किल हालात में डाक्टर को अपनी इमारत में भी बुलावाया जा सकता है।

मिना में कोई मसला दरपेश हो तो...

अपने खेमे से हमेशा मुअल्लिम से राब्ता कायम करें। हिंदुस्तानी मिशन के मिना में मौजूद कैप ऑफिस से भी राब्ता कायम कर सकते हैं।

मोबाईल के जरिए रास्ता मालूम करना :

२०१३ में यह खबर मिली है की सौदी हुक्मत ने मिना, मजदल्फा और अरफात का नक्शा इंटरनेट पर लोड कर दिया है। और अगर आप स्टार्ट मोबाईल फोन इस्तेमाल करते हों तो जैसे आप Google map पर सारी दुनिया का नक्शा या रास्ता तलाश कर सकते हैं। इसीतरह मिना में अपने खेमे का रास्ता भी तलाश कर सकते हैं। इस खबर की मालूमात आप अपने मक्का के तयाम में पता कर लें।

हज्जे मक्कूल

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ी.) से रिवायत है के रसूल अल्लाह (स.) से किसी ने अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह (स.) कौन सा अमल ज्यादा अफ़ज़ल है? आप (स.) ने फरमाया: अल्लाह और उस के रसूल अल्लाह पर इमान। अर्ज़ किया, उस के बाद? फरमाया: अल्लाह के रास्ते में जिहाद। अर्ज़ किया, फिर? फरमाया: हज्जे मक्कूल। (बुखारी, मुरिल्लिम)

पहले कौन ?

मैं ५० किलो का दुब्ला पतला इन्सान हूँ, जब मुसल्ले पर खड़ा होता हूँ, तो आधा मुसल्ला खाली रहता है। हरम शरीफ में मुझे उस जगह नमाज़ पढ़ने का बहुत शौक था जहाँ से खानाए काबा साफ नज़र आए। इसी लिए मैं वक्त से पहले हरम पहुँच जाता और मौज़ जगह मुसल्लह बिघाकर बैठा रहता। जैसे जैसे नमाज़ का वक्त करीब आता, आने वाले लोगों की भीड़ बढ़ती जाती। जब सारी खाली जगह भर जाती तो लोग दो नमाज़ियों के दरम्यान कुछ जगह बना कर बैठने लगते।

चैकिंग मेरा आधा मुसल्लह तो खाली ही होता था इस लिए मेरे बग़ल में कोई न कोई ज़सर आ जाता और अगर कोई सेहतमंद हाज़ी आ जाते तो आहिस्ता आहिस्ता वह मुसल्लह के बीच में होते और मैं किनारे और इस तरह अक्सर मैं ने नमाज़ दो मुसल्लों के बीच में पढ़ी, और ये बात मुझे नागवार गुज़रती।

एक दिन मैं ने दिल मैं फैसला किया कि आइंदा किसी को अपने मुसल्ले पर जगह न दुँगा। मेरा इतना सोचना था कि दूसरे दिन से मेरे वक्त से पहले हरम जाने और अपनी मन-पसंद जगह पर नमाज़ पढ़ने की तौफीक छिन गई। मैं खुद देर से जाने लगा। दुसरों से गुज़रिश कर के दरम्यान मैं जगह बना कर बैठने लगा। यहाँ तक कि कभी कभी मुसल्लह भी न ले जा पाता और जनवरी के सख्त सर्दीयों में बर्फ की तरह ठंडी फर्श पर किसी कोने या किनारे नमाज़ पढ़ता। आखिर बहुत तौबा इस्तग़फ़र के बाद फिर तौफीक नसीब हुई।

किसी हाज़ी के लिए सिर्फ बदगुमानी की ये सज़ा के इबादत की तौफीक छिन जाए, तो जो लोग हाजियों को तकलीफ़ पहुँचाते हैं उनका क्या होगा?

जो कोई भी खुदा के घर आता है वह खुदा का मेहमान है और अल्लाह तआला मेज़बान हैं। अगर मेज़बान को खुश करना है, तो इसके मेहमानों की खिदमत को अपना नस्बुलैन बनाना होगा। आप मेहमान से झगड़ा करके, धक्का देकर, पीछे ढक्के कर, उसे तकलीफ़ पहुँचाकर कभी मेज़बान (अल्लाह तआला) को खुश नहीं कर सकते। खुदा न करे कि आप से भी इबादत की तौफीक छिन जाए या इबादत लौटा दी जाए इसलिए एयरपोर्ट पर, बस अड्डे पर या कहीं भी जब ये सवाल हो कि पहले कौन तो आप का जवाब होना चाहिए कि पहले अल्लाह तआला का मेहमान फिर मैं।

- रसूलअल्लाह (स.) ने हजतुल्लिदा के मौके पर फर्माया:

“हमेशा ही मुसल्मानों का कत्ल करना, उन का माल लूटना, उन्हें बे-इज़ज़त करना, उतना ही सख्ती के साथ हराम है जिस तरह मुकद्दस शहर और इस मुकद्दस अरफा के दिन उन का कत्ल करना, माल लूटना, और बे-इज़ज़त करना हराम है। (बुखारी)

- “मुसलमान वह है जिस की ज़बान और हाथ से दूसरे मुसलमान को तकलीफ़ ना हो।” (बुखारी, मुरिल्लिम)

- हज़रत अबू हुरैरा (रज़ी.) से रिवायत है कि रसूलअल्लाह (स.) ने इशाद फरमाया, “हज उम्रह करने वाले अल्लाह तआला के मेहमान हैं। अगर वह अल्लाह से दुआ करें, तो वह उन की दुआ कबूल फरमाए और अगर वह इस से मग़फिरत माँगे तो वह उन की मग़फिरत फरमाए।”

(नसाई, इब्ने माजा, बज़ार)

- हज़रत अबू हुरैरा (रज़ी.) से रिवायत है कि रसूलअल्लाह (स.) ने हाजियों के लिए दुआ फरमाई है? “ये अल्लाह! हज करने वालों को बर्खा दे और जिस के लिए हाज़ी मग़फिरत तलब करे उस को भी बर्खा दे।” (इब्ने खज़ीमा)

इसलिए अल्लाह के मुअ़ज़िज़ मेहमान का खयाल रखें और उन की ऐसी खिदमत करें कि वह आप को दिल की गहराइयों से दुआ दें।



हज के खास दिनों में सवारी का मसला

१. एहसान का बदला :

आप के घर में अगर दस लोग रह रहे हों और बीस मेहमान बाहर से आ जाएं और आप ने उन की खुश दिली से खिदमत की तो मेहमान का क्या फर्ज बनता है? मेहमान को चाहिये कि आप के एहसान का बदला बराबरी के एहसान से चुकायें।

هُنْ جَزَءٌ إِلَّا لِإِحْسَانٍ (سُورَةُ الْمُنْذِرِ، آيةٌ ١٠)

“हल जजाउल इहसानि इल्लल इहसान” (सूरह रहमान, आयतः ६०)

तर्जुमा: नेकी का बदला नेकी के सिवा कुछ नहीं है।

तीस से चालीस लाख लोग हज के अस्याम और रमजान-उल-मुबारक में मक्का शहर पहुँचते हैं। जो मक्का शहर की आवादी से कई बुना ज्यादा है। शहर के लोग और हुक्ममत हर तरह से हाजियों की खिदमत करते हैं। इस लिए हाजियों को चाहिये कि उन के रिक्क में बर्कत् और खुशाली की दुआ करें। (मक्का में दाखिल होते वक्त और बस में इस दुआ को आप पढ़ते भी हैं) और अगर आप से उन को फायदा पहुँचता है तो उसे खुशी से होने दें। तंग दिल न हों, वहाँ के होटल, दुकानें, बस, ट्रैक्सी वैरैरह की बड़ी आमदनी का जरिया हज और रमजान-उल-मुबारक ये दो मवाको ही हैं इस लिए अगर इन दो मौकों पर आप को ऐसा महसूस हो कि वह ज्यादा कमा रहे हैं तो इस का उन को हक् है। और आप को इन की मदद करनी चाहिये और ज्यादा रुपया बैरैर तंग दिल हुए देना चाहिये।

हज़रत बरिद (रजि) से रिवायत है के हुजुर (स.) ने इर्शाद फर्माया के हज में खर्च करना जिहाद में खर्च करने की तरह है।

एक हृदीस में हज़रत आईशा (रजि) से मरी है के हुजुर (स.) ने फर्माया के तेरे उमरे का सवाब तेरे खर्च के बकद्र है यानी जितना ज्यादा इस पर खर्च किया जाएगा उतना ही सवाब होगा।

२. सवारी का इंतेज़ाम :

हज के मौके पर तीस से चालीस लाख लोग एक ही वक्त में एक तरफ सफर करते हैं इतने ज्यादा लोगों के लिए एक ही वक्त सवारीयों का इंतेज़ाम करना मुश्किल ही नहीं इस लिए मुअल्लिम का इंतेज़ाम लोगों को तीन ट्रिप (trip) में बस के ज़रिए मंजिल पहुँचाना होता है। सड़क पर लोगों के अज़दहाम और मोटर गाड़ियों की भीड़ की वजह से वह मुश्किल से दो ट्रिप कर पाते हैं। आखरी ट्रिप के तिराई १/३ लोगों को या तो अपनी मंजिल तक पैदल या प्रायवेट ट्रैक्सी ही में सफर करना पड़ता है।

जो लोग बस के पहली ट्रिप में सवार होते हैं वह दुनियावी नुक्ते नज़र से चुस्त, चालाक और सवारी की मुश्किलों से वाकिफ होते हैं। जो, सब लोगों से पहले पहुँच कर धक्कम पेल कर के बस में सवार हो जाते हैं।

जो लोग सब्र कर के और देर तक इंतेज़ार कर के दुसरी ट्रिप में सफर करते हैं। वह अकरर सीधे सादे, सवारी की तकरीफों से नावाकिफ और भीड़ भाड़ से कतराने वाले लोग होते हैं। आखरी ट्रिप होती ही नहीं। क्योंकि तीसरी ट्रिप तक मंजिल पर पहुँचने का वक्त ख़त्म हो चुका होता है इस लिए वह लोग जिन्होंने ने हज की तर्बियती तालीम हासिल की है और जो मसाइल का इल्म रखते हैं। वह बैरैर बस का इंतेज़ार किये पैदल या प्रायवेट ट्रैक्सी वैरैर ह से ही चल देते हैं। अगर आप को मिना से अरफ़त जाना है तो पहली बस फ़ज़ के फैरैर बाट चली जाती है। और दुसरी ट्रिप के लिए करीब २९ बजे वापस आती है। और हाजियों को लेकर २ बजे तक अरफ़त पहुँचती

है। तीसरी ट्रिप के लिए अगर वापस आना हुआ तो फिर अरफ़त पहुँचते पहुँचते शाम हो जाएगी और वक्त ख़त्म हो चुका होगा इस लिए तीसरी ट्रिप हो ही नहीं पाती। इसलिए अब मुअल्लिम रात ही में जो मस्नून वक्त से पहले है हाजियों को मक्का से मिना और मिना से अरफ़त ले जाना शुरू कर देते हैं। ऐसी मजबूरी की हालत में रात का सफर करना जाइज़ है।

३. पैदल सफर कितना मुश्किल है?

१. मक्का शरीरी से मिना तकरीबन ४.५ से ५ किलो मीटर दूर है।
 २. मिना कि लम्बाई तकरीबन ४.५ से २ किलो मीटर है।
 ३. मुज़दलफा मिना से बिल्कुल लगा हुआ है।
 ४. मिना से अरफ़त ६.५ किलो मीटर है।
 ५. सफा और मरवा की दूरी ३६५ मीटर है।
 ६. जब आप खाने काबा का तवाफ मुकामें इब्राहिम के बिल्कुल करीब से करते हैं, तो एक चक्कर में आप १५० मीटर का सफर करते हैं यानी सात चक्कर में एक कि.मी. से कुछ ज्यादा चलते हैं।
 ७. जब आप खाने काबा का तवाफ काबे शरीफ से १०० फिट की दूरी यानी मुताफ के आखरी हिस्से से करते हैं तो तकरीबन पैने दो कि.मी. की दूरी तय करते हैं।
 ८. सफा और मरवा की दूरी ३६५ मी हैं यानी सात चक्कर में आप तकरीबन पैने तीन कि.मी. चलते हैं।
 ९. उम्र में अगर आप खाने काबा से १०० फिट की दूरी से तवाफ करते हैं और सफा और मरवा के सात चक्कर लगाते हैं। तो ४.५ किलो मीटर की दूरी तय करते हैं यानी मक्का से मिना कि दूरी। अगर आप उम्रह आसानी से कर सकते हैं तो मक्का से मिना भी आसानी से और उतने ही वक्त में जा सकते हैं।
 १०. जब आप मक्का पहुँचते ही उम्रह करते हैं तो उम्रह करते वक्त अपनी जिस्मानी ताकत का भी अन्दाज़ा कर लें। अगर आप बड़ी आसानी से उम्रह कर लेते हैं तो मक्का और मिना का दरम्यानी सफर भी आप बड़ी आसानी से कर लेंगे।
 ११. एक बार उम्रह करने के बाद कुछ देर आराम करने के बाद अगर आप सफा और मरवा के सात चक्कर और लगा सकते हैं, तो आप मिना और अरफ़त के दरम्यान का सफर भी आराम से कर सकते हैं।
 १२. लोग दिन में पाँच से सात बार तवाफ करते हैं ये मक्का और मिना या अरफ़त की दूरी से भी ज्यादा चलना है मगर क्योंकि एक ही जगह पर चलना होता है इसलिए हिम्मत बंधी रहती है और मिना और मक्का या मिना और अरफ़त का सफर भी पैदल नहीं किया हुआ होता है इसलिए इस बारे में सोचकर हिम्मत टूट जाती है इसलिए अपने पहले उम्रह पर बारीकी से गैर कीजिए। अपनी कुबल का अन्दाज़ा लगाइये और अल्लाह की मदद पर भरोसा करके ज्यादा से ज्यादा पैदल सफर करने की कोशिश कीजिए।
 १३. पैदल चलने की बहुत फ़ज़ीलत है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रजी) से रिवायत है कि नबी करीम (स.) ने फरमाया:
- जो मक्का को पैदल हज को जाये यहाँ तक के मक्का से वापस आये यानी तमाम हज पैदल करे, तो उस के लिए हर कदम पर सात सौ नेकियां हरम शरीफ की नेकियों की मिस्ल लिखी जायेंगी। पूछा गया है कि हरम शरीफ की नेकियों की क्या मिकदार है? नबी करीम (स.) ने फरमाया, “हर नेकी लाख

नेकी है।” (इब्न खज़ीमा व हाकिम)। लिहाज़ा इस हिसाब से हर कदम पर सात करोड़ नेकिया हुई। (वल्लाहु जुल्फ़िज़ल अज़ीम)

इसलिए हज़ के अव्याम में हमेशा पैदल चलना सब से अफ़ज़ल है। मगर जो कमज़ोर हैं और इतनी मशक्कत की हिम्मत नहीं उन के लिए मेरा ज़ाती मश्वरा यह है कि आप नीचे दिए गए तरीके से सफ़र कीजिए।

४. मक्का से मिना का सफ़र:

१. मिना जाने से पहले मुअल्लिम से खेमा का नक्शा ले लीजीए। मक्का में आप की रिहाईशगाह से मिना जाने के लिए बस का इतेज़ार कीजिए और बस में ही सफ़र कीजीए क्योंकि मुअल्लिम ७ तारीख की रात से ही हाजियों को मिना पहुँचाना शुरू कर देते हैं और ८ तारीख को १२ बजे आप को मिना पहुँचाना होता है इस लिए बस में अक्सर आराम से जगह मिल जाती है। दूसरी बजाह ये भी है कि बस आप को खेमा तक पहुँचा देगी। पहली बार खेमा ढुँढ़ना भी एक बड़ा मसला है। अगर मुअल्लिम रात में हाजियों को मिना पहुँचाना नहीं शुरू करता तो सुबह में बहुत भीड़ और अफ़रा तफ़री होगी। ऐसे हालात में आप सुबह फ़क्र के बाद ही मिना पैदल चल दीजिए।

अगर आपके साथ औरतें और बुढ़े हैं जो चल नहीं सकते तो आप सब कीजीए और दूसरी या तिसरी बस कि ट्रिप से मिना पहुँचे। क्योंकि आठ तारीख को मिना पहुँचकर आपको सिर्फ़ पाँच वक्त की नमाज़ पढ़ना है। अगर आप दोपहर २ बजे भी मीना पहुँचते हैं तो भी पाँचों वक्त कि नमाज़ आसानी से पढ़ सकते हैं।

अगर आप चल सकते हैं और आप के पास मिना का नक्शा भी है और खेमा तलाश कर लेने का हीसला भी है तो अल्लाह का नाम लेकर पैदल सफ़र शुरू कर दीजीए।

मिना के खेमे में तकरीबन ७० लोगों को रखा जाता है। लोग बड़ी मुश्किल से खेमे में सो पाते हैं जो लोग मिना पहले पहुँचते हैं वो ज्यादा से ज्यादा जगहों को धेर लेते हैं। जिससे आखिर मैं आनेवाले को सामान रखने कि जगह भी नहीं मिल पाती। अगर ऐसा हो तो सब्र से काम लीजिए किसी कोने में सामान रखकर दिनदार लोगों को जमा कीजिए और औरतों के पर्दे के लिए खेमे के दरम्यान का पर्दा गिराकर औरता को खेमे के एक तरफ करने कि कोशिश कीजिए।

ऐसा करने से सब की धेरी हुई ज़ाएद जगह आज़ाद हो जाती है। फिर इंसाफ़ के साथ आपस के सुलह व मश्वरे से हर एक को इन के आसानी के मुताबिक जगह दीजिए। शरीयत के उसूलों पर चलने से न सिर्फ़ आखिरत की ज़िन्दगी बल्कि दुन्यावी ज़िन्दगी भी आसान हो जाती है।

५. मिना से अरफ़ात का सफ़र:

६. तारीख को मिना में फ़ज़ की नमाज़ पढ़कर अरफ़ात के लिए जाना, यह सुन्नत तरीका है और अक्सर लोग ऐसा ही करते हैं, मगर जब तीस लाख लोग एक साथ ऐसा करें, तो क्या हाल होगा? आप इस का अंदाज़ा कर सकते हैं? सख्त अफ़रा तफ़री का आलम होता है। बस और ज़ीप में सब छत के ऊपर तक भरे होते हैं। मिना से अरफ़ात आप का मुअल्लिम की बस में जाना ज्यादा बेहतर है इसकी चार वजूहात हैं:

१. मुअल्लिम आप को अपने अरफ़ात के खेमे में ले जाकर ठहराएगा, जहाँ आप सुकून से बैठ सकते हैं ज़रूरत हुई, तो लेटकर आराम कर सकते हैं। अपने ग्रुप में जमात बनाकर नमाज़ अदा कर सकते हैं, और सुकून से इबादत कर सकते हैं।
२. दोपहर का खाना मुअल्लिम की तरफ से होगा। इसलिए आप को अपने खाने की फिक्र नहीं करनी चाहिए।
३. मुअल्लिम के खेमों के आस पास ही नहाने और ज़खरियात से फ़ारिग़ होने का अच्छा इतेज़ाम होता है। अरफ़ात में गुस्त सुन्नत है।

४. अरफ़ात से वापसी के वक्त भी मुअल्लिम के खेमे के पास ही से इस की बस रवाना होगी। इस लिए अगर आप के साथ ऐसे लोग हैं जो चल नहीं सकते, तो आप को सवारी के लिए आसानी होगी।

अगर आप ने अरफ़ात की तरफ पैदल सफ़र किया और मस्जिद नमरा के करीब पहुँच गये, तो वहाँ इतनी शदीद भीड़ होती है, जैसे; नमाज़ के बाद मुताफ़ में तवाफ़ करते वक्त होती है। इसलिए अगर आप का पैदल सफ़र का इरादा है, तो अरफ़ात से पहले दायें या बायें होकर अरफ़ात में दाखिल हों सीधे रास्ते पर मस्जिद-ए-नमरा है।

मुअल्लिम की बस से सुकून से आपको अगर अरफ़ात जाना है, तो आधी रात को जब इस की पहली बस अरफ़ात के लिए रवाना होगी उस से आप अरफ़ात आ जायें और अरफ़ात पहुँच कर फ़ज़ की नमाज़ अदा करें।

मिना में फ़ज़ की नमाज़ पढ़कर निकलना सुन्नत है। मगर मुसलमानों को तकलीफ़ देना हराम है। अगर आप सुबह तक इतेज़ार करते हैं और सुबह की बस से रवाना होना चाहते हैं, तो उस वक्त जब बस छत तक भर गयी होगी। आप का उस भीड़ में शामिल होना लोगों की परेशानी का सबब बन जायेगे।

अरफ़ात के करीब पहुँचकर आप को लोगों का एक समंदर नज़र आएगा। मगर खबरदार रहिए। जहाँ लोग हैं, वहाँ अरफ़ात के मैदान का होना ज़रूरी नहीं है। अरफ़ात का मैदान एक महदूद जगह है जिसकी निशानदेही कर दी गयी है। वक्फ़अरफ़ा (अरफ़ात में वक्त बिताना) का फ़ज़ इसी जगह रहकर इबादत करने से अदा होगा। मस्जिद-ए-नमरा का कुछ हिस्सा और आसपास का बहुत सा इलाका अरफ़ात के हुदूद के बाहर हैं। जब आप अरफ़ात के मैदान में दाखिल होने लगे, तो अरफ़ात के हृद का बोर्ड ज़स्तर देख लें।

मुज्जल्फ़ा से अरफ़ात के तरफ कुल ११ सड़कें जाती हैं जिन में से २ सिर्फ़ पैदल चलने वालों के लिए और ६ मोटर गाड़ियों के लिए हैं। पैदल चलनेवाली दो सड़कें मुज्जल्फ़ा में मस्जिद अलशअरूल हराम से निकलती हैं इस में सड़क नम्बर एक मस्जिद ए नमरा और सड़क नम्बर दो जबल-ए-रहमत तक गयी हैं, इन सड़कों पर तरीकूल मशाता रकम ९ या २ लिखा हुआ होगा। पैदल चलने वाली सड़क नम्बर एक मोटर गाड़ियों के सड़क नम्बर ४ और ५ के दरम्यान है और पैदल चलने वाली सड़क नम्बर २ मोटर गाड़ियों के सड़क नम्बर ७ और ८ के दरम्यान है।

मस्जिद-ए-नमरा अरफ़ात में दाखिल होते ही हैं। इस का मुज्जल्फ़ा की सिस्त का एक हिस्सा अरफ़ात के हुदूद के बाहर है। जब के जबते रहमत अरफ़ात मैदान के दरम्यान है, इन दोनों जगह पर बहुत ज्यादा भीड़ होती है। अगर आपके ग्रुप में ज्यादा लोग हो और औरते और कमज़ोर लोग हो तो इन दोनों जगहों से दूर ही रहें तो बेहतर है वरना एक दुसरे से बिछड़ जाने का खतरा रहता है।

(२०१२ से मुअल्लिम ६ तारीख की रात में ही हाजियों को ट्रेन के जरिए अरफ़ात पहुँचा देते हैं। यह सफ़र बहुत आसान भी है।)

६. अरफ़ात से मुज्जल्फ़ा का सफ़र:

हर साल तकरीबन ३५ से ४० लाख लोग हज़ करते हैं, मगर मक्का शरीफ से मिना और मिना से अरफ़ात का सफ़र लोग ३ से ४ घंटे के बच्फ़े में करते हैं, यानि किसी ने ३ घंटे पहले और किसी ने ३ घंटे बाद सफ़र शुरू किया। मगर अरफ़ात से मुज्जल्फ़ा का वापसी का सफ़र लोग एक साथ, एक ही वक्त में सूरज डूबते ही करते हैं इस लिए वह गाड़ियाँ जो अरफ़ात के आखरी सिरे पर, यानि मस्जिद-ए-नमरा से दूर होती हैं वह एक ही जगह पर ३ से ४ घंटे खड़ी रह जाती हैं और मुज्जल्फ़ा रात के ३ या ४ बजे पहुँचती हैं। जिस से मग़रिब और इशा की नमाजें क़ज़ा हो जाती हैं। मुज्जल्फ़ा की रात बहुत अहम है। अल्लाह तभाला ने कुरआन शरीफ में शबे कद्र की सिर्फ़ फ़ज़ीलत बयान की है कि ये एक रात हज़ार रातों से ज्यादा अफ़ज़ल है।

فَإِذَا أَفْضَلْتُمْ مِنْ عَرَفٍ فَأَذْكُرُوا اللَّهَ إِنْدَ الْمُشْعَرِ الْحَرَامِ
وَأَذْكُرُوهُ كَمَا هَذِلْمٌ وَإِنْ لَكُنْمٌ مِنْ قَبْلِهِ لَيْسَ الصَّالِيْنَ (١٠٠) ٦٠٠ (١٩٨٥)

मगर अल्लाह तआला ने मुज्दल्फा की रात में अल्लाह तआला को याद करने का हुक्म कुरआन शरीफ में इन अल्काज़ में दिया है:

“فَإِذَا أَفْجَزَ تُومِ مِنْ أَنْ-رَ-فَاتِنَ فَاجْ كُرُولَلَاهَا إِنْدَلَ مَشَارِلِهِ هَرَام، وَاجْ كُرُوكُهُ كَمَا هَذِلْمٌ وَإِنْ لَكُنْمٌ مِنْ قَبْلِهِ لَيْسَ الصَّالِيْنَ”

“जब अरफात से वापस होने लगो तो मशअरे हराम (यानी मुज्दल्फा) में अल्लाह का जिक्र करो और इस तरह करो जिस तरह उस ने तुम को सिखाया और इस से पहले तुम लोग (इन तरीकों से महज़) ना वाकिफ थे।”
(सूह करा-١٦)

अगर मुज्दल्फा आप वक्त पर पहुँच कर इबादत करना चाहते हैं तो पैदल चलने के सिवाय कोई चारा नहीं है। अरफात से मुज्दल्फा तकरीबन ٦ किलो मीटर है। अरफात से मुज्दल्फा के सफर में २० लाख लोग आप के साथ पैदल सफर कर रहे होंगे, इन सब के साथ आप को चलना बहुत अच्छा लगेगा। और अगर आप ठहर ठहर कर आराम से चले तब भी २ से ३ घंटे में मुज्दल्फा पहुँच जाएंगे और अगर थक गए हों, औरतें और बूढ़े साथ हों, तो फिर प्रायवेट टैक्सी से सफर कीजिए क्योंकि बस तो असर की नमाज़ ख़त्म होते ही छठ के ऊपर तक भर जाती है और असल अरफात में दुआ का वक्त असर से मगरिब का है। इस दौरान आप खूब दिल लगा कर इबादत कीजिए और आराम से मगरिब के वक्त चलिये।

मुज्दल्फा और मिना की सरहदें मिली हुई हैं, और अब तो मिना के खेमे जगह की कमी होने की वजह से मुज्दल्फा के अन्दर तक लगाए जाते हैं इस लिए ये सफर पैदल ही किए और इतने नऱ्दीकी के लिए शायद आप को सवारी भी न मिलेगी।

२०१२ के बाद से ट्रेन के जरिए सफर:

२०१२ से सउदी हुक्मत अब ट्रेन से भी हाजियों को मिना से अरफात किर अरफात से मुज्दल्फा और मिना लाने का इंतेजाम किया है। इसका तरीका यह है मिना, मुज्दल्फा और अरफात इन तिनों जगहों पर रेल्वे स्टेशन हैं और हर जगह तीन तीन रेल्वे स्टेशन है। आपका का मुअल्लीम आपको आपके सफर का वक्त पहले से बता देगा ताकि आप इसी वक्त तैयार रहें। फिर मुकर्रमा वक्त पर उस के गाइड आपके ग्रुप के ५०० हाजियों के ग्रुप को एक साथ मिना के रेल्वे स्टेशन पर ले जाएगा। अगर वह आप सबको मिना के रेल्वे स्टेशन नंबर एक पर ले जाता है तो फिर अरफात में भी एक नंबर रेल्वे स्टेशन पर उतारेगा। फिर हर जगह आपको एक नंबर रेल्वे स्टेशन पर ही उतरना या चढ़ना है। इसी तरह अगर २ नंबर रेल्वे स्टेशन से आप ट्रेन पर सवार हुए तो आखिर तक हर जगह आपको २ नंबर रेल्वे स्टेशन पर ही चढ़ना या उतरना है।

ट्रेन की टिकट कलाई में पहनने के एक पट्टे की तरह हैं। रेल्वे स्टेशन नंबर एक के लिए यह निले रंग का होगा, और रेल्वे स्टेशन नंबर २ के लिए पिले और रेल्वे स्टेशन नंबर ३ के लिए हरे रंग का होगा। ट्रेन में सवार होते वक्त अगर किसीने टिकट के बारे में पूछा तो सिर्फ कलाई पर पहने हुए पट्टे को जाहिर करना होता है।

मुअल्लिम आपको पहले बस से मिना ट तारीख की रात में लाएगा। फिर ६ तारीख कि रात में ट्रेन के जरीए आपको अरफात ले जाएगा। वहाँ वह आपको अपने खेमे में रात में ठहराएगा। मिना और अरफात के सारे खाने पीने का इंतेजाम सब मुअल्लिम के जिम्मे ही है। इसलिए वह आपको हर जगह खाने पीने देगा। आप रात अरफात में गुजारियें फिर ६ तारीख का पुरा दिन अरफात में गुजारें, फिर रात का खाना खिलाकर वह आपको ट्रेन से

मुज्दल्फा लाएगा। मुज्दल्फा में रात एक खुले आसमान के नीचे बसर किजिए मगर पानी और बैतुलखला का इंतजाम मुज्दल्फा में भी है। फिर मुज्दल्फा से भी वह आपको सुबह ट्रेन के जरीए मिना लाएगा।

मिना के तयाम में मिना और जमरात के दरम्यान भी अगर आप ट्रेन के जरिए जमरात जाना चाहे तो इसका इंतेजाम भी मुअल्लिम भी करता है। मगर आपको आजामी है कि अगर आप अपने आसानी के मुताबिक अकेले और अपने वक्त पर जाना चाहते हैं तो अकेले भी जा सकते हैं।

८. मिना से मक्का मुकर्रमा का सफर:

जैसा कि पहले बयान हो चुका है कि मक्का शरीफ से मिना की दूरी सिर्फ साढ़े चार से पाँच कि.मी. है। इतनी दूरी तो आप एक उम्राह में तय कर लेते हैं। मक्का से मिना और मिना से मक्का सफर आप पैदल ही तय कीजिए। अगर आप पैदल चलते हैं तो यह सफर आप ३० मिनट के वक्फ में कर लेंगे। सवारी से दो से तीन घंटे भी लग सकते हैं। सवारी के मुश्किलात से वाकिफ सऊदी हुक्मत ने इस मुख्तसर सफर के लिए बैहतरीन सड़कें और सुरंग बनाए हैं। रास्ते में साथ भी किया है और पानी का इंतेजाम भी है। अगर आपका बैग पहनने वाला है और आप को कंधों पर उठाकर नहीं चलना है, तो सफर और भी आसान हो जाएगा। मिना से मक्का के लिए वापसी के पैदल सफर की एक और वजह यह भी है कि आप को १२ तारीख के मगरिब से पहले मिना से निकल जाना है अपने खेमे से, अगर आप वक्त पर पैदल रवाना हुए तो यकीन के साथ मिना से मगरिब के पहले निकल जाएंगे। बस के सफर में अगर ट्राफिक जाम हो तो कभी कभी बस या टैक्सी एक से दो घंटे जगह पर ही खड़ी रह जाती है इस लिए अगर आप सही बूर्ज गुरुब होने तक आप अगर मिना में रह जाते हैं तो आप का मिना में रहना अफजल होगा।

९. हरम के टेक्सी ड्राइवर:-

हरम के टेक्सी ड्राइवरों से अपने क्यामे हरम में हिफाजत कीजिए और टेक्सी ड्राइवरों पर कभी भी भरोसा मत कीजिए। इन में से अक्सर गैर मुल्की और मुजिमाना जहनियत के हैं। उन के जरिए धोका देने और लूटने की अक्सर वारदातें होती हैं।

१०. सफर से मुताबिक कुछ ज़रूरी मालूमातः

मक्का से मदीना, मदीना से मक्का या जिद्दा बगैर हर के सफर के बारे में जानकारी के लिए अपनी इमारतों में चिस्पा नोटिस को पढ़ें या अपने अपने मुअल्लिम के दफ्तर से रस्जुअ़ करें या अपने हिंदुस्तानी हज मिशन ब्रांच के अफिस से राब्ता कायम करें।

मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा के तारीखी मुकामात की ज़ियारत के लिए कई दलाल आप की इमारत या कमरे में आयेंगे। ये हर शख्स से उन मुकामात की ज़ियारत के लिए १५ से २० रियाल या इससे भी ज़्यादा रूपये वसूल करेंगे। ये उनका मुनाफा बख्ता कारोबार है।

अगर आप और कुछ हाजी मिल कर कोन्टर एक्ट वालों से राब्ता कायम करें, तो वासें इतने सस्ते में मिल जाती हैं के फी कस हर शख्स को सिर्फ ५ से १० रियाल ही अदा करने पड़ेंगे।



औरतों का जिहाद, हज है।

हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि मैं ने अर्ज़ किया, या रसूल अल्लाह (स.) हम जिहाद को अफजल समझते हैं, तो क्या हम जिहाद ना किया करें? आप (स.) ने फरमाया, तुम्हारे लिए अफजल जिहाद हज़रे मबरुर हैं। (बुखारी)

सफरे हज में नमाज़ का बयान

पर्दे के साथ दरा और सब से अहम और मुश्किल काम जो आप को करना है, वह है खेमा में बा-जमाअत नमाज़ का इतेज़ाम। मिना में मस्जिद-ए-खैफ है। अगर खेमा मस्जिद से दूर हो तो वहाँ तक पैर्चों वक्त पहुँचना बड़ा मुश्किल होता है। इस लिए खेमा में बा-जमाअत नमाज़ का एहतेमाम करें।

२) मिना के क्याम में इबादत के लिए अल्लाह तआला ने खास ताकीद फरमाई है। अल्लाह तआला फरमाते हैं:

- जब हज के तमाम अरकान पूरे कर चुको तो (मिना में) खुदा को याद करो जिस तरह अपने बाप दादा को याद किया करते थे, उस से भी ज्यादा। (सूरह बकरा आयतः२००)

- और (मिना के क्याम) के दिनों में (जो) गिन्ती के (चंद दिन हैं) खुदा को याद करो। अगर कोई जल्दी करे (और) दो ही दिन में (चल दे) तो इस पर कुछ गुनाह नहीं। और जो बाद तक ठहरा रहे उस पर भी कुछ गुनाह नहीं। (सूरह बकरा)। इस लिए मिना में बहुत ज्यादा इबादत करना चाहिए। मगर आम तौर पर लोग वहाँ सैर व तफरीह, बहस मुबाहिसे और फुजूल बातों में वक्त गंवाते रहते हैं।

३) मिना में तीन वजूहात की बिना पर एक जमाअत बना कर नमाज़ पढ़ना मुश्किल होता है।

(क) नमाज़ के वक्त पर लोगों की ना इत्तेफाकी।

(ख) मस्तक का मसला।

(ग) कसर नमाज़ का मसला।

हुजूर (स.) का इरशाद है, कि जो मेरी एक सुन्नत ज़िंदा करेगा उसे १०० शहीदों के बराबर सवाब मिलेगा।

जमाअत बना कर नमाज़ पढ़ना हुजूर (स.) की सुन्नत है। इस लिए कोशिश कर के जमाअत से नमाज़ पढ़ें। और ऊपर बयान किए गए तीनों वजूहात को आड़े आने ना दें।

४) मिना के खेमे में पहुँचते ही पहले परदे का एहतेमाम करें। फिर तमाम लोगों को एक जगह जमा करके नमाज़ बा-जमाअत की कोशिश करें। और ऐसे शख्स को इमाम बनाएं जिस के पीछे दूसरे मस्तक वालों को नमाज़ पढ़ने में कराहियत ना हो। (जिन हज़रात को कराहियत हो तो बाद में वह खामूशी से अपनी नमाज़ दोहरा ले, मगर हुजूर (स.) की जमाअत से नमाज़ पढ़ने की सुन्नत को ना छोड़ें।

५) चूंकि अल्लाह तआला फरमाते हैं कि अल्लाह तआला को मिना में ज्यादा से ज्यादा याद करो। इस लिए शरीअत के दायरे में ज्यादा से ज्यादा इबादत की कोशिश करनी चाहिए। मुसाफिर की नमाज़ मुकामी इमाम के पीछे हो जाती है इस लिए कोशिश करके ऐसे शख्स को इमाम बनाया जाए जो कि मुकामी हो। इस से वह हाजी जो मुकामी हैं और जिन पर 'कसर' लाज़िम नहीं है उन्हें चारों रक़अत इमाम के साथ नमाज़ पढ़ने का मौका मिलेगा और मुसाफिर हज़रात जो ज्यादा दो रक़अत नमाज़ पढ़ेंगे तो उस का उन्हें ज्यादा सवाब मिलेगा। (अगर सब मुसाफिर हैं तो इमाम का मुसाफिर में से इंतेखाब करना और सब का कसर पढ़ना ज्यादा अफ़ज़ल है।)

६) नमाज़ के इलावा भी ज्यादा से ज्यादा नफ़िल पढ़ने की कोशिश करें या कम अज़ कम नमाज़ पढ़ने की जगह पर ही १५ मिनट से आधा घंटा बैठ कर तस्वीह पढ़ते रहें। इस से दूसरों को भी इबादत करने का शौक होगा। अगर आप अपनी नमाज़ मुख्तसर करके फैरन जगह से उठ जाएंगे तो चूंकि

नमाज़ आराम करने की जगह पर ही होती है। इस लिए इस खौफ से कि दूसरों को तकलीफ होगी हर कोई मुख्तसर करके जगह खाली करने की कोशिश करेगा। इस लिए शरीअत जहाँ तक इजाज़त दे पूरी नमाज़ पढ़ने की कोशिश करें और नफ़िल नमाज़ और तस्वीहात का भी खूब एहतेमाम करें।

७) दो मोअज्जिन और दो इमाम मुकरर कर लें। ताके अगर एक किसी वजह से गैर-हाज़िर हो तो दूसरा ज़रूर अज़ान दे सके और नमाज़ पढ़ा सके। नमाज़ का वक्त भी काग़ज पर लिखकर खेमे में लटका दें ताकी सब को हमेशा याद रहे।

अल्लाह तआला मुसलमानों में इत्तेहाद पैदा करो। इमाने कामिल अता फरमाए और दुनिया व आखिरत दोनों जगह कामयाब फरमाए, आमीन।

कसर नमाज़ का बयान:-

- अगर कोई अपने शहर से ७८ कि. मि. दूरी के सफर का इरादा करता है तो उस शख्स का अपने शहर को छोड़ते ही मुसाफिर में शुभार होगा।
- अगर वह शख्स मंजिल पर पहुँच कर १५ दिन से कम रहने का इरादा रखता है तो उस शख्स का दूसरे शहर में भी मुसाफिर ही में शुभार होगा। और १५ दिन से ज्यादा रहने का इरादा हो तो फिर वह शख्स सिर्फ रास्ते के सफर में ही मुसाफिर होगा और मंजिल पहुँच कर मुकामी हो जाएगा।
- मुसाफिर के लिए ४ रक़अत वाली फर्ज़ नमाज़ २ रक़अत होंगी। जिन्हें 'कसर' कहते हैं।
- मुसाफिर अगर सुन्नत और नफ़िल ना पढ़े तो कोई गुनाह ना होगा। अगर पढ़ लें तो उसे सुन्नत और नफ़िल के मुताबिक ही सवाब मिलेगा। (सवाब कम न होगा।)
- मुसाफिर के लिए फर्ज़ नमाज़ के इलावा फ़ज़्र की २ सुन्नत और इशा की ३ वित्र पढ़ना लाज़िम है।
- मुसाफिर अगर मुकामी इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ता है तो उस की नमाज़ बिला कराहियत दुरुस्त होगी। और उसे इमाम के साथ पूरी नमाज़ पढ़नी होगी।
- मुकामी हज़रात अगर मुसाफिर इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ते हैं तो उन की भी नमाज़ हो जाएगी। मगर जब इमाम कसर की २ रक़अत नमाज़ पढ़ कर सलाम फेरे तो मुकामी हज़रात बैरे सलाम फेरे उठ कर बाकी २ रक़अत पूरी कर लें।
- मुसाफिरत के अन्याम में जब मुसाफिर तन्हा नमाज़ पढ़े तो हनफी मस्तक के मुताबिक उसे कसर नमाज़ पढ़ना लाज़िम है। जब कि दूसरे मस्तकों के मुताबिक सिर्फ जायज़ है, लाज़िम नहीं।
- सऊदी उलमा का मस्तक हंबली है, इस लिए सऊदी में सारी नमाज़े हनफी मस्तक के नमाज़ के वक्त से बहुत पहले पढ़ी जाती हैं। किसी भी मस्जिद में हंबली मस्तक के वक्त के मुताबिक अगर आप जमाअत से नमाज़ पढ़ते हैं तो आप की नमाज़ हो जाएगी। लेकिन अगर आप अकेले नमाज़ पढ़ते हैं या मिना में सारे हाजी हनफी मस्तक से हैं और अपनी अलग जमाअत बना कर नमाज़ पढ़ते हैं तो उन्हें हनफी मस्तक के मुताबिक जो नमाज़ का वक्त है उस वक्त पर नमाज़ पढ़ना चाहिए।

मिना में क्या आप मुसाफिर हैं?

- ७८ किलोमीटर दूरी के सफर के बाद अगर आप नहीं जगह में १५ दिन से ज्यादा रोज़ रहने का इरादा करते हैं, तो आप वहाँ मुकामी होंगे मगर नए जगह पर भी अगर आप का दो मुस्तकिल जुदा-जुदा जगह पर ठहरने का इरादा हैं और हर एक जगह पर भी आप क्याम का इरादा १५ रोज़ से कम होंगा तो आप मुसाफिर में ही शुमार होंगे।
- पहले जमाने में मक्का मुकर्मा एक शहर था और मिना दो पहाड़ीयों के दरम्यान एक बाबी थी। दोनों जुदा-जुदा थे। मिना में आबादी न थी। या मक्का मुकर्मा से मुसलसल आबादी का सिलसिला मिना न था। इसलिए दो अलग-अलग शुमार किए जाते थे और अगर किसी हुज्जाज कि रिहाईश मक्का मुकर्मा में हज से पहले १५ दिन से कम होती तो वह मक्का मुकर्मा और मिना मुज्दल्फा और अरफात में मुसाफिर ही शुमार होता था और उसे कसर पढ़ना लाज़मी होता था।
- मगर अब मिना और मुज्दल्फा का इलाका मक्का शहर में शामिल कर लिया गया है और आप खुद ही देखें कि मक्का मुकर्मा से मुसलसल १९ आबादी का सिलसिला फैला हुआ है और मिना के मुतवाज़ी पहाड़ पर रिहाईशी इमारतों की एक कतार सी है। और अजिजिया का इलाका जहाँ हिन्दुस्तानी हाज़ी रहते हैं। वह जमरात से तिल्कुल करीब है।
- सन २००६ इसी में यह भी खबर भिली है कि अरफात भी मक्का मुकर्मा शहर में शामिल कर लिया गया है, और वैसे भी हाज़ी अरफात में रात नहीं गुज़ारते हैं सिर्फ अरफात जाकर शाम तक वापस आते हैं।
- इसलिए अब वह हज़रात जिनका कुल क्याम १५ दिन से कम होगा सिर्फ वही मुसाफिर शुमार किए जाएंगे। वरना सब मुकामी होंगे। कुल क्याम यानी हज के अव्याम से पहले मक्का मुकर्मा के क्याम के दिन, हज के पाँच दिन और हज के बाद मक्का मुकर्मा में क्याम के दिन इन सब दिनों की जमा या सब दिन मिलाकर १५ दिन से कम होंगे तो हाज़ी मुसाफिर हैं वरना मुकामी।

वकूफे अरफात और नमाज़:-

- मिना और मुज्दल्फा यह दोनों मुक्कदस मुकामात मक्का मुकर्मा शहर में शामिल होने के बाद अब अक्सर हाज़ी मुकामी ही होते हैं और उन्हें नमाज़ पूरी ही पढ़नी होती है।
- अरफात में शानदार और कुशादा मस्जिद, मस्जिदें नमरा है। यहाँ ज़ोहर के वक्त ही ज़ोहर और अस्र दोनों नमाज़ें एक साथ कसर कि तरह (दो-दो रकात करके) पढ़ी जाती है। अगर आप मुकामी हैं तो मस्जिदे नमरा में कसर नमाज़ किस तरह पढ़ें, यह अपने उल्मा से दरयापत कर लें।
- मालिकी और हम्बती मसलक के मुताबिक, मुकामी और मुसाफिर सबके लिए अरफात में कसर पढ़ना जायज़ है। जब कि हनफी के नज़दिक मुकामी शरूस अरफात में कसर नमाज़ नहीं पढ़ सकता, उसे पूरी नमाज़ ही पढ़नी होगी। हनफी मसलक के मुताबिक मुकामी इमाम कसर नमाज़ पढ़ा ही नहीं सकता। और मस्जिदें नमरा का इमाम मुकामी होता है और कसर पढ़ता है। मगर यह मालिकी और हम्बती के नज़दीक जायज़ है।
- जिन लोगों ने बार बार हज किया हैं उनके तर्जुबे के मुताबिक, उनकी राय है कि अगर आप शुप में हैं और आप के शुप में औरते और बुढ़े हैं तो भूल कर भी मस्जिदे नमरा मत जाइयें। क्योंकि वहाँ इतनी शरीद भीड़ होती है कि नमाज़ तो दरकिनार सीधा खड़े होने या बैठने के लिए भी जगह मिलना मुश्किल होता है। और एक दुसरे से बिछड़ जाना तो यकीनी है।
- इसलिए मिना में ६ ज़िलहज्जा कि रात या सुबह जब मुअल्लिम अपने बस से आप को अरफात में अपने खैमे पर ले जाता है तो आप उसके साथ चले

जाएं। खैमे पर दोपहर का खाना मुअल्लिम कि तरफ से होगा। खैमे पर पूरे दिन इमिनान से इबादत कीजिए। नमाज़ के वक्त नमाज़ पढ़ें और बकिया वक्त तस्विहात में मशुल रहें।

- हनफी मसलक के मुताबिक अगर आप मस्जिदें नमरा से दूर अपने खैमे में नमाज़ पढ़ते हैं तो ज़ोहर के वक्त ज़ोहर नमाज़ पढ़ें और अस्र के वक्त अस्र पढ़ें दोनों का साथ मिलाकर न पढ़ें और अगर आप मुकामी हैं तो पूरी नमाज़ पढ़ें, कसर न पढ़ें।
- अरफात में भी अपने खैमे के लोगों के साथ जमात बनाकर नमाज़ पढ़ें। नमाज़ के पहले अज्ञान का और जमात के पहले तकबीर का एहतोमाम करें।
- हरम शरीफ कि नमाज़ और अरफात के दिन मस्जिदें नमरा की नमाज़ रेडीओ और टिव्ही पर नशर होती हैं। मगर आप इन की आवाज़ पर अपने खैमे में जमात का तस्वीर करके नमाज़ नहीं पढ़ सकते। जमात के लिए जरूरी हैं कि सब बन्दी हो। इतना के लिए जरूरी हैं कि इमाम और मुकद्दी के दरम्यान कोई इतना बड़ा मैदान या खाली जगह न हो जिसमें वह सफे कायम हो सकती है। या इतनी बड़ी सड़क न हों कि बैल गाड़ी गुज़र सकें। दरम्यान में कोई खैमा या मकान वगैरा हाइल न हों इसलिए अगर मस्जिदें नमरा कि आवाज़ आप लाउड स्पीकर पर सुन रहे हो मगर दरम्यान में फासला हो तो इस आवाज़ पर नमाज़ न पढ़ें।

मुज्दल्फा में नमाज़:-

- अरफात में सूरज झुबने के बाद मगरिब की नमाज़ पढ़ें बगैर आप मुज्दल्फा कुच करना हैं, और मुज्दल्फा पहुँचकर मगरिब और इशा दोनों नमाज़ों को जमा करके एक साथ पढ़ना चाहिए।
- अगर आप इशा की नमाज़ से पहले ही मुज्दल्फा पहुँच गए तो भी आप मगरिब की नमाज़ न पढ़ें बल्कि इशा तक इंतजार करें। फिर इशा का वक्त होने पर एक अज्ञान और एक तकबीर से पहले मगरिब की फज़्र पढ़ें। फिर इशा की फज़्र पढ़ें फिर इसके बाद दोनों नमाज़ों की सुन्नत, नफिल और वित्र पढ़ें।
- मुज्दल्फा में सुबह सादिक तक यह नमाज़ कज़ा में शुमार न होंगे। इसलिए जब भी मुज्दल्फा पहुँचे अगर मुमकिन हो तो जमात बनाकर नमाज़ पढ़ें और अगर जमात बनाना मुम्किन न हो तो अकेले ही नमाज़ पढ़ लें।
- फज़्र की नमाज़ का वक्त होते ही मुज्दल्फा में तोप का गोला दागा जाता है ताकि हाज़ी नमाज़ का सही वक्त मालूम कर लें।
- अगर आप शुप में हैं तो मुज्दल्फा में भी सुबह सादिक के बाद फज़्र की अज्ञान दें। फिर जमात बनाकर नमाज़ अदा करें और वज़ाईफ व तबीहात में मशुल रहें, और सुरज निकलने से पाँच मिनट पहले मिना की तरफ कुच करें।

नमाज़ी के सामने से गुज़रना कब जायज़ हैं?

- नवी करीम(स.) का इश्वाद हैं कि अगर कोई नमाज़ी के सामने से गुज़रने का अज्ञाव जान जाये तो ४० साल खड़ा रहकर इंतजार करेगा। मगर सामने से न गुज़रेगा। (बुखारी-अबुदाऊद)
- कोई तवाफ करने वाला अगर नमाज़ी के सामने से तवाफ करते हुए गुज़रें तो ऐसी हालत में न तवाफ करने वाले पर गुनाह हैं न नमाज़ी पर।
- हम्मी मसलक के मुताबिक किसी दुसरे शरूस को नमाज़ी के सामने से गुज़रने के बारे में दो कौल हैं। एक कौल में नमाज़ी के मकामें सजदे के आगे से गुज़र सकते हैं। और दुसरे कौल में नमाज़ी से दो सफ आगे से गुज़र सकते हैं। दो सफ के मानी हैं एक नमाज़ी की सफ और एक उससे आगे की सफ। बड़ी मस्जिदों के लिए यहीं हुक्म हैं।

(बाकी पेज 24 पर)

- मस्तिष्ठान नववी (स.) और मस्तिष्ठान हराम में हज के दिनों में इतनी भीड़ होती है कि नमाज़ी के सामने से गुज़रने के सिवा कोई चारा नहीं रहता। इन हालात में अपनी तरफ से पुरी कोशिश करें कि दुसरे कौल पर अमल हों और अगर वह नामुम्किन हो तब ही पहले कौल पर अमल करें यानी नमाज़ी के मुकाम सजदे के आगे से गुज़रें।
- मस्तिष्ठान नववी (स.) और मस्तिष्ठान खैफ के बाहर लोग फर्ज नमाजों के लिए इस तरह सब बंदी करते हैं कि सफ इमाम से आगे बढ़ा लेते हैं। अगर मुक्तदी इमाम से आगे हो जायें तो मुक्तदी की नमाज़ नहीं होगी।

जमात की एहमियत:-

हज़रत इब्ने मसुद (रजी.) से रिवायत है कि उन्होंने कर्माया: जिस शख्स को इसका शैक हो कि वह क्यामत के दिन मुसलमान की तरह अल्लाह के सामने पेश हो वह पाँचों वज्रत की नमाज़ उस मस्तिष्ठान में जहाँ अज़ान दी जाती है वाजमात अदा करें। अल्लाह तआला ने तुम्हारें नबी को जो तरीका हिदायत अता कर्माया है उसमें पाँचों नमाज़े बाजमात पढ़ना भी शामिल हैं तो अगर तुमने अपने घरों में पढ़ती जैसा यह पीछे रह जाने वाला अपने घर में पढ़ता है तो बेशक तुमने अपने नवी (स.) की सुन्नत तर्क कर दी, और तुमने अपने नवी (स.) की सुन्नत तर्क कर दी तो तुम गुमराह हो गयें। हमने किसी सहावी को जमात से गैर हाजिर होते नहीं देखा, जमात से वहीं शख्स गैर हाजिर होता था जो खुला हुआ मुनाफिक होता था, बीमार भी दो आदमीयों के सहारे से आकर सफ में शामील हो जाते थे। (मुस्तिष्ठान)

नमाज़ के लिए ममनु औकात:-

ऐन तुलु अफताब, ऐन ज़वाल अफताब, ऐन गुरुब अफताब में इन वक्तों पर नमाज़ होती ही नहीं हैं। चाहें आप अपने बतन में हो या हरम शरीफ में।

- अगर आप नफिल नमाज़ शुरू करके नीयत तोड़ दें तो वह नफिल नमाज़ आप के लिए वाजिब हो जाती है। जिसे आपको दोबारा पढ़ना लाज़ीम है।

अगर “नफिल नमाज़ ही तो थी” ऐसा कहकर छोड़ देंगे और दोहराएंगे नहीं तो गुनाहगार होंगे।

- इसी तरह तवाफ के बाद दो रक़अत नफिल अगर आपने ममनु औकात में पढ़ा हैं तो पहले तो वह नमाज नहीं होगी। इसलीए आपका तवाफ, बौर नमाज़ के अधुरा ही रहा। फिर अगर आपने नमाज दोहराया नहीं तो गुनाहगार भी होंगे। इसलीए हरम में ममनु नमाज़ के औकात का खास ख्याल रखें।
- मस्तिष्ठान हराम में मुकामें इब्राहीम पर नमाज़ पढ़ना अफ़ज़्ल है। मगर यह मुकाम अब तवाफ करने वालों के रास्ते के बिल्कुल दरम्यान हैं। इसलीए अगर इस मुकाम पर कोई नमाज़ के लिए खड़ा हो जाए तो तवाफ करने वालों को सख्त तकलीफ होती है। मुसलमानों को तकलीफ देना हराम हैं। इसलीए अफ़ज़्ल काम करने कि जुस्तजु में हराम काम करने से बचे।
(फलेह अलबारी, शरह अल हदिस ७७८३)
- सारी नसीहों को नज़र अंदाज करके अगर आप मुकामें इब्राहीम पर नमाज पढ़ने के लिए बज़ीद हैं तो यह बात याद रखें कि अब यह इस मुकाम पर नहीं हैं जिस मुकाम का जिक्र है। वह मुकाम तो खाने काबा के बिल्कुल करीब था। और दुसरी बात यह याद रखें की अभीरूल मोमीनीन हजरत उमर (रजी.) ने जिस काम को रुकावट समझा और उस मुबारक पथर उसकि मुबारक जगह से हटा दिया। आज आप खुद ही रुकावट बनने के लिए बज़ीद हैं। इसलीए तवाफ करने वालों का ख्याल रखें और इतना पीछे हटकर नमाज पढ़े कि आपसे किसी को कोई परेशानी न हो।



नमाजे जनाज़ा:-

हज के अव्याम में जो हाजी इन्टेकाल कर जाते हैं उनको दफनाने की जिम्मेदारी हुक्मत की होती है। वह मर्यादा को नहलाकर कफन पहनाकर हरम शरीफ में लाते हैं। फर्ज नमाज के बाद उनकी नमाजे जनाजा पढ़ी जाती है किर उन्हें दफनाया जाता है। चुंके हज के अव्याम में तकरीबन हर फर्ज नमाज के बाद नमाजे जनाजा पढ़ी जाती है। इसलीए हम उसका तरीका मुख्तसर तौर पर यहां बयान करते हैं।

नमाजे जनाजा:- यह नमाज सिर्फ खड़े रहकर पढ़ी जाती है। और उसमें चार तक्बीरे होती है। उसके पढ़ने का तरीका इस तरह है।

- नमाज का ऐलान होने के साथ नमाजे जनाजा की नियत कर ले। नियत की मैंने नमाजे जनाजा की पीछे इस इमाम के दुआ वास्ते उस मयत के अगर आप सिर्फ दिल में नमाजे जनाजा पढ़ने की नियत भी करेंगे तो नियत हो जाएगी जबान से कहने की जरूरत नहीं है।
- जब इमाम अल्लाह हु अकबर कहे तो कानों तक हाथ उठाकर नमाज की तरह हाथ बांध ले और सना पढ़े।

- जब दूसरी बार इमाम अल्लाहू अकबर कहें तो बौर हाथ उठाए दरूदे इब्राहीम पढ़े। (वह दरूद जो नमाज पढ़ी जाती है।)
- जब तिसरी मरतबा इमाम अल्लाहू अकबर कहे तो बौर हाथ उठाए जनाजे की नमाज में पढ़ी जाने वाली दुआ पढ़े अगर याद ना हो तो सिर्फ इतना पढ़े। (.....)
- जब इमाम चौथी मरतबा अल्लाहू अकबर कहे तो हाथ छोड़ दें और सलाम फेर ले। शाहफई, हम्बली और अहले हदीस हजरत हर तकबीर पर हाथ उठाते हैं और दूसरी तकबीर के बाद सूरह हम्द पढ़ते हैं। जबकी हन्फी हजरत दूसरी तकबीर के बाद सना पढ़ते हैं। और सिर्फ एक बार शुरू में हाथ उठाते हैं। हरम के इमाम हन्फी मस्लिम के हैं वह सिर्फ एक तरफ सलाम फेरते हैं। हन्फी हजरत दूसरी तरफ भी खुदसे सलाम फेर ले।

अरबी आयत टाईप करना बाकी है।

मस्लक का मसला

- रिवायात में है कि बनी इस्राईल में एक बुजुर्ग थे, उन्होंने अल्लाह तआला से दुआ कि के या अल्लाह! तु मुझे दुनिया की फिक्र से आज़ाद कर दे, ताकि मैं शब व रोज़ तेरी इबादत किया करूँ। अल्लाह तआला ने उनकी सुन ली। उन को एक ज़ीरा पर पहुँचा दिया। ज़ीरा पर एक अनार का पेड़ उगा दिया और एक चश्मा जारी कर दिया। वह बुजुर्ग रोज़ एक अनार खाते, चश्मा का पानी पीते और शब व रोज़ खुदा की इबादत में मशयूल रहते।

अपनी पाँच सौ साल की उम्र में वह बैरेर गुनाह किये मुसल्सल इबादत करते रहे। उन की वफ़ात के बाद जब फरिश्तों ने उन्हें खुदा के हुजुर पेश किया तो अल्लाह तआला ने फर्माया कि जा मैंने तुझे अपने फ़ज़्ल से बख़ा दिया।

बुजुर्ग को बड़ा अजीब सा लगा और उन के दिल में एक गुमान सा गुज़रा कि मेरी बाल्धिश के लिए तो मेरी पाँच सौ साल की इबादत सबब है। अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से मुझे कैसे बख़ा?

अल्लाह तआला तो दिलों की बात भी जानता है। उस ने फरिश्तों को हुक्म दिया कि उन्हें जन्नत में ले जाओ, मगर पैदल।

जन्नत का रास्ता जहन्नम के ऊपर से हो कर गुज़रता है। पुले सिरात जो के ऊपर है उस पर से हर एक को पार होना है। अल्लाह के नेक बदे इस पुल से बिजली की तेज़ी से गुज़र जाएंगे, मगर जो नेक नहीं उन्हें मुश्किल होगी।

जब फरिश्ते बनी इस्राईल के बुजुर्ग को पैदल जन्नत के तरफ़ ले कर चले तो जैसे जैसे जहन्नम नज़दीक आती गई गर्मी की शिद्दत बढ़ती गई। बुजुर्ग को घास लगी और गता सूखने लगा। जब और करीब पहुँचे तो घास की शिद्दत इस कदर बढ़ी कि बर्दाश्ट से बाहर हो गई। इस वक्त एक हाथ नमूदार हुआ। उस हाथ में एक का ग्लास पानी था। उस ने बुजुर्ग से कहा यह पानी ख़रीदना चाहते हों, तो ख़रीद लो। बुजुर्ग की घास से जान जा रही थी। पूँछ कितने में दोगे? आवाज़ आई, पाँच सौ साल की इबादत के बदले। बुजुर्ग के पास पाँच सौ साल की इबादत तो थी ही, फौरन इबादत दे कर पानी ख़रीद लिया और पी लिया।

जब फरिश्तों ने बुजुर्ग की नेकियों के ज़खीरे को खाली पाया तो जन्नत का सफर रोक दिया और वापस खुदा के हुजुर में पेश किया।

अल्लाह तआला ने फर्माया कि मैंने तुम्हें जिन्दी के हर फिक्र से आज़ाद किये रखा और पाँच सौ साल तक शब-व-रोज़ खाना खिलाता रहा, पानी पिलाता रहा और सारी ज़रूरतें पूरी की। तुम ने पानी के एक गिलास की किमत पाँच सौ साल की इबादत तय की है। अब मैंने जो पाँच सौ साल तक तुम पर एहसानात किये और अपनी नेमतें अता कीं, उस का तुम ने कैसे शुक्र अदा किया, उस का हिसाब दो।

बनी इस्राईल के बुजुर्ग सिजदे में गिर गए। तौबा किया और फरमाया:

“ऐ अल्लाह, वेशक तु जिसे अपने फ़ज़्ल से बख़ा देगा सिर्फ़ वही जन्नत में जाएगा।”

- हज़रत अब्दुल्ला इब्न उमर (रज़ी.) का बयान है कि नबी करीम (स.) ने फरमाया जो शब्द सुब्दान अल्लाह कहेगा तो उसके नामें अमाल में एक लाख नेकिया लियी जाएगी। तो किसी ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसुल! (स.) उसके बाद हम लोग किस तरह जहन्नम में जाएंगे? आप (स.) ने फरमाया “कसम हैं उस जात की जिसके कब्जे में मेरी जान है, आदमी क्यामत के दिन इतने अमाल लेकर अयेगा कि अगर वह किसी पहाड़ पर रख दिए जाएं तो पहाड़ भी न उठा सकें तो किन उसका जब मुकाबला होगा अल्लाह की किसी ने अमाल

से तो यह ने अमाल के सारे आमाल पर भारी होगी।” (इसलिए नेक आमाल पर किसी को गुरुर नहीं होना चाहीए। अल्लाह तआला की रहमत और उसके फ़ज़्ल व ऐहसान ही के नतीजें में जन्नत मिल सकती।) (तिबरानी)

- हज़रत उमर फ़ाख़क (रज़ी.) का कौतूहल है कि अगर अल्लाह तआला मुझे जहन्नम की सज़ा देगा तो ये उस का अद्वा (इंसाफ़) होगा और अगर मुझे जन्नत अता करेगा तो ये उस का फ़ज़्ल होगा।

- नबी-ए-करीम (स.) कफ़ारत है:

لن ينجي أحدكم عمله
ولانت يارسو الله
لا لا ان يغழني الله برحمته

तर्जुमा : तुम में किसी को किसी का अमल निजात नहीं दिलाएगा बल्कि अल्लाह का फ़ज़्ल निजात दिलाएगा।

हज़रत अईशा (रज़ी.) ने सवाल किया : या रसुल अल्लाह (स.) के आपका अमल भी आप को नजात नहीं दिलाएगा?

नबी अकरम (स.) ने फरमाया मुझे भी मेरा अमल निजात नहीं दिलाएगा। जबतक अल्लाह ही का फ़ज़्ल दस्तगीरी न करें और मुझे अपनी रहमत में न ढाप लें। मेरा अमल भी निजात दिलाने वाला नहीं है। फ़ज़्ल खुदा वन्दा ही निजात दिलाने वाला है। (मिश्किन)

- नमाज़ के लिए पाकी शर्त है। अगर मामूली सी भी गंदगी कपड़ों में या जिसमें लगी हो तो नमाज़ नहीं होती। आप हालते जनाबत में हों, गंदगी आप के जिसमें और कपड़ों पर लगी हो और पानी मुयस्सर न हो तो अल्लाह तआला फरमाता है कि तैयमुम कर के नमाज़ पढ़ लो। (अनिसा : ४३)

तैयमुम में भिट्टी पर हाथ मार कर चेहरे और हाथ का मसह करना होता है। क्या सिर्फ़ भिट्टी से मसह करने से गंदगी दूर हो जाती है? नहीं ये सिर्फ़ एक फ़ार्मलीटी (अमल) है। असल में अल्लाह तआला आप की नीयत, आप का खुलूस, और आप की कोशिश देखते हैं और इसी के बिना पर ऐसी इबादत जो कि कबूल करने लायक भी नहीं कबूल कर लेते हैं।

अल्लाह तआला सारी कायनात के खालिक व मालिक हैं। उन्हें किसी की इजाजत की ज़रूरत नहीं और न किसी को अपने किये का हिसाब देना है। वह जैसा चाहें वैसा करें।

- वह आलिम जो सारी दुनिया पर उंगली उठाते हैं और अपना मस्लक छोड़ कर बाकी हर एक मस्लक को ग़लत बताते हैं। जाइए उन से ज़रा कहिये कि “हज़रत, आप अच्छी तरह पाक हो जाइये, खाना काबा में जाइये और पूरी तवज्ज्ञ हो और खुलूस के साथ नमाज़ पढ़िये और फिर नमाज़ पढ़ने के बाद गारंटी दीजिये कि अल्लाह तआला आप की उस नमाज़ और इबादत को ज़रूर कबूल करेंगे।

दुनिया का कोई इंसान खुद अपनी इबादत की गारंटी नहीं दे सकता वह दुसरों की इबादत की गारंटी कैसे दे सकता है कि अल्लाह तआला उस की इबादत नहीं कबूल करेंगे?

- खिलाफ़ते अब्बासिया में शिया-सुन्नी के इख्लोलाफ़ का ज़ोर इस कदर था कि इसी में खिलाफ़त का खात्मा हो गया। मगर वहाँ के भीख में फ़कीरों का धंदा बहुत ज़ोरों पर था और इन की कमाई उरुज पर थी। फ़कीरों का एक गिरोह दरिया-ए-दजला के पुल के एक किनारे पर होता और उन का दुसरा गिरोह दुसरे किनारे पर होता। ये पुल बीच शहर में वाके था।

एक गिरोह हज़रत अली (रज़ि.) और अहले बैत के मुनाकिब गाता था। दुसरा गिरोह हज़रत अबुबकर (रज़ि.), हज़रत उमर (रज़ि.) के फ़ज़ाइल में नग़मा सुगा होता था और शिया सुन्नी ग़ज़रने वाले दोनों गिरोहों को खूब-खूब नवाज़ते थे और नकदी से उन की हिम्मत अफ़ज़ाई करते। इसी तरह फ़कीरों के दोनों गिरोह सुबह से शाम तक बड़ी बड़ी रकम जमा कर लेते और रात को यकजा होकर आपस में बाँट लेते थे।

- कथामत के दिन सबसे पहले आलिम अल्लाह तआला के सामने पेश होंगे। अल्लाह तआला फ़माएंगा कि ऐ मेरे बन्दे मैंने तुझे दिन का इल्म दिया था बता तुम मेरे एहसान का कैसे शुक्रिया अदा किया?

आलिम कहेगा कि ऐ अल्लाह मैंने तेरे दिए हुए इल्म को दीन रात तेरे बदों तक पहुँचाया है।

अल्लाह तआला कहेगा, तू झूट कहता हैं। फरिश्ते भी इसके झूटे होने की गवाही देंगे। अल्लाह तआला फ़रमाएंगा तू इसलिए तक़रीरें करता था कि लोग तेरी तारीफ करे और यकीनन दुनिया में तेरी तारीफ हो चुकी और तुझे तेरे काम का बदला मिल चुका।

फिर उस आलिम को घसीटकर जहन्नुम में डाल दिया जाएगा। इस हदीस में आगे शौहदा और अमीर के लिए इसी तरह के फैसलों का बयान है। (मुस्लिम) तो कथामत के दिन वह लोग जो सबसे पहले जहन्नुम में जाएंगे वह आलिम ही होंगे।

- मुसलमानों के बाहरी इश्तेलाफ़त से फायदा उठाने वाले बग़वाद के भीख माने वाले ही नहीं थे बल्कि आज भी इन की तरकीब से फायदा उठाने वाले बेरेलवी, देवबंदी, अहीले हदीस, शिया, सुन्नी और मुसलमानों के दूसरे इश्तेलाफ़ी नज़रयात से फायदा उठाने वाले आलिम हमारे बीच में मौजूद हैं।
- नबी करीम (स.) ने फरमाया, अगर तुम हक पर हो फिर भी बहस व मुबाहसे में न पड़ों तो मैं तुमको जन्मत के करीब एक घर की गंरटी देता हूँ। (अबूदूअ्ज़)

इस हदीस और ऐसी बहुत सारे अहादीस और कुरआनी आयात के जानने के बावजूद हजारों आलिम आप को ऐसे भिलेंगे जिनकी ज़िदीया का मकसद ही

दुसरे मसलकों पर कीचड़ उछालना और बुरा भला कहना है। एक हदीस के मुताबिक जिस की रावी हज़रत अबु दरदा है जो किताब अहमद में दर्ज है। (मुंतखीब अबबाब सफा ११२)।

अल्लाह तआला ने बहुत सारे इन्सानों को सिर्फ जहन्नुम के लिए ही पैदा किया है इसलिए इन इश्तेलाफ़ी उलमा को अपने तर्ज़अमल पर ग़ौर करना चाहिए और देखना चाहिए कि कहीं वह इन्हीं लोगों जैसे काम तो नहीं कर रहे हैं, जिनका जहन्नुम में जाना यकीनी है।

बुजुर्गों और दोस्तों! अल्लाह के लिए इनसे होशीयार रहें और इनकी इश्तेलाफ़ी बातों पर यकीन मत कीजिए क्योंकि यह अपने ज़ाती इज्जत व शौहरत और फायदे के लिए लोगों को आपस में लड़ाते हैं।

- मजबूरी में जैसे गंदगी लगी होने के बावजूद तैयमुम कर के नमाज़ पढ़ी जा सकती है। इसी तरह की मजबूरी से सफरे हज में आप दो चार होंगे। आप मजबूर हैं कि न आप हरम शरीफ के इमाम को बदल सकते हैं और न इस का मस्लक। अल्लाह और अल्लाह के रसूल (स.) का हुक्म है कि नमाज़ जमाअत से मस्जिद में पढ़ी जाए और अजान सुनने के बाद बगैर शऱिع मजबूरी के घर में नमाज़ नहीं होती। इस लिए खुदा के इस हुक्म को मानते हुए हरम शरीफ में जमाअत से ही नमाज़ पढ़ें। अल्लाह तआला आप की कोशिश आप की नियत और आप का खुलूस देखते हुए इंशा अल्लाह उसे न कबूल करने के लायक होगी तो भी कबूल फ़र्माएंगे। आमीन। और वैसे भी अल्लाह तआला खुलूस ही देखते हैं और मग़फिरत अपने फ़्ल से फरमाते हैं।
- आप नफ़रत के ज़ज्बे से अलग अकेले या जमाअत बना कर नमाज़ पढ़ते रहे तो जब बनी इस्ऱाईल के बुजुर्ग पौंछ सौ साल की इबादत के बल बुते पर भी जन्मत न हासिल कर सके तो क्या आप अपने घमंड में सहीउल्लक्षीदा इमाम के पीछे या अकेले सिर्फ कुछ साल की ज़िन्दगी की इबादत के बल बुते पर जन्मत हासिल कर लेंगे?

• बुजुर्गों और दोस्तों, हरम शरीफ में एक नमाज़ का सवाब एक लाख नमाज़ों के बराबर है और वही नमाज़ अगर जमाअत के साथ अदा करेंगे तो २७ लाख नमाज़ का सवाब मिलेगा।

इस लिए अल्लाह के वास्ते इस हज के मुकद्दमा सफर में मस्लक के इश्तेलाफ़त से बाहर आ जाएं और कोशिश करें कि आप हर नमाज़ हरम शरीफ ही में पढ़ें और वह भी जमात के साथ।

- अगर उलमा का बयान सुन सुन कर आप का ज़हन ऐसा हो गया है कि जमात से नमाज़ पढ़ने में आप को कराहियत महसूस हाती है तो अपनी नमाज़ बाद में दोहरा लें। मगर जमात से नमाज़ पढ़ कर २७ लाख गुना सवाब ज़खर हासिल करें, वरना यह आप की ज़िंदगी की एक बहुत बड़ी महसूमी होगी।

अल्लाह तआला आप की हर इबादत को कबूल फ़रमाए, आप की हर जाइज़ दुआ को कबूल फ़र्माए और हजे मबरूर अता फ़रमाए। आमीन।

मअ़ज़ूर की तरफ से हज

हज़रत इब्न अब्बास रज़ि० से रिवायत है, कि एक औरत ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह (स०), अल्लाह तआला ने अपने बन्दों पर हज फ़र्ज़ किया मेरे बाप पर ऐसे ज़माने में फर्ज हुआ के वह बिल्कुल बूढ़े हो गये, सवारी पर ठहर नहीं सकते, तो क्या मैं उनकी तरफ से हज कर सकती हूँ...? आप सलललाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया...हाँ, (बुख़री, मुस्लिम)

हज़रत तुकीत बिन अभिर से रिवायत है, कि वह नबी करीम स०की खिदमत में हाजिर हुए और फरमाया या रसूल अल्लाह मेरे बाप बहुत बूढ़े हैं ना हज कर सकते हैं ना उम्रा और ना ही चल सकते हैं, और ना ही सवार होने की कृत्वत ही रखते हैं, तब अल्लाह के रसूल सलललाहु अलैह वसल्लम ने फरमायाके तुम अपने बाप की तरफ से हज बैतुल्लाह व उम्रा कर सकते हो। (अबू दाउद, तिर्मिज़ी)

रिज़क में बर्कत

हज़रत अब्दुल्लाह इब्न मस्तुद (रज़ि.) से रिवायत है, रसूल अल्लाह (स.) ने इशार्द फ़र्माया कि, हज और उम्रा पे दर पे किया करो क्यों कि हज और उमरा दोनों फ़क व मोहताजी और गुनाहों को इस तरह दुर कर देते हैं जिस तरह लोहार और सोनार की भट्टी लोहे और सोने चॉन्दी का मैल कुचैल दूर कर देती है। और हज मबरूर का सिला और सवाब तो बस जन्मत ही है। (जामा तिर्मिज़ी, निसाई)

पेज नं ६ से हज के दौरान मिलने वाले शिनाखती कार्ड और उसकी अहमियत

हज गाईड़:

हज कमेटी की तरफ से आप को एक किताब दी जाएगी। इसमें हज की मालूमात के साथ बहुत सारे अहम पते और फोन नम्बर हाँगे। इस किताब को आप गौर से पढ़ लीजिए और ज़खरत के मुताबिक मातृमात का इस्तेमाल करें। अगर आपको हज के सफर में कोई शिकायत हो या आप कोई सलाह देना चाहते हैं, तो इस किताब में बहुत सारे बज़ीरों और सिफारतकारों (Counslators) वैराग के पते और फोन नम्बर हैं, इन सब जगह खुलूत लिखें। हुकूमत और मिनिस्टरों ने हज में होने वाली मुश्किलतों को नज़र अंदाज़ कर रखा है। अगर लाखों हाजी इस सिलसिले में उहें खुलूत लिखें तो ज़खर उन के कान पर जूँरेंगें। (इस पाठ के फोटो नं १ से ६ पेज नंबर ८७ पर हैं)

रमी जमार

- मिना वह वार्दी है जहाँ से हजरत इब्राहीम (अ.) ने हजरत इस्माईल (अ.) को ले कर ज़िबह करने के लिए गुज़े थे और तीन जमात वह मुकाम है, जहाँ शैतान ने इन हज़रात को बढ़काने की कोशिश की थी और जवाब में धृतकारा गया। शैतान उस वक्त भी ज़लील हुआ था और हजरत इब्राहीम (अ.) की सुन्नत अदा करके शैतान को कंकरी मार कर हाजी आज भी उसे ज़लील करते हैं।
- जिस जगह हजरत इब्राहीम (अ.) ने शैतान को कंकरियां मारी थीं, उस जगह की निशान दही के लिए सुतून खड़े किये गए हैं। इन खम्बों में शैतान नहीं है, न ही इन खम्बों को ही कंकरी मारना है, बल्कि असल कंकरी मारने की जगह इन खम्बों की बुनियाद या ज़ड़ है। जम्रह इसी ज़ड़ या बुनियाद को कहा जाता है। इस लिए आप की कंकरी या सीधे खम्बों की ज़ड़ के पास पिरे या खम्बों से टकरा कर अहाते के बाहर जा गिरी तो आप की वह कंकरी बेकार होगी। इसे गिना नहीं जाएगा। इस के बदले आप को एक और कंकरी मारनी है और अगर आप ने इस की जगह दूसरी कंकरी नहीं मारी तो आप का रमी का रुक्न अधूरा रहा।
- छोटे पथरों (कंकरियों) के फेकने को अरबी में रमी जमार कहते हैं। (रमी यानी फेकना, जमार यानी पथर की छोटी कंकरीया)
- रमी जमार हज का वाज़िब रुक्न है और उसके तर्क करने पर हज़ हो जाएगा मगर दम देना लाज़िम होगा।
- जम्रह के नज़दीक कंकरिया चुनना या नापाक जगह से कंकरिया लेना मकरुह है। कंकरियों को मारने से पहले थो लेना मुस्तहब है। (लाज़मी नहीं हैं)
- हर जम्रह को ७ कंकरिया मारी जाती हैं। अलाहिदा अलाहिदा मारना ज़खरी है। अगर एक से ज़्यादा या सातों एक ही दफा मारें तो एक ही कंकरी शुमार कि जाएगी अगर अलग अलग अलग अलग गिरी हो। इस लिए बाकी गिनती पूरा करना ज़खरी होगा।
- ७ कंकरियों से ज़्यादा मारना मकरुह है। शक हो जाने की वजह से ज़्यादा मारे तो कोई हर्ज नहीं।
- अगर किसी ने एक दिन चार कंकरिया कम मारी हो या तीनों दिन मिलाकर ११ कंकरिया कम मारी हो या एक दिन रमी जमार तर्क कर दिया हो या तीनों दिन रमी जमार तर्क कर दिया हो। इन चारों गलतियों में से अगर आप सिर्फ एक गलती करें या चारों गलती करें आप को सिर्फ एक ही दम देना होगा।
- अगर १० वीं जिल्हिज्जा के दिन ३ या इससे कम कंकरिया न मार सके और बाकी दिनों की रमी में से १० या उससे कम कंकरिया न मार सके। (सदका का मिकदार फिरे के बराबर यानी पैने दो किलो गेहूँ है) यानी अगर किसी ने दो कंकरिया कम मारी है तो उसे दो सदका यानी साढ़े तीन किलो गेहूँ सदका करना होगा।
- जम्रह से पांच हाथ की दूरी से कंकरी मारना सुन्नत हैं। इससे ज़्यादा दूर से भी मार सकते हैं मगर और करीब से मारना मकरुह है।
- कंकरी पकड़ने का कोई खास तरीका नहीं है। लेकिन अगुठे और ऊंगली से पकड़ना मुस्तहब हैं और रमी के लिए हाथ इतना ऊँचा करना भी मुस्तहब हैं कि बगल खुल जाएँ।
- कंकरी मारते वक्त सिर्फ एक कंकरी एक बार में मारें। कंकरी मारने से पहले

यह पढ़ें:

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

“बिस्मिल्लह अल्लाहु अकबरा रगु-मन लिशैतानि व रजियन लिरहमाना”
तर्जुमा : मैं अल्लाह तआला के नाम से शुरू करता हूँ। अल्लाह सब से बड़ा है। यह कंकरी शैतान को ज़लील करने और अल्लाह पाक को राजी करने के लिए मारता हूँ।

ऊपर लिखी दुआ में अगर अल्काज में फेर बदल हो जाएगा तो गुनाह होगा। इस लिए बेहतर है आप अपनी जुबान में कहें कि मैं शैतान को ज़लील करने और अल्लाह पाक को राजी करने के लिए मारता हूँ और फिर बिस्मिल्लह अल्लाहु अकबर कह कर कंकरी मारें। कंकरी का एहाते में गिरना ज़रूरी है। एक कंकरी एक ही बार में मारें। अगर आप ने एक से ज़्यादा कंकरी एक बार में मारी तो वह एक ही गिनी जाएगी।

- १० जिल्हिज्जा को सिर्फ बड़े शैतान (जम्रह उङ्बा) को सात सात कंकरियां मारना है और पहली कंकरी मारते हुए तलविया पढ़ना बंद कर दें। ११, १२, १३ जिल्हिज्जा को तीनों जुरे पर रमी करना है। पहले छोटे शैतान को फिर दरम्यानी शैतान को और आखिर में बड़े जम्रह को इसी तरतीब से रमी करना सुन्नत है।
- रमी में कंकरिया पे दर पे मारना मसनून है। एक के बाद दूसरी कंकरियां मारने में ताड़ीर करना मकरुह है। इसी तरह एक जुम्रह पर रमी के बाद दूसरे जम्रह पर रमी में दुआ के इलावा, बिला वजह ताड़ीर करना मकरुह है।
- जम्रह ऊला (छोटा शैतान) और जम्रह वस्ता (दरमियानी शैतान) पर रमी के बाद किल्ला रुख हो कर देर तक दुआ मांगना सुन्नत है, और यह दोनों मुकामात दुआओं की कबूलियत के खुशूसी मुकामात में से हैं, इस लिए यहाँ रुक कर कम अज कम इतनी देर रुख कर दुआ करें जितनी देर में २० आयतें पढ़ी जा सकती हैं। (सुरें: बकरा पढ़ने में जितना वक्त दरकार है, नबी करीम (स.) उतनी देर रुक कर दुआएं माँगी थी)
- जम्रह उङ्बा (बड़ा शैतान) के रमी के बाद किसी भी दिन दुआ के लिए ठहरना सुन्नत नहीं है।
- रमी करते वक्त किसी खास रुख की तरफ मुँह करके खड़े होने की कोई शर्त नहीं है। आप हर सिस्त से रमी कर सकते हैं। १०, जिल्हिज्जा को जब नबी करीम(स.) ने जम्रह उङ्बा का रमी किया था, उस वक्त आप की दाहिनी तरफ मिना और बायीं तरफ मक्का मुकर्मा था। इसलिए इस रुख पर खड़े होकर रमी करना सुन्नत है। (मुअल्लिमुल हुज्ञाज)
- एक कंकरी के फौरन बाद दूसरी कंकरी मारना और एक जम्रह पर रमी बिला ताड़ीर रमी करना सुन्नते मुअकिदह है। इसलिए अगर कोई अपनी रमी जमार के बाद किसी और का भी रमी जमार करना चाहता है, तो अफ़ज़ल यह है, कि पहले तीनों जमात पर अपनी रमी पूरी कर लें, फिर दूसरों की रमी शुरू से करें। मगर अब यह मुस्किन नहीं क्योंकि ऐसा करने के लिए कई किलो मीटर का चक्कर लगाना पड़ेगा। इस लिए अब जमात पर पहले अपनी कंकरियां मारें फिर दूसरों शख्स की तरफ से कंकरियां मारें।
- शरिअत के मुताबिक १० जिल्हिज्जा को रमी जुमार का अफ़ज़ल वक्त तुलूओं आफताब से ज़वाले आफताब तक है और ११, १२, १३ तारीख को ज़वाल से ले कर गुरुबे आफताब तक है। मुबाहे वक्त १० तारीख को ज़वाल से गुरुबे

आफ़ताब तक और ११, १२, १३ तारीख को गुरुबे आफ़ताब से सुबह सादिक तक है।

- हर साल करीब ३५ से ४० लाख हाजी हज करते हैं और इतने लोगों का एक अफ़ज़ल वक्त पर एक ही जगह जमा होना हर साल किसी न किसी हादसे की वजह बनता है और कीमती जानें जाया होती हैं। हव्वीस शरीफ के मुताबिक मुसलमान का मुसलमान को नुकसान पहुँचाना हराम है और अफ़ज़ल वक्त पर रमी जुमार करना सिर्फ़ अफ़ज़ल है। इसलिए उल्मा ने फ़तवा दिया है कि अफ़ज़ल काम करने की जुस्तज़ू में हराम काम न करें और अफ़ज़ल वक्त जुमार करने की बजाए मुबाहे वक्त (जो के हर तरह से बिला कराहियत जायज़ है।) पर रमी जुमार करें उल्मा की इन नसीहों पर अमल करना हर समझदार मुसलमान के लिए ज़रूरी है क्योंकि कुछ लोग अफ़ज़ल वक्त पर हर हाल में जम्रात पर ज़रूर जमा होंगे, इसलिए समझदार हज़रत इस मुकाम से अफ़ज़ल वक्त में दूर रक़्त भीड़ को कम करने में मदद करें और हादसात को टालने में मदद करें। इस नीयत और खुलूस पर अल्लाह तभ्लाह और ज्यादा अज़र देगा (इशा अल्लाह)
- औरतों, बूढ़ी और कमज़ोरों के लिए कराहियत कंकरी मारने का वक्त सुबह सादिक तक, इस फ़तवा के पहले भी था और अब तो सब के लिए है।
- रमी जुमार जाने से पहले अपने एहराम की चादर करें और अच्छी तरह से लपेट लें। कोई सामान या बैग वैगरह हरागिज़ न लें। कोई ऐसा कपड़ा न पहने जिसके दुसरों के कदमों के नीचे दबने का ख़तरा हो। भीड़ में अगर आप की चादर या ओढ़नी या बैग किसी के कदमों के नीचे दब गया, तो उसे फौरन अपने से जुदा कर दें। झुककर या बैठकर कोई चीज़ निकालने या उठाने की हरागिज़ कोशिश न करें वरना जान का ख़तरा है।
- जब जम्रात के करीब पहुँचे, तो दायें और बायें होकर ज़रा आगे बढ़ जायें और अखिरी सिरे से कंकरी मारें क्योंकि जोशीले लोग जम्रात के करीब पहुँचते ही कंकरी मारने लगते हैं, इसलिए पहले सिरे पर बहुत अफ़रा तफरी होती है।
- बहुत सारे तंदुरस्त लोग खुद कंकरी मारने के बदले किसी और को अपना वकील बना कर कंकरी मारने के लिए मुकर्रर करते हैं। यह ग़लत तरीका है और इस से हज का रुक्न अदा नहीं होगा। वकील के ज़रिये उसी की कंकरी मारना दुरुस्त होगी जो शरई तौर पर मानूर है। जो खड़े रह कर नमाज़ पढ़ सकता है और चल फिर सकता है उन्हें खुद कंकरी मारना लाजिम है। वरना दस्त देना होगा।
- मुज़दलफ़ा से सीधे जम्रात की रमी के लिए सामान वैगरह ले कर नहीं जाना चाहिए बल्कि पहले अपने खेड़ों में जायें फिर वहाँ से रमी जम्रात करने के लिए जायें।
- हर मुल्क के लिए रमी जम्रात के अलग अलग औकात हुक्मते सऊदिया ने तथ किये हैं, ताकि जम्रात के अतराफ़ लोगों की ज़खरत से ज़्यादा भीड़ न हो जाये। अपने मुअल्लिम से वक्त माअलूम करके ही रमी जमरा के लिए रवाना हों।
- जम्रात के लिए गुप में रवाना हों। गुप के एक फर्द के हाथ में उंची लकड़ी, झण्डा, छतरी या कोई निशानी दे दें ताकि गुप के बिकाया लोग अगर दूर दूर भी चलें, तो भी साथ साथ ही रहें और कोई बिछड़ने न पायें।
- जम्रात पर किसी तरह का साज़ व सामान न ले जायें। माअजूर को व्हील चेयर पर न लें जायें, और न ही बच्चों को ले जायें। कंकरी मारने के बाद वापस आते वक्त अगर आप ग़लत सड़क पर निकल आए तो आप को कई कि.मी. का का ज़ाइद सफर पैदल करना होगा। इसलिए आप सही रास्तों का खुसरी खयाल रखें।
- हज के चार दिनों में चालीस लाख लोग शैतान को ४६ से ७० कंकरी मारते हैं। अगर एक जगह पर यह कंकरियां जमा की जाएं तो कंकरियों का पहाड़

बन जाएगा। मगर जम्रात के पास आप गौर कीजिए के कंकरियों का कोई ढेर नहीं होता है। क्योंकि मकबूल कंकरियां फ़रिश्ते चुन ले जाते हैं और यह हडीस शरीफ भी है। (रावी हज़रत अबु सईद खुदरी-किताब-हाकिम)

आप भी इस मोअ्जिज़े का मुशाहिदा करके अपने ईमान को ताज़ा कर लें।

(नोट:- २०१२ के बाद सउदी हुक्मतने रमी जुमार के लिए पांच मंजीला पुल नुमा इमारत बना दी है। अब रमी जुमार के वक्त पहले की तरह ना लोगों की भीड़ होती है और ना किसी तरह का जान का खतरा होता है। अब आप इतीनान के साथ रमी जुमार के अरकान अदा कर सकते हैं।)



दुआओं का बयान

- हज़रत अबु हुयेरा (रज़ी.) रावी हैं कि रसूले खुदा (स.) ने इशाद फरमाया: “जब तुम में से कोई शश्स दुआ माँगे तो ऐसा न कहें: ऐ अल्लाह! मुझे बख्श दें अगर तू चाहे, मुझपर रहम कर अगर तू चाहे, मुझे रिक्ख अता कर अगर तू चाहे, बल्कि पूरे यकीन व ऐतिमाद के साथ माँगे (शक व शुभा का कलमा मसलन अगर तु चाहे वैरी इस्तेमाल न करें) क्योंकि अल्लाह तआला वर्ही करता हैं जो वह चाहता हैं। उसपर कोई ज़ोर और ज़बरदस्ती करनेवाला नहीं” (बुखारी)
- हज़रत नोमान बीन बशीर (रज़ी.) रावी हैं कि रसूले खुदा (स.) ने इशाद फरमाया: “दुआ इबादत हैं।” फिर आप (स.) ने यह आयत फरमायीः

وَقَالَ رَبِّكُمْ إِذْ عُونَىٰ أَسْتَعِبْ لَكُمْ (سورة مُونَّا: २०)

“व का-ल-र-ब्बुकुमुद-ऊरी अस्तजिब लकुम।”

तर्जुमा: “और तुम्हारे परवरदीगार (रज़ी.) रावी हैं कि मुझसे माँगों, मैं तुम्हारी दुआ कबूल करूँगा।” (अहमद, तिरमिज़ी, अबू दाऊद, निसाई, इब्ने माजा)

- हज़रत सलमान फारसी (रज़ी.) रावी हैं कि रसूले खुदा (स.) ने इशाद फरमाया: “तकदीर को दुआ के इलावा और कोई चीज़ नहीं बदलती और उमर को नैक के इलावा और कोई चीज़ नहीं बढ़ाती।” (तिरमिज़ी)
- हज़रत अबु हुयेरा (रज़ी.) रावी हैं कि रसूले खुदा (स.) ने इशाद फरमाया: “जो शश्स चाहता हैं कि तंगी और सख्ती के वक्त अल्लाह तआला उसकि दुआ कबूल करें, वह उसअत व फराखी के ज़माने में बहुत दुआ करता रहें।” (तिरमिज़ी)
- हज़रत उमर बिन खत्ताब (रज़ी.) रावी हैं कि एक मरतबा मैंने नवी करीम (स.) से उमराह करने की इजाज़त माँगी तो आप (स.) ने मुझे इजाज़त अता फरमायी और इशाद फरमाया: “ऐ मेरे छोटे भाई, अपनी दुआ में हमें भी शरीक कर लेना और दुआ के वक्त हमें न भुलना।” हज़रत उमर (रज़ी.) फरमाते हैं कि रसूल (स.) ने ऐसा कलमा इशाद फरमाया की अगर इसके बदले में मुझे तमाम दुनिया भी दे दी जाएं तो मुझे खुशी न होंगी। (अबू दाऊद)
- हज़रत अबु हुयेरा (रज़ी.) रावी हैं कि रसूले खुदा (स.) ने इशाद फरमाया: “तीन दुआएं कबूल की जाती हैं। इन की कबूलीयत में कोई शक नहीं। एक तो बाप की दुआ, दूसरी मुसाफिर की दुआ और तीसरी मज़लूम की दुआ।” (तिरमिज़ी, अबू दाऊद, इब्ने माजा)
- हज़रत अनस (रज़ी.) रावी हैं कि रसूले खुदा (स.) ने इशाद फरमाया: “तुम में से हर शश्स को अपनी तमाम हाज़ितें अपने परवरदीगार से माँगनी चाहिए। यहाँ तक की अगर उसके जुर्ते का तस्मा भी टूट जाएं तो उसे भी खुदा से माँगो।” (तिरमिज़ी)

एहराम का बयान

एहराम क्या है?

१. एहराम के माझे हैं बेहुरमती न करना या अपने ऊपर किसी चीज़ को हराम कर लेना।
२. हज और उमरा में हम नीयत और तल्खिया के साथ अहराम की दो चादरें पहन कर बहुत सारी चीज़ें अपने ऊपर हराम कर लेते हैं, जैसे; हजामत करना, खुशबू लगाना, सिले हुए कपड़े पहनना वगैरह वगैरह। इस लिए इस हालत को एहराम कहा जाता है।
३. आम तौर पर लोग सफेद चादर को एहराम कहते हैं। जिसे हाजी एहराम की हालत में पहनते हैं, वह दरअसल एहराम की चादरें हैं, बजाते खुद एहराम नहीं हैं। इन चादरों को आप जितनी बार चाहें तब्दील कर सकते हैं, मगर एहराम की हालत से बाहर आने के लिए आप को उम्रह या हज के सारे अरकान मुक्कम्पल करने होंगे। यहाँ तक के अस्यामे हज में सिर मुँदवाने के बाद और घर के कपड़े पहनने के बाद भी एहराम की कुछ पाबंदियाँ आप पर बाकी रहती हैं जो के तवाफे ज़ियारत के बाद ही ख़त्म होती हैं। जैसे; अज्जदाजी ताभलुकात (वैवाहिक संबंध)
४. हज का एहराम १ शवाल से ६ ज़िल्हिज्जा का दिन गुज़र कर सुबह सादिक तक पहन सकते हैं। उम्रह का एहराम हज के खास दिन के अलावा कभी भी पहन सकते हैं।
५. मीकात से बाहर रहने वालों के लिए एहराम मीकात से पहनना वाजिब है।
६. मर्दों का एहराम २ मिटर X ९ मिटर की बगैर सिली हुई दो चादरें होती हैं। एक चादर को पहनना और एक को ओढ़ना होता है। (साइज की कोई पाबंदी नहीं है।)
७. बगैर सिली चादर का मतलब है कि उस में इंसानी जिस्म की साझत के एतबार से कोई चीज़ सिली हुई न हो। जैसे आस्तीन वगैरह। बगैर सिली का मतलब यह नहीं है कि उस में सुई धागा न लगे। ज़रूरत पड़ने पर आप चादर की जगह गोदड़ी या रज़ाइ वगैरह ओढ़ सकते हैं। जो कि कई चादरों की तह को सी कर बनाई जाती है।
८. एहराम की चादरें सफेद हों तो अफ़ज़ल है। मज़बूरी में आप रंगीन चादरें भी इस्तेमाल कर सकते हैं।
९. एहराम की हालत में पैर के ऊपर (पंजो के पीछे) की उभरी हुई हडिडियों का खुला रहना ज़रूरी है। इस लिए ऐसा जूता, चप्पल न पहिनें के हडिडियाँ छुप जायें। अगर आप हवाई चप्पल या स्लीपर पहिनें, तो यह हड़डी खुली रहती है।
१०. एहराम की हालत में मर्द को सिर और चेहरा खुला रखना है और औरतों को सिर्फ़ चेहरा। इसलिए एहराम की हालत में मर्द और औरत दोनों को अपने चेहरे को इस तरह ढाकना मना है कि कपड़ा चेहरे को छुए। चेहरे के कुछ हिस्से को भी ढाकना मना है जैसे: रुख्खसार, नाक, या ठोड़ी वगैरह। (औरतें टोपी और रुमाल बांधते बक्त एहतियात करें कि पेशानी न ढ़क जाये।)
११. एहराम पहनने से पहले खुशबू जिस्म पर लगाना सुन्नत है। मगर एहराम पहन कर किसी भी तरह का खुशबू का इस्तेमाल करना जायज़ नहीं है। (खुशबू जिस्म पर इतना कम लगायें कि एहराम के चादर पर इस का दाग न पड़े)

१२. एहराम बांधने से पहले दोनों हाथों, पैरों के नाखून काटना, नापाक बाल साफ करना और गुस्त करना मुस्तहब है। बुजू या गुस्ता, एहराम के लिए फ़र्ज़ या वाजिब नहीं है, लेकिन इनको बिला उज़्जर तर्क करना मक़रूह है।

१३. एहराम पहन कर एहराम की नीयत से पहले दो रक़अत नमाज़ अदा करना सुन्नत है। बिला नमाज़ भी एहराम की नीयत की जा सकती हैं मगर बिला वज़ह ऐसा करना मक़रूह है।

- एहराम पहनने के बाद पहले से आप पर जो पाबंदियाँ थीं, वह तो बाकी रहती हैं, जैसे; बदकलामी, फुश्श बातें, फ़िस्क व फुजुर और ज़ंग व जिदाल वगैरह। इनके अलावा भी आप पर कुछ और मज़ीद पाबंदियाँ आयद हो जाती हैं। उन की तफ़तील मुंदर्ज़ाज़ेल (नीचे दिए गए) हैं:

एहराम की पाबंदियाँ :

१. बाल न काटें न तोड़ें। (बुजू करते बक्त खुद से जो बाल टूट जाए, तो इस पर दम नहीं है)
२. नाखून न तराशें न तोड़ें। (टूटे हुए नाखून को काट सकते हैं)
३. मर्द न सिर ढाँपे और न ही चेहरे पर कपड़ा लगाने दें। मोज़ा या दस्ताना पहनना, सिर और मुँह पर पट्टी बांधना भी मना है। आप साये में रह सकते हैं। छतरी इस्तेमाल कर सकते हैं, सिर पर सामान रख कर चल सकते हैं। मगर टोपी, रुमाल, चादर या कोई चिपकने वाली चीज़ से सिर नहीं ढाँप सकते।
४. चेहरे पर कपड़ा न लगायें। अगर चेहरे से पसीना पोछना हो, तो हाथ से पोछ कर हाथ कपड़े से पोछ लें।
५. अपने जिस्म के कपड़े और खाने पीने की चीज़ों में खुशबू न इस्तेमाल करें।
६. किसी शिकार किये जाने वाले खुशकी के जानवर को न मारें, न बिदकाए और न ही दुसरों की इस काम में मदद करें। न ही जिस्म में पैदा होने वाले कीड़ों को मारें जैसे ज़ुँ वगैरह, न जिस्म का मैल धोयें। आप नहा सकते हैं मगर बगैर साबुन के और बगैर मैल छुड़ाएं।
७. एहराम की हालत में अज्जदाजी ताभलुकात (वैवाहिक संबंध) पर भी पाबंदी होती है।

एहराम के सही हाने की शर्तें:

- एहराम के सही होने के लिए इस्लाम का होना शर्त है (यानी हज करने वाला मुसलमान हो।)
- एहराम की नियत और तल्खियाह और कोई ज़िक्र इस के कायम मुकाम करना भी शर्त है। (मुअल्लिमुल हुज़जाज, पेज १००)

एहराम की वाजिबातः

- एहराम की हालत में कोई सिला हुआ कपड़ा न पहनना। (शुरू से आग्निर तक)
- मीकात से या उससे पहले एहराम बांधना।
- मनूआत एहराम से बचना।

एहराम की सुन्नतें:

- गुस्त करना और एहराम बांधने से पहले खुशबू लगाना।

- एक लुंगी और एक ऊपर ओढ़ने वाली चादर से एहराम बांधना।
- एहराम से पहले नाखून काटना।
- एहराम पहनकर एहराम की नीयत से दो रकअत नमाज़ अदा करना।
- एहराम की इब्लदा, 'लब्बैक' से करना और फिर बार बार लब्बैक कहते रहना।

एहराम के मसाइल:

- अगर खुद से कोई बाल गिर जाये, तो कोई सज़ा नहीं।
- अगर तीन से कम बाल तोड़े, तो हर बाल पर एक मुट्ठी गेहूं सदका करें।
- तीन से ज्यादा बाल मगर चौथाई सिर से कम बाल दूर किये, तो सदका दें। (9.75 किलो ग्राम गेहूं)
- अगर चौथाई सिर या दाढ़ी या इससे ज्यादा बाल साफ़ किये, तो दम वाजिब है।
- अगर अलग अलग हाथ पैर से एक या दो नाखून काटे, तो हर नाखून के बदले सदका देना होगा।
- अगर एक ही बार में चारों हाथ और पैर के नाखून काटे, तो एक दम देना होगा।
- अगर चार बार में चारों हाथ पैर के नाखून काटे, तो चारों दम देना होगा।
- अगर चेहरे या सिर पर एक घन्टा से कम वक्त तक कपड़ा लग रहा था, तो एक मुट्ठी गेहूं या उसकी कीमत की रकम खैरात करना वाजिब है।
- अगर एक घन्टा से ज्यादा मगर एक दिन या एक रात से कम वक्त तक कपड़ा ढ़का रहा, तो पौने दो किलो गेहूं और अगर एक दिन या एक रात तक या इससे ज्यादा देर तक सिर ढ़का रहा और चेहरे पर कपड़ा लगा रहा, तो दम वाजिब होगा।

- इसी तरह अगर पांव की बीच की उठी हुई हड्डी जूते वैगैरह से ढक जाती है और अगर एक घन्टा से कम वक्त तक ढकी रही, तो एक मुट्ठी गेहूं। एक घन्टा से ज्यादा पर 9.75 किलोग्राम गेहूं और एक दिन या एक रात तक या इससे ज्यादा वक्त तक ढकी रही, तो एक दम देना वाजिब होगा।
- सोते वक्त रुख़सार (गाल) तकिया पर रखना जायज़ है, मगर चादर से सिर और चेहरा न ढाँकें, सोते वक्त पैर पूरी तरह चादर में ढांप सकते हैं।
- एहराम की हालत में गले में पूलों का हार मक्खूह है। किसी भी खुश्वू या खुश्वू दार साबुन के एक बार इस्तेमाल पर सदका (पौने दो किलोग्राम गेहूं) और बार बार के इस्तेमाल पर दम वाजिब होगा।
- हिंदुस्तान से हज और उम्रह के लिए जाने वालों के लिए मीकात यलम-लम का पहाड़ है जो मक्का से जुनूब की तरफ़ है, जो हज़रात वतन से सीधे मक्का पहुंचकर हज या उम्रह का इरादा करते हैं, उन्हें मीकात से पहले एहराम बांधना वाजिब है। अगर बैगैर एहराम जिद्दा पहुंच गये, तो दम वाजिब होगा। वतन से पहले मदीना जाने वालों के लिए एहराम ज़रूरी नहीं है। हवाई सफर में यलम-लम जिद्दा से तकरीबन एक घन्टा पहले है।

मर्द एहराम किस तरह पहनें :

एहराम की एक चादर लुंगी की तरह पहननी होती है। इसे आप जिस तरह आसानी हो वैसे पहन सकते हैं। इस के लिए कोई खास कानून या हुक्म नहीं है। मगर चूंकि हज के दौरान लोगों की जबरदस्त भीड़ होती है। लुंगी के नीचे भी आप को अंडरवीयर (चड्डी) और कोई चौज़ पहनने की इजाज़त नहीं है। इस लिए अगर लुंगी खुल जाए तो पूरा बहना (नंगा) होने का डर होता है। इस लिए एहराम की लुंगी मुंदर्जाज़िल तरीके से पहनने की सलाह दी जाती है, जो ज्यादा महफूज़ तरीका है।

- आप पैरों को ज़रा फैला कर खड़े हो जाएं।



- लुंगी के दोनों सिरे दोनों हाथों में पकड़ लें।
- बाएं हाथ का सिरा, दाहनी कमर और पेट से चिपका ले और पकड़ रहे और दाहनी तरफ के सिरे को थोड़ा सा खींच कर रखें। (तसवीर १)
- फिर दाहने हाथ को बाएं तरफ इस तरह ले जाएं कि लुंगी का वह सिरा जो हमने दाहनी तरफ दबाया था वह वर्षी जमा रहे। (तसवीर २)
- दाहने हाथ के लुंगी के सिरे को बाएं तरफ पूरी तरह ले जाने के बाद भी लुंगी दो से तीन फिट बची रहेगी। फिर इस बचे हुए सिरे को दाहनी तरफ ले जाए। मगर दरम्यान से आगे न बढ़ें बल्कि दरम्यान मे नाफ के पास तह करके लपेट लें। (तसवीर ३-४)
- लुंगी आपकी नाफ के ऊपर हो क्योंकि नाफ सतर मे शामिल है और सतर का छुपाना लाज़मी है।
- एहराम सिफ़ दो चादरों का नाम है। इस में पट्टा शामिल नहीं। मगर चूंकि हज के दौरान रूपया वैराग्य साथ रखना ज़रूरी होता है। इस लिए रूपया रखने के लिए पट्टा पहनने की इजाज़त है। और पट्टा पहनने से पहले इनमे रूपया रखकर पहनना चाहिए।
- पट्टा नाफ पर या नाफ के उपर पहनें जिस से कि लुंगी के उपरी हिस्सा से आप की नाफ हमेशा छुपी रहे। एहराम की हालत में आप चश्मा, घड़ी, कान का आला वैराग्य पहन सकते हैं।
- उम्रह और हज के तवाफे ज़ियारत में मर्दों को रमल और इज्तेबा करना सुन्नत है। इज्तेबा के लिए एहराम का एक सिरा दाहने हाथ के बगल से निकाल कर बाएं हाथ के कांधे पर डाल लेते हैं। (तसवीर ५)
- एहराम की हालत में तवाफ के सातों चक्करों में इज्तेबा करना सुन्नत है। मगर तवाफे वाजिब नमाज़ के पहले मोंदे (कांधे) ढांक लें। इज्तेबा के साथ नमाज़ पठना मकरह है।
- हज के खास दिनों में जिस्म पर ३ से ४ दिनों तक एहराम होता है। एहराम की एक चादर लुंगी की तरह पहन कर और पट्टे से मज़बूत बांध कर हाजी बेफिकर हो जाते हैं। मगर ऊपरी चादर संभालना ज़रा मुश्किल काम है वह भी खास कर नमाज़ की हालत में। इस लिए बुर्जुग और तजुब्बाकार हज़रात जिन्हें कई बार हज का तजुर्बा है नीचे दिए हुए तरीके से ऊपरी चादर लपेटने का मश्वरा देते हैं।
- 9) पहले ऊपरी चादर कथों पर पूरी तरह से हाथ सीधा करके सामने की तरफ फैला लें और चादर के दोनों सिरों हाथों में पकड़ लें। (तसवीर ६)
- 2) फिर सीधे हाथ का सिरा बाएं बगल के नीचे लुंगी या पट्टे के नीचे अच्छी तरह दबा लें। (तसवीर ७)
- 3) फिर बाएं हाथ का सिरा दाएं बगल के नीचे लुंगी या पट्टे के नीचे अच्छी तरह दबा लें। (तसवीर ८)
- 4) फिर एहराम का कपड़ा जो हाथ के ऊपर लटक रहा होगा उसे आस्तीन की तरह समेट लें। इस तरह आपके दोनों हाथ आज़ाद भी होंगे और ऊपरी एहराम की चादर बार बार न गिरेगी न नमाज़ में खलल पैदा होगा। (तसवीर ९) ▾ ▾ ▾ ▾ ▾ ▾ ▾

हज ना करने पर वईद

हज़रात अब्दुल्ला इब्न उमर (रज़ी) फर्माते हैं कि जो शर्ख़स तंदुरस्त हो, हज के अखराज़ात रखता हो, फिर भी बैराग्य हज के मर जाए तो क्यामत के दिन उस की पेशानी पर काफिर लिखा होगा। (दुर्ग मन्त्र)

ख़सारे का सौदा

मकान और मदीना मुनव्वरा में हरम शरीफ की मस्जिदों का माहौल इतना पुर नूर और पुर सकून है कि लोग धंटों धूँ ही सेहन और बाहर की खुली जगहों पर बैठे रहते हैं। नमाज़ का इन्तेज़ार करते हैं। और अज़ान होने पर वर्षी मुसल्ला बिछा कर नमाज़ पढ़ने लगते हैं।

जितनी देर मस्जिद में बैठ कर नमाज़ का इन्तेज़ार किया जाए वह इन्तेज़ार का वक़्त भी नमाज़ में शुमार होता है और उस का भी सवाब मिलता है। मगर हाजी हज़रात दो बजहों से ये बेहतरीन सवाब कमाने का मौक़ा खो देते हैं। बल्कि कभी कभी तो गुनाहगार भी होते हैं।

पहली बजह तो यह है कि अक्सर हाजी हज़रात इन वक़्तों में आपस में दुनियादारी की बातें किया करते हैं। जिस से सवाब नहीं मिलता बल्कि नमाज़ पढ़ने की जगहों पर दुनियादारी की बात करने वालों पर फ़रिश्ते लानत भेजते हैं और दुसरी यह है कि जब भी जमाअत शुरू हो तो पहले अगली सफ़ों को भरना चाहिए। अगर अगली सफ़ खाली हैं तो बैराग्य अगली सफ़ों को भरे पीछे दुसरी सफ़ बनाने से नमाज़ नहीं होती।

इन बा-बरकत मस्जिदें जहाँ सवाब लाखों और करोड़ों में कमाया जा सकता है। अपने नफ़स के ज़रा सी खुशी के लिए हम ऐसे सुनहरे भौंके बर्बाद कर देते हैं।

इस लिए जब भी हरम में बैठें तो दुनियादारी की बातों से परहेज़ करें। और जमात शुरू होते ही पहले अगली सफ़ों को पुरा कर लें।

बाहरी सेहन बहुत पुरकशिश है और वहाँ बैठना भी आसान है इस लिए जमात शुरू होते ही बाहरी सेहन तो खाचा खच भर जाता है। मगर पहला मजिला, छठ और तहखाना खाली रहता है। नमाज़ शुरू होने के बाद अगर कोई अंदर जाना भी चाहे, तो नहीं जा पाता या बहुत तकलीफ़ से जा पाता है।

इस तरह जाने वाले नमाजियों को रोकने का वबाल भी बाहर नमाज़ पढ़ने वालों पर होगा। इस लिए भले ही आप सेहन में बैठ कर नमाज़ का इन्तेज़ार करें मगर नमाज़ शुरू होने के पहले अंदर चले जाएं और अंदर की जगहे पुर करें। अंदर हरम शरीफ की मस्जिद पुरी तरह भर जाने के बाद ही बाहर नमाज़ पढ़े।

अल्लाह तआला आप की इबादत को कबूल फ़रमाए और हज-ए-मबरूर अता फ़रमाए। आमीन

पेज नं ९० से.... सामाने सफर

३. ऐसे तमाम किस्म के खिलौने भी मन्त्र हैं, जिससे किसी को डरा कर जहाज़ को अगवा किया जा सकता है जैसे; ल्यास्टिक की बदूक वैराग्य।

ये सारी चीजें एयरपोर्ट पर ज़ब्त कर ली जाती हैं:

४. एयरपोर्ट पर तलाशी के दौरान अगर कोई इग या नशे वाली चीज़ आप के सामान में शामिल मिल गयी, तो सऊदी हुक्मत में इस की सज़ा आम तौर पर सज़ा-ए-मौत ही है।

५. बाल काटने की कैंची, सब्ज़ी काटने की छुरी, नाखून काटने के औज़ार या बच्चों के खिलौने वैराग्य आप चेक इन लोगेज वाले सूटकेस में रख सकते हैं जो के जहाज़ के निचले हिस्से में लोड होगा। ये सारी अश्या जहाज़ के अंदर ले जाना मना है। इनके साथ सफर करना मना है।

६. बाल काटने की कैंची, शेविंग ब्लैड, नाखून काटने का औज़ार, सब्ज़ी काटने की छुरी इन सब की ज़रूरत आप को उम्रह के बाद हज से पहले और हरम में क्यामत के दौरान होगी। इस लिए इनको चेक इन लोगेज में रख लें और अपने मुकाम पर पहुँच कर निकाल लें और इस्तेमाल करें।

हरम शरीफ़ और मिना के कृयाम में पर्दे का मसला

فُلٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ يَغْصُونَ أَبْصَارِهِمْ[®]

وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنِتِ يَعْصُضُنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ (سورة نور آيات: ٣١، ٣٠)

“कुल लिल मुअ्-मिनीना यगुज्जू मिन अब्यारिहिमा। व कुल लिल मुअ्-मिनीनी यगा-जुन्ना मिन अब्सारिहिन्ना।”

- “मोमिन मर्दों से कह दो कि अपनी नज़रें नीची रखा करें। और मोमिन औरतों से भी कह दो कि वह भी अपनी निगाहें नीची रखा करें।”
(कुरआन, सूरह नूर, आयत: ३०, ३१)

يَا إِيَّاهُ النَّبِيُّ فُلْ لِّإِرْزاَجِكَ وَبَتِّيَّكَ وَيَسِّعُ الْمُؤْمِنِينَ
يُدْبِّيْنَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْهِنَّ (سورة احزاب آيات: ٥٩)

“या अइ-युहन्ननबिय्यो कुल लिल लि-अज्याजिका व बनातिका व निसाइल मुअ्-मिनीना युद-नीना अलैहिन्ना मिन जलाबी-बिहिन्ना।”

- “ऐ पैगम्बर अपनी वीवियों और बेटियों और मुसलमानों की औरतों से कह दो कि बाहर निकला करें तो अपने मूँह पर चादर लटका कर पूँछट निकाल लिया करें।” (कुरआन, सूरह अह्जाब, आयत: ५६)
- “हज़रत आईशा (रजी.) का इशाद है, कि हम रसूल अल्लाह (स.) के साथ एहराम की हालत में होते थे, मगर जब गैर मेहरम मर्द हमारे सामने से गुज़रते, तो हम पर्दा कर लिया करते थे।
- एहराम में औरतों का चेहरा और हाथ खुला रहना ज़रूरी है, मगर पर्दे का जो इस्लाम में शर्ई हुक्म है वह खत्म नहीं होता है। एहराम की हालत में भी औरतों को वैसे ही पर्दा करना है जैसे गैर एहराम की हालत में करना है।
- मक्का और मर्दीना शरीफ के कृयाम में एक कमरे में छः से ८ या उससे भी ज़्यादा लोगों को रखा जाता है। अगर सारे लोग उप्र दराज और बुजुर्ग हों, तो इतनी तकलीफ़ नहीं होती अगर उन में जवान और कम दीनदार हों, तो मस्तूरत का उन के दरमियान बैग्रेर पर्दे के सोना बहुत म़ायूब और तकलीफ़ दह काम है। कमरे में मकान मालिक की तरफ से पर्दे का कोई इन्तेज़ाम नहीं होता, पर्दे के लिए आप को घर से खुद पर्दा, रस्सी और कम्बलें बैग्रेर ले जाना होगा और मकान मालिक की इजाजत से कमरे में कीले लगाकर पर्दा करना होगा, इस लिए हज के सफर पर जाते वक़्त ही ये सामान साथ लेते जायें। पर्दे के कपड़े और रस्सी बैग्रेर आप को वापसी के सफर पर लगैज के ऊपर बांधने के भी काम आयेंगे।
- मिना में करीब ७० मर्द और औरतों को एक ही खेमे में रहना होता है। यह खेमा ४०×२० फिट का होता है। हुक्मत ने इन खेमों में कूलर और लाइट का बहुत अच्छा इन्तेज़ाम किया है। साथ ही खेमे के बीच में पर्दे का इन्तेज़ाम भी है। जो के शुरू में लिपटा हुआ होता है।
- मक्का में जो लोग आप के कमरे के साथी और पड़ोसी हैं यही लोग मिना में आप के खेमे में होंगे मक्का के कृयाम के वक़्त ही दीनदार लोगों को पहचान लीजिए। और ही सके तो पहले ही से तय कर लीजिए। मिना पहुँच कर सब से पहले पर्दे ओर नमाज बाजमाअत का काम करना है। और पहले ही से आठ दस आदमी का उन दोनों कामों के लिए हम ख़ाल होना

ज़रूरी है।

एक फैमिली के मर्द और औरतों का सामान और खना पीना एक साथ ही होता है, इसलिए ये बात अक्सर लोगों बहुत गिरां गुजरती है और वह जल्दी पर्दे के लिए राजी नहीं होते, मगर जब आठ दस मर्द पर्दे की हिमायत करें, तो और लोग दब जाते हैं क्योंकि परदा करना शरीअत के हुक्म पर अमल भी है।

मिना पहुँच कर सारे लोगों को इकट्ठा कर लीजिए और हिक्मत और मसलिहत से लोगों को राजी कर के खेमे के दरम्यान का पर्दा गिराकर औरत एक तरफ और मर्द दूसरी तरफ हो जायें।

(२०१३ में सउदी हुक्मत ने मर्दों और औरतों के खेमें पहले से ही अलग अलग कर दिये थे और दोनों को अलग अलग ठहराया।)

- हज के मौके पर हरम शरीफ में अक्सर तवाफ के लिए बहुत भीड़ होती है। खास कर रुक्न यमानी और हज़र अस्वद के दरम्यान इसी दौरान अक्सर लोगों के जिस एक दूसरे से छूते रहते हैं। अगर पीछे से लोगों का ज़्यादा दबाव आये, तो अपने आप को सामने वाले से दूर रखना बड़ा मुश्किल होता है। इस लिए अगर मुश्किल हो, तो औरतों को कम भीड़ के औकात में तवाफ़ करने के लिए कहें। जैसे सुबह ११ बजे, दोपहर २ बजे से ३ बजे और रात में १ बजे से ३ बजे वैग्रह। पहले मजिले और छत पर भी भीड़ कम होती है। इसलिए अगर वहाँ तवाफ़ करे, तो भी बेहतर है।, लेकिन पहले मजिले और छत पर दायरा वसीअ होने की वजह से तवाफ़ की मशक्कत बहुत बढ़ जाती है।
- औरतों के पीछे या बगल में मर्दों की नमाज़ नहीं होती है। इसलिए हरम शरीफ में मौजूद पुलिस औरतों को पीछे की सफों की तरफ भेजती रहती हैं। अगर आप तवाफ़ के लिए औरतों को इस लिए अपने साथ ले जाते हैं, के कहीं रास्ता भूल न जायें, तो नमाज़ से कुछ देर पहले उन्हें औरतों की नमाज़ की जगह खुद ले जाकर बैठा हैं, और नमाज़ के बाद फिर अपने साथ ले लें नहीं, तो एक औरत की वजह से कम अज़ कम तीन हाजियों की नमाज़ ख़राब होगी। एक दायें दूसरी बायें और तीसरा पीछे और उसका गुनाह और अज़ाब आप को होगा।
- हज़रत अबू सईद खुदरी (रजी.) से रिवायत है कि नबी करीम (स.) ने इशाद फरमाया: “अल्लाह तआला फरमाता है कि जिस बदे को मैं ने सेहत और तन्दरस्ती बख्शी और रोज़ी में फराखी और कुशादी दी और फिर पांच साल की मुदत गुज़र जाए और मेरे पास ना आए तो ऐसा शब्ष महरमुल-किस्मत और बद-किस्मत है।”
(तरीक बा हवाला इब्ने हब्बान, जादे राह: ५८)

हज़रत इमाम हुसैन रजी फर्माते हैं कि रसुले खुदा (स.) से एक श़ब्स ने अर्ज किया, “हुजूर (स.) में कमजोर भी हुँ और बुज्दील भी” फर्माया “तु ऐसा जिहाद किया कर जिसमें कांठ भी न लगो।” उसने अर्ज किया, ऐसा कौन सा जिहाद है जिसमें तकलीफ़ न पहुँचें? फर्माया “हज किया कर” (तिबरानी)

हालते एहराम में मम्नु काम और उन का कफकारा

अल्लाह तआला कुरआन शरीफ में इशारद फरमाता है कि “जो शख्स इन महिनों में हज कि नियत करले तो हज(के दिनों) में न औरतों से इख्लीलात करें, न कोई बुरा काम और न किसी से झगड़ें और जो नेक काम तुम करोगे वह अल्लाह को मालूम हो जाएगा” (सुहे बकरा, १६७)

- ऐसे काम जो हरम शरीफ में और एहराम पहन कर नहीं करने चाहिए, जिनायत कहलाते हैं। (जिनायत की जमा जिनायत है।) ऐसे काम जो एहराम पहनकर नहीं करने चाहिए, आठ तरह के हैं।
 १. मर्द को सिला हुआ कपड़ा पहनना और पैरों की उपर कि हड्डी को ढाँकना।
 २. मर्द को सर और चेहरा और औरत को चेहरा ढाँकना।
 ३. उम्रह और हज के किसी फर्ज़ या वाजिब अरकान को छोड़ देना।
 ४. खुशबू इस्तेमाल करना।
 ५. बाल उखाड़ना या काटना, बालों से जूँ दूर करना या मारना।
 ६. नाखून काटना।
 ७. अःदवाजी तालुकात कायम करना।
 ८. खुश्की के जानवर का शिकार करना।
- ऐसे काम जो हरम शरीफ यानी मक्का मुकर्मा और मदीना मुनव्वरा में नहीं करने चाहिए वह नीचे लिखे गए हैं।
 १. लड़ाइ झगड़ा करना।
 २. धास या दरखत काटना, किसी दरखत कि शाखें या काटें तोड़ना। (आप हरम के हुदुद में धास का एक तिनका भी नहीं तोड़ सकते)
 ३. शिकार खेलना, किसी शिकार किए जाने वाले जानवर को ड़राना या अपनी जगह से हटाना।
(हरम के हुदुद में जंगली जानवरों को भी अमान है।) इनको मारना तंग करना तो दूर की बात है अगर वह साथ में खड़े हों उन्हें हटाकर आप का साथ में जाना भी हराम है।
 ४. गिरी पड़ी चीजों का उठाना।
- ऊपर बताए गए मम्नु काम करने पर चार तरह का जुर्माना आयद होता है।
 १. एक मुठर्ठी गेहूं का सदका करना जिजा कहलाता है।
 २. फितरा के बराबर सदका यानी पैने दो किलो गेहूं या इतनी रकम के सदका को सदका कहेंगे।
 ३. एक छोटे जानवर की कुरबानी (बकरी, दुम्बा, भेड़ वगैरा) को दम देना कहते हैं।
 ४. एक बड़े जानवर कि कुरबानी यानी एक गाय या ऊंट कि कुरबानी को बिदना कहते हैं।

मसला: पूरा ऊंट या गाय की कुरबानी सिर्फ दो जगह वाजिब होती है। एक जनाबत और हैज़ व निफास की हालत में तवाफ करना, दूसरे वकूफे अरफा के बाद और तवाफे ज़ियारत से पहले हमबिस्तरी करना।
(मसाइले हज व उमराह मआ आदावे ज़ियारत, पेज नं. ११६ से १२९, मुअल्लिमुल हुज्जाज पेज नं. २२४ और २२५)

कुरबानी हुदुदे हरम में देना लाज्मी है और उसका गौशत भी खुद नहीं खा

सकते, इसे गरीबों में सदका करना लाज्मी है। या सदके कि कीमत कहीं भी दी जा सकती है।

मम्नु काम और उनका कफकारा

१. किसी मर्द ने एहराम की हालत में सिला हुआ कपड़ा पहना तो अगर एक घंटा या उससे कम पहना तो जीजा देना होगा। अगर आधा दिन या आधी रात से कम पहना तो सदका देना होगा। अगर आधा दिन या आधी रात के बराबर या ज्यादा पहना तो दम वाजिब होगा।
२. एहराम की हालत में किसी वजह से अगर एक घंटे से कम वक़फ़ा तक सिर ढ़का रहा तो जिजा देना वाजिब है। अगर १२ घंटे से कम वक़त तक सिर ढ़का रहा तो सदका करना वाजिब है। अगर १२ घंटे से ज्यादा ढ़का रहा तो दम देना वाजिब होगा।
३. एहराम की हालत में गलें में फूलों का हार डालना मकरुह है। खुशबूदार फूल सुंघना भी मना है। खुशबूदार साबुन के एक बार इस्तेमाल से सदका और बार-बार इस्तेमाल से दम वाजिब हो जाता है।
४. बाल नोंचने या खुजलाने वगैरह से दाढ़ी या सिर के तीन बाल तक गिरें तो हर बाल के बदले जिजा दें। तीन से ज़्याद बालों पर सदका करें। अपने आप गिरने वाले बालों पर सदका नहीं है।
५. अगर एक हाथ या पौव के पाँचों नाखून एक ही वक्त में काटें तो एक दम वाजिब होगा अगर चारों हाथ और पैरों के सारे नाखून एक ही वक्त में काटें तो भी एक ही दम वाजिब होगा। अगर चारों हाथ पैरों के सारे नाखून अलग अलग काटें तो उतने बार दम देना होगा। अगर किसी हाथ पैर के पाँचों नाखून एक साथ नहीं काटें बल्कि एक-एक दम देने होंगे। (यानी जब पाँचों नाखून एक साथ काटें जाएं तो दम लाजीम होगा वरना सदका।) दूर्दृष्टि हुए नाखून को काटने या तोड़ने पर कोई सजा नहीं है।
६. अगर किसी ने जंगली या मैदानी जानवर का शिकार किया या शिकार करने में किसी की मदद की, तो इसी जानवर के मिस्ल सदका करना होगा।
७. अगर हालते एहराम में शहवत के साथ मर्द अपनी बीवी के साथ बोस व किनार होता है तो ऐसी सूरत में, इन्ज़ाल हुवा हो या ना हुवा हो दोनों सूर्तों में जुर्माने में एक दुम्बा या गाय की कुरबानी वाजिब हो जाएगी। और अगर बीवी को शहवत हो जाए तो उस पर भी अलग से एक कुरबानी वाजिब हो जाएगी।
८. हज में वकूफे अरफा के बाद हलक और तवाफे ज़ियारत से पहले बीवी से हम-बिस्तरी हो जाए तो जुर्माना में बदना की कुरबानी वाजिब हो जाएगी। और तीनों इमामों के नज़ीकी अगर वकूफे अरफा के बाद जमराह उकबा की रमी से पहले जिमा (हम-बिस्तरी) हो जाए तो हज ही फासिद हो जाएगा। और हजरत इमाम अबू हनीफा के नज़ीकी हज फासिद ना होगा अलवत्ता जुर्माना में बदना वाजिब हो जाएगा। (ग़निया जदीद, पेज २६६, ग़निया कदीम पेज १४४, अन्वार मनसिक पेज २१६)

६. अरकान तर्क करने के मुताल्लिक:-

काम: हज और उम्रह के वाजिब अरकान का छूट जाना।

कफकारा: अगर हज और उम्रह का कोई भी वाजीब रुक्न छूट जाएगा, तो हज

और उम्रह हो जाएगा मगर दम देना होगा।

कामः हज और उम्रह के फर्ज अरकान का सूट जाना।

कफकारा: हज और उम्रह का अगर कोई भी फर्ज छूट जाएं तो हज या उम्रह नहीं होगा। ऐसी हालत में हाजी तवाफ, सई और हलक करवाकर ऐहराम उतार दें मगर फिर उसे उम्रह या हज दौहराना होगा।

१०. हरम शरीफ के हुदूद की गलतियाँ और कफकारा

कामः किसी ने हरम की बेहुरमती की, जैसे हरम के हुदूद में धास उखाड़ लिया या दरखत की पत्तियाँ तोड़ ली या ऐसा कोई भी काम किया जिसकी मुमानिअत है।

कफकारा:

- हरम की धास काटने से उस की कीमत के बराबर सदका करना वाजिब होगा। (मुअल्लिमुल हुज्जाज पेज नं. २६१)
- किसी दरखत के पत्ते तोड़ने अगर दरखत को नुकसान न हो तो पत्ते तोड़ना जायज़ है, वरना जायज़ नहीं। (मुअल्लिमुल हुज्जाज पेज नं. २६२)
- खुद-रौधास या दरखत जिसे उगाने का मअमूल नहीं है तो जैसे नूनिया धास वगैरा और वह फल भी नहीं देता है तो ऐसे दरखतों को काटना और तोड़ना हुदूदे हरम में मना है। अगर ऐसे दरखत या धास को काटा जाय तो सज़ा के तौर पर उस की कीमत का सदका वाजिब होगा। (ग़नियतुल मनासिक पेज नं. ३०२, हज व ज़ियारत नम्बर पेज नं. १६३)
- हरम का सूखा दरखत या सूखी हुई धास तोड़ने में कोई हर्ज नहीं है। (मुअल्लिमुल हुज्जाज पेज नं. २६२)

कामः नापाकी की हालत में मस्तिज़े हरम में दाखिल होना।

• अगर औरत ने ग़फलत या लापरवाही में हालते हैं ज़ में तवाफे ज़ियारत कर लिया या तवाफे ज़ियारत के अक्सर अश्वात हालते हैं ज़ में कर लिए मसलन तीन शैत के बाद हैं आ गया और हैं ज़ ही की हालत में चार अश्वात पूरे कर लिए तो उस पर जर्माना में बिदना वाजिब है। और बिदना ऊंट या गाय या भैंस को कहा जाता है। और अगर औरत ने नहर के दिनों में अन्दर अन्दर तवाफ का इरादा कर लिया है या इन अश्वात का इरादा कर लिया जिन को हालते हैं ज़ में किया था तो कफकारा साकित हो जाएगा और कोई चीज़ उस पर लाज़िम न होगी। और अगर नहर के दिन गुज़र जाने के बाद एआदा करेंगी तो देरी की वजह से एक दम देना लाज़िम होगा। (ग़नियता ज़दीद पेज नं. २७२, कदीम पेज नं. १४५, अनवारे मनासिक पेज नं. ३४३)

और अगर हैं ज़ या निकास या जनाबत की हालत में तवाफे उमराह करेंगे तो जर्माना में एक दम देना होगा। और अगर पाक होने के बाद एआदा करेंगे तो जुर्माने का दम साकित हो जाएगा।

(ग़नियतुल मनासिक पेज नं. १४७-१४८, अनवारे मनासिक पेज नं. ३२२)

ना-बालिग के मसाइलः

- १) ना-बालिग ने आम लोगों की तरह हज्जे तमत्ताओं कर लिया है तो आम लोगों की तरह इस तमत्ताओं की कुरबानी नहीं। इसी तरह किरान की कुरबानी भी लाज़िम नहीं। (ग़निया ज़दीद पेज २०७, अन्वारे मनासिक पेज २०४)
- २) अगर ना-बालिग ने हालते ऐहराम में कोई ऐसा अमल कर लिया जिस से दम या कफकारा वाजिब होता होजाता है जो ना-बालिग के गैर कुकल्लफ होने की वजह से उस पर कोई कफकारा या दम वाजिब नहीं होगा, और

उसकी वजह से उस के बली और ज़िम्मेदार पर पर भी कोई कफकारा ना होगा, इसलिए कि यह बली का अपना अमल नहीं है। हाँ अल्वत्ता बली के लिए मुनासिब यही है कि ऐहराम के बक्त उस को भी ऐहराम का कपड़ा पहना दे और मम्मूआते ऐहराम से उस को महफूज़ रखने की मुश्किन हद पूरी कोशिश करे।

(ग़निया ज़दीद पेज ८४, २०७, अन्वारे मनासिक पेज २०४)

(नोट: ऊपर बताएं गए कफकारे हमने बहुत मुख्यसर तौर पर लिखा है। अलग-अलग मसलक में अलग-अलग एहकाम है। इसलिए इस बारे में आप अपने नज़रिये के आलीमों से मशिवरा लें। मुअल्लिम- उल-हुज्जाज किताब में इनका तफसील से ज़िक्र है।)



अरफात की दुआएँ और वज़ीफ़े

नबी करीम (स.) से रिवायत है, कि आप(स.) ने फरमाया:

“दुआओं में सबसे बेहतर दिन अरफा को दुवा है और मैंने और मुझसे पहले अंबीयाने इस रोज़ जो अफ़्ज़ल तरीन कलमात कहें वह यह हैं”

तर्जुमा: कोई माबुद बरहक नहीं सिवाय अल्लाह तआला के, वह तनहा हैं, उसका कोई शरीक नहीं, उसीके लिए सारी बादशाही है, उसी के लिए सारी हस्त हैं, वह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है।

• एक सही हीदीस में है कि, नबी (स.) ने फरमाया:

अल्लाह के यहाँ महबूब तरीम कलमात चार हैं:

سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ

• आप (स.) ने फरमाया:

दो कलमात ऐसे हैं जो ज़बान पर बहुत हल्के हैं, मिज़ाने आमाल में बहुत भारी हैं और रहेमान को बहुत महबूब हैं।

سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ، سُبْحَانَ اللَّهِ الْأَعْظَمِ

• हज़रत साद बिन अबी वकास (रज़ी.) से रिवायत है कि हम रसुल (स.) की खिदमत में हाज़िर थे कि आप (स.) ने फरमाया:

“क्या तुम में से हर एक शख़स इस बात से आजिज़ हैं की वह हर रोज़ एक हज़ार नेकियां कर सकता है?”

हाज़रीन मज़लिस में से एक सहाबी (रज़ी.) ने अर्ज़ किया: “या रसुल अल्लाह(स.)! हम में से हर एक शख़स एक हज़ार नेकियां कैसे करा सकता हैं?”

आप (स.) ने फरमाया: १०० बार सुब्बान-अल्लाह कहें तो उस के लिए एक हज़ार नेकिया लिख दी जाएगी और एक हज़ार गुनाह उससे माफ कर दिए जाएंगे।

हुसूले इल्म फर्ज़ है

रसुल (स.) ने ईर्शाद फरमाया: “दिन का इल्म हासिल करना हर मुसलमान (मर्द व औरत) पर फर्ज़ है।” (इन्हे माज़ा-बरीवायत हज़रत अनस रज़ी)

हज़रत अबू मुसा अशारी (रज़ी.) बयान करते हैं कि रसुल अल्लाह (स.) ने फरमाया: “हाज़ी अपने खानदान के ४०० आदमियों की शिफाअत करेगा। हाज़ी अपने गुनाहों से ऐसे पाक हो जाता हैं गोया आज ही अपनी माँ के पेट से पैदा हुआ हैं।” (बज़ार)

औरतों का एहराम

औरतें भी हज के तमाम अफ़आल मर्दों की तरह करें लेकिन कुछ अमूर में उन के लिए मर्दों से अलग हुक्म हैं और चन्द्र अमूर औरतों ही के साथ मख़्सूस हैं उन की तफ़सील नीचे दिए हुए तरीके में हैं।

- १) औरतों के लिए किसी भी सफर के लिए मेहरम का साथ होना ज़रूरी है। हज और उम्रा का सफर बगैर मेहरम के करना नाजायज़ है और गुनाह है।
- २) अगर किसी औरत पर हज फर्ज है मगर किसी मेहरम का साथ नहीं, तो उसको चाहिए के मेहरम मिलने तक हज मुल्तवी कर दे। इस मजबूरी की वजह से हज में जो तार्खार होगी उसका कोई गुनाह न होगा और अगर उसी हालत में मौत आ गयी तो औरत को मरते वक्त हज-ए-बदल के लिए वसीयत करना वाजिब है।
- ३) इदूदत वाली औरतें अय्यामे इदूदत में मेहरम होने के बावजूद हरगिज हज के लिए ना जायें, ये उन के लिए हराम है।
- ४) मेहरम वह शख्त है जिससे निकाह हमेशा के लिए हराम है। जैसे; बाप, बेटा, भाई, भतीजा, भाऊ, शौहर का बाप वगैरह।
- ५) बहनोई, फूफा, खालू, वगैरह मेहरम नहीं हैं। तन्हा इनके साथ हज करने पर गुनाह होगा।
- ६) अगर औरत माल दार हो और मेहरम के साथ भी हो, तो वह शौहर कि इज़ाजत के बगैर पहला हज कर सकती है। क्योंके एक हज फर्ज है। नफ़ली उम्राह और हज के लिए शौहर की इज़ाजत ज़रूरी है।

एहराम का बयान:

- १) औरतों का एहराम उन के रोज़ मरह के कपड़े हैं। सिर्फ़ इस बात का ख़ाल रखें कि ये कपड़े बारीक, चुस्त और ऐसे न हों जिस से दुसरों की तवज्ज्ञह आप की तरफ खिंचें। कपड़े बिल्कुल सादा और साफ़ सुधरे होने चाहिये।
- २) एहराम की हालत में बाल काटना और तोड़ना मना है। ओढ़नी अगर सिर से बार बार सरकती रहे, तो उसके सरकने से बार बार सिर ढाकने से हो सकता है के बाल टूट जायें, इस लिए एहतियात के लिए सिर पर एक रुमाल या टोपी बांध ली जाती है। ये सिर्फ़ एहतियात की तक्बीर है। सिर पर बांधा जाने वाला कपड़ा या टोपी का एहराम से कोई वास्ता नहीं है। ये औरतों का एहराम नहीं है। मर्दों के लिए एहराम के कपड़े और एहराम की चादरें हैं इस तरह औरतों के लिए एहराम का कोई मख़्सूस कपड़ा नहीं है।
- ३) एहराम की हालत में औरतों को चेहरा खुला रखना है। इसलिए सिर पर टोपी या रुमाल बांधते वक्त इस बात का ख़ाल रखें के माथा ढका ना हो वर्ना सदका या दम देना लाजिम होगा।
- ४) मर्दों की तरह आरतों को कदम के उपरी हिस्से की हड्डी को खुला रखना ज़रूरी नहीं है। औरतें जूतियां पहन सकती हैं, जिससे ये हड्डी छिप जाये।
- ५) गुस्त और उजू़ करते वक्त सिर पर बांधी हुई टोपी या रुमाल का खोलना ज़रूरी है। सिर खोल कर अगर आप ने सिर का मसह न किया, तो न उजू़ होगा न ही आप की नमाज़ होगी।
- ६) उम्रह में सई के बाद, और हज में कुर्बानी के बाद हलाल होने के लिए

तमाम सिर या कम अज़ कम एक चौथाई सिर के बालों से लम्बाई में उंगली के पोर के बराबर तक सिर के बाल काट लें। (करीब एक से सवा इंच) ये बाल वह खुद भी अपने हाथ से काट सकती हैं या अपने जैसे किसी और खालून हाजी से जिस ने बाल काटने के पहले के सारे अरकान अदा कर लिए हों बाल कटवा सकती हैं। औरतों का अपने शौहर और अपने साथ आऐ महरम मर्द को छोड़ कर किसी गैर महरम से बाल कटवाना जाएँ नहीं है।

बाल काटने का आसान तरीका है कि बाल की चोटी के आखरी सिरे को उंगली पर लपेट लें और फिर काटें। ख़्याल रहे कि एक पोर की लंबाई से कम बाल न करें।

- ७) एहराम की हालत में कंधी न करें। अगर जान बूझकर कोई बाल टूट गया, तो जिज़ा देना होगा।
- ८) वे खुशबूदार तेल जिस्म पर और बालों में लगाया जा सकता है। बाल टुटने के द्वार से अगर न लगाया जाए तो बेहतर है।
- ९) ऑर्धों में ऐसा सुरमा लगाना लगिला-कराहियत जायज़ है कि जिस में कोई खुशबू ना हो। और अगर ऐसा सुरमा है कि उस में खुशबू नुमायें और वाजेह हो तो उस सुरमे को हालते एहराम में लगाने से सदका वाजिब होगा।

(अनवारे मनासिक पेज नं.२२८, मुअल्लिमुल हुज्जाज पेज नं.११५)

- १०) हालते एहराम में मेहंदी लगाना जायज़ नहीं। लिहाज़ा अगर पूरे सर पर या पूरी दाढ़ी पर मेहंदी लगाई है या औरत ने हथेली या सर में मेहंदी लगाई है तो दम वाजिब होगा, इसलिए कि मेहंदी पूरे हिस्से पर लगाई है। और अगर कुछ हिस्से दाढ़ी पर या हथेली और पैर के कुछ हिस्सों पर लगाई है तो सदका वाजिब हो जाएगा।

(बदाएँ कदीम पेज नं.१६२/२, अल-मबूत १२४/४, अल-बहरूराइक जदीद ४/३, अल-मसालिक फ़िल मनासिक ४७६/२, अनवारे मनासिक २३२ और २११, मुअल्लिमुल हुज्जाज २२६)

- ११) एहराम की हालत में औरतें ज़ेवर पहन सकती हैं। मगर ज़ेवर ऐसा न हो के दुसरों की तवज्ज्ञह आप की तरफ हो जाए।

औरतों के लिए मुमानिअत :

- १) औरतें तल्खिया, तकबीर या और कोई तसबीह बुलांद आवाज़ से न पढ़ें। औरतों के आवाज़ का भी पर्दा है।
- २) औरतें न रमल करें न सफा मरवा के दरम्यान तेज़ चलें, न दौड़ लगायें।
- ३) नबी करीम (स.) ने रास्तों पर चलते वक्त औरतों को रास्ते के किनारे चलने का हुक्म दिया था। इस हुक्म के बाद सहावे कराम (रज़ी.) कि औरतें रास्ते के इतना किनारे चलनी थी कि उनके काड़े दिवारों से रगड़ खाते थे।(अबु वाज़द.बहती)
- ४) हज़रत अबु हुरैरा(रज़ी.) से रिवायत है कि नबी करीम(स.) ने फरमाया “मर्दों के लिए सबसे बेहतरीन सफ़ पहली सफ़ है और सबसे बदूतरीन सफ़ आखरी सफ़ है और औरतों के लिए सबसे बेहतरीन सफ़ पहली सफ़ है”(अबू-दाऊद.)
- ५) कोई अमल या इबादत उस वक्त तक क्रमिल नहीं हो सकती जब तक

- नवी करीम (स.) के हुक्म के मुताबिक न हो। इसलिए औरतें तवाफ करते वक्त मर्दों के दरम्यान घुस कर न तवाफ करें न ही सई करें, और नमाज भी औरतों के नमाज के मुकाम पर पढ़ें, मर्दों के दरम्यान न पढ़ें।
- ५) अगर कोई औरत जमाझत में मर्दों के दरम्यान खड़ी हो जाये, तो उस औरत के दाँयें, बायें और पीछे खड़े होने वाले मर्दों की नमाज नहीं होंगी उसका गुनाह उसी औरत पर, और उसके साथ जिम्मेदार मर्द होगा।
- ६) हज के मौके पर हरम शरीफ में अक्सर तवाफ के लिए बहुत भीड़ होती है। खास कर रखन ईमानी और हज़ेर अस्वद के दरम्यान। इसी दौरान अक्सर लोगों के जिस एक दूसरे छूते रहते हैं। अगर पीछे से लोगों का ज्यादा दबाव आये, तो अपने आप को सामने वाले से दूर रखना बड़ा मुश्किल होता है। इस लिए अगर मुश्किल हो, तो औरतों को कम भीड़ के औकात में तवाफ करने के लिए कहें। जैसे सुबह ११ बजे, दोपहर २ बजे से ३ बजे और रात में ९ बजे से ३ बजे वग़ैरह। पहले मंजिले और छत पर भी भीड़ कम होती है। इसलिए अगर वहाँ तवाफ करें, तो भी बेहतर है। लेकिन पहले मंजिले और छत पर दायरा बढ़ा होने की वजह से तवाफ की मशक्कत बहुत बढ़ जाती है।
- ७) एहराम कि हालत में औरतों का सिर्फ चेहरा खुला रखना है। एहराम में पर्दे का हुक्म मनसूख नहीं है। हज़रत आईशा (रजी.) फरमाती है, के हम औरते हज में रसूल अल्लाह (स.) के साथ एहराम की हालत में थीं, एहराम कि वजह से हम चेहरो पर नकाब नहीं डालती थीं। मगर जब हमारे सामने से मर्द गुरजते तो हम अपनी चादर सिर के ऊपर से लटका लेती थीं और इस तरह पर्दा कर लेती थीं। और फिर जब मर्द आगे बढ़ जाते तो हम अपने चेहरे खोल देती थीं। (अबू-दाउद, मज़ारिफ़ुल हदीस)

८) पर्दा करना अफ़ज़ल या सिर्फ सवाब का काम नहीं है। बल्कि औरतों पर वाजिब है। क्योंकि पर्दे का हुक्म अल्लाह ताअ्ला ने वही के ज़रिए कुरान मजीद के आयत में नाज़िल फरमा दिया है और इस आयत का मफहूम इस तरह है।

“ऐ नवी (स.)! अपनी बीवियों से, और अपनी साहबजादियों से और मुसलमानों की औरतों से कह दो कि वह अपने ऊपर अपनी चादरें लटका लिया करें।” (कुरआन मजीद सूरः इह़जाब आयतः ५६)

इस लिए अगर आप अपने घर और मोहल्लों में पर्दा नहीं करती हों, तो भी हज के सफर से पहले बुर्का या बड़ी चादर ज़स्तर ले लें और हरम शरीफ में इस का इस्तेअमाल ज़स्तर करें। वर्ना हरम शरीफ में एक गुनाह ७० या १०० गुनाह के बराबर होता है।

नापाकी की हालत में इबादत:

एहराम की हालत में हाइज़ा औरतें नमाज और तिलावत-ए-कुरआन को छोड़ कर दिगर इबादत कर सकती हैं। उन के लिए जिक्र और दस्त व वज़ाइफ़ पढ़ना जायज है। मुस्तहब ये है के हर नमाज के वक्त पाक साफ होकर बुजु़ कर के मुस्सले पर बैठ कर जितनी देर नमाज अदा करने में होती है उतनी देर जिक्र व दुआएं पढ़ती रहे ताकि इबादत की आदत बाकी रहे।

रिवायत है, के नवी करीम (स.) ने फरमाया हाइज़ा औरत अगर नमाज के वक्त सत्तर बार इस्तग़फ़ार पढ़ले, तो उस के लिए हज़ार बरकतें लिखी जाती हैं और सत्तर गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं और उसका दर्जा बढ़ता है और उसको इस्तग़फ़ार के हर हुस्क के बदले नूर मिलता है और बदन की रग के अवैज़ में हज और उम्रह लिखा जाता है।

(मज़ालिसुल अबरार बसीर)



हैज़ व निफास के मसाइल

सफर से पहले हैज़ का आना:

अगर किसी को मक्का शरीफ के सफर से पहले ही हैज़ शुरू हो जाए तो ऐसी हालत में वह नापाकी ही में फैर ज़स्ती बाल साफ कर के, नाखुन तराश कर, गुस्तुल कर के एहराम के काढ़े पहन ले और मीकात पहुँच कर उम्रह की नीयत भी कर ले। मगर मक्का शरीफ पहुँच कर तवाफ और सई न करे। पाक होने तक इतेज़ार करे और पाकी के बाद तवाफ और सई कर ले। इस नापाकी की मुद्दत में वह एहराम की हालत ही में रहेंगी और एहराम की सारी पाबंदियाँ उस के ऊपर आइद रहेंगी।

एहराम पहनने के बाद हैज़ आना:

अगर किसी को एहराम पहनने और नीयत करने के बाद मगर तवाफ और सई से पहले हैज़ आ जाए, तो वह पाक होने तक इतेज़ार करे और पाकी के बाद तवाफ व सई कर के उम्रह पूरा कर ले और एहराम उतार दें। इन नापाकी के दिनों में एहराम की पाबंदियाँ आइद रहेंगी।

तवाफ के बाद हैज़ आना:

अगर किसी के हैज़ के दिन करीब हो, तो जब तक खुन न आ जाए मुताफ में तवाफ करना जाएँगा, अगर तवाफ पूरा करने के बाद हैज़ आ जाए तो नापाकी

ही में सई करके बाल तराश के उम्रह पूरा करे। सई के लिए पाकी शर्त नहीं है। और अगर तवाफ करते करते हैज़ आ जाए तो फौरन हरम से बाहर चली जाए और पाकी के बाद तवाफ और सई कर के उम्रह पूरा करते। जब तक उम्रह पूरा न होगा एहराम की पाबंदियाँ आइद रहेंगी।

हज से पहले या हज के दौरान हैज़ आना:

अगर किसी को द ज़िल्हिज्जा से पहले हैज़ शुरू हो जाए तो उम्रह ही की तरह बाल साफ कर के नाखुन तराश कर गुस्तुल कर के एहराम की नीयत कर ले और तवाफ ज़ियारत को छोड़ कर सारे हज़ के अरकान अदा कर ले। इसी तरह हैज़ के दौरान भी हैज़ आ जाए तो नमाज, कुरआन की तिलावत और तवाफ ज़ियारत को छोड़ कर सारे अरकान अदा करे। तवाफे ज़ियारत के लिए पाक होने तक इतेज़ार कर ले चाहे १२ जिल्हिज्जा गुज़र जाएं। पाकी हासिल करने के बाद तवाफे ज़ियारत करे। इस तरह आपका हज ही जाएगा। मगर तवाफे ज़ियारत तक एहराम की पाबंदियाँ आइद रहेंगी। ताखेर की वजह से दम लाज़िम नहीं होगा।

उम्रह और हज दोनों के पहले हैज़ आना:

किसी औरत ने तमत्ता की नीयत से एहराम बांधा और मक्का मुअज्ज़मा पहुँचने से पहले या मक्का मुअज्ज़मा पहुँचने के बाद उम्रह का तवाफ करने से पहले ही उस को हैज़ या नफास शुरू हो गया और खून जारी रहा, यहाँ तक कि द

जिल्हज्जा यानी मिना जाने का दिन आ गया तो ऐसी औरत उम्रह तर्क कर दे और मनुआते एहराम (खुशबू लगाना, नाखून काटना बगैर) में से कोई काम कर के सर के बाल खोल कर उस में तेल डाल कर कंधी कर के उम्रह का एहराम खोल दे और फिर गुस्त कर के “हज का एहराम” बांध कर तल्बियाह पढ़ ले और मिना चली जाए और हज के तमाम अफ्राल अदा करती रहे और हैज़ बंद होने के बाद पांकी का गुस्त कर के तवाफे ज़ियारत और सई करे। अब उस औरत का हज “हज्जे अफराद” शुमार होगा।

हज से फरागत के बाद इस छोड़े हुए उम्रह की क़ज़ा की नीयत से एक उम्रह कर ले और कुरबानी यानी दम दे, वह दम जो साधिक उम्रह छोड़ने की वजह से वाजिब हुआ था।

ऐसी औरत पर “हज्जे तमत्तआ” के शुक्रने का “दम” वाजिब नहीं है। इस लिए कि उस का हज, हज्जे अफराद हुआ है। और हज्जे अफराद करने वाले पर कुरबानी नहीं है। (खैरुल फतावा २३३/४, ऐनी शरह बुखारी १२३/१०, मिशकात ३०४-३०६/५)

नोट: जिस औरत को अपनी अदात के मुताबिक इस बात की उम्मीद न हो कि वह पाक हो कर अयामे हज से पहले उम्रह अदा कर सकेगी। उस के लिए बेहतर यही है की वह हज्जे अफराद का एहराम बांधे ताकि उम्रह छोड़ने की वजह से जो दम वाजिब होता है, वह लाजिम न हो।

नापांकी की हालत में तवाफे ज़ियारत:

२४ से २७ अक्टोबर १६६७ हज हाउस मुंबई में मुनकिद होने वाली ९० वी फिक्ही सेमिनार में हज व उम्रह से मुतल्लिक जो अहम तजावीज़ और फैसले सामने आए थे, उन में से एक तजावीज़ नं. ९० हसबैजैल करार पाई थी।

(अलिफ) तजावीज़ नं. ९० :-

अगर तवाफे ज़ियारत से पहले किसी औरत को हैज़ का खून आ जाए और उस के पहले से तय शुदा प्रोग्राम में इतनी गुंजाइश नहीं है कि वह हैज़ से पाक हो कर तवाफे ज़ियारत कर सके तो उस के लिए पहले तो ज़रूरी है कि हर मुस्किन कोशिश के ज़रिए (पाक हो कर तवाफे ज़ियारत कर सके इतने बहुत के लिए अपना सफर मोअख्खर करवा ले) अगर यह मुस्किन न हो तो हालते हैज़ ही में तवाफे ज़ियारत कर ले, और एक बड़े जानवर की कुर्बानी दम-ए-जनाबत की नीयत से करे। इस तरह करने से उस का तवाफे ज़ियारत अदा हो जाएगा और तमाम पांचदी से मुक़म्मल हो जाएगी।

बगैर तवाफे ज़ियारत के घर वापसी:

तवाफे ज़ियारत हज के तीन फ़राइज़ में से एक फ़र्ज़ है। अगर कोई किसी वजह से तवाफे ज़ियारत नहीं करेगा तो उस का हज पूरा न होगा और न वह अपने शरीक हयात से अजवानी तालुकात कायम कर सकता है। दोनों एक दुसरे के लिए उस बहुत तक हराम होंगे जब तक तवाफे ज़ियारत न कर लें। इस लिए अगर कोई १२ जिलहिज्जा के गुरुवे आफताब तक न कर सका तो तवाफे ज़ियारत में देरी करने कि वजह से सिर्फ दम देना होगा मगर इसके बाद वह सारी उम्र में कभी भी कर सकता है।

तवाफे विदा से पहले हैज़ आना:

अगर कोई औरत हज के सारे अरकान पूरे कर चुकी और मक्का शरीफ से रवानगी से पहले हैज़ आ गया तो ऐसी हालत में वह तवाफे विदा न करे और बगैर तवाफे विदा किए अपने सफर पर रवाना हो जाए। हज़रत इन्हे अब्बास (रज़ी.) से हदीस मरवी है कि “नबी करीम (स.) ने हाएज़ा औरत को रुक़्सत दी है कि अगर उस ने तवाफे ज़ियारत कर लिया हो, तो तवाफे विदा किए बगैर ही सफर पर रवाना हो जाए” (अहमद, हदीस नं. ३५०५)

बीमारी का खून:

ज़्यादा से ज़्यादा हैज़ की मुद्रदत दस दिन और कुछ बच्चे की पैदाईश के बाद निफास की मुद्रदत चालीस दिन है। इससे ज़्यादा मुद्रदत के बाद भी अगर खून आये, तो वह इस्तहाज़ा यानि हैज़ की पुरानी बीमारी में शुमार होगा।

इसी तरह किसी औरत को हमेशा यह आम तौर पर सिर्फ तीन दिन या पांच दिन ही हैज़ का खून आता हो और हरम शरीफ में इतने दिनों तक खून आ जाये, तो ज़्यादा दिन का खून भी हैज़ के बदले बीमारी में शुमार होगा।

इसी तरह अगर किसी औरत को तीन दिन से कम दिन खून आये, तो भी बीमारी में शुमार होगा।

अगर ऐसी बुढ़ी औरत जिस के हैज़ बंद हो चुके हो उन्हे खून आये तो भी बीमारी में शुमार होगा।

अगर किसी हामिला औरत को खून आ जाए तो वो भी बीमारी के खून में शुमार होगा।

इन खून की पहचान यह है, कि इन में हैज़ के खून की तरह बदबू नहीं होती है।

इस्तहाज़ा का खून या बीमारी के खून की मिसाल नकसीर; (नाक से खून आन) जैसी है। जो कभी भी किसी को भी आ सकती है। इस खून से औरतों को न रोज़ा या नमाज़ छोड़ने से न तवाफ़ से महस्तम होना है। ऐसी औरतों को शरीअत में मञ्जूर माना गया है।

यह औरतें नमाज के पांचों बहुत ताज़ा बुजु करें; (गुस्त लाजमी नहीं है।) हैज़ के दिनों में वह जिस तरह पैड (Sanitary Napkin) का इस्तेअमाल करती थीं, उसी तरह साफ़ पैड का इस्तेअमाल करके ताज़ा बुजू से हरम शरीफ में तवाफ़ और नमाज़ अदा कर सकती हैं।



क्या हम भी मुसलमान हैं?

हज़रत हसन बस्ती (रह.) जलील व कद्र ताबई गुज़रे हैं। जिन्होंने ने बड़े बड़े सहाबा (रज़ी.) की ज़ियारत की। आप (रह.) ऐसे ज़माने में ये जब के कदम पर मुहद्देसीन, अइम्मा, उलमा और सुलहा मौजूद थे।

एक दिन किसी ने सवाल किया, हज़रत सहाबा ए कराम कैसे थे? फ़रमाया के अगर तुम इन्हें देखते तो कहते के ये तो दीवाने हैं। और अगर वे तुम्हें देखते तो कहते के इन को इस्लाम से दूर का भी वास्ता नहीं।

अन्दाज़ा कीजिए के हसन बस्ती; रह. द्व्य इस ज़माने में ये बात कह रहे हैं कि अभी सहाबा ए कराम (रज़ी.) की ज़ियारत करते वाले लोग ला तादाद मौजूद हैं। आज हमारे अफ़आल, आमाल और किरदार को देखते तो ना

उम्र भर का कुफ़कारा

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ी.) से रिवायत है के रसूल अल्लाह (स.) से सुना है कि जिस ने हज किया और कोई बेहयाई का काम नहीं किया और फ़िस्क व फुजूर से बचा रहा तो वह गुनाहों से इस तरह पाक हो जाएगा; जैसे आज पैदा हुआ है। (बुखारी, मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ी.) से रिवायत है कि रसूल अल्लाह (स.) ने फ़रमाया: एक उम्रह से दूसरे उम्रह तक बीच के तमाम गुनाहों का कुफ़कारा है और हज्जे मबरुर की जज़ा जन्त है। (बुखारी, मुस्लिम)

हरम और मीकात का बयान

- नवी करीम (स.) का इशांद है, कि “अरबों से मोहब्बत करो, क्योंकि मैं अरबी हूँ। कुरआन अरबी में है और जन्नत की ज़बान अरबी है। (बैहकी हाकिम) इस लिए हम सज़दी अरब का दिल से एहतराम करते हैं”
 - इस काविले एहतराम मुल्क में एक वसीअ़ इलाके को अल्लाह ताअ़ाला ने मुकद्दस करार दिया है। सिफ़ समझने के लिए इस वसीअ़ इलाके को हम मुकद्दस ज़िला का नाम देते हैं।
 - इस मुकद्दस ज़िले के मर्कज़ में एक इतेहाई मुकद्दस शहर है, इस मुकद्दस शहर का नाम मक्का मुकर्रमा है। इस शहर की हुदूद भी अल्लाह ताअ़ाला ने मुत्यन्न कर दिये हैं, इस की एक मशहूर हद को तन्ज़ीम कहते हैं।
 - अल्लाह तआला के हुक्म से हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने इस मुकद्दस ज़िले और मुकद्दस शहर के हुदूद की निशानदही हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम को दी थी। हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम ने इन मुकामात पर बुर्ज या सत्रून की शक्ति में निशानी खड़ी कर दिया था।
 - हज़रत इब्राहिम (अ.स) के बाद हर ज़माने के हुक्मरां उन निशानियों की देखभाल और मरम्मत करते रहे और वे मिकात कहलाते हैं, और वह आज तक करते हैं।
 - मुकद्दस ज़िला और मुकद्दस शहर के वह हुदूद जिस की निशानदही हज़रत जिब्राईल (अ.स) ने हज़रत इब्राहिम (अ.स) को की थी, मिकात कहलाते हैं। मुकद्दस ज़िला और मुकद्दस शहर के मिकात अलग अलग हैं।
 - मुकद्दस ज़िला की सरहद (मिकात) के कुछ मशहूर मुकामात इस तरह से हैं: जुल ख़लीफा,(बीर अली), ज़ते ईराक, करानुलमुनाज़िल, यलमलम, जिद्दा, जिहफा, मुकद्दस शहर मक्का मुकर्रमा की सरहद (मिकात) के कुछ मशहूर मुकामात इस तरह हैं: तन्ज़ीम, ज़अराना, वादिए मुहल्ला, मुज़दल्फा, इज़ातुल्लैन, हुदेबिया।
 - मक्का मुकर्रमा के रहने वालों को अहले हरम माविक कहते हैं। मक्का मुकर्रमा के हुदूद के बाहर मगर मुकद्दस ज़िला के हुदूद के अन्दर की ज़मीन को ‘हिल’ कहते हैं और यहाँ के रहने वालों को ‘अहले हिल’ कहते हैं। मुकद्दस ज़िला से बाहर रहने वालों को ‘आफ़ाकी’ कहते हैं।
 - पहले ज़माने में यह उसूल था कि जब कोई शख्स किसी नये मुल्क में तिजारत के लिए जाता, तो पहले उस मुल्क के बादशाह के दरबार में हाजिरी देता था तो हफा पेश करके इजाजत तलब करता और इजाजत मिलने पर मुल्क में घूम फिर कर तिजारत करता और मुनाफा कमाता। हर शख्स के लिए हर मुल्क की सरहदें मुफ्त में खुली न थीं बल्कि कुछ उसूल थे और मौज़ों उसूल थे।
 - ऐसे ही उसूल इस मुकद्दस शहर मक्का मुकर्रमा के लिए भी है। कोई भी शख्स किसी भी ज़रूरत से चाहे वह इबादत की गर्ज़ से हो या तिजारत की गर्ज़ से हो दननाते हुए इस शहर में दाखिल नहीं हो सकता है। उसे कुछ उसूल की पाबंदी करनी ही होगी। वह निचे दिए हैं।
- 9) मुकद्दस ज़िला की सरहद (मिकात) में दाखिल होने से पहले एहराम पहने।
 - 2) तल्बिया पढ़ते हुए सारे जहाँ के ख़ालिक़ व मालिक के घर पर हाजिरी दें।
 - 3) फिर मौके के मुताबिक हज या उम्रह करें।
 - 4) इन सब से फ़ारिग़ होकर वह फिर दूसरे काम कर सकता है।
- 5) मुकद्दस शहर मक्का में अगर किसी आफ़ाकी को सिर्फ तिजारत के लिए जाना हो और इबादत का इरादा न हो तब भी उन उसूलों की पाबंदी करना लाज़िमी है। यानि हज या उम्रह करना ही होगा।
 - 6) अहले हिल और अहले हरम के लिए तिजारत की गर्ज़ या सिर्फ तावफ की गर्ज़ से मुकद्दस शहर और मुकद्दस ज़िला के दरम्यान बैर एहराम की पाबंदी के आने और जाने की इजाजत है। मुकद्दस ज़िला से बाहर जाने के बाद उन्हें भी एहराम पहन कर हरम शरीफ की हुदूद में दाखिल होना है।
 - अहले हिल और अहले हरम को अगर उम्रह अदा करना है, तो इन मुकद्दस शहर की सरहद पर पहुंच कर पहले एहराम पहनना है, फिर तल्बिया पढ़ते हुए सारी कायनात के ख़ालिक़ व मालिक के दरबार में हाजिरी देकर उम्रह के अरकान अदा करना है। तन्ज़ीम इन मुकामात में से एक है।
 - अहले हरम और अहले हिल को अगर हज करना है, तो उन्हें घर ही में एहराम पहनना है।
- मुकद्दस ज़िला से बाहरी रहने वाले यानी आफ़ाकी जब मुकद्दस शहर मक्का पहुंचकर उम्रह या हज कर लेते हैं और मक्का मुकर्रमा में ही कायम करते हैं, तो वह भी अहले हरम की तरह हैं यानि अगर उन्हें उम्रह करना है, तो ज़िला के सरहद पर (मिकात) पर एहराम बांधने की ज़रूरत नहीं है। वे अहले हरम की तरह मुकद्दस शहर की सरहद पर जाकर एहराम बांध सकते हैं, इसलिए हाजी हज़रत मक्का के कायम में सिर्फ तन्ज़ीम तक जाकर एहराम बांधते हैं। मगर यही हज़रत अगर मुकद्दस ज़िला से निकलें यानी मिकात से बाहर चल गये, तो फिर उम्रह करने के लिए मुकद्दस ज़िला की सरहद या मिकात से ही एहराम बांधना होगा। इसी लिए मक्का से मदीना जाने के बाद अगर वापस आकर फिर उम्रह करना हो, तो जुल्लेफा जो के मदीना की तरफ से मुकद्दस ज़िला की सरहद है या मिकात है वहाँ से एहराम बांधना ज़रूरी है।
- अगर कोई मदीना से आते वक्त जुल्लेफा के बजाए तन्ज़ीम आकर एहराम बांधकर उम्रह करेगा, तो मुकद्दस ज़िला में बैर एहराम के दाखिल होने के जुर्म में दम लाज़िम होगा।
 - आपका वतन या रिहाई श मुकद्दस ज़िला की सरहद या मिकात के जिस सिस्त है, मक्का मुकर्रमा में उम्रह या हज की नीयत से आते वक्त इस सिस्त की मिकात से एहराम बांधना ज़रूरी है। आप गोल चक्कर लगा कर हरम से बिल्कुल कीरब आकर एहराम नहीं बांध सकते क्योंकि अल्लाह ताअ़ाला ने अपने बंदों को एहराम की हालत में तल्बिया पढ़ता देखना पसंद करता है। आप जितना ज़्यादा वक्त एहराम पहन कर तल्बिया पढ़ते हुए साफ़ करे उतना ज़्यादा वक्त अल्लाह ताअ़ाला की पसंददीदह हालत में होंगे।
 - आप मिकात से गुज़रें या उसकी सीधे से गुज़रें, मिकात पर या उससे पहले आप को एहराम पहनना ज़रूरी है। वर्ना, या तो फिर मिकात पर वापिस जाकर एहराम पहनना होगा या दम देना लाज़िम होगा।
 - हिन्दुस्तान की तरफ मुकद्दस ज़िला की सरहद मिकात यलमलम का पहाड़ है, अब आप यलमलम के पास या इस की सीधे से पैदल या पानी के जहाज या हवाई जहाज़ से गुज़रें, इस के पहले आप को एहराम पहनना लाज़िमी है। हवाई जहाज़ या पानी के जहाज़ चक्कर काट कर दूसरी तरफ से जिद्दा पहुंच जायेगा और आप जिद्दा से एहराम पहन कर हुदूदे हरम में दाखिल

(बाकी पेज 37 पर)

कुर्बानी में धोका

- हज एक अजीम इबादत है। बहुत सारे लोग खिदमते खल्क के ज़ज्जे से पानी पिलाते हैं और खाना खिलाते हैं। मिना और अरफात में इस्तेमाल होने वाली चीज़ें हाजियों को मुफ्त बांटते हैं। ऐसा ही एक तबका आप को अपनी खिदमत ९० ज़िल्हिज्जा के दिन कुर्बानी में मदद के लिए पेश करेगा। यह आप से कहेंगे कि हर साल हम सौ या दो सौ या इस से भी ज्यादा हाजियों के लिए कुर्बानी करते हैं। अगर आप चाहें तो आप के लिए भी कुर्बानी कर के आप पर एहसान कर सकते हैं। ऐसा ही आप के बिल्डिंग के ज़िम्मेदार भी कहेंगे। खबरदार रहिये, यह सफेद पोश मददगार नहीं, थोके बाज़ है।
- हर हाजी मक्का में नया होता है। ९० ज़िल्हिज्जा के दिन बहुत ज्यादा काम होते हैं। लंबी दूरी तय कर के म़ज्जह खाना जाकर कुर्बानी करने का हैसला नहीं होता है। एहराम उत्तरने की जल्दी होती है, इस लिए हर हाजी शॉर्ट कट इश्तियार करना चाहता है और दलालों को रूपया दे कर बरीउज़िम्मा होना चाहता है। मगर ये बहुत बड़ी गलती है।
- हम ने और हमारे कई साथीयों ने हज से तीन दिन पहले कअर्कइ म़ज्जह खाना जाकर जानवर बेचने वालों से जानवरों की कीमत, दलालों के ज़रिये कुर्बानी, म़ज्जह खानों में कुर्बानी का तरीका, कुर्बानी के गोश्त का मस्तक, वगैरह वगैरह के बारे में गहराई से तहकीकात की, जिस से पता चला कि:

 - हर दलाल का जानवर बेचने वाले से एक कारोबारी संबंध होता है। अगर वह हाजियों से ३०० या ३२५ रियाल वसूल करेगा तो ऐसे जानवर ख़रीदगा जिन की कीमत सिर्फ़ २७० से २८० रियाल तक होगी।
 - वह जानवर बेचने वाले से भी कमीशन वसूल करेगा।
 - अगर सौ कुर्बानी के लिए रूपया वसूल किया है, तो सिर्फ़ ७० या ८० जानवरों की कुर्बानी कराएगा।
 - कुर्बानी का एक तिहाई गोश्त ग़रीबों को बांटना होता है लेकिन अगर हाजी अपनी कुर्बानी का गोश्त छोड़ दें, तो दलाल पूरा का पूरा गोश्त होटलों में बेच देगा।
 - कुर्बानी करते वक्त किसी भी हाजी का नाम नहीं लिया जाता है। हम लोग तहकीक कर ही रहे थे कि उस वक्त तक हर हाजी न किसी दलाल को रूपया दे चुका था। हम में से कई हाजियों ने दलालों से रूपया वापस ले लिए और जो न ले सके उन्होंने अपने दिल के इत्मिनान के लिए फिर से कुर्बानी की।
 - मक्का मुकर्रमा में तीन म़ज्जह खाने हैं एक मिना और मुज्जल्फ़ा के बीच में है, और मिना से बहुत नजदीक है। जहाँ आप पैदल जा सकते हैं। दुसरा कअर्कइ में है। और तीसरा और सब से बड़ा अल्-मईसम (Al-Meaysem) है। कअर्कइ म़ज्जह खाना मक्का मुकर्रमा शहर से ५ कि.मी. दूर है। यहाँ जाने के लिए आप को हरम में मिस्फ़ता इलाके से टेक्सी मिलती है। अगर आप शेयर-टेक्सी से सफर करें तो २ से ५ रियाल किराया होगा। और अगर अकेले सफर करें तो २० रियाल भी किराया हो सकता है।
 - मईसम म़ज्जह खाना बहुत बड़ा है और यहाँ से ही सारी दुन्या में कुर्बानी का गोश्त गरीब मुल्कों में भेजा जाता है। यह म़ज्जह खाना मिना और मुज्जल्फ़ा के दरमियान है, यह फैसल पुल और अब्दुल अज़ीज़ पुल के दरमियान वाकै है। अगर आप अरफात की तरफ रुख करें तो यह मिना के बाएं तरफ पहाड़ी के पीछे है। फैसल पुल से यह ३ कि.मी. की दूरी पर है।

और अब्दुल अज़ीज़ पुल से दूरी २ कि.मी. है और वहाँ पहोंचने के लिए सुरंग से होकर गुज़रना होगा।

- मईसम और कअर्कइ में कुर्बानी का अच्छा इन्तेज़ाम है, जहाँ बकरे, दुबे, गाय और ऊंट वगैरह आप अपनी इस्तेमाल के मुताबिक ख़रीद सकते हैं। जानवर ख़रीद कर आप उन्हें म़ज्जह खाने में जमा कर दीजिए। वे बकरे की कुर्बानी का ३० रियाल, गाय का १५० रियाल और ऊंट का २५० रियाल लेंगे। कुर्बानी हुक्मत के आदमी ही करते हैं मगर आप गैलरी में खड़े रह कर देख सकते हैं। जानवर जमा करने पर आप को एक कूपन मिलता है। जिसे दिखा कर अगर आप चाहें तो जानवर का पुरा गोश्त घर ले जा सकते हैं और नहीं तो हुक्मत उसे ग़रीब मुल्कों में भेज देगी।

- मिना म़ज्जह खाने में भी ऊंट और गाय बैल के कुर्बानी का ऐसा ही इन्तेज़ाम है। दुसरा आसान तरीका बैंक में रूपया जमा करना है। ये भी सही तरीका है। बैंक में रूपया जमा करने में कोई हर्ज नहीं। क्यों के कुर्बानी की ज़िम्मेदारी हुक्मत लेती है और हुक्मत दिल व जान से हाजियों की खिदमत करने में कोई कसर नहीं छोड़ती।
- अगर लोगों की भीड़, वक्त की कमी, खो जाने का डर, कमज़ोरी वगैरा से आप खुद कुर्बानी नहीं कर सकते, तो बैंक के ज़रिए कूपन ले कर कुर्बानी कर दीजिए। वरना कुर्बान गाह जा कर कुर्बानी कीजिए, जो कि ज्यादा बेहतर है। मगर हर हाल में दलालों से होशियार रहिए। अगर आप हज से पहले म़ज्जह खाना जा कर कुर्बानी के जानवरों के बारे में अच्छी तरह मालूमात हासिल कर चुके हैं तो ही हज के दौरान खुद कुर्बानी कीजिए वरना मदरसा सौलतिया या बैंक के ज़रिए कुर्बानी कीजिए, क्योंकि नए लोगों को हज के शर्दी भीड़ वाले दिनों में खुद कुर्बानी करने में कई बार बहुत मुश्किलात पेश आती हैं।

मकाश शरीफ में हरम से बाहर मदरसा सौलतिया है, जो वर्षों से हाजियों की खिदमत करता चला आ रहा है और एक ज़िम्मेदार और दीनदार इदारा है। मदरसा सौलतिया बाबे फ़हद के करीब हारतुल बाब इलाके में बच्चियों के कब्रस्तान के करीब हैं। अगर आप मदरसा सौलतिया के ज़रिए कुर्बानी करें तब भी सही है। वह आप के बताए हुए वक्त पर ही कुर्बानी करेंगे। या फिर उनसे पूछ लें की वह आपको कुर्बानी किस दिन और किस वक्त करेंगे। फिर उसके बाद सिर मुँडवाएं। इस तरह आप के अरकान सही तरतीब से अदा हो जाएंगे।

- हाजी के लिए दो कुर्बानियां हैं एक हज की कुर्बानी और दूसरी ईदुज्जुहा की कुर्बानी। हज की कुर्बानी मुतभ्या और कारिन पर हुदूदे हरम में वाजिब और मुर्फिर्द पर मुस्तहब है। जबकि ईदुज्जुहा की कुर्बानी के लिए यह हुक्म है, कि अगर हाजी मुसाफिर हो, तो उस पर यह कुर्बानी वाजिब नहीं है और अगर मुसाफिर नहीं है, तो उस पर यह कुर्बानी वाजिब है। यह कुर्बानी वह हुदूदे हरम में भी कर सकता है और अपने वतन में भी। इस लिए अगर किसी को कुर्बानी अपने वतन में करना हो, तो पहले ही से अपने घर वालों को कुर्बानी की हिदायत देकर रखें।
- किसी ग़लती पर अगर दम लाजिम हो गया हो, तो वह कुर्बानी भी हुदूदे हरम में देना लाजिम है, और उसका गोश्त आप खुद इस्तेमाल नहीं कर सकते।
- बकरी, मेंढ़ा दुम्बा वगैरह पर सिर्फ़ एक ही कुर्बानी होगी। ऊंट, बैल वगैरह पर सात कुर्बानी के हिस्से हो सकते हैं।

(बाकी पेज ३७ पर)

तारीखे मक्का मुकर्मा और काबा शरीफ़

- हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ी.) रात्रि हैं कि आसमान व ज़मीन की पैदाइश के ज़माने में पानी की सतह से सब से अबल काबा का मुकाम नमुदार हुआ। फिर इस के बाद ज़मीन इस के नीचे से फैलाई गई। (मध्यरेफत काबा, पेज़: ५)
- अल्लाह तआला फरमाते हैं। लोगों के लिए इबादत की गरज़ से बनाया जाने वाला पहला घर मक्का में है जो तमाम दुनिया के लिए बरकत व हिदायत वाला है। (सूरह आले इमरान, ६६)
- काबा शरीफ की तभीमीर १२ मरतबा हुई। इस में पांच बहुत मशहूर हैं। (१) फरिश्तों ने पहली बार तभीमीर किया। (२) हज़रत आदम (अलै.) ने दूसरी बार तभीमीर किया। (३) हज़रत इब्राहीम (अलै.) ने तीसरी बार तभीमीर किया। (४) हुजूर (स.) जब २५ साल के थे तब कुरैश में नरमत किया। (५) हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़ी.) ने ६५ हिजरी में नए स्तरों से तभीमीर किया।
- हज़रत इब्राहीम (अलै.) के ज़माने तक हतीम खाना काबा का हिस्सा था। कुरैश ने जब काबा शरीफ की फिर से मरम्मत की, तो हलाल और पाक दौलत की कमी की वजह से खाना काबा को पहले शक्त में न बना सके और हतीम का हिस्सा खाना काबा में शामिल न कर सके।
- हज़रत अब्दुल्लाह इन्हे जुबैर (रज़ी.) ने जब खाना काबा की मरम्मत की तो हतीम भी खाना काबा में शामिल कर दिया और पहले की तरह खाना काबा में दो दरवाज़े कर दिए। एक मशिरक और एक मगरिब की तरफ। जब हुज्ञाज मक्का मुकर्मा का गवर्नर बना तो उस ने हज़रत जुबैर (रज़ी.) को शहीद कर दिया और खलीफा अब्दुल मलिक बिन मरवान को इज़ाजत से हतीम को फिर खाना काबा से बाहर कर दिया और मगरिबी दरवाज़ा भी बंद कर दिया। खलीफा को जब हज़रत आइशा (रज़ी.) की हड्डी पहुँची तो बहुत पछताया। मगर उस ने खाना काबा को इसी तरह रहने दिया और आज तक खाना काबा इसी हालत में है।
- कुरआन शरीफ में मक्का मुकर्मा के पांच नाम हैं।
मक्का, बक्का, अल—बलद अल—अमीन, उम्मुल कुरा, करया
- दूसरी म़ज़हबी किताबों में भी खाना काबा का ज़िक्र है। हिंदुओं कि किताबों में खाना काबा के निष्ठित नाम हैं।

इलास्पद- इला यानी अल्लाह, और अस्पद यानी मकाम। (अल्लाह का मुकाम) नाभा-पृथिव्या, नाभ यानी नाफ, पृथिव्या यानी पृथ्वी या ज़मीन (नाफे ज़मीन) नाभी कमल- नाभी यानी नाफ कमल यानी कमल का फूल (उनके मुताबीक खाने काबा कि ज़मीन पहले कमल की फूल की तरह पानी से उपर आयी फिर चारों तरफ फैल गई और इस कमल का दरम्यानी हिस्सा खाने काबा है।)

अदि पुश्कर तीर्थ- आदि पुश्कर यानी बेहद मुक्कदस तीर्थ यानी मुक्कदस मुकाम (या बेहद मुक्कदस मुकाम)

मुक्तेश्वर- मक्त यानी मक्का, मक्का मुकर्मा ईश्वर यानी परमेश्वर या खुदा (मक्तेश्वर यानी खुदा का मक्का)
और भी कई नाम हैं जैसे दारदुकाबन, अलायास्पद वगैरह

- बाइबल में मक्का मुकर्मा को बक्का के नाम से याद किया गया है। और खाने काबा को अल्लाह का घर बयान किया गया है। (पासल्स ८:४:६)
- अल्लाह तआला ने काबा शरीफ के इतराफ एक बड़े इलाके को हरम करार दिया है। हज़रत जिब्राइल (अलै.) ने इस इलाके की निशान-दही हज़रत इब्राहीम (अलै.) को की थी। हज़रत इब्राहीम (अलै.) ने हरम की सरहद पर

निशानी के तौर पर बुर्ज बना दिए थे। हर दौर में इस की मरम्मत होती रही। और आज तक बाकी है। इस में से एक तन्ऱीम है। जहाँ से उपरे के लिए हाजी एहराम बांधते हैं। इस इलाके में हर जानवार को अमान है। अल्लाह तआला फरमाते हैं, “जो शख्स इस हरम में दाखिल हो जाए वह अमन वाला हो जाता है।” (आते इमरान, ६८)। इस इलाके में अगर कोई कल्त करके भी दाखिल हो जाए, तो न इसे हरम में कल्त किया जाएगा न गिरफ्तार, जब तक वह हरम से बाहर न आ जाए। हाँ! अगर वह हरम में जुर्म करे तो सज़ा मिलेगी क्योंकि इस ने हरम की बेहुर्ती की है।

- हुजूर (स.) का इरशाद है कि मस्जिदे हराम की एक नमाज़, एक लाख नमाज़ों से भी बढ़ कर है। (मस्नद अहमद)
- यानी एक वक्त की नमाज़ ५५ साल की नमाज़ों से ज्यादा है और यह एक लाख गुना ज्यादा सवाब का मिलना सब नेकियों के लिए है। इसी तरह मक्का मुकर्मा में जिस तरह नेकियां बढ़ती हैं उसी तरह गुनाह भी बढ़ते हैं।
- मुकामे इब्राहीम वह पथर है जिसे अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम (अलै.) के लिए नरम कर दिया था और इस पर खड़े हो कर वह खाना काबा की तभीमीर करते थे और इस पर हज़रत इब्राहीम (अलै.) के कदमों के निशान हैं। पहले यह पथर खाना काबा से बिल्कुल लगा हुआ था। अल्लाह तआला फरमाते हैं कि तुम मुकामे इब्राहीम को जा-नमाज़ बनाओ। (बुखारी ७०२)
- मुसलमानों की तादाद ज्यादा होने के बाद मुकामे इब्राहीम पर नमाज़ पढ़ने वालों से तवाफ करने वालों को दुश्वारी होने लगी तो हज़रत उमर (रज़ी.) ने मुकामे इब्राहीम को खाना काबा से तकरीबन १४ मीटर दूर कर दिया था और आज तक उसी जगह है। (फतेह अल-बारी, शरह हवीस ७७२)
- खाने काबा का रक्बा तकरीबन १६०० स्कवायर फिट है अगर हितिम को भी शामिल कर दिया जाए तो ये २३०० स्कवायर फिट है खाने काबा कि ऊंचाई ४६ फिट है।
- खाने काबा की छत को तीन उमुदी सुतूरों (कॉलम) का सहारा है।
- खाने काबा के अंदरूनी हिस्से कि सजावट बिल्कुल मस्जिदे नबवी के रियाजुल जन्ना की तरह है। अंदरूनी हिस्से कि सफाई का विडीयो आप इंटरनेट युट्युब पर देख सकते हैं।
- खाना ए काबा पर पहली बार गिलाफ दौरे जाहिलियत में तब अस्अदुल हमैरी ने चमड़े का पहनाया था। हुजूर (स.) ने फतहे मक्का के बाद यमनी कपड़े का गिलाफ पहनाया था। नासिर अब्बासी ने पहली बार काले रंग का गिलाफ पहनाया था। तब से अब तक गिलाफ काले रंग का ही पहनाया जाता है।
- हजरे अस्वद और मकामे इब्राहीम यह दोनों जन्नत के दो चमकदार पथर थे, लेकिन अल्लाह तआला ने उन का नूर खत्म कर दिया। अगर अल्लाह तआला उन का नूर खत्म न करमाते तो यह ज़मीन व आसमान के दरम्यान या मशिरक और मगरिब के दरम्यान पूरी दुनिया को रौशन कर देते। (मस्नद अहमद २९३/२)
- ज़मीन पर बेहतरीन पानी आब ए जम ज़म है। यह खूराक भी है और बीमारी से शिका भी। (मोअज्जा कबीर, तिबारी, हवीस १११६)
- हजरे अस्वद और काबा के दरवाजे की दरम्यान जगह को मुल्तज़म कहा जाता है। हज़रत मुजाहिद ने फरमाया, जो इस जगह अल्लाह सुब्बानहू तआला से दुआ करेगा, अल्लाह तआला ज़स्तर उस की दुआ कबूल फरमाएँगे। (तारीख ए मक्का, अज़रकी ३६८/२) हुजूर (स.) यहाँ दीवार से इस तरह विमट कर दुआ मांगा करते जैसे बच्चा अपनी माँ से विमट जाता है और यहाँ इस तरह दुआ मांगना सुन्नत है।



मक्का मुकर्मा के तारीखी मुकामात

मौलिदे रसूल यानी हुजूर (स.) की जा-ए-पैदाइशः-

यह वह मुकाम है जहाँ २२ अप्रैल ५७७ हिजरी सन को नवी करीम (स.) रहमते आलम बन कर दुनिया में तशीफ लाए थे। अब इसी मुकाम पर एक लायब्रेरी और मदरसा है। यह मुकाम हरम शरीफ से ३ फलांग की दूरी पर सफा मरवा की जानिब टैक्सी स्टैण्ड के पास है।

जन्मतुल मुअल्ला:- यह मक्का मुकर्मा का कब्रस्तान है। यहाँ पर उम्मल मोमिनीन हज़रत खतीजतुल कुबरा (रज़ी), बहुत सारे सहाबा ताबैन और औलिया-ए-किराम (रज़ी) मदफून हैं। मस्जिदे जिन्न के करीब मीना जाने वाली सड़क पर है।

मट्टिजद अल-दरया :- यह वह जगह है जहाँ नवी करीम (स.) ने फतह मक्का के मौके पर अपना झंडा नसब फरमाया था।

मट्टिजदे जिन्न:- इस जगह नवी करीम (स.) ने जिन्नातों से बैतली थी।

जबल ए नूर :- यह पहाड़ मक्का मुकर्मा से मिना जाने वाले रास्ते पर तकरीबन ३ मील की दूरी पर है। इस की ऊँचाई तकरीबन २००० फिट है। इस की चोटी पर गार ए हिरा है, जहाँ पहली बार नवी करीम (स.) पर वही नाज़िल हुई थी।

जबल ए सौर :- यह पहाड़ मक्का मुकर्मा से तकरीबन ६ मील की दूरी पर है। इस की चोटी पर गार ए सौर वाक़उे है, जिस में नवी करीम (स.) ने हिजरत के वक्त हज़रत अबू-बक्र सिद्दीक (रज़ी) के साथ तीन दिन क्याम फरमाया था। इन दोनों पहाड़ों पर कमज़ोर, ज़ईफ और बीमार न चढ़ें।

मट्टिजदे आइया (रज़ी):- इस मस्जिदे को मस्जिदे तनीम भी कहते हैं। यह हुदूदे हरम के बाहर है। मक्का मुकर्मा में रहते हुए अगर किसी को उम्रह करना हो तो इस मुकाम पर आ कर उम्रह का एहराम बांधा जाता है।

हज़रत ख़तीजा (रज़ी) का घट :- इस मुकाम पर नवी करीम (स.) ने मदीना मुनव्वरा हिजरत करने तक क्याम फरमाया। हज़रत इब्राहीम (अलै.) के इलावा आप (स.) की सारी औलादें इस मुकाम पर पैदा हुईं। यह मुकाम मरवा की तरफ छपरा बाज़ार में दाखिल होते ही दाएँ जानिब ज़रगरों की पहली गती में हैं। अब यहाँ दारुल हुफ़ाज़ क्याम कर दिया गया है, जहाँ बच्चे कुरआन पाक हफ़ज़ करते हैं।

मस्जिदे खैफ़, मस्जिदे नमरा, मस्जिदे श्रावरुल हराम, जबल ए रहमत, जम्रात यह वह मुकामात हैं जहाँ आप को हज के पांच खास दिनों में जाना होगा। मगर लोगों के हुजूम की वजह से आप किसी भी मुकाम को ठीक से नहीं देख पाएंगे। इस लिए हज से पहले या बाद में इत्मिनान से इन मुकामात को ज़रूर देखें।

कुछ मशहूर नामों का तात्परफ़:

काबा या बैतुल्लाह: अल्लाह तआला का घर जिस का हज और तवाफ़ किया जाता है। उसको काबा या बैतुल्लाह कहते हैं, और वह वह मस्जिद जिस में बैतुल्लाह वाक़उे हैं उसे मस्जिदे हराम कहते हैं।

रुक्न यमानी: खाना ए काबा का जुनूब मगरिबी कोना है। यमन की सिस्त वाक़उे हैं।

रुक्न इराक़: खाना ए काबा का ईराक़ की सिस्त का कोना है।

रुक्न शार्मी: खाना ए काबा का शाम की सिस्त का कोना है।

हज़ अस्वद: दीवार काबा में खुने यमानी के बाद वाले कोने में नसब वह पथर जिसे बोसा दे कर या जिसकी तरफ मुंह कर के दूर से हाथ उठाकर तवाफ़ का हर चक्कर शुरू किया जाता है।

मुल्ताज़िम: हज़े अस्वद और बैतुल्लाह के दरवाज़े के दरमियान की दीवार जिस पर लिपट कर दुआ मांगना मसनून है।

हतीम: बैतुल्लाह से मुतसिल सुमाली जानिब का वह हिस्सा जो खाना ए काबा में शामिल था। यह बैतुल्लाह ही का हिस्सा है, जो कुरैश की तअ़मीर के वक्त हलाल कमाई के कम पड़ने की वजह से बैतुल्लाह से बाहर छोड़ दिया गया था।

मिज़ाबे रहमत: खाना ए काबा की छत से हतीम की तरफ बारिश के पानी के गिरने की जगह (परनाला) यह वह जगह है, जिस पर खड़े होकर हज़रत इब्राहीम अलैहस्सलाम ने बैतुल्लाह को तअ़मीर किया था।

तन्ज़ीम: यह एक मिकात है, जहाँ से मक्का मुकर्मा में क्याम के दौरान उम्रह के लिए एहराम बांधते हैं।

मिकात: उस जगह को कहते हैं जहाँ से हुदूदे हरम से बाहर रहने वालों के मक्का मुकर्मा के लिए उम्रह या हज की नीयत से आने के लिए एहराम बांधना ज़रूरी होता है।

चुल्हलैफ़: मदीना से मक्का की तरफ तकरीबन दस किलो मीटर पर वाक़उे हैं, जो मदीना वालों का मिकात है।

ज़ाते ईराक़: मक्का से ईराक़ की तरफ तकरीबन तीन रोज़ की मुसाफरत पर है, जो ईराक़ से आने वालों के लिए मिकात है।

यलम्लम: मक्का से जुनूब की तरफ दा मज़िल पर एक पहाड़ है, यह हिंदोस्तानियों और पाकिस्तानियों के लिए मिकात है।

जहफ़ा: शाम की तरफ मक्का से तीन तीन मंज़िल पर है, जो शामियों के लिए मिकात है।

कुर्बनुल मनाज़िल: नज़ की तरफ से आने वालों के लिए मिकात है।

सफ़ा: काबा के करीब जुनूब में एक पहाड़ी है जहाँ से सर्दी शुरू करते हैं। यही वह पहाड़ी है जहाँ खड़े होकर नवी-ए-करीम (स.) ने सब से पहले कुरैश को इस्लाम की दावत दी थी।

मरवा: काबा के सुमाल मशिरकी गोशे के करीब एक पहाड़ी है, जहाँ से सर्द ख़त्म करते हैं।

मस्ता: सफा और मरवा के बीच सई दरने की जगह।

मीलैन अस्वद्दैन: इस जगह से खाना-ए-काबा के पास लेटे हुए नन्हे हज़रत इस्माईल नज़र नहीं आते थे इसलिए इस जगह से हज़रत हाजरा (रज़ी.) दौड़ कर गुज़रती थी। इस जगह की निशान-दही के लिए दो होरे रंग के सुनून खड़े कर दिए गए हैं। हज़रत हाजरा (रज़ी.) की सुन्नत अदा करने के लिए मद्द हाजियों को यहाँ दौड़ कर गुज़रना है।

आस्फ़त: मिना से तकरीबन ६ किलो मीटर दूर एक मैदान है जहाँ की मस्जिद में हज का खुत्बा दिया जाता है और जहाँ हज के दिन हाजिर होना ज़रूरी है। यह ज़रूरी नहीं है, के सिर्फ़ मस्जिद नुम्रा में ही हाजिर हों बल्कि मैदाने अस्फ़त में जहाँ की हाजिर हों जायज़ है। याद रहे, कि अगर आप अस्फ़त के मैदान में हाजिर नहीं हुए, तो हज न होगा।

जबले रहमत: अस्फ़त में वह पहाड़ जिसके करीब नवी करीम (स.) ने हज़तुलविदा का खुत्बा दिया था। यही पर ज़मीन पर पहली बार मौ हव्वा और हज़रत आदम (अ.स.) की मुलाकात हुई थी।

हमता: यह वह वादी है जहाँ पर हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने हज़रत इस्माईल (अ.स.) की कुरबानी देने की कोशिश की थीं। यहाँ पर हाजियों को कम अज़्ज़ कम तीन दिन रहना चाहिए।

(बाकी पेज ३७ पर)

हज क्या है?

हज क्या है?

- खाना-ए-काबा की तरफ खुदा के हुक्म के मुताबिक आना, तवाफ व सई करना और अ़रफ़ात में ठहरने और रसूल करीम (स.) के सिखाए हुऐ तरीके के मुताबिक अरकान अदा करने को हज कहते हैं।
- हज हर मुसलमान, बालिग, आकिल, समझदार और हर मालदार पर, जिन्दगी में एक बार फर्ज है।
- अल्लाह तभाला फरमाते हैं, कि

وَلِلّٰهِ عَلٰى النّاسِ حُجّ الْبَيْتٍ مَنْ أُسْتَطَعَ إِلَيْهِ سَيْلًا (۱۷:۶۰)

“व लिल्लाहि अलन्नासि हज्ज बैति मनिस तताआ इलैहि सबीता।”

तर्जुमा: “लोगों पर अल्लाह का यह हक है, कि जो उसके घर तक पहुंचने की इस्तेताअत रखता हो वह उसका हज करे।” (सूरह आले इमरान: ६७)

- नबी करीम (स.) ने फरमाया: “ऐ लोगों! अल्लाह तभाला ने तुम पर हज फर्ज किया है, इस लिए हज करो।” (मुस्लिम निसाई)
- नबी करीम (स.) का इशारा है, कि: “जो हज का इरादा रखता हो, वह जल्दी करो।” (अहमद अबू दाऊद)

इमाम अहमद (रह.) इमाम अबु हनीफा (रह.) और इमाम मालिक (रह.) फरमाते हैं, कि इन्सान माली और जिस्मानी तौर से हज करने के काबिल जैसे ही होता है। उस पर हज फौरन वजिब हो जाता है। (इसमें देर नहीं कर सकते) लेकिन इमाम शाफ़ी(रह.) का ख्याल है, कि कुछ वक़फ़ा देर की जा सकती है, लेकिन आखिर उम्र तक नहीं बल्कि हमेशा हज का इरादा किये रहे जब तक पूरा न कर लें (और जितनी जल्दी मुक्किन हो हज कर ले) वरना गुनाहगार होंगा।

हज की फ़ज़ीलत:

- जिस शख्स ने हज किया और ज़िना और गुनाह से महफूज़ रहा, तो वह तमाम गुनाहों से पाक होकर ऐसा लौटा जैसे कि माँ के पेट से पैदा होने के रोज़ पाक था। (बुखारी, मुस्लिम)
- हजरत अबु हुरैरा (रजी.) से रिवायत है, कि नबी करीम (स.) ने फरमाया कि उम्र, दूसरे उम्र तक के गुनाहों का कफ़ारा है, जो इन के दरम्यान सरज़द रहा और हज मबरुर का सवाब जन्मत ही है। (बुखारी, मुस्लिम)

हज न करने पर वर्द्धद:

- हजरत अब्दुल्लाह इब्ने उमर (रजी.) फरमाते हैं, कि जो शख्स तंदरस्त हो, हज के अद्वाजात रखता हो, फिर भी बैगर हज किए मर जाये, तो क्यामत के बिन उसकी पैशानी पर काफिर लिखा होगा। (दुरर मन्त्र)
- हजरत अबी इमामा (रजी.) फरमाते हैं, कि रसूल अल्लाह (स.) फरमाया के जिस शख्स को किसी ज़रूरी हाजत या ज़ालिम बादशाह या शदीद मर्झ़ ने हज से नहीं रोका और उस ने हज नहीं किया और मर गया, तो वह चाहे यहूदी हो कर मरे या नसरानी हो कर मरे। (वारमी)
- हजरत अब्दुल्लाह इब्ने उमर (रजी.) से रिवायत है कि नबी करीम (स.) ने फरमाया के इस्लाम की बुनियाद पांच चीजों पर है। (१)कल्पा (२)नमाज

(३)ज़कात (४)रोज़ा (५)हज, तो जो शख्स इन में से किसी रूपन को तर्क करता है, तो वह इस्लाम की इमारत को ढ़ाहना चाहता है। (बुखारी शरीफ़)

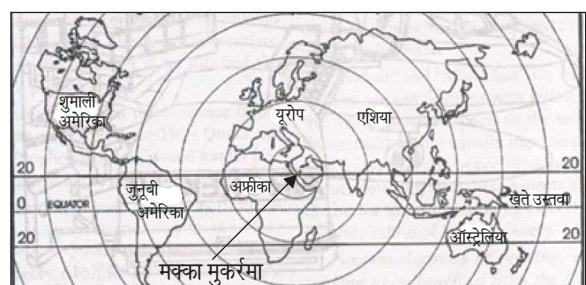
फ़लसफ-ए-हज़:

जिसमें दिल की और दौराने खून की क्या अहमियत है?

दौराने खून के अमल से खून जिसे सफाई की ज़रूरत हैदिल तक पहुंचाता है। और वहाँ से सफाई के लिए भेजा जाता है और फिर साफ खून तमाम जिसमें वापस लौटाया जाता है, ताकि तमाम जिसमें बिल्कुल तंतुरस्त रहे। जिसके वह हिस्से जिसमें खून का दौरान कम होता है, कमज़ोर पड़ जाते हैं और जिसका वह हिस्सा जिसमें खून का दौरान रुक जाता है, सड़ जाते हैं।

ज़मीन का मर्कज़ कहाँ है?

- अगर हम ज़मीन का नक़शा देंखें, तो जो खुश्की का इलाक़ा है और जहाँ इंसान बसते हैं वह खते उत्तरवा (Equator) के ४० डिग्री ज़ुनूब में है और ८० डिग्री शुमाल के दरम्यान है। यानि खते इस्तवा खुश्की के मर्कज़ से नहीं गुजरता बल्कि खुश्की के मर्कज़ से गुजरने के लिए हमें २० डिग्री शुमाल की तरफ बढ़ना होगा।
- इसी तरह ज़ीरो डिग्री खते तूलुल बलद ग्रीन विच मुकाम से गुजरता है, मगर यह भी इंसानी आबादी और खुश्की के मर्कज़ से नहीं गुजरता बल्कि खुश्की कि मर्कज़ से गुजरने के लिए हमें २० डिग्री मधिरक की तरफ बढ़ना होगा।
- ज़मीन के आबादी वाले इलाक़ों का मर्कज़ अगर हम उपर बताए गये तरीके से तलाश करें, तो जिस मुकाम पर हम पहुंचेंगे वह शहर मक्का मुकर्मा होगा जिसे आप खुद नक़शे में देख सकते हैं।
(मक्का शहर दुनिया के नक़शे में तुलुल बलद Longitude 38.5 डिग्री और अरजुल बलद Latitude 21.5 डिग्री पर है।)



यह शहर ज़मीन का मर्कज़ और इस के दिल की तरह है। अल्लाह तभाला ने कुरान शरीफ़ में फरमाया है:-

إِنَّ أَكْبَرَ بَيْتٍ وَضَعَةً لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِكَعْكَةٍ مُبَرْكَةٍ هُدُجٍ لِلْعَابِرِينَ (۱۷:۶۱)

“इन्ना अब्ला बैतिंव-वुज़ेआ लिन्नासि लिल्लज़ी बिबकता मुबा-रक्व व हुल-लिल-आलीन”

तर्जुमा: “पहला घर जो लोगों के इबादत करने के लिए मुकर्रर किया गया है, वही है, जो मक्का मुकर्मा में है। बा बरकत और जहाँ के लिए मौजिब हिदायता।” (आले इमरान: ६६)

तो यह घर लोगों के लिए हिदायत का ज़रिया है और यह बात क्यामत तक के लिए अटल रहेगी और मक्का मुकर्रमा सही दीन का हमेशा सर चश्मा रहेगा।

- जैसे अल्लाह तआला ने कुरआन की हिफाज़त की ज़िम्मेदारी खुद ली है और क्यामत तक कोई इस में तब्दीली नहीं कर सकता। इसी तरह खाना काबा के उलमा और उस के ज़िम्मेदारों से दुनिया को हमेशा हिदायत का रास्ता मिलेगा। इस की ज़िम्मेदारी भी अल्लाह तआला ने खुद ली है। इस मुकद्दस घर को अल्लाह तआला कभी गुमराही फैलाने वाले इमाम और आलिम की सरपरस्ती में नहीं देगा। या यहाँ से दुनिया में कभी गुमराही नहीं फैलेगी।

तूफाने नूह और गुमराही:

- तूफाने नूह एक आलमी सज़ा थी इस में हज़रत नूह (अलै.) और उनके साथियों के इलावा सारी दुनिया हलाक हो गयी थी। बाद में सारी दुनिया हज़रत नूह (अलै.) और उनके साथियों से ही आबाद हुई। इस लिए दुनिया की हर कौम में इस तूफाने नूह का ज़िक्र मौजूद है, मगर अहम बात यह है, कि हर कौम के तूफाने नूह की तफ़सील में ज़मीन आसमान का फर्क है। (इंटरनेट पर Flood Legend के उनवान से आप खुद तलाश करके इस मौजूद पर पढ़ सकते हैं।)

दुनिया नये सिरे से हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम) और उनके साथियों से आबाद हुई, तो सारी दुनिया में जहाँ भी ये बसे, तुफान का किस्सा एक जैसा होना चाहीए था, मगर इस लिए नहीं है कि, हर दौर में जब इस किस्से को कहने सुनने में कुछ कुछ शुल्की होने लगी, तो इसकी इस्लाह करने वाला कोई न था। ख़ता पर ख़ता होती चली गयी और आधिक्र में सारा किस्सा असल से बिल्कुल मुख्तालिफ़ हो गया।

जो तूफाने नूह अलैहिस्सलाम के किस्से के साथ हुआ वही तमाम मज़ाहिब के नज़रयात के साथ हुआ। किसी पैगम्बर ने शिर्क और बुत परस्ती की तात्त्वीम नहीं दी थी, मगर जब नज़रयात में बिगड़ पैदा हुआ, तो लोगों ने इस की इस्लाह की कोशिश न की या उन्होंने इस निज़ाम पर अमल नहीं किया, जिससे इस्लाह हो।

- हज यह दुनिया की दाईंगी हिदायत और इस्लाह का ज़रिया है। इस हज की इबाबत के जरिए दौरान-ए-खून की तरह सारी दुनिया के इन्सानों को ज़मीन के दिल यानी मर्कज़ (मक्का मुकर्रमा) में जमा होता है और अपने इस्लाह के बाद फिर सारी दुनिया में फैल जाता है। जब तक लोग मर्कज़ में आते जाते रहेंगे उनका मज़हब और नज़रियात बिल्कुल सही रहेंगे। न कभी नमाज़ का तरीका बदलेगा न ही रोजे का न कभी ज़कात का न कभी हज का। इस्लाम हमेशा अपनी असली शक्ति में बरकरार रहेगा। मगर मर्कज़ से रिश्ता कमज़ोर हो गया या कट गया तो फिर सड़े हुऐ जिस कि हालत होती है वही उस कौम की होगी।

अल्लाह तआला ने हर कौम को इस मर्कज़ पर जमा होकर इबाबत करने के तल्कीन की है मगर उन्होंने नज़र अंदाज किया और खुद गुमराह हो गये। मिसाल के तौर पर चार हज़ार साल पुराने क्रठ्येद में हैं;

“ए इबाबत गुजारें और मुल्क में समंदर के किनारे दारदुकबन (खाना काबा) है। जिसे कभी इन्सान ने नहीं बनाया इसमें इबाबत करों ताकि अल्लाह की रहमत से जन्नत में दाखिल हो सको।” (ऋग्वेद, ३-१५५-१०)

दो हज़ार साल पुराने बाईंबिल में है। (Pslam 84:1:12)

ऐ खुदा आपका घर कितना खुबसुरत है।

मेरी रुह तड़पती है तेरे घर के दिदार के लिए।

मेरा जिस्म मेरा दिल रोता है इस हमेशा ज़िंदा रहने वाले खुदा के लिए।

ऐ अज़ीम और सारी कायनात के शहनशाह

वो खुश नसीब है जिन्हें तेरे घर का दीदार हुआ

वो तेरी इबाबत कसरत से करते हैं।

वो खुश नसीब है जिनका तुझ पर भरोसा है।

वो खुश नसीब है जिसने तेरे घर पर हाज़िरी (हज का इरादा किया)।

जब वो वादी ए मक्का (मक्का मुकर्रमा) से गुजरते हैं।

तो इस चश्मा (ज़मज़म) के पास ठहरते हैं।

जिसे बरसात का पानी (तेरी रहमत भी भर देता है)।

ऐ अल्लाह! तेरे घर का एक दिन दुसरी जगहों के हजार दिन के बराबर है।

मेरे लिए तेरे घर का दरबान बनना किसी गुनहगार के घर में रहने से बेहतर है।

ऐ अज़ीम मालिक! वो खुशनसीब है जिनका ईमान तुझ पर है।

(ये अल्फाज हज़रत दाऊद अलैसलाम के दुआ के अल्फाज है। जो उन्होंने फलस्तिन कि फतेह से पहले अल्लाह तआला से माँगे थे) इससे यह बात सावित होता है कि उस जमाने में भी लोगों को मक्का मुकर्रमा, खाना काबा, ज़मज़म और हज के बारे में पूरा इल्म था।

- हरमैन शरीफैन के ईमामों और आलीमों का मज़हब और आकिदा बिल्कुल सही है क्योंकि अल्लाह तआला ने इन मुकद्दस मुकामात के हिदायत का ज़रिया होने की ज़िम्मेदारी ले रखी है। (सूरह आले इमरान : ६६)। वो सारी मसलक भी सही है जो हरमैन शरीफैन के ईमाम और उल्मा को सही समझते हैं और इन के पीछे नमाज़ पढ़ने में कोई कराहत महसूस नहीं करते और वह सारे मसलक और जो लोग हरमैन शरीफैन के ईमाम और उल्मा को गलत कहते हैं, उनके कहने का मतलब ऐसा है कि किसी ज़माने में हरम हिदायत का ज़रीया हुआ करता था अब नहीं रहा और यह इसलिए हुआ के (नज़ज़बिल्ला) अल्लाह तआला ने इसकि हिफाज़त कि जो ज़िम्मेदारी ले रखी थी वह पूरी न कर सके। ऐसे नज़रियात रखना गुनाह है।

कुरआन शरीफ में अल्लाह तआला फरमाता है:

وَمَا لَهُمْ أَلَا يَعْرِيْهُمُ اللَّهُ وَهُوَ صَدُّونَ عَنِ الْمُسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا
كَانُوا أَولِيًّا إِذْ أَنْ أُولَئِكَ لَا يَتَّقْبَلُونَ وَلِكُنَّ أُكْرَاهُمْ لَا يَعْمَلُونَ
(سورة انفال، آيات: ३३-३४)

“वमा लहुम अल्ला युअजिज़-बहुमुल्लाहु वहुम यसुद्दूना अनिल मस्जिदिल हरामि वमा कानू औलिया-अहू। इन्ना औलिया-उहू इल्लल मुत्कूना वला किन्ना अक्स-स-र-हुम ला यअ-लमून।”

“जौर अब उन के लिए कौन सी वजह है कि वह (अल्लाह तआला) उन्हें अज़ाब ना दे, जबकि वह मस्जिदे हरम में (लोगों को) नमाज़ पढ़ने से रोकते हैं और वह इस के मुतवल्ली भी नहीं हैं। इस के मुतवल्ली तो सिफ़ परहेज़गार हैं। लैकिन इन में से अक्सर नहीं जानते। (सूरह अन्फ़ाल, आयत ३४)

इस आयत की रु से जो भी इस मस्जिदे हरम के मुतवल्लियों को गुमराह कहेगा और इन के पीछे नमाज़ पढ़ने से रोकेगा वह भी खुदा के अज़ाब का मुस्तिहक होगा। हरम शरीफ कि ज़ियारत इस अकिदे से करे कि चारों मुसल्लियों बरहक हैं और चारों मसलकों में से कोई भी गलत नहीं है। और इस मस्जिद के ईमाम भी हक पर हैं और उन के पीछे नमाज़ पढ़ना सही है। और सारी नमाज़ों भी वा जमाअत हरम में पढ़ें।

हज आखिरत की रिहर्सल

- उलमा कहते हैं कि हज दरअसल सफरे आखिरत की एक रिहर्सल है जब किसी का इतेकाल होता है तो दोस्त ऐहबाब उसे नहेता धुलाकर, कफन पहनाकर, कब्रस्तान ले जाकर छोड़ आते हैं। मरनेवाला विराने में कथामत तक पड़ा रहता है, फिर कथामत के दिन वह अपनी कब्र से निकलकर हशर के मैदान में जाएगा और खुदा के सामने अपने अमाल का हिसाब किताब देगा। अगर किसी वजह से अमाल का वज़न कम हुआ तो उसे कोई और मौका नहीं मिलेगा बल्कि सज्जा होगी।

यह अल्लाह तआला का एहसान व करम है कि उसने इन्सानों पर हज फर्ज करके सफरे आखिरत की रिहर्सल का मौका दिया और इस बात का मौका दिया कि दुनिया के हशर के मैदान में आकर अमाल का पलड़ा हल्का है बंदा रो रोकर दुआ माँगें और अपनी मग्फिरत करा लेते हैं।

हाजी कफन (ऐहराम) पहन कर वीराने (मिना) में जाते हैं, और वहाँ कथाम करते हैं। फिर वहाँ से हशर के मैदान (अरफात) जाते हैं और दिनभर अल्लाह की ईबादत करते हैं और रो रोकर पिछले सारे गुनाह माफ कराकर अपनी मग्फिरत करा लेते हैं।

अल्लाह तआला के इस एहसान और करम की कद्र करनी चाहिए और इससे पहले कि मौत आजाए या सूरज सवा नैजे पर आ जाए, सही तरीके से हज करके अपने आखिरत संवार लेना चाहीए।

रिञ्ज में बरकत:-

हजरत अब्दुल्लाह इन्हे मसऊद (रजी.) से रिवायत है कि रसुल(स.) ने इर्शाद फरमाया कि हज और उम्रह पे दर पे किया करो क्योंकि हज और उम्रह फक व मोहताजी और गुनाहों को इस तरह दुर कर देते हैं जिस तरह लोहार और सोनार की भट्टी लोहे और सोने चांची का मैल कुचैल दूर कर देती है और हजे मबरुर का सिला और सवाब तो बस जन्नत ही है। (ज्ञाने तिरमीजी, निसाई)

ऊपर बयान किये गए मज़मून से वाज़ेह होता है कि,

- हज का मकसद सारी दुनिया की इस्लाह और हिदायत है।
- हज आखिरत की रिहर्सल है।
- अल्लाह तआला ने हज-ए-मबरुर के ज़रिए तमाम इन्सानों को गुनाहों से पाक होने का एक नुस्खा दिया है।
- हज एक बा बरकत इबादत है। इसको करने से माल व दौलत में इजाफा होता है। (जो लोग हरम शरीफ में नमाज नहीं पढ़ते और दुसरे तरह के गुनाह करते हैं। चूंकि हरम का एक गुनाह एक लाख गुनाह के बराबर है इसलिए हज के बाद वह लोग अक्सर बर्बाद या मज़ीद बद्रीन हो जाते हैं, जो लोग खुलुस के साथ इबादत करने की कोशिश करते हैं वह हमेशा हज के बाद तरकी करते हैं और खुशहाल हो जाते हैं। यह मेरा ज़ाती तजरिबा और मुशाहिदा है।)



रमज़ान का उम्रह

हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ;रजिञ्च से रिवायते के रसुल अल्लाह (स.) ने फरमाया रमजान का उम्राह हज करने के बराबर है जो मेरे साथ किया जाए। (बुखारी-मुस्लिम)

पेज 31 का बकाया.....

(हरम और मीकात का बयान)

हों तब आप गुनाहगार होंगे और आप को दम देना होगा।

हरम की हुदूद में नीचे दी गई बातें हराम हैं:

- लड़ाई झगड़ा करना।
- धास या पेड़ काटना, किसी पेड़ की शाख़ें या काँटे तोड़ना। (आप हरम के हुदूद में धास का एक तिन्हा भी नहीं तोड़ सकते)
- शिकार खेलना, किसी शिकार किये जाने वाले जानवर को डराना या अपनी जगह से हटाना।
(हरम के हुदूद में जंगली जानवरों को भी अमान है उन को मारना तंग करना तो दूर की बात है। अगर वह साये में खड़े हों उन्हें हटा कर आप का साये में जाना भी हराम है)
- गिरी पड़ी चीज़ों का उठाना।

इन कामों में से कोई अगर एक भी काम करता है, तो गुनाहगार होगा और कफ़ारा देना होगा। मिना और मुज़दलिफ़ा भी हुदूद हरम में शामिल हैं और नबी करीम (स.) ने मदीना मुन्बिरा को भी हरम करार दिया है।

अल्लाह तआला कुरआन शरीफ में इर्शाद फरमाते हैं कि “जो शख्स इन महीनों में हज की नियत करले तो हज (के दिनों) में न औरतों से इख्लात करे, न कोई बुरा काम और न किसी से झगड़े और जो नेक काम तुम करोगे वह खुदा को मालूम हो जाएगा।” (सूरह बकरा, ٩٦)

पेज 32 का बकाया.....

(कुर्बानी में धोका)

- कुर्बानी के वक्त ऊंठ कि उम्र कम से कम पाँच साल की हो। गाय दो साल की हो। बकरा, मेंढा, दुम्बा वगैरा दो दाता हो (मुसिन्ना) यह सामने के दो दात सब्वा साल में आ जाते हैं। भेड़ कि कुछ किस्मों में एक साल में ही दो दात हो जाते हैं। इससे कम उम्र के जानवर के कुर्बानी का ऐतबार नहीं।
नबी करीम (स.) ने हज के मौके पर अपनी और अपनी उम्मत की तरफ से कुर्बानी की थी। इस लिए हमें भी चाहिए कि अपनी कुर्बानी के साथ अपने शफ़ीक नबी करीम (स.) कर तरफ से भी कुर्बानी करें।

पेज 34 का बकाया.....

(मक्का मुकर्मा के तारीखी मुकामात)

मुज़दलिफ़ा: मिना से अरफात की तरफ तकरीबन एक किलो मीटर की दूरी पर वाक्खे मैदान जहाँ अरफात से वापसी पर हुजाज किराम को रात खुले आसमान के नीचे बसर करनी होती है और अपना वक्त बाद में गुज़रना होता है।

वादी ए मुहर्टिस्तर: मुज़लिफ़ा से मिला हुवा मैदान जहाँ से गुज़रते वक्त दौड़ कर निकलते हैं। यहाँ कथाम करना मना है। इसी वादी में उस लश्कर को अल्लाह तआला ने हलाक व तबाह कर दिया था, जो काबतुल्लाह को ढाहने आ रहा था। इस लिए यह जा ए अ़ज़ाब है। यहाँ से दौड़ कर, अगर नहीं, तो जल्दी गुज़रना सुन्नत है।



नबी-ए-करीम (स.) का हज

नबी करीम (स.) ने सिर्फ एक बार हज किया है। इस हज को ४ नामों से याद किया जाता है। हज्जतुल बलागा, हज्जतुल इस्लाम, हज्जतुल विदा, हज्जतुल अत्माम वल अव्वामा।

- सन १० हिजरी माहे ज़िल्कअदा में जब आपने हज का इरासा कर्माया तो ऐलान करा दिया। इस ऐलान पर तकरीबन ९ लाख २४ हज़ार (कुछ रिवायतों में ९ लाख ४४ हज़ार) लोग मकाम मुकरमा पहुँचते पहुँचते आप के साथ हो गए।
- आप ने २५ ज़िल्कअदा सन १० हिजरी को ज़ोहर की नमाज़ के बाद कूच किया और मदीना से ६ मील दूर मिकाते जुल हलैफा में कसर करके अस्र की नमाज़ पढ़ी और शब गुज़ारी।
- ज़ोहर के बाद गुस्त करके एहराम बांधा और अपनी ऊंटनी पर सवार होकर ब अवाज़ बुलंद तल्बिया पढ़ा।
- आप (स.) ने हुक्म दिया कि जो कुर्बानी के जानवर साथ लाए हैं वह हज्जे किरान कि नीयत करें और जो नहीं लाए हैं वह हज्जे तमत्तों कि नीयत करें।
- उम्मल मुअ मिनीन हजरत आईशा (रज़ी) मकाम मुकरमा से बारह मील की दूरी पर हज से पहले ही हाइज़ा हो गई। आप (स.) ने हजरत आईशा (रज़ी.) को हुक्म दिया कि उम्मह का एहराम उत्तर दो और हज का एहराम पहन लो और तवफे जियारत को छोड़कर सारे अरकान अदा करती रहें। हजरत आईशा (रज़ी.) ने उम्मरे का एहराम उत्तरने के लिए सिर खोलकर कंधी किया और फिर हज का एहराम बांध लिया। हज के बाद फिर आपने तनजीम से उम्मह का एहराम बांधकर छुटे हुए उम्मह को दोहराया।
- बहुत से लोग हुजूर (स.) के साथ पैदल सफर कर रहे थे इसलिए यह सफर ६ दिन में तय किया। रास्ते में आपका सामान से लगा ऊंट खो गया, मगर बाद में फिर मिल गया।
- रास्ते में किसी बिमारी के सबब आप (स.) ने सिर में पिछने लगवाएं (फासिद खून निकलवाया)।
- ४ ज़िल्हिज्जा को मकाम मुकरमा में दिन के वक्त दाखिल हुए। खाने काबाह पर नज़ार पढ़ी तो यह दुआ की :

“ऐ अल्लाह, इस घर की व ताज़ीम, तकरीम व हैबत में इज़ाफा फर्मा। जो शख्स इस घर को शर्फ व अज़मत दें और इसका हज और उम्मह करें तो इसकी तशरीफ, तकरीम, ताज़ीम व नेकी में इज़ाफा फर्मा।”

- आप (स.) ने बुजु फरमाकर तहियतुल मस्जिद नमाज नहीं पढ़ी बल्कि सीधे तवाफ शुरू किया। तवाफ से पहले इस्तेबा किया और पहले तीन चक्करों में रमल किया और बाद के चार चक्कर मामुली रप्तार से मुक्कमल किए। हर चक्कर में हज़रे अस्वद का इस्तेलाम (बोसा देना) किया और स्वने यमानी को छुआ।
- रिवायत है कि जब आप (स.) हज़े अस्वद के सामने आए तो मुहज्जीन (एक आसा जिसका सिर टेढ़ा था) से इशारा फरमाते और फिर मुहज्जीन के सिर की बोसा देते और कभी लबे मुबारक की संगे अस्वद पर रखकर बोसा देते।
- तवाफ मुक्कमल करके जब मुकामे इब्राहीम पर तशरीफ लाए तो यह आयत पढ़ी:

وَأَنْجُونُوا مِنْ مَقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصْلَّٰٰ (١٠٥:٦٠)

“वत्तखिजू मिम मकामे इब्राहीमा मुसल्ला” (सूरह बकरा: १२५)

तर्जुमा: और मकामे इब्राहीम को नमाज पढ़ने की जगह बना लों।

- मुकामे इब्राहीम पर आप (स.) ने दो रक़अत नमाज अदा फरमाएं। पहली रक़अत में सुरे: काफीरून और दुसरी रक़अत में सुरे: इख्लास की तिलावत फरमाई नमाज के बाद हज़े अस्वद को बोसा दिया। उसके बाद आबे ज़मज़म नौश फरमाया और उसके बाद सफा पहाड़ी की जानीब तशरीफ ले गए और पहाड़ी के करीब पहुँचकर यह आयत तिलावत फरमाईः

إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَرَابِ اللَّهِ مَمَّنْ حَمَّ الْبَيْتَ أَوْ اعْمَرَ قَلْجَانَعَ
عَلَيْهِ أَنْ يَكُوفَ بِهِمَاٰ وَمَنْ تَطَعَّنَ خَيْرًا فَإِنَّ اللَّهَ شَاءَ كَرِ عَلَيْهِ (سُورَةِ الْأَعْدَاد: ١٥٨)

“इन्स्सफा वल मर्वता-मिन शआ-इरिल्लाहि, फमन हज्जल बैता अविअूत-म-रा फला जुनाहा अलैहि अंय यत्तव्फा बिहिमा। व मन त-तव्वआ खैरन फ-इन्नलाहा शकिरून अलीमा। (सूरह बकरा: १५८)

“वेशक कोहे सफा और मरवाह अल्लाह की निशानियों में से हैं। तो जो शख्स खना ए कावा का हज या उमराह करे उस पर कुछ गुनाह नहीं कि दोनों का तवाफ करे। बल्कि तवाफ एक किस्म का नेक काम है और जो कोई नेक काम करे तो अल्लाह कद्र शनास और दाना है।”

- कोहे सफा पर चढ़कर बैतुल्ला की तरफ रुख किया और तैहिद व किब्रीयाई बयान फरमाईँ।

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَكَ الْمُلْكُ وَلَكَ الْحَمْدُ وَهُوَ
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ، الْعَزْلَةُ وَحْدَهُ وَنَصْرَ
عَبْدَهُ وَحْدَهُ وَحْرَمَ الْأَخْرَابُ وَحْدَهُ

“ला इलाहा इल्लल्लहु वह-दहु ला शरी-क-लहु। ल-हुल मुल्कु व-ल-हुल हम्दु व हुवा अला कुल्ली शइ-इन कदीरा। ला इलाहा इल्लल्लहु वह-दहु। अन्ज़ा वअ-दहु व न-स-रा अब्दहु व ह-ज़-मल अह-ज़बा वह-दहु।”

तर्जुमा: “अल्लाह के सिवाय कोई माबूद नहीं। वह अकेला है। इसका कोई शरीक नहीं। बादशाहत उसी की है। सब तारीफ उसी के लिए है और वह हर चीज़ पर कादिर है। अल्लाह के सिवाय कोई माबूद नहीं। वह तनहा है। उसने अपना वादा पूरा किया अपने बंदे कि मदफ फरमाई और उस अकेले ने तमाम लश्करों को शिक्षत दे दी।”

- फिर दुआ मार्गी और यह अमल तीन बार दोहराया। सफा से मरवा की तरफ पैदल सई शुरू की। जब हुजूम बढ़ गया तो ऊंटनी पर सवार हो गए। बतने वाली में तेजी से और चढ़ाई पर आहिस्ता चले।
- मरवा पर पहुँचकर वैसा ही तकबीर और दुआ का अमल किया जैसा सफा पर किया था। उसी तरह ७ वा चक्कर पूरा किया। सई के बाद आप (स.) ने सिर के बाल नहीं मुँडवाएं।
- आप (स.) ने इर्शाद फरमाया कि, “जिस शख्स के साथ कुर्बानी का जानवर न हो वह उम्मह के अरकान अदा करके एहराम खोल दे। हजे तमत्तु करने वालों के पास भी अगर (कुर्बानी करने की इस्तेताअत न हो या) जानवर मयस्सर न हो तो अस्याम हज में तीन रोज़े रखें और बाकी ७ रोज़े अपने घरों पर पहुँचकर रखें।” आप (स.) उम्मत के लिए आसानी पसंद करते थे। इसलिए आफाकी के लिए आप (स.) ने हाजे तमत्तु को ज़्यादा पसंद किया।

- उम्रह के बाद आप (स.) ने मक्का के बाहर ४ दिन क्याम फरमाया। उस दौरान नमाज़े कसर करके अदा फरमाई।
- ट ज़िल्हिङ्जा सन १० हिंजरी घैमें तरविया को आप और तमाम सहावा (रज़ी.) ने मुकामें अबताह में एहराम बांधा। तल्खिया कहते हुए मक्का मुकर्मा से मिना की तरफ रवाना हुए।
- मिना में अपने अपने वक्त पर ज़ोहर, असर, मगरीब, ईशा की नमाज़े अदा की। ६ ज़िल्हिङ्जा की रात भी हुजूर (स.) ने मिना में बसर फरमाई। फ़र अदा की। सुरज निकल आया तो अरफात रवाना हुए। अरफात में आप (स.) ने नमरा मुकाम पर कम्बल के खैमें में क्याम फरमाया। ज़वाल के बाद ऊंटनी कसवा को तैयार करने का हुक्म दिया। उस पर सवार होकर बल्तेवादी में तशरीफ लाए और लोगों को खुत्बा फरमाया।
- आप (स.) का यह खुत्बा, खुत्बे हज़रतुल विदा के नाम से याद किया जाता है। यह खुत्बा तो मुख्तसर था मगर इसमें इन्सानों के लिए दुनिया और आखिरत की कामयाबी का निचोड़ मौजुद हैं।
- खुत्बा हज़रतुल विदा के बाद हुजूर (स.) ऊंटनी से उतरे और हज़रत बिलाल (रज़ी.) को फरमाया के अज़ान दो। अज़ान दी गई और आप (स.) ने नमाज़े ज़ोहर और असर दो-दो रक़अूत करके एके के बाद एक कसर पढ़ाई।
- अहले मक्का जो आपके साथ हज के लिए आए थे वह मुकामी थें। मगर उन्होंने भी हुजूर (स.) के साथ ही कसर नमाज़ पढ़ी।
- नमाज़ से फरिग़ होकर हुजूर (स.) कसवा ऊंटनी पर सवार हुए और मैदाने अरफात में आए। वहाँ दामने कोह में बड़े बड़े पथरों पर किल्ला रुख होकर ऊंटनी पर खड़े हुए और दुआ वज़ारी शुरू की। यहाँ तक कि आफताब गुरुब हो गया। फिर आप (स.) ने फरमाया कि जिस जगह पर हम खड़े हैं यही मख्सुस जगह नहीं है। जहाँ चाहे खड़े हो।
- अरफात में आप (स.) दुआ के लिए सीने तक हाथ उठाते थें और इस तरह दुआ माँगते थे जैसे कोई मिस्कीन रोटी तलब करता है। आप (स.) का इरशाद है कि हज यौमें अरफा हैं और बेहतरीन दुआ यौमें अरफा की दुआ हैं।
- गुरुबे अफताब पर आप (स.) मुज़दल्फा के लिए रवाना हुएं और उसामा बिन ज़ैद (रज़ी.) को कसवा ऊंटनी पर पीछे सवार कर लिया और ऊंटनी को आहिस्ता चलाने के लिए महार खींचें रखा। रास्ते में आप (स.) लोगों से फरमाते थें, “ऐ लोगों! आहिस्ता चलों। दौड़ना ठीक नहीं और भाग दौड़ परहेज़गारी के खिलाफ है।”
- आप (स.) एक रास्ते से अरफात गए और दुसरे रास्ते से आए। रास्ते में आप (स.) तल्खिया फरमाते रहे। रास्ते में आप (स.) ने इस्तन्जा किया और वुजु किया मगर मगरीब के नमाज़ के लिए नहीं रुके।
- मुज़दल्फा में आप (स.) ने दस ज़िल्हिङ्जा कि रात मशअरूल हराम के पास क्याम फरमाया और फरमाया कि पूरा मुज़दल्फा वकूफ का मुकाम हैं सिवाय बतने महस्सर को। मुज़दल्फा पहुँचकर फिर बुजू किया और एक अज़ान और दो अकामतों के साथ मगरीब और ईशा कि नमाज़ जमा करके ईशा के वक्त अदा फरमायी। नमाज़े कसर की और दोनों नमाज़ों के दरम्यान कोई नमाज़ नहीं पढ़ी गई। अलबत्ता बराबर लब्बैइक कहते रहे। रातभर आराम फरमाया। यहाँ तक के मामूल की तहजुद के लिए भी बेदार नहीं हुए। फ़ज़्र कि सफेदी फैलने के बाद नमाज़ेँ फ़ज़्र अदा फरमायीं।
- सुबह की नमाज़ के बाद अल्लाह तआला से फिर मज़लुम व ज़ालीम के बारें में दुआ दोहराई जो कबूल हो गई और आप (स.) के चेहरे पर तबस्सुम के आसार नुमाया हुए।
- हज़रत सौदा (रज़ी.) और अहले बैत के कमज़ोर अफराद को रात ही में मिना जाने कि इज़ाज़त दे दी। साथ में हज़रत अब्दुल्ला बीन अब्बास (रज़ी.)

थें। नमाज़े फ़ज़्र के बाद कसवा पर सवार हो कर शब्सल हराम के पास खुब रोशनी फैलने तक किल्ला रुख होकर तसबीह व तैहलील, तकबीर और दुआओं में मशूल रहें।

- तुलु आफताब के बाद मुज़दल्फा से मिना रवाना हुए। आप (स.) जुर्में उक्बा (बड़े शैतान) तक बराबर तल्खिया कहते रहें। हुजूम बहुत ज़्यादा था। आप बराबर लोगों को आहिस्ता चलने की तल्खिया करने के लिए उक्बा चलने की तल्खिया करने रहें।
- बल्ने महस्सर को छोड़कर आएं तो रमी के लिए चने से बड़े और छोटे बेर से किसी कदर छोटी कंकरी जमा करने का हुक्म दिया। लोगों ने तअमिल की। फ़ज़्ल बिन अब्बास (रज़ी.) ने आप (स.) के लिए ७ कंकरियां चुनी।
- आप (स.) जम्रह उक्बा के करीब पहुँचकर एक दरख्त के नीचे रुक गए। उस वक्त आप के बाएं जानीब मिना और दाएं जानीब मक्का मुकर्मा था। आप (स.) ने कसवा पर ही से हर बार अल्लाहहु अकबर कहकर ७ कंकरिया जुमरे उक्बा (बड़े शैतान) पर मारी। यह रमी जुमार आप (स.) ने आफताब के तुलु हो जाने के बाद फरमाई और तल्खियां मौकुफ कर दिया।
- चाश्त का वक्त था। आप (स.) ने ऊंटनी पर बैठकर फरमाया: “मुझसे मनासिक हज सीख लों, मुझे नहीं मालुम की इस हज के बाद दुसरा हज कर सकुंगा या नहीं।” जुमरे उक्बा से आप मिना के लिए रवाना हुए। हज़रत उसामा (रज़ी.) साथ बैठे धूप से बचने के लिए चादर ताने हुए थे। हज़रत बिलाल (रज़ी.) कसवा की महार थामे हुए थें। इसके बाद आप (स.) ने खुत्बा दिया।
- १० ज़िल्हिङ्जा के इस खुत्बे के बाद कुरआन शरीफ कि सुरहे अल माएदा कि आयत नं ३ नाजिल हुई। जिसका मफहूम है कि आज मैंने तुम्हारे दीन को तुम्हारे लिए मुक्कमल कर दिया और अपनी नियमत तुम पर पूरी कर दि और तुम्हारे लिए इस्लाम को तुम्हारे दीन की हैसीयत से कबूल कर लिया है।
- कुछ रिवायतों के मुताबिक यह आयत अरफात के खुत्बे के बाद नाजिल हुई।
- ईमाम शाफ़ी (रह.) फरमाते हैं, कि इस खुत्बे में आप (स.) ने मनासिक हज बयान फरमाया। खुत्बे के बाद आप (स.) से पुछा गया कि कुर्बानी व कंकरिया मारने और बाल कटवाने में अरकान आगे पीछे हो जाएं तो क्या हुक्म हैं? आप (स.) ने फरमाया, लार्हज, लार्हज। यानि कोई मुज़ाईका नहीं, कोई मुज़ाईका नहीं।
- यहाँ से आप (स.) कुर्बानगाह की तरफ तशरीफ लें गए और हज़रत अनस बिन मालीक (रज़ी.) के मुताबिक ७ ऊंट अपने हाथों से नहर (कुर्बान) किए। उसके बाद हज़रत अली (रज़ी.) के साथ ५६ ऊंट कुर्बान किए और हज़रत अली (रज़ी.) ने ३७ ऊंट कुर्बान किए इस तरह कुल १०० ऊंट कुर्बान किए।
- कुर्बानी के बाद आप (स.) ने सिर मुँड़वाए। हज़रत मुअम्मिर बिन अब्दुल्ला अददी (रज़ी.) ने आपका सिर मुँड़ा। सारे बाल एक-एक दो-दो हाज़रीन में तकियां कर दिए गए। आप (स.) ने सिर मुँड़ने वालों के लिए ३ बार और तरशवाने वालों के लिए १ बार दुआ फरमायीं।
- ज़वाल आफताब से पहले आप (स.) तवाफे ज़ियारत के लिए मक्का मुकर्मा रवाना हुए। लोगों के हुजूम की वज़ह से कसवा पर ही सवार हो कर बैतुल्ला का तवाफ फरमाया। तवाफ के बाद ज़मज़म पर तशरीफ लें गए और पानी नोश फरमाया। हज़रत अब्बास (रज़ी.) ने खजुर का शरबत पेश किया तो वह भी नोश फरमाया।

- हजरत अब्बास (रजी.) ने पानी पिलाने की खिदमत की खातिर ११, १२, १३ जिल्हिङ्जा की रात में मिना कि बजाए मक्का में रहने की इजाजत तलब की। आप (स.) ने इजाजत दे दी।
- इसके बाद आप (स.) मिना वापस तशरीफ ले गए।
- ११, १२, १३ जिल्हिङ्जा को तीनों जुमरों को कंकरिया मारी। जुमराह उला पर रमी के बाद किल्ला रुख होकर हाथ उठाकर बड़ी देर तक दुआ मांगी, इतनी देर कि, ९ आदमी इसमें सुरेः बकरा पढ़ लें। जुमरों वस्ता पर भी ऐसा किया। जम्रह उक्का पर कंकरिया मारी लेकिन ठहरें नहीं। वापस चले आएं।
- अव्यामें तशरीक के वस्त में सुरेः अल अस्स नाज़िल हुई। आप (स.) १०, ११, १२, १३ जिल्हिङ्जा को रोज़ा रखने से मना फरमाया। आप (स.) ने फरमाया कि यह खाने पीने के और जिक्र के दिन हैं।
- आखरी दिन ज़वाल के बाद रमी फरमायी और मिना से मक्का के लिए रवाना हुए। रात में मक्का मुकर्रमा से बाहर मुहस्सीब (मुआवदा) में क्याम फरमाया। हजरत आईंगा (रजी.) ने तनज़ीम से उम्रह किया। यह १४ जिल्हिङ्जा की रात थी।
- १४ जिल्हिङ्जा को सहरी के वक्त बेदार होकर तवाफे विदा के लिए मस्जिदे हराम तशरीफ ले गए। तवाफ के बाद मुल्तानीम पर वकुफ फरमाया। यहाँ से चाह ज़मज़म पर जाकर खुद अपने दस्ते मुबारक से डोल खींचा। किल्ला रोह होकर पानी नोश फरमाया और बचा हुआ पानी कुएं में डाल दिया।
- बैतुल्ला से विदा होते हुए आप (स.) मगमुम, आबदीदा और हज़न व मलाल से मगतुब थे। आप (स.) सुरज निकलने से पहले ममाअहबाब मक्का से रवाना हो गए और मक्का में “ज़ी तवा” में जाकर पड़ाव डाला। वहाँ रात गुज़ारी और सुबह को मदीना मुनव्वरा के रास्ते पर गामज़न (रवाना) हुए। यहाँ से दुसरे मुसलमान अपने अपने बतन को जाने वाले रास्तों पर चल पड़े।
- आप (स.) ने कुल १० दिन मक्का में क्याम फरमाया था। नमाज़ में कसर अदा किया। सलाम के बाद इर्शाद फरमाते थे : “मक्का वालों! सुनो, अपनी नमाज़े पूरी करों। हम तो मुसाफिर हैं।”
- सफर में एक मुकाम “खम” आया जो हजफा से ३ मील पर है। यहाँ नमाज़ ज़ोहर के बाद सहाबा कराम (रजी.) को हस्त व सना के बाद फरमाया: “मैं तुम्हारे दरम्यान दो अम्भे अज़ीम छोड़े जाता हूँ। कुरआन मजीद और मेरी सुन्नत। इनके हुकूक की रियाअत रखना (मज़बुती से पकड़े रहना।) यह दोनों चीज़ें तुमसे जुदा न हो ताकि तुम हौज़े कौसर पर मुझसे आ मिलो।”
- हजरतुल विदा के मौके पर ६ मुकामात पर रसुल (स.) ने काफी देर रुक कर दुआ माँगी वह मुकामात यह है:

 9. सफा की पहाड़ी, २. मरवा की पहाड़ी, ३. अरफात (ज़ोहर के बाद से गुरुबे आफताब तक) ४. मुज़दलिफा (फज़र की नमाज़ से तुलु आफताब तक) ५. जुमरा-ए-उला यानी छोटा शैतान

(आप (स.) ने इतनी देर दुआ की, कि एक आदमी सुरेः अल बकराह (सवा दो पारा) पढ़ लें।)

६. जुमरा-ए-वस्ता यानी दरम्यानी शैतान

(यहाँ पर भी आप (स.) ने इतनी देर दुआ की, कि एक आदमी सुरेः अल बकराह मुकम्मल पढ़ लें।)

• हुजूर (स.) कि बिमारी माहे सफर के आखीर में सरदर्द और बुखार से शुरू हुई। लोगों ने नमुनीया ख्याल किया। मगर आप (स.) ने उम्मे अल बशर से फरमाया: “यह वह मर्ज है जो मैंने तेरे बेटे के साथ खैबर में गोश्त का तुकड़ा

चख लिया था। आज उसी ज़हर कि तकलीफ से रगे जान फटी जाती है।”(सही बुखारी-जिल्द २, सफा ६६६, हदीस नं. १५५४)

- तकरिबन चौदा दिन बिमार रहने के बाद और हज़े विदा के ६९ दिन आप (स.) ने इस दारे फानी से कूच किया और रफीके आला से जा मिले।



जन्नत की तअमीर

(१) “नाफेउल्खलाएक” में है कि एक रोज़ एक एराबी रसूल (स.) की खिदमत में आया और फक्र व फाका से रोया। रसूल (स.) ने फर्माया के हर फर्ज़ नमाज़ के बाद दस बार ‘इन्ना अन्ज़ला’, ‘सुरह कद्र’ पढ़ा करो और जुमा के दिन नाखुन कटवाया करो। एराबी ने ऐसा ही किया और मालदार हो गया।

(२) एक बार एक सहाबी ने हुजूर (स.) से फर्माया कि या रसूल अल्लाह (स.) दुनिया मुझ से रुठ गई है। हुजूर (स.) ने फर्माया कि ये कलमात कहने में आसान और वज़न में बहुत भारी है।

(३) हुजूर (स.) दिन में सत्तर सत्तर बार इस्तग़फ़ार पढ़ा करते थे।

(४) दस्त शरीफ के इतने काफ़ादे हैं कि यहाँ बयान करना मुश्किल है। सालेहीन और औलिया कराम की इबादत का ज्यादा तर हिस्सा दस्त शरीफ होता था।

(५) सुरह फ़तेहा बहुत ही बाबकर्त सुरह है। अल्लाह तआला ने कुरआन शरीफ में इस की तारीफ़ सात आयतों वाली बाबकर्त सुरह के नाम से किया है। इस के पढ़ने से रोज़ी में बरकत होती है, बीमारियों से शिकाहोती है, कर्ज़ दूर होता है और किसी तरह के भी जिन्न और शयातीन परेशान करते हों तो सुबह सुन्नत और कर्ज़ के दरम्यान ४९ बार पढ़ने से दूर हो जाते हैं।

(६) मेराज की रात हजरत इब्राहीम (अ.) ने हुजूर (स.) से फर्माया के जन्नत एक वीरान मैदान है जब बन्दा दुनिया में अल्लाह तआला का जिक्र करता है तो एक खुबसूरत दऱजत जन्नत में इस के लिए लगाया जाता है। एक दुसरी रिवायत में है कि फरिश्ते मोमिन का महल जन्नत में उस वक्त तक तामीर करते रहते हैं जब तक उन के पास तामीर का सामान पहुँचना बन्द हो जाता है तो वह फरिश्ते भी काम रोक देते हैं। और ये तामीर का सामान मोमिन के नेक आमाल हैं जो वो दुनिया में करता है।

(७) दुनिया की ज़िन्दगी इतनी मस्स्फ़ूर है कि हमारे पास आखिरत और अपनी जन्नत संवारने का बक्त ही नहीं है। अब जब के सफर हज के लिए हम ने दुनिया से चालीस दिन की छुट्टी ले ही ली है, तो इस सुनहरे मौके का कायदा उठा कर अपनी जन्नत भी संवार लें। हम कीशश करें कि अपनी आसानी के मुताबिक दस्त शरीफ, इस्तग़फ़ार और तस्खिहात का मुताबिक विद इबादत का मामूल बनाएँ। और चालीस दिन इस पर अमल करते रहें जिस से कि एक आदत सी पढ़ जाए और फिर वापस जाकर इसी इबादत पर अमल करना आसान हो। अगर रिक्क़ में बरकत वाली तस्खिहात पढ़ेगे तो इंशाअल्लाह सवाब तो मिलेगा ही और साथ में माली हालत भी और बेहतर होगी।

कुरआन शरीफ पढ़ने के भी बहुत फज़ाइल हैं। इस मुकद्दस सफर में कम से कम दो बार कुरआन शरीफ भी खत्म करने की कीशश करें। अगर एक छोटा कुरआन शरीफ जिसे आसानी से हरम में ले जा सके साथ ले लें तो और आसानी होगी। असर के जमात के बाद मताफ और मस्जिद ए हरम के दरम्यान सहन में बहोत सारे उलमा का बयान होता है। उर्दु में बयान दरवाजा नम्बर ५० और ५२ के सामने होता है। आप भी उन बयान में शामील हो कर अपने ईमान को ताज़ा किया किजीए।



तवाफ का बयान

तवाफ के फ़ज़ाइल:

अल्लाह तआला कुरआन शरीफ में फरमाते हैं

وَلِيَطْعُمُوا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ ۝ ذَلِكَ وَمَنْ
يَعْظِمْ حِرْمَتَ اللَّهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۝ (٢٠١-٢٠٢)

“वल-यत्वफू बिल बैतिल अतीक। ज़ालिका व मंय युअज्जिम हुरूमातिल्लहि फहुवा खैरुल्लाहू इन्दा रव्विही।”

“(लोगों को चाहिए कि) बैतुल्लाह का तवाफ करें। यह हमारा हुक्म है। जो शरूस अदब की चीज़ों की जो अल्लाह ने मुकर्रर की है (यानी हज, उम्रह, तवाफ वगैरा) कि अज्ञात रखेगा तो यह अल्लाह तआला के नज़दीक उसके लिए बेहतर है।” (अल हज, २६-३०)

- रसूल अल्लाह (स.) ने फरमाया: जो बैतुल्लाह का तवाफ करे और दो रक़अत नमाज़ पढ़े उस को एक गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा। (इन्हे माज़ा, किताब अल-मनासिक, बाब फ़ज़लुत्तवाफ २६-५६)
- आप (स.) का इशाद है : जिस ने बैतुल्लाह शरीफ का ७ बार तवाफ किया तो अल्लाह तआला हर हर कदम पर उस के गुनाह को माफ़ फरमाते हैं और हर हर कदम पर नेकी लिखते हैं और हर हर कदम पर एक दर्जा बुलांद करते हैं। (इन्हे खजीमा, इन्हे हब्बान)
- हज़रत इमाम ग़ुज़ाली (रह.) ने अपनी किताब ‘अह्या उल उत्तम’ में हज़रत इन्हे उमर (रज़ि) की रिवायत नकल की है कि हुजूर (स.) ने फरमाया के खाना-ए-काबा का तवाफ बहुत किया करो, वह बड़ी बुजुर्ग चीज़ है। जिस को तुम क्यामत के रोज़ अपने नामा-ए-आमाल में पाओगे और इस के बाबार कोई दूसरा अमल रश्क के काबिल न पाओगे। (सातवाँ बाब, हज के असरार और उस की मुमानिनत)
- हुजूर (स.) ने इशाद फरमाया बैतुल्लाह का तवाफ नमाज़ की तरह है। अल्लत्ता तुम इस में बात कर सकते हो, तो जो भी दौराने तवाफ बात करे, उसको अच्छी बात करनी चाहिए। (जामे तिरमिज़ी, किताब उल हज, हदीस ६६)
- नबी करीम (स.) का इशाद है जिसने ५० मर्तबा तवाफ किया, तो गुनाहों से ऐसे पाक हो गया जैसे आज ही माँ के पेट से पैदा हुआ हो। (तिरमिज़ी)

तवाफ की शर्तें:-

- तवाफ में भी नमाज़ की तरह शर्तें हैं।
- जैसे नमाज़ के लिए वुजु ज़रूरी है वैसे तवाफ के लिए भी वुजु ज़रूरी है।
- जैसे नमाज़ के लिए कपड़े पाक और सतर छुपा हुआ हो। वैसे तवाफ के लिए कपड़े पाक हो और सतर छुपा हुआ हो।
- जैसे नमाज़ के लिए नीयत ज़रूरी है वैसे तवाफ के लिए हज़रे अस्वद से पहले नीयत करें।
- जैसे नमाज़ तकबीर कह कर शुरू करते हैं वैसे तवाफ के लिए हज़रे अस्वद के सामने होकर तकबीर कहें और हज़रे अस्वद को बोसा दें। (इसको इस्तलाम कहते हैं।)
- जैसे नमाज़ में एक रक़आत के बाद फौरन दुसरी रक़आत पढ़ी जाती है वैसे ही तवाफ में खाने काबा के अतराह दर पे दर चक्कर लगाए। दो चक्करों में वक्फा न हो।

● जैसे नमाज़ में नजर सजदा कि जगह पर होती है वैसे तवाफ करते बक्त नज़र चलने की जगह पर हों।

● जैसे नमाज़ में किल्ले की तरफ या आसमान की तरफ नजर उठाना मकरूह है वैसे तवाफ करते बक्त खाना काबा को देखना मकरूह है।

● जैसे नमाज़ सलाम फेर कर पूरी कि जाती है वैसे ही दो रक़अत तवाफ वाजिब नमाज़ पढ़कर तवाफ पूरा किया जाता है।

● जैसे नफिल नमाज की नीयत करने के बाद अगर हम नमाज ठोड़ दे तो फिर इस नफिल नमाज को दोबारा पढ़ना वाजिब होता है। इसी तरह तवाफ के कुछ चक्कर लगाकर छोड़ दे तो फिर इसका दोहराना या पूरा करना वाजिब होगा।

तवाफ के बारे में कुछ ज़रूरी मालूमात

● अगर तवाफ करते करते नमाज़ के लिए जमाअत खड़ी होगी तो तवाफ रोक कर जमाअत से नमाज पढ़ लें और छुटे हुए चक्कर नमाज के बाद पूरे कर लें। ऐसे बक्त अगर तीन से कम चक्करों के बाद भी वक्फा हो जाए तो कोई मुज़ाईका नहीं।

अगर तवाफ करते हुए चार चक्करों के पहले आप का वजू टूट जाए तो बेहतर है कि वजू कर के फिर से तवाफ करे और अगर वहाँ से मुकम्मल कर ले तो यह भी जायज़ है। (ग़नियतुल मनासिक १२७)

● तवाफ शुरू करने से पहले सिर्फ़ हज़रे अस्वद के सामने ही आपका चेहरा और सीना खाना काबा के सामने होगा। इस के बाद दौराने तवाफ सीना खाना ए काबा की तरफ करना मकरूह है और पीठ खाना ए काबा की तरफ करना मकरूह तहरीमी है, यानी हराम के बराबर है।

● एक चक्कर की जितनी दूरी आप ने खाना ए काबा की तरफ सीना या पीठ करके तय की उसे फिर से दोहरा लें। वह दूरी तवाफ के चक्करों में शामिल नहीं होगी।

● अगर आप ने सात चक्करों के बजाए आठ चक्कर लगा लिए हो तो फिर आपको ६ चक्कर और लगाकर दुसरा तवाफ भी पूरा करना वाजिब होगा।

● अगर किसी ने मक्का मुकर्मा में तवाफ वाजिब नमाज न पढ़ी तो इसको अदा करना वाजिब है जिसमें से साकित न होगी तामाम उम्र में अदा कर सकता है। हरम से बाहर इस नमाज को पढ़ना ताखीर करना बुरा और मकरूह है।

● तवाफ हतीम के बाहर से करें। क्योंकि हतीम खाना-ए-काबा का हिस्सा है और तवाफ खाना-ए-काबा के बाहर से किया जाता है।

● तवाफ के दौरान कोई खास दुआ या आयत का पढ़ना फर्ज़ या वाजिब नहीं है।

● जो कुछ दुआएँ हज की किताबों में लिखा है उसे देखकर पढ़ने से बेहतर है कि आपको जो दुआएँ याद हैं वह समझकर माँगें। देखकर पढ़ने और आवाज़ करने से दुसरे हाजियों को तकलीफ होती है और दुसरों को तकलीफ पहुँचाना गुनाह का काम है।

● तवाफ में दुआ पढ़ना कुरान पढ़ने से अफजल है। दुआ तवाफ में बगैर हाथ उठाएँ माँगना चाहीए।

● रुक्ने यमानी और हजरे अस्वद के दरम्यान ७० हजार फरीश्ते तवाफ करने वालों की दुआ पर आमीन कहते हैं।

- एहराम की हालत में तवाफ के सातों चक्करों में इज्जतेबा करना सुन्नत है।
- ऐसा तवाफ जिस के बाद सई करना है उस के शुरू के तीन चक्करों में रमल है। ऐसा तीन बार होगा। पहला उमरा के तवाफ में, दूसरा तवाफे ज़ियारत में और तीसरा ट ज़िल्हिज्जा को अगर मिना जाने से पहले आप तवाफ और सई करते हैं तब।
- ट ज़िल्हिज्जा को अगर आप ने तवाफ और सई कर ली तो ९० ज़िल्हिज्जा के बाद सिर्फ आप को तवाफ के ७ चक्कर बगैर रमल के लगाने हैं। उस के बाद सई करने की ज़रूरत नहीं।
- रमल सुन्नत है। अगर कोई रमल वाले तवाफ में रमल करना भूल जाएं तो यह खिलाफे सुन्नत होगा। मगर तवाफ हो जाएगा। तवाफ दोहराने की ज़रूरत नहीं। या किसी ने सातों चक्कर में रमल कर लिया तो भी यह मकरूह है। मगर तवाफ हो जाएगा।
- तवाफ का सवाब किसी को भी पहुँचाया जा सकता है। जो इंतेकाल कर गए उन्हें और जो जिंदा हैं और मक्का मुकर्कमा से दूर हैं उन्हें भी।
- मध्यूर, सवारी पर बैठ कर तवाफ कर सकते हैं।
- खाना ए काबा पर १२० रहमतें उतरती हैं। जिन में से ६० रहमतें तवाफ करने वालों पर, बक्सा ४० रहमतें नमाज़ पढ़ने और २० खाना ए काबा को देखने वालों के लिए हैं।
- रुकने यमानी को तवाफ के दौरान सिर्फ हाथ लगाना सुन्नत है। बोसा देना खिलाफे सुन्नत है। अगर भीड़ हो तो दूर से गुज़र जाएं। इस्तलाम भी न करें। रुकने यमानी के पास रुक कर सीना खाना ए काबा की तरफ कर के हाथ लगाना या भीड़ लगाना खिलाफे सुन्नत है, और ममूँ हैं।
- अस्र के बाद कज़ा फर्ज़ नमाज़ों को छोड़ कर और नमाज़ नहीं पढ़ सकते। इस लिए अस्र के बाद हरम में ज़्यादा से ज़्यादा तवाफ कीजिए मगर आखरी की दो रक़अत तवाफे वाजिब मत पढ़िये और मारिख के बाद आप ने जितने तवाफ किए हैं उन के हिसाब से हर तवाफ के लिए दो रक़अत अलग अलग पढ़ लीजिए। इस तरह हरम शरीफ के अंदर आप का हर लम्हा बेहतरीन इबादत में गुज़रेगा।

मसाइले तवाफ

- तवाफे ज़ियारत में तरतीब वाजिब नहीं है।
(मसाइल व मध्यूरमाते हज व उमराह पेज ८९, मुअल्लिमुल हुज्जाज पेज २९३, १७६, अहमदुल्लाह वासिंहा पेज २४६)
- तवाफे ज़ियारत, रमी और हलक यानी हजामत के बाद करना सुन्नत है वाजिब नहीं।
(मुअल्लिमुल हुज्जाज पेज २९३, १७६, अन्वारे मनासिक पेज २७३)
- अगर कोई यौमन्हर में हलक व कुरबानी से पहले तवाफे ज़ियारत कर ले तब भी बिला-कराहियत जायज़ है। (अन्वारे मनासिक पेज ३४०)

मकरूहाते तवाफ (यह चीज़ें तवाफ में मकरूह हैं)

- फुजूल और बे फायदा बात चीत।
- खरीद व फरोख्त करना या इस की बात चीत करना। (तवाफ करते वक्त अगर फोन आ जाए तो आप के ना चाहते हुए भी आप को सामने वाले के सवालों के जवाबात देने होंगे। आप के जवाबात हो सकता है मुबाह या मकरूह होंगे, इसलिए मस्जिद हरम में मोबाइल बंद रखें)
- दुआ या कुरआन बुलन्द आवाज़ में पढ़ना जिस से तवाफ करने वालों और नमाज़ियों को तकलीफ हो या खलल हो।
- नापाक कपड़ों में तवाफ करना।

- रमल और इज्जतेबा को बिला वजह तर्क करना।
 - इज्जतेबा की हालत में नमाज़ पढ़ना। (नमाज़ दोनों मोठे यानी कंधे ढांक कर पढ़ें।)
 - तवाफ के फेरों के दरमियान ज़्यादा वक्फा करना। (किसी वजह से कुछ देर के लिए तवाफ रोक देना।)
 - बगैर वजह दो तवाफ एक के बाद एक 'बगैर तवाफे वाजिब नमाज़ पढ़'। (मकरूह वक्त पर इजाज़त है।)
 - दोनों हाथ तवाफ की नियत के वक्त बगैर तकबीर के उठाना।
 - हरम शरीफ में खुतबा और फर्ज़ नमाज़ की जमाअत खड़ी हो जाने के वक्त तवाफ करना।
 - तवाफ के दरमियान खाना खाना। कुछ उलमा ने पीने को भी मकरूह कहा है।
 - पेशाब पाखना के तकाज़े के वक्त तवाफ करना।
 - भूक और गुस्से की हालत में तवाफ करना।
 - तवाफ करते हुए नमाज़ की तरह हाथ बांधना या कमर पर हाथ रख कर चलना या गरदन पर हाथ रख कर चलना या किसी के गले में हाथ डाल कर चलना।
 - औरतों का ऐसे वक्त या इतने हुजूम में तवाफ करना जब औरतों का जिस्म गैर मर्दों को यकीनन छू जायगा तो ऐसे वक्त औरतों का तवाफ करना हराम है।
(इस मज़मून के सारे मसले "मुअल्लिमुल हुज्जाज" से लिए गए हैं।)
तवाफ का तरीका हम इन्शा अल्लाह उमराह के बयान में सीखेंगे।
- ▼ ▼ ▼ ▼ ▼ ▼ ▼

हज की अदाएँगी में जल्दी करें।

हजरत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास (रजी.) से रिवायत है कि नबी करीम (स.) ने फरमाया: "ए लोगो! अगर तुम पर हज फर्ज़ हो चुका हो तो उस की अदाएँगी में जल्दी करो, इस लिए कि तुम में से कोई नहीं जानता कि कब क्या रुकावट पेश आ जाए।" (तरीका)

जमाअत की अहमियत

हजरत इब्ने मसउद ;रजी.द्वारा से रिवायत है कि उन्होंने फरमाया: जिस शख्स को इस का शौक हो कि वह क्यामत के दिन मुसल्मान की तरह अल्लाह के सामने पेश हों, वह पांचों वक्त की नमाज़ उस मस्जिद में जहाँ अजान दी जाती है बा-जमाअत अदा करे। अल्लाह तआला ने तुम्हारे नबी ;स. द्वारा सुन्नत तर्क कर दी। और तुम ने अपने घरों में पढ़ ली जैसा ये पीछे रह जाने वाला अपने घर में पढ़ता है तो बेशक तुम ने अपने नबी ;स. द्वारा सुन्नत तर्क कर दी तो तुम गुमराह हो गए। हम ने किसी सहावी को जमाअत से गैर हाज़िर होते नहीं देखा। जमाअत से वही शख्स गैर हाज़िर होता था जो खुला हुआ मुनाफिक होता था। बीमार भी दो आदमियों के सहारे से आकर सफ में शामिल हो जाते थे। (मुस्लिम)

अरकाने उम्रह और हज का बयान

उम्रह के सिर्फ दो फराईज़ और दो वाजिबात हैं, जो भी उन्हें पूरा करेगा उस का उम्रह हो जाएगा।

इसी तरह हज के ३ फराईज़, ६ वाजिबात और १० सुन्नतें हैं जो भी उन्हें पूरा करेगा उस का हज हो जाएगा।

इस किताब में हम सफर के अलग अलग मरहतों के लिए अलग अलग दुआएं अङ्कारा और नफिल नमाज़ का ज़िक्र करेंगे। ये सिर्फ हज और उम्रह की इबादत की ओर अफ़ज़ल बनाने के लिए हैं। उन के न करने पर न कोई गुनाह होगा और न हज और उम्रह की इबादत में कोई फ़र्क आएगा।

१) उम्रह के फराईज़ :

- १) मीकात से एहराम बौधना, नीयत करना और तल्बिया पढ़ना।
- २) खाने काबा का तवाफ़ करना और तवाफ़ के बाद दो रक़अत नमाज़ वाजिबुत्तवाफ़ पढ़ना।

२) उम्रह के वाजिबात :

- १) सफा व मरवा के दरम्यान सई करना।
- २) बाल कतरवाना या मुंडवाना।

३) हज के फराईज़ :

- १) एहराम पहन कर हज की दिल से नीयत करना और तल्बिया कहना।
- २) वकूफ़ अरफ़ात यानी ६ ज़िल्हिज्जा को ज़्यात आफ़ताब से ले कर १० ज़िल्हिज्जा की सुबह सादिक तक अरफ़ात में किसी वक्त ठहरना। अगर एक लम्हा के लिए ही क्यों न हो।
हुजूर (स.) ने फरमाया “हज अरफ़ात में ठहरने का नाम है”
(जामे तिर्मिज़ी, हदीस ८८६)
- ३) तवाफ़े ज़ियारत जो दसरीं ज़िल्हिज्जा की सुबह से लेकर बारहवीं ज़िल्हिज्जा के मध्यरिव तक किया जा सकता है।

४) हज के वाजिबात :

- १) अरफ़ात में सूरज ढूबने तक ठहरना।
- २) मुज़दलिका में वकूफ़ के वक्त ठहरना।
- ३) सफा व मरवा के दरम्यान सई करना।
- ४) शैतान को बा-तरतीब कंकरी मारना।
- ५) कुर्बानी करना।
- ६) सिर के बाल मुंडवाना या कुतरवाना।
- ७) मिकात से बाहर रहने वाले को तवाफ़े विदा करना। (अहले हरम और अहले हिल पर वाजिब नहीं है, सिर्फ़ मुस्तहब है।)
- ८) १०, ११, १२ तारीख को रातें मिना में गुजारना।

५) हज की सुन्नतें :

- १) मुकरद आपाकी और कारिन को तवाफ़ कुदूम करना।
- २) इमाम की तीन मुकाम पर खुल्बा पढ़ना। सातर्वीं ज़िल्हिज्जा को मक्का मुकर्रमा में, नवीं ज़िल्हिज्जा को अरफ़ात में और ग्यारहवीं को मिना में।
- ३) नवीं ज़िल्हिज्जा की रात में मिना में रहना।
- ४) तुलू और आफ़ताब के बाद नवीं ज़िल्हिज्जा को मिना से अरफ़ात को जाना।

५) अरफ़ात से इमाम के चलने के बाद चलना।

६) अरफ़ात में गुस्त करना।

इन के इलावा भी और बहुत सी सुन्नतें हैं।

सफरे हज पर निकलने से पहले नीयत का बयान:-

हज तीन तरह के होते हैं और सफरे हज में हज के साथ उम्रह भी किया जाता है, तो जब आप घर से एहराम पहन कर निकलेंगे, तो क्या नीयत करेंगे? उम्रह की या हज की और किस तरह के हज की?

हज की तीन किसमें हैं १. हजे इक्राद २. हजे किरान ३. हजे तमत्तो

हजे अफराद में हाजी एहराम सिर्फ़ हज कि नीयत से पहनते हैं और सिर्फ़ हज करके एहराम उतार देते हैं।

हजे किरान में हाजी हज और उम्रह दोनों की नीयत से एहराम पहनते हैं और दोनों करने के बाद ही एहराम उतारते हैं। अहले हरम और अहले हिल सिर्फ़ हजे अफराद ही कर सकते हैं। हजे किरान और तमत्तुअ इन के लिए मना है आपाकी के लिए छूट है कि वह तीनों में से जिस का चाहे एहराम बाँधे।

हजे तमत्तो में हाजी पहले उम्रह की नीयत से एहराम पहनते हैं और उम्रह करके एहराम उतार देते हैं। फिर द ज़िल्हिज्जा को एहराम हज की नीयत से पहनते हैं और हज करके उतारते हैं। हिन्दुस्तान से जानेवाले हाजियों को हजे तमत्तो ही आसान होता है। इसलिए हम इस हज को सीखेंगे।

इसलिए अगर आपकी फ्लाइट जिद्दा के लिए ही और द ज़िल्हिज्जा से पहले की हो तो आपको मक्का शरीफ पहुँचकर पहले उम्रह करना है। इसलिए आप एहराम भी उम्रह की नीयत से पहनेंगे और पहले नीयत भी उम्रह ही की करेंगे।

अगर आप कि फ्लाइट मदीना के लिए ही हो तो न आप घर से एहराम पहनकर निकलेंगे और न किरी चीज़ की नीयत करेंगे, बल्कि मदीना ४० वक्त कि नमाज़ पुरी करके जब आप मदीना से मक्का रवाना होंगे तब आपको एहराम पहनकर उम्रह की नीयत करना होगा।



| | अरकान | तारीख | हजे तमत्तओ | हजे किरान | हजे अफराद |
|---------------------------|------------------|------------------------|------------|----------------|-----------|
| | तवाफ़े कुदूम | | ⊗ | सुन्नत | सुन्नत |
| सिलसिलावार उम्रह के अरकान | अहरामे उम्रह | द ज़िल्हिज्जा से | फ़र्ज़ | फ़र्ज़ | ⊗ |
| | तवाफे उम्रह | ९३ ज़िल्हिज्जा | फ़र्ज़ | फ़र्ज़ | ⊗ |
| | सई उम्रह | के दरमियान उम्रह | वाजिब | वाजिब | ⊗ |
| | सिर मुंडवाना | नहीं किया जा सकता। | वाजिब | ⊗ | ⊗ |
| सिलसिलावार अरकान के हज | अहरामे हज | द ज़िल्हिज्जा | फ़र्ज़ | उमराह का एहराम | फ़र्ज़ |
| | कथामे मिना | ८ ज़िल्हिज्जा | सुन्नत | सुन्नत | सुन्नत |
| | वकूफ़े अरका | ६ ज़िल्हिज्जा | फ़र्ज़ | फ़र्ज़ | फ़र्ज़ |
| | वकूफ़े मुज़दलिका | ९० ज़िल्हिज्जा की रात | वाजिब | वाजिब | वाजिब |
| | रमी जमरा इक्वा | ९० ज़िल्हिज्जा | वाजिब | वाजिब | वाजिब |
| | कुरबानी | ९०, ९१, ९२ ज़िल्हिज्जा | वाजिब | वाजिब | इख्यारी |
| | सिर मुंडवाना | ९०, ९१, ९२ ज़िल्हिज्जा | वाजिब | वाजिब | वाजिब |
| | तवाफे ज़ियारत | ९०, ९१, ९२ ज़िल्हिज्जा | फ़र्ज़ | फ़र्ज़ | फ़र्ज़ |
| | सई | २६ ज़िल्हिज्जा से पहले | वाजिब | वाजिब | वाजिब |
| | कथामे मिना | ९१, ९२, ९३ ज़िल्हिज्जा | सुन्नत | सुन्नत | सुन्नत |
| सिलसिलावार अरकान के वाजिब | रमी जमरा | ९१, ९२, ९३ ज़िल्हिज्जा | वाजिब | वाजिब | वाजिब |
| | तवाफे विदा | वापसी से पहले | वाजिब | वाजिब | वाजिब |

सफरे हज का आगाज़

सफरे हज पर निकलने से पहले की तैयारियाँ:-

१. ६ से ८ अच्छे और दीनदार लोगों के साथ शुप बनाकर हज का फार्म भरें। क्योंकि एक कमरे में ६ से ८ लोगों को रखा जाता है। अगर यह लोग हमख्याल और नेक हों, तो बड़ी आसानी होती है।
२. दिल में यह यकीन जमाएँ कि मुझे मेरा माल, मेरी ताकत, मेरी सलाहियत मुझे हज के सफर पर नहीं ले जा रही है बल्कि मुझे मेरा अल्लाह ले जा रहा है। कई लोग दुनिया में मालदार हैं, वा सलाहियत है, ताकतवर हैं लेकिन उन्हें अल्लाह का हुक्म नहीं हुआ, वह नहीं जा सकते।
मैंने जाती तौर से महसूस किया कि हज न सिर्फ अल्लाह कि तौफिक से हम कर पाते हैं। बल्कि हज के अरकान भी अल्लाह तआला अपने फज़्ल से पूरा करते हैं। ३० से ४० लाख के मज्मे में अगर अल्लाह तआला की मदद न होती, तो मैं और कई हाजी अरफात और मुजदलफा वक्त पर न पहुँच पाते और यह अरकान हमसे फौट हो सकते थे।
३. हाजी कहाने का शौक, ख़रीदारी वैग्रह भी हज की नीयत के साथ शामिल हो तो तौबा करें और हज कि नीयत खालिस अल्लाह की रझा के लिए करें।
४. कारोबार और घर की सारी ज़रूरीयत और ऊमुर से मुत्ख्यालिक वसीयत नामा लिख दे, लेना देना, हकुक सब मुफस्त दर्ज कर दे और किसी मामला शनास और दीनदार शख्स को अपना कायम मुकाम बना दे।
५. घरवालों को आप की गैर मौजूदी में भी नमाज़ पढ़ते रहने और पूरी तरह दिन पर चलते रहने की नसीहत कर दे।
६. सदके से बलाएँ टलती है इसलिए सफर में जान और माल कि हिफाज़ के लिए सदका खेरात कर दे या गरीबों को खाना खिला दे।
७. अगर किसी का हक अदा न किया हो तो अदा करें। किसी का दिल दुखाया हो तो माफी मांग लें। अल्लाह तआला बैनियाज है वह खुद के हुकूक माफ कर देगा लेकिन बंदों के हुकूक माफ नहीं करेगा। उसे तो आपको बंदों से ही माफ कराने होंगे।
८. सफरे हज की सामान कि मुकम्मल फेहरिस्त बना ले और उसके मुताबिक सामान एक या दो दिन पहले ही पैक कर ले।
९. एक अलग हैंड बैग में पासपोर्ट जहाज का टिकट, शनाख्ती कार्ड और दुसरे ज़रूरी सामान रख लें। यह बैग ऐसा हो कि उसे आप १४ घंटे के सफर में हमेशा अपने कंधे से लटकाए रह सकें।
१०. बाल साफ कर ले, नाखून काट लें और नहा धोकर अच्छी तरह पाक हो जाए और एहराम पहन ले।

घर से रवानगी:-

अच्छी तरह नहा थों कर साफ सुधरे हो जाएँ और एहराम पहन लें।

- इस मुबारक सफर की कामयाबी के लिए अल्लाह से दुआएँ मांगें। दुआ ज़्यादा असर रखती है जब ये नफिल नमाज़ पढ़ कर मांगो जाएं। इस लिए दो-दो रक़अत कर के दस रक़अत नफिल नमाज़ इस तरह पढ़ें।
- दो रक़अत नफिल नमाज़ सलातुल्हाजात की नीयत से पढ़ें, और अल्लाह तआला से दुआ करें के अल्लाह तआला आप का सफरे हज आसान और कामयाब करें और आप को हजे मबखर अता फरमाएं।
- दो रक़अत नफिल नमाज़ सलातुल्लौबा की नीयत से पढ़ें। इस नफिल नमाज़ के बाद आप अल्लाह तआला के दरबार में सच्चे दिल से अपने गुनाहों से

तौबा करें।

- दो रक़अत नफिल नमाज़ शुकाने की पढ़ें और अल्लाह तआला का शुक अदा करें कि उस ने ये तौफ़ीक आप को दी, कि आप हज के सफर पर जा रहे हैं।
- दो रक़अत नमाज़ अपने और अपने घर वालों की बलाओं और मुसीबतों से हिफाज़ की नीयत से पढ़ें और दुआ करें की अल्लाह तआला आप को सफर में और घर वालों की वतन में अपने अमान और हिफाज़ में रखे और तमाम मुसीबतों से महफूज़ रखें।
- आखिरी दो रक़अत नमाज़ एहराम की नीयत से पढ़ें। सारी नमाजें आप एहराम की चादर से सर ढांप कर पढ़ें और आखिरी दो रेकत का सलाम फेर कर सिर खोल दें मगर अभी उम्रह की नीयत न करें। उम्रह की नियत अगर आप जहाज में यलम लम मिकात से करेंगे तो ज्यादा आसानी होगी। यलम लम मिकात जिद्दा उतरने से एक घंटा पहले आता है और जहाज का अमला मिकात आने पर आप को इसकी खबर कर देगा।

कुछ याद रखने लायक बातें:-

- बुजुर्गों से सुना है कि एहराम की हालत में इंसान जो भी काम करता है उस पर मुहर लग जाती है। फिर वह जिन्दगी भर उसे दोहराता रहता है। वैसे तो हर वक्त गुनाहों से बचना चाहिये मगर एहराम की हालत में गुनाहों से सख्त परहेज़ करना चाहिये और पूरी तरह से सुन्नत के मुताबिक शब-व-रोज़ गुज़ारने की कशीश करना चाहिये।
- कुछ ऐसे गुनाह हैं जिन की हमें आदत सी है और उन के गुनाह होने का हमें एहसास तक नहीं होता। जैसे गीबत, नज़रों का गुनाह वैग्रह और यह गुनाह हम उस वक्त करते हैं जब हम दुनियावारी की बातें करते हैं या बाज़ारों में घुसते हैं। एहराम की हालत में और वैसे भी हरम के दुद में इन दोनों से परहेज़ करें और ज़्यादा से ज़्यादा वक्त कुरआन शरीफ की तिलावत, तवाफ़, नफिल नमाज़ और ज़ज़ाइफ़ पढ़ते हुए गुज़ारें। आप जिस जगह जा रहे हैं (मक्का शरीफ) वहाँ एक नेकी का सवाब एक लाख गुना बढ़ा कर मिलता है। इसी तरह एक गुलती का गुनाह भी एक लाख गुना मिलेगा। हज़रत नूह (अलै.) की उम्र ६५० साल थी। अगर आप चार दिन हरम शरीफ में इबादत करें तो चार लाख दिन के बराबर इबादत का सवाब मिलेगा। जो के ९००० साल की इबादत से ज़्यादा है। यानि आप हज़रत नूह (अलै.) की उम्र से भी ज़्यादा अरसे तक इबादत करते रहे। इस से आप अन्दाज़ा लगाएँ कि अगर आप एक महीने हरम में इबादत करते रहे, तो कितना सवाब मिलेगा? वह लोग खुश नसीब हैं, जो इस बात को समझ कर इस सुनहरे मौके का फायदा उठाते हैं।
- अपने वतन में एक फर्ज नमाज़ छूट जाए तो उस का गुनाह ७० गुनाहे कबीरा के बराबर होता है जिसकी जहन्नम की सज़ा कई लाख साल है। यही गुनाह अगर हरम शरीफ में हो जाए तो यह एक लाख गुना और बढ़ जाएगा। नमाज़ छोड़ने के साथ अगर किसी ने गीबत भी की, नज़रों का गुनाह भी किया, झगड़ा वैग्रह भी किया और महीने भर करता रहा तो ऐसा शख्स जब हज के सफर पर निकलता है तो कुछ नेक होता है और गुनाह का ज़खीरा भी उसकी उम्र के मुताबिक पचास साठ साल का होता है। मगर जब हज से वापस आता है तो हजारों साल की उम्र के गुनाह के बराबर गुनाहों का ज़खीरा लेकर आता है। ऐसा बदबूत इंसान हज कर के हाजी के बदले पांजी नहीं बनेगा, तो और क्या बनेगा! इस लिए कुछ लोग हज के बाद ज़्यादा बदबूत हो जाते हैं। अल्लाह तआला हमें आप को और सारे

मुसलमानों को दीन समझने और उस पर सही तरीके पर चलने की तौफीक अता फरमाए। आमीन।

- वह मुकद्दस जमीन जिसे देखने के लिए लाखों आँखें तरसती हैं। वहाँ आप को सिर्फ चालीस दिन रहना है। इन चालीस दिनों के लिए अगर आप दुनियादारी छोड़ देंगे, तो क्या क्यामत आ जाएगी? घर से निकलते बक्त अपनी दुनियादारी को यहीं छोड़ कर सफरे हज पर रवाना हों और आने वाले हर लम्हे को ग़नीमत समझें और जितनी नेकी अपने दामन में समेट सकते हों समेट लें। मौत की किसे ख़बर, हो सकता है यह आप का आख़री सफर हो?

मुकद्दस सफर का पहला कदम:-

- स्टील का कड़ा पहन लें, पासपोर्ट, एअर टिकट और दुसरा ज़रूरी सामान हैंड बैग में रखकर काथे पर लटकाले। सरे सामान पर अपना नाम पता और कवर नंबर फिर एक बार ज़ॉच लें और घर वालों के लिए अल्लाह तआला से दुआ करें, उन्हें अल्लाह तआला की अमान में दें और यह दुआ पढ़ें।

**أَسْتَوْدُعُ اللَّهَ دِينِكَ وَأَمَانَكَ وَأَخْرَجْتُكَ
رَوْدَكَ اللَّهُ التَّقْرِي، وَبَسِرَكَ الْحَيْرَ حَيْثُ كُنْتَ.**

“अस्तौदिउल्लाहा दी-नका व अमा-न-त-का व आखिर-र-अ-म-लिका। ज़ब्ब-द-कल्लाहुत्तक्वा, व यस-स-र-ल-कल खे-र-हैसु कुत्ता।”

तर्जुमा : अच्छा जाओ तुम और तुम्हारा दीन और तुम्हारी दीन व दुनिया की अमानत और तुम्हारे कामों का अंजाम अल्लाह तआला के सुर्पद है। अल्लाह तआला तुम को तक्वा की दैलत से नवाज़े और तुम्हारे लिए नेकियाँ आसान करें, जहाँ कहीं रहो।

- घर से पहला कदम निकलते हुए यह दुआ पढ़ें।

بِسْمِ اللَّهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ

“बिस्मिल्लाहि तवक्कल-तु अ-लल्लाहि ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह।”

तर्जुमा: शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से, मेरा अल्लाह तआला पर इमान और उसी पर भरोसा है, और यह यकीनी बात है कि अल्लाह तआला के हुक्म के बौरे एक पता भी नहीं हिलता, मैं अल्लाह ही के सहरे सफर शुरू करता हूँ सवारी आ जाए तो सवारी पर सुन्नत तरीके से सवार हों। सवारी पर सवार होने का सुन्नत तरीका :

- हज़रत अली बिन रबीया (रज़ी.) से रिवायत है कि अली (रज़ी.) बिन अबी तालिब के लिए जब सवारी लाई गई तो इस बक्त मैं भौजुद था। इन्होंने जब इस की रेकाब पर पैर रखा तो बिस्मिल्लाह कहा। फिर जब पीठ पर बैठ गए तो कहा अलहम-दु-लिल्लाह फिर फरमाया-

**سُبْحَنَ اللَّذِي سَخَّرَنَا هَذَا وَمَا كَانَ لَهُ مُغْرِبٌ
وَإِنَّا إِلَى رَبِّنَا لَمْ نَنْقُوْبُونَ** (سورة غافر، آيات: ٣٢-٣٣)

“सुब्हानलल्ज़ी सख्ख-र-ल-ना हाज़ा वमा कुन्ना लहू मुकिरनीा व इन्ना इला रब्बाना ल-मुन-कलिबून।”

तर्जुमा : उस अल्लाह की तारीफ है जिसने इस को हमारे लिए मुस्खल्वर कर दिया। हम इस की ताकत नहीं रखते थे और हम अपने रब की तरफ पलटने वाले हैं। (सूरह जुख़ल्फ, आयत: ٩٣-٩٤)

फिर तीन मरतबा अलहम-दु-लिल्लाह कहा, फिर तीन बार अल्लाह अकबर कहा। फिर ये दुआ पढ़ी:

**سُبْحَانَكَ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَا غُفرُلِي فَإِنَّهُ لَا
يَكْفُرُ اللَّهُ نُوبَ إِلَّا أَنْتَ.**

“सुब्हा-नका इन्नी ज़-लम-तु नफ-सी फ़ग-फिर-ली, फ-इन्हू, ला यग-फिर-जुनूबा इल्ला अन्ता।”

तर्जुमा : पाक है तू बेशक मैं ने अपनी जान पर जुल्म किया। बस मुझको बख्ता दे और तेरे सिवाय कोई बख्तने वाला नहीं।

यह कह कर हंस दिये, लोगों ने कहा ऐ अमीरखल मोमिनीन आप हंसते बर्यों हैं। इहोने फरमाया कि मैं ने हुजुर (स.) को इसी तरह करते देखा था जिस तरह मैंने किया और जब आप हंसे तो मैंने भी अर्ज किया था या रसूल अल्लाह (स.) किस बात ने आप को हंसाया। आप (स.) ने फरमाया था तुम्हारा रब पाक है। इस के बदे जब कहते हैं, कि ऐ रब! मुझे बख्ता दे, तो फिर वह खुश होता है कि मेरा बांदा जानता है कि मेरे सिवाय कोई बख्तने वाला नहीं। (अब दाज़द-तिर्मिज़ी)

इस दुआ को याद कर लीजिए और हज के दौरान और उसके बाद भी जब भी सवारी पर सवार होना हो, इसे जरूर पढ़े।

हवाई सफर का आगाज़

- जिन जहाजों से हज कमेटी से जाने वाले हाजियों को ले जाया जाता है उसमें सिर्फ हाजी ही सफर करते हैं। उन में सफर करने की आम मुसाफिरों को इजाजत नहीं होती, उन जहाजों से सफर करनेवाले हाजियों के टिकटों पर सीट नंबर भी नहीं होते हैं। इसलीए जो हाजी पहले पहुँच जाते हैं, उन्हें अपने सारे युप के साथ बैठने के लिए अच्छी सीटे मिल जाती है और जो देर से जहाज में दाखिल होते हैं, तो उन्हें जो बची हुई खाली सीट होती है उसी पर बैठना पड़ता है। ऐसे में अक्सर युप बिखर जाता है और हो सकता है कि आप को मजबूरन गैर मैहरम के बगल में जगह मिले।
- हज के अव्याम में आप दिनों से ज्यादा वक्त एअरपोर्ट पर सामान की चेकिंग और दूसरे कामों में लगता है इसलीए ३ से ४ घंटे पहले एअरपोर्ट पर पहुँच जाए और जल्द अज़ जल्द जहाज में सवार होने की कोशिश किजिए।
- एयरपोर्ट पर दाखिल होते ही पहले आप को जरे मुबादला मिलेगा। उसे आप हिफाजत से अपने हैंड बैग के अंदर वाली जेब में रख लें। ताकि अगर बार बैग खोलना हुआ तो पैसा गिरने या खो जाने का डर न हो।

एयरपोर्ट पर ही आपके पासपोर्ट के पीछे एक स्टिकर चिपकाया जाएगा। जिसमें आपके मुअलिम का नाम मक्का में आपकी बिल्डिंग का नंबर और रूम नंबर होगा। इस तफसिल को आप परमनंद मार्कर पेन से अपने सारे सामानों पर लिख लें। जहाज में अब अक्सर सामान पिछे छूट जाते हैं। फिर मक्का में हस्तों पर लिप्त मिलते हैं। इस नंबर और तफसिल से फैरन आपका सामान आप तक पहुँच जाएगा। अपने सामान पर अपने घर का पता और जिस एयरपोर्ट से आप रवाना होंगे उसका नाम भी जरूर लिखें।

- जरे मुबादला मिलने के बाद आप के लगें का सेक्युरिटी चेक होगा। फिर आप का सामान वजन होगा, उसके बाद आप का सामान जहाज पर लोड होने चला जाएगा और आप को जहाज पर सवार होने से पहले वैटिंग हॉल (Waiting Hall) में जाकर इंतेज़ार करने के लिए कहा जाएगा। इस हॉल में आप पेशब पाख़नामा से फारिग होकर बुजु करलें। हज कमेटी की तरफ से नमाज़ पढ़ने का भी इंतेज़ाम किया जाता है। बक्त हो तो नमाज़ भी पढ़ लें।
- जहाज का सफर साढ़े चार से पौँच घंटे का होता है। जहाज में टॉयलेट (Toilet) नहीं है मगर नापाक होने का ख़तरा रहता है और बुजु का इंतेज़ाम भी नहीं, इस लिए पहले से ही तैयार रहें। (और पानी वगैरा कम पीएं।)

जब जहाज में सवार होने का ऐलान किया जाए तो सवारी की दुआ पढ़ते हुए जहाज में दाखिल हों और जब जहाज रवाना हो तो ये दुआ पढ़ें :

سُبْحَنَ اللَّهِ مَجْهَرًا وَمُرْسِبًا إِنَّ رَبِّنِي لَكَفُورَ رَّحِيمٌ (سورة ابراهيم، آيات: ٣٧-٣٨)

“बिस्मि�ल्लाहि मध्रीहा व मुर्साहा। इन्ना रब्बी ल-ग़फू-र-रहीम।”

तर्जुमा : जहाजों का चलना और ठहरना अल्लाह ही के नाम की बरकत से है, बेशक मेरा रब बख्तने वाला और रहम करने वाला है।

(सूरह हूद, आयत: ٤٩)

हवाई सफर और मक्का मुकर्रमा में आमद

हवाई सफर साढ़े चार घंटे का है सफर के दौरान कोलिंग, खाना और खुशबूदार कागज़ के रूमाल मिलते हैं। अगर आप ने सफर शुरू करने से पहले उम्रह की नीयत कर ली है, तो खुशबूदार मशरुवात (Cold Drink), खुशबूदार रूमाल और खुशबूदार खाने से पहले जरूर करें क्यों कि एहराम की हालत में खुशबूदार लगाना और खाना दोनों की मुमनिअत है। अगर उम्रह की नीयत न की हो तो शौक से खाएं।

तीन घंटे सफर के बाद नीयत करने की तैयारी कीजिए। मीकात आने के पहले ही जहाज़ का अमला आप को खबर कर देगा। मीकात आने पर उम्रह की नीयत इस तरह करें :

اللَّهُمَّ إِنِّي أَرْبَدَتُ الْعُمْرَةَ كَيْسِرُهَا لِي وَتَقْبَلْهَا مِنِّي

“अल्लाहुम्मा इन्नी उरीदुल उम्र-त-फ-यस्सर-हाली व तकब्ल-हा मिन्नी।”
तर्जुमा : ऐ अल्लाह! मैं उम्रह की नीयत करता हूँ/करती हूँ। इसे तू मेरे लिए आसान कर और कबूल फर्मा।

नीयत के बाद मर्द बुलंद आवाज़ में और ख़वातीन धीमी आवाज़ में तीन बार तत्विया पढ़ें।

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ

हाजिर हूँ मेरे मौला आपके हुजुर हाजिर हूँ।

لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ

मैं हाजिर हूँ, आपका कोई शरीक नहीं मैं हाजिर हूँ।

إِنَّ الْحَمْدَ وَالْعَمَّةَ لَكَ وَالْمُلْكَ

“इन्नल हम-दा वन्निअ-मता लका वल मुल्का।”

सारी हम्द व सत्ताईश के आप ही सजावार हैं। और सारी नेभ्रमतें आप ही की हैं और सारी कायानात में हुकूमत भी आप ही की है।

لَا شَرِيكَ لَكَ

आप का कोई शरीक व सहीम नहीं।

नीयत करने और तत्विया पढ़ते ही आप पर एहराम की सारी पावंदियाँ आइद हो गईं। इस के बाद आप के लिए सब से अफ़्ज़ल तस्वीह ज़िक्र तत्विया ही है।

जो हवाई जहाज़ हाजियों को ले जाते हैं वह इस बात का ख्याल रखते हैं कि मुसाफिरों को मिकात की खबर दें। मगर जो आम फ्लाइट हैं उस में इस बात का ख्याल नहीं रखा जाता कि मिकात की खबर करें। इस लिए अगर आप टूर से और आम फ्लाइट से जा रहे हों तो एहतियात के तौर पर सफर के दो घंटे बाद ही नीयत कर के तत्विया पढ़ लें।

जिन्दा पहुँच कर जहाज़ से उतरने के बाद एक बस के ज़रिये आप को एयरपोर्ट की इमारत में ले जाया जाएगा। एयरपोर्ट की इमारत में दाखिल होने के बाद आप को तीन मरहलों से गुज़रना है।

- पहले मरहले में आप को एक जंगले से धिरे हुए हॉल में रुकाया जाएगा और आप के पासपोर्ट पर दाख़ले की मुहर लगेगी।
- दुसरे मरहले में आप को बग़ल के दुर्मेरे हॉल में जाकर अपना सामान पहचान कर एक जगह जमा करना है और उस की सेक्यूरिटी जॉच करानी है। जॉच के बाद आप का सामान फिर ले लिया जाएगा और उसे बस अड्डे पर पहुँचा दिया जाएगा।

- तीसरे मरहले में आप को करीब दो सौ मीटर दूर हिन्दुस्तान के बस अड्डे की तरफ जाना है। जिन्दा का एयरपोर्ट बहुत बड़ा है और खोजाने का खतरा रहता है। इस लिए अपने साथियों के साथ रहें और बोर्ड देखते हुए और रास्ते में खड़े गाइड से पूछते हुए हिन्दुस्तान के बस अड्डे पर पहुँचें। इस काउंटर पर ज़खरियात से फ़ारिग़ होने, वुजु करने और नमाज़ पढ़ने की सहूलतें मुहयम्या हैं। इस लिए ज़खरियात से फ़ारिग़ होकर वुजु बना कर नमाज़ पढ़ लें। जो सामान आप से जॉच के बाद ले लिया गया था, कुत्ती उसे यहाँ पहुँचा देते हैं। अब आप अपना सामान पहचान कर एक जगह जमा कर लें और अपना पासपोर्ट काउंटर पर दिखायें।

(नोट: जो कुत्ती आप का सामान बस डिपो तक पहुँचाने में आप की मदद करते हैं, उन का बिल्ला नस्बर ज़खर नोट कर लें।)

यहाँ आप को युप बना कर मुअल्लिम के हवाले किया जाएगा। मुअल्लिम एक बस में जितने लोग सवार हो सकते हैं उतने लोगों को जमा करेंगे। उन का सामान एक ट्रॉली पर लाद कर बस तक ले जाएंगे और बस में सवार कर देंगे। आप इस बात का ख्याल रखें कि आप इसी बस में सवार हों जिस में आप का सामान लादा जाए। बस में सवार होते वक्त मुअल्लिम आप से आप का पासपोर्ट ले लेंगे और मक्का शरीफ में आप के रिहाईशगाह पहुँच कर आप को आप का रिहाईशगाह कार्ड, अपना शिनाऱखी कार्ड और प्लास्टिक पट्टा हाथ में पहनने के लिए देंगे।

एयरपोर्ट और बस में हर जगह तत्विया का ज़िक्र जारी रखें। जब बस मक्का शरीफ की हड में दाखिल हो, तो यह दुआ पढ़ें:

“या अल्लाह यह आप का और आप के रसूल (स.) का हरम है। इसमें जानवरों की भी अमन है। ऐसे मोहतरम मुकर्रम की बरकत से आप मेरे गोश, खून और हड्डियों को आग पर हराम कर दे और मुझे अपने बलियों और अताअत गुज़ारों में शामिल फरमा।”

जब मक्का शहर पर पहली नज़र पड़े तो यह दुआ पढ़ें:

या अल्लाह मेरे लिए मक्का शहर में ठिकाना फ़रमा दे और हलाल रोज़ी दे,

या अल्लाह हम को मक्का मुकर्रमा में बरकत इनायत फ़रमा।

या अल्लाह इस शहर के मेवे हमें नसीब फ़रमा।

या अल्लाह अहले मक्का को हमारी नज़रों में मेहबूब बना दे।

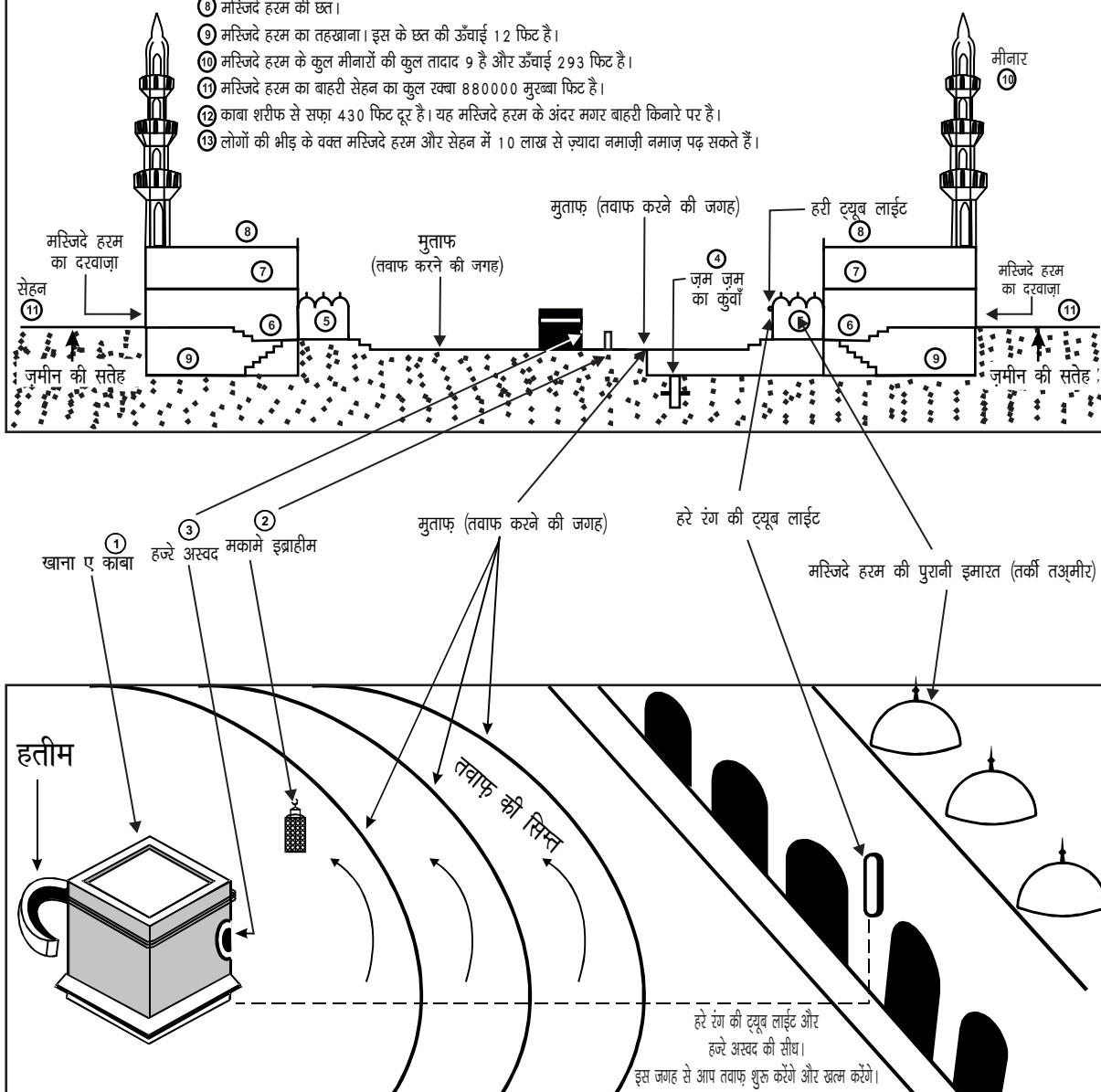
या अल्लाह हमें भी अहले मक्का की नज़रों में मेहबूब बना दे।

बस आप को आप की रिहाईशगाह तक पहुँचा देगी। कुत्ती आप का सामान बस से उतार कर आप के कमरे तक पहुँचा देंगे। सामान कमरा में रखकर कुछ खा पी लें। ज़खर दो तो कुछ देर आराम कर लें। जो रियाल आप को एयरपोर्ट पर मिले थे, उन्हें सूटकेस में हिफाज़त से रख दें। अपने साथ हरम में हगिज़ न ले जाए। फिर उम्रह की तैयारी करें। मक्का मुकर्रमा पहुँच कर आप जितनी जल्दी उम्रह करेंगे उतना अफ़्ज़ल है।

हज व रमज़ान के दिनों में हरम शरीफ में नमाज़ व नमाज़ के बाद तवाफ़ करने वालों का ज़बरदस्त हुज़ूम होता है जिस वज़ह से उम्रह के अरकान अदा करने में काफ़ी परेशानी होती है। सुबह इश्क़ाक के बाद दोपहर २ बजे से ४ बजे के बीच और रात में ईशा और खाने के बाद हरम शरीफ कुछ खाली होता है। लेहज़ा इन दो वक्तों में अगर आप उम्रह करें, तो कदरे आसानी होगी।

मस्जिदे हरम की तपसील

- ① खाना ए काबा के अंदर फर्श मताफ से 7 फिट ऊँचा है। खाना ए काबा की कुल ऊँचाई 46 फिट, लम्बाई 42 फिट, और ऊँचाई 38 फिट है। हतीम का आखरी सिरा खाना ए काबा से 21 फिट दूर है।
- ② मकामे इब्राहीम एक पत्थर है जिस पर हजरत इब्राहीम के कदमों के निशान हैं। यह 8 इंच ऊँचा, 14 इंच चौड़ा, और 15 इंच लम्बा है, और खाना ए काबा से 46 फिट दूरी पर है। इस का रंग पीला व लाल के दरमियान सफेदी लिए हुए है।
- ③ हजरे अस्वद खना ए काबा के मशरकी कोने पर जमीन से तकरीबन सब्वा बार किट की ऊँचाई पर नस्ख है। यह किसी हादसे में टूट गया था। अब इस के 8 टुकड़े एक 7x10 इंच के काले पत्थर पर जोड़ कर घांटी के फ्रेम में लगा दिया है। हजरत इब्राहीम (अलै.) के जमाने में सफेद था, अब लोगों के गुनाहों से काला हो गया है।
- ④ जम जम का कुर्वा अंग तहखाना में है। इस की पार्श्वी की सतह जमीन से 12 फिट ऊँची है। पार्श्वी के सूते 40 फिट पर फूटे हैं और कुर्वे की कुल गहराई 100 फिट है। कुर्वे का दहना (मुंह) 6 फिट है। जम जम का कुर्वा काबा शरीफ से 60 फिट की दूरी पर है।
- ⑤ मस्जिदे हरम की तर्की तामीर, मुताफ और तुर्की तामीर का रखवा 290000 मुरब्बा फिट है।
- ⑥ सउजी दौर की मस्जिदे हरम की नई इमारत। तहखाना के साथ कुल रखवा 1310000 मुरब्बा फिट और जमीन से छत की ऊँचाई 30 फिट है।
- ⑦ मस्जिदे हरम का पहला मीज़िला और छत की ऊँचाई 30 फिट और रखवा 420000 मुरब्बा फिट है।
- ⑧ मस्जिदे हरम की छत।
- ⑨ मस्जिदे हरम का तहखाना। इस के छत की ऊँचाई 12 फिट है।
- ⑩ मस्जिदे हरम के कुल मीज़िलों की कुल तादाद 9 है और ऊँचाई 293 फिट है।
- ⑪ मस्जिदे हरम का बाहरी सेहन का कुल रखवा 880000 मुरब्बा फिट है।
- ⑫ काबा शरीफ से सफ़ा 430 फिट दूर है। यह मस्जिदे हरम के अंदर मगर बाहरी किनारे पर है।
- ⑬ लोगों की श्रीङ्क के बहत मस्जिदे हरम और सेहन में 10 लाख से ज्यादा नमाज़ पढ़ सकते हैं।



खाना-ए-काबा और मुताफ की तपसील

उम्रह कैसे करें ?

मस्जिदे हराम में दाखिला :-

काबा शरीफ के चारों तरफ जो अजीमुश्शान इमारत बनी हुई है, इस को मस्जिदे हराम कहते हैं। इसमें सौ से ज्यादा दरवाजे हैं। हुजुर (स.) का घर मरवा से शुमाल मशिक की सिम्म था और हुजुर (स.) बाबुस्सलाम जो कि सफा और मरवा के बीच है अक्सर इसी दरवाजे से मस्जिदे हराम में दाखिल हुआ करते थे। इस लिए अगर मुस्किन हो तो बाबुस्सलाम से दाखिल होने वारना किसी भी दरवाजे से दाखिल हो सकते हैं। मस्जिद में दाखिल होते वक्त दाहीना कदम मस्जिद में रखें और पढ़ें।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ، أَللَّهُمَّ افْخُلْ لِي، أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ.

“بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ، أَللَّهُمَّ افْخُلْ لِي، أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ”

तर्जुमा : अल्लाह का नाम लेकर दाखिल होता हूँ और रसूलअल्लाह (स.) पर दखल व सलाम भेजता हूँ। ऐ मेरे! रब मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाजे खोल दीजिए।

पहली नज़्र और दुआ :-

काबा शरीफ पर पहली बार जब आप की नज़्र पड़ेगी, तो पलक झपकने से पहले आप जो भी दुआ मार्गे, अल्लाह तभाला उसे कबुल फरमाएंगे। इस लिए ये लम्हा बहुत अहम है इस लम्हा से ज्यादा से ज्यादा फैजयाब होने के लिए पहले से ही तैयारी कर लें। मस्जिदे हराम में दाखिल होते वक्त नीची नज़्रें रखें। फिर करीब दो सौ कदम आगे बढ़ते जाएं। इस दौरान आप को दो बार सीढ़ियाँ उतरनी होंगी। जब आप सेहन में पहुँचें तो रास्ते से एक तरफ हट कर खड़े हो जाएं और नज़्रें उठा कर अल्लाह के उस घर को देखें जिसकी तरफ रुख करके आप सारी उम्र सजदे करते रहे। खाना काबा पर नज़्र जमा दें, बगैर पलक झपके ये दुआ पढ़ें। “या अल्लाह इस के बाद, मैं जो भी धैर की दुआ मार्गुँ कबूल फरमा।”

इस के बाद तीन मतर्बा ये दुआ पढ़ें।

“‘اَللَّهُ اَكْبَرُ لَا إِلَهَ اِلَّا اللَّهُ’

तर्जुमा : अल्लाह सब से बड़ा है, नहीं कोई मअबूद सिवाय अल्लाह के।

दुआ के बजाए आप तकबीर शरीफ भी पढ़ सकते हैं।

اَللَّهُ اَكْبَرُ، اَللَّهُ اَكْبَرُ، اَللَّهُ اَكْبَرُ، اَللَّهُ اَكْبَرُ، وَاللَّهُ اَكْبَرُ، وَاللَّهُ اَكْبَرُ.

“‘اَللَّهُ اَكْبَرُ لَا إِلَهَ اِلَّا اللَّهُ’

तर्जुमा : अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह सब से बड़ा है, नहीं कोई मअबूद सिवाय अल्लाह के, और अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह सब से बड़ा है और तमाम तभुरीफ़ सिर्फ़ अल्लाह के लिए हैं।

इस के बाद दखल शरीफ पढ़िये फिर दिल भर कर दुआएँ मार्गिये। ये गनी का दरबार है। मार्गने वाला मांगते मांगते थक जाएगा। मगर देने वाला देते देते न थकेगा। अपने लिए, अपने माँ बाप के लिए, अपने रिश्तेदारों के लिए, दोस्त अहबाब के लिए, उम्मत मुस्लिमा के लिए, अपने मुल्क के लिए और हर एक के लिए सुकून से रो रो कर दुआ मार्ग।

तवाफे उम्रह:-

उम्रह के दो फराइज़ में से एक फर्ज आप एहराम पहन कर पूरा कर चुके,

अब दुसरा फर्ज़ (तवाफ) अदा करना है। तवाफ हजेरे अस्वद से शुरू होगा हजेरे अस्वद पर ही खत्म होगा। हजेरे अस्वद काबा शरीफ के मशिरकी कोने पर लगा हुआ जन्मत का एक पथर है। जिस के चारों तरफ चाँदी का फ्रेम बना हुआ है। तवाफ हजेरे अस्वद को छु कर और बोसा देकर शुरू करना होता है। मगर लोगों के हुजूम की वजह से यह नामुम्किन है। इस लिए हम मुस्किन और आसान तरीके से उम्रह करने का तरीका बयान करेंगे।

तवाफ हजेरे अस्वद को नज़्दीक से या दूर से बोसा ले कर शुरू किया जाता है। मगर हजेरे अस्वद की सीध का अंदाज़ करने के लिए मशिरक की तरफ मताफ़ में दीवार पर और अतराफ़ की मस्जिदे हराम में छत (Terrace) पर खम्भों पर हरे रंग की ट्रियूब लाईट लगा दी गई है। इन्हीं निशान से आप हजेरे अस्वद की सीध का अंदाज़ लगा सकते हैं। आप का तवाफ इसी निशान से शुरू होगा और इर्हीं पर खत्म होगा।

पहली नज़्र की दुआ के बाद आप हजेरे अस्वद की सीध में आ जाएं। वहाँ पहुँचने के लिए आप लोगों के मुख्यालिफ़ सिस्टम चलने के बजाए तवाफ करने वालों में शामिल हो जाएं और इन के साथ चलते चलते हजेरे अस्वद और हरी ट्रियूब लाईट के दरम्यान में पहुँचें।



इज्तबा की हालत में खुला हुवा सीधे हाथ का कथा

रमल : एक तवाफ पूरा करने के लिए खाना ए काबा के गिर्द सात चक्कर लगाने होते हैं और दो रक्खत नमाज़ वाजिबुत्तवाफ़ पढ़ना होता है। उम्रह के तवाफ और हज के तवाफ़ ज़ियारत में पहले तीन चक्करों में मर्दों को पहलवानों की तरह शान से अकड़ कर, छोटे छोटे कदम रख कर तेज़ी से चलना होता है। इसे रमल कहते हैं। और रमल करते वक्त सीधी हाथ का कंधा खुला रखते हैं, इसे इज्तबा कहते हैं। इज्तबा के लिए एहराम का एक सिरा दाहिने हाथ के बग़ल से निकल कर बाएँ हाथ के कंधे पर डाल लेते हैं। रमल इस तवाफ में होता है जिसके बाद सई करनी होती है और नफ़री तवाफ में न रमल नहीं है। मगर जब भी आप एहराम पहन कर तवाफ करे इज्तबा करना सुन्नत है। हाँ नमाज़ पढ़ते वक्त दोनों कांधे ढांक लें।

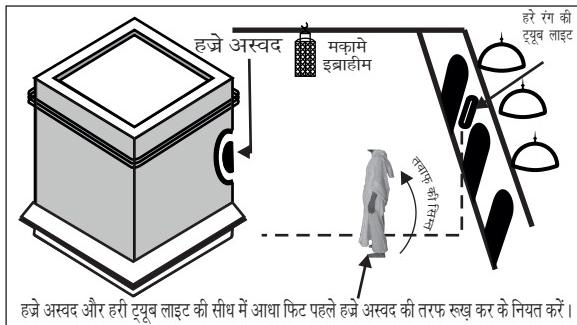
तवाफ का पहला चक्कर :-

- लोगों के हुजूम के साथ जब आप तवाफ करते करते हजेरे अस्वद तक पहुँचें तो हजेरे अस्वद और हरी ट्रियूब लाईट की सीध और दरम्यान से आधा फिट पहले रुक जाएं और हजेरे अस्वद की तरफ रुख कर के तवाफ की नीयत इस तरह करें।

اَللَّهُ اَكْبَرُ طَوَافُ بَيْتِكَ الْحَمَّامَ، سَبَقَهُ اَمْوَاطُ لِلَّهِ تَعَالَى، فَيَسِّرْهُ لِي، وَتَقْبَلْهُ مِنِّي.

“‘अल्लाहुम्मा इन्नी उरीदू तवाफा बैति-कल हराम, सब-अता अश्वतिन लिल्लाहिं तअला, फ-यस्सर ली, व तकब्बल-हु मिन्नी।’”

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! में आप के इस हुम्रत वाले घर का तवाफ आप की रज़ा और खुशनी के लिए कर रहा हूँ। आप इस को मेरे लिए आसान करें और कबुल फरमाएं।

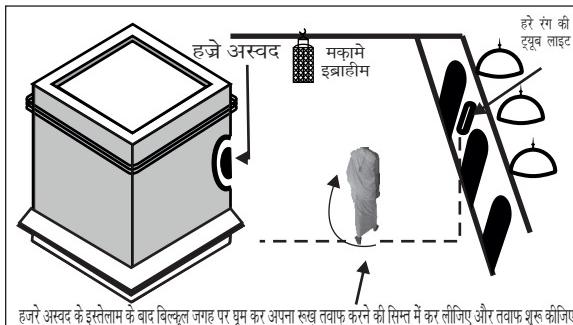


- नीयत करने के बाद आप दाहिनी तरफ इतना हटें के हजरे अस्वद और हरी ट्यूब लाइट के बिल्कुल दरम्यान सीध में आ जाएं। इस के बाद मुंदर्जाई तकबीर पढ़ते हुए कानों तक इस तरह हाथ उठाएं जिस तरह नमाज में उठाते हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

“بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ، أَللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكُفَّارِ الْفَاقِهِ وَمِنَ الْأَعْذَى فِي الْأَخْرَجِ”

तर्जुमा : शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से। अल्लाह सब से बड़ा है और सब तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है।



- हज की तमाम किताबों में हर तवाफ के लिए लंबी लंबी दुआएं लिखी हुई हैं। यह सब बुर्गानी दीन का तरीका है, नबी करीम (स.) से साबित नहीं है। हुजूर(स.) से सिर्फ़ निचे दी गई दुआएं साबित हैं।

9. रुक्ने यमानी पहुँचकर :

اللَّهُمَّ إِنِّي أَغُوذُ بِكَ مِنَ الْكُفَّارِ الْفَاقِهِ وَمِنَ الْأَعْذَى فِي الْأَخْرَجِ

“अल्लाहुम्मा इन्नी अ-ऊज़ु-विका मिनल कुपरी वल फा-क-ती व मवा-कफिल खिज़्याई फिद-दुन्या वल आखिराहा।”

तर्जुमा : ऐ अल्लाह मैं पनाह चाहता कुफ़ से और फाके से और दीन व आखिरत की रुसवाई से।

2. रुक्ने यमानी और हजरे अस्वद के दरम्यान:

رَبَّنَا إِنَّا فِي الدُّنْيَا حَسِنَةٌ وَفِي الْآخِرَةِ حَسِنَةٌ وَقَاتَابَ اللَّدِ (سورة الْقَرْآن)

“रब्बिना आतिना फिद दुन्या ह-स-नतंव व फिल आखि-रती ह-स-नतंव व किना अजाबन्नारा।”

तर्जुमा : ऐ हमारे रब! हमे दुनिया में भी भलाई अता फरमा और आखिरत में भी और हमको दोज़ख के अजाब से बचा लो। (सूरह बकराह)

3. तवाफ के दौरान

اللَّهُمَّ اسْتَلِكْ الرَّاسَةَ عِنْدَ الْمَوْتِ وَاعْفُ عَنِ الْحِسَابِ

“अल्लाहुम्मा इन्नी अस-अलु-कर्रा-हता इन्दल मौति वल अफ-वा इन्दल हिसाब।”

तर्जुमा : ऐ अल्लाह मैं तुझसे सवाल करता हूँ मौत के वक्त राहत और हिसाब के वक्त आफियत का।

- तवाफ करते वक्त किसी आयत या दुआ का पढ़ना फर्ज या वाजिब नहीं है। आप अपनी आसानी के लिए जो भी याद हो पढ़ सकते हैं। मगर जो भी दुआ पढ़े समझकर और बगैर किताब देखे पढ़ें। दुआ ही असर रखती है जो समझकर दिल से की जाए।

- तवाफ करते वक्त देखकर दुआ पढ़ने से दुसरों को तकलीफ होती है इसलिए सफरे हज से पहले दुआए याद करले फिर दौराने तवाफ पढ़े।

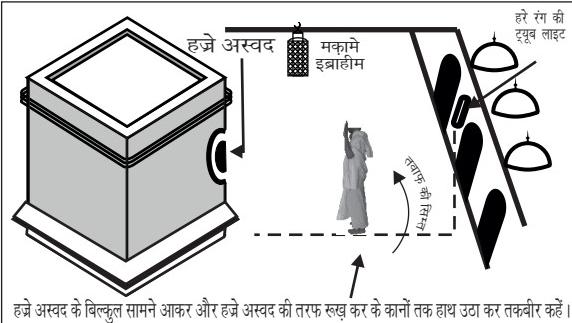
- हमेशा नबी करीम(स.) से साबित दुआओं को तर्जिह दें। क्योंकि सुन्नत पर अमल हमेशा सबसे ज्यादा नफ़ देता है।

- अगर आपके लिए किताबों में लिखी गई दुआएं याद करना और पढ़ना मुश्किल है, तो हर चक्कर के शुरू से यानि हजरे अस्वद से रुक्ने यमानी तक जो कुरआन शरीफ की आयतें याद हों तो उसे पढ़े या तीसरा कलमा पढ़े:

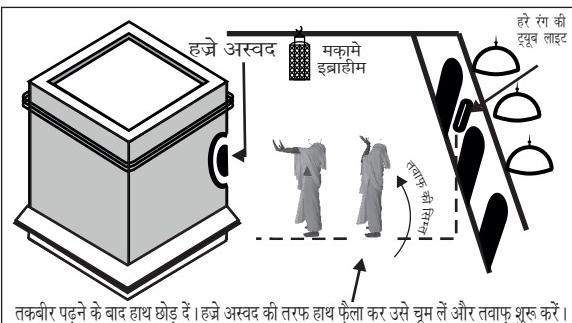
سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ، وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَلَا

أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْمُظْمِنِ.

“सुब्हानल्लाहि वल हस्तु लिल्लाहि, व ला इलाहा इल्लाहु वल्लाहु अकबर, वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्ला हिल अलिय्यल अजीम।”



- खाने काबा की तरफ सीना करके तवाफ करना मकरूह है और पीठ करके तवाफ करना मकरूह तहरीमी है। इन दोनों हालतों में आप जितनी दूरी तय करेंगे वह तवाफ में शुमार नहीं होगा इतनी दूरी आपको फिर से तय करना है इसलिए हजरे अस्वद के इस्तेलाम के बाद फौजीयों की तरह बिल्कुल जगह पर घुमकर अपना रुख तवाफ करने के सिम्म में कर लिजिए और तवाफ शुरू कीजिए। (सीना और चेहरा खाना-ए-काबा की तरफ करके एक कदम भी मत चलिए।)



- खाने काबा की तरफ सीना करके तवाफ करना मकरूह है और पीठ करके तवाफ करना मकरूह तहरीमी है। इन दोनों हालतों में आप जितनी दूरी तय करेंगे वह तवाफ में शुमार नहीं होगा इतनी दूरी आपको फिर से तय करना है इसलिए हजरे अस्वद के इस्तेलाम के बाद फौजीयों की तरह बिल्कुल जगह पर घुमकर अपना रुख तवाफ करने के सिम्म में कर लिजिए और तवाफ शुरू कीजिए। (सीना और चेहरा खाना-ए-काबा की तरफ करके एक कदम भी मत चलिए।)

तर्जुमा : अल्लाह तआला पाक हैं। सब तारीफें अल्लाह ही के लिए हैं अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं। अल्लाह तआला सब से बड़े हैं और गुनाहों से बचने की ताकत और इबादत की तरफ राशिब होने की कुव्वत अल्लाह ही की तरफ से मिलती है।

और रुकुने यमानी से हजेरे अस्वद तक अपनी मादरी ज़बान में दुआए माँगे। तवाफ करते हुए काबा शरीफ की तरफ मुँह करना मकरुह है और पीठ करना मकरुह तहरीमी है जो कि हराम के दर्जा में आता है। इस लिए तवाफ करते हुए सीधे चलें और निगाहें चलने की जगह पर रखें।

तवाफ का दुसरा चक्कर :

रुक्ने यमानी से दुआ पढ़ते हुए जब आप हजेरे अस्वद और हरी ट्यूब लाइट की सीधी में पहुँचे तो हजेरे अस्वद की तरफ अपना रुख और सीना करके इसी तरह इस्तेलाम कीजिए जैसे; पहले चक्कर के वक्त किया था यानि हथेलियों को हजेरे अस्वद की तरफ दिखाकर तकबीर कहते हुए चूम लें।

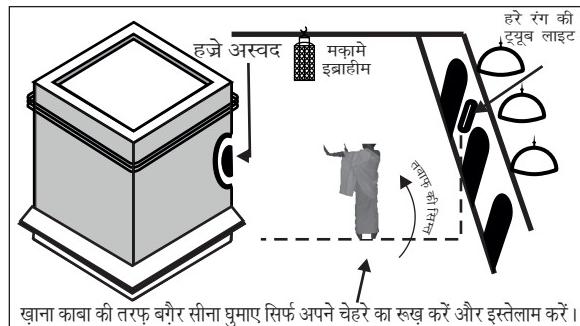
तकबीर :

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ، وَلِلَّهِ الْكَبُرُ، وَلِلَّهِ الْحَمْدُ

“बिस्मिल्लाहिं अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल हम्दा”

इसके बाद अपनी जगह पर ही बैगर एक भी कदम आगे बढ़ाए अपना रुख तवाफ की सिस्त करें और तवाफ शुरू करें।

पहले ज़माने में तवाफ करने वाले लोग बहुत कम थे इसलिए हर कोई हजेरे अस्वद की चूम सकता था। तवाफ के दरम्यान सिर्फ हजेरे अस्वद की चूमते वक्त सीना काबे की तरफ करने की इजाजत है, दौराने तवाफ नहीं। मगर अब ५० से १०० फिट दूर से हजेरे अस्वद का इस्तेलाम करना होता है और शबीद भीड़ में अंदाज़ा गलत हुआ तो हजेरे अस्वद की सीधी से कुछ आगे बढ़ने का भी अन्देशा होता है। इसलिए एहतीयात के लिए कुछ उल्मा कहते हैं कि अगर आप बैगर सीना धुमाएं सिर्फ अपना चेहरा हजेरे अस्वद की तरफ करके इस्तेलाम करे तो यह गलतियों से बचने का बेहतरीन तरीका होगा।



इस्तेलाम के बाद पहले की तरह रुकुन यमानी तक तीसरा कल्पा पढ़ीये और रुकुन यमानी से हजेरे अस्वद के दरम्यान दुआ। इसी तरह सातों चक्कर पूरे कीजिए।

हाथ में सात दानों वाली तस्बीह रखिये और हर चक्कर पर एक दाना कम करते रहिये और चक्करों का शुमार करते रहिये। सातवाँ चक्कर पूरा होने पर हजेरे अस्वद का तकबीर पढ़ते हुए इस्तेलाम कियें। (यह आप का आठवाँ इस्तेलाम था) और दाहीना कांधा जो अब तक खुला था ढाँप लें और मुकाम इब्राहीम के पीछे आजाएं। इस तरफ खाना ए काबा का दरवाज़ा भी है। फिर तवाफ करने वालों के लिए जगह छोड़ कर दो रक्खुत नमाज़ वाजिबुत्तवाफ की नीयत से पढ़ें। इतना अमल करने से आप का तवाफ पूरा हुआ और उम्रह का दुसरा फ़र्ज़ भी।

ज़मज़ूम का पानी पीना :

दो रक्खुत वाजिबुत्तवाफ नमाज़ पढ़कर आप खूब सैर होकर पानी पीयें। पानी खड़े होकर किल्वा रुख होकर बिस्मिल्लाह पढ़ कर पियें और पानी पीने के बाद ये दुआ पढ़ें।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا، وَرِزْقًا وَاسِعًا وَشَفَاءً مِنْ كُلِّ دَاءٍ.

“अल्लाहुम्मा इन्नी अस-अलुका इल्मन नाफिआ, व रिज्ज़क्व वासिअन व शिफा अम भिन कुलिन दा इन।”

तर्जुमा : ‘ऐ अल्लाह! मुझे नफा वाला इल्म दे, रिज्क में तुम्हारा और फराखी दे और हर बिमारी से शिफा अता फर्मा’

हज़रत जाविर (रज़ी.) से रिवायत है कि नबी करीम (स.) ने फरमाया। “आबे जम ज़म इस के लिए है जिस के लिए उस को पिया जाए।” (इन्हे माजा) यानि पीने वाला जिस नीयत से भी पीता है अल्लाह तआला उसकी वह नीयत पूरी फरमाते हैं।

ज़म ज़म का पानी पीने के बाद फिर हजेरे अस्वद और हरी ट्यूब लाइट के दरम्यान और सीधी में आ जाएं और एक बार फिर हजेरे अस्वद का तकबीर करते हुए इस्तेलाम कीजिये। यह आप का नवाँ इस्तेलाम था। इस्तेलाम के बाद आप हरी ट्यूब लाइट की तरफ और खाना ए काबा से दूर चलते चलते जाएं, इस तरह आप सफा पर पहुँच जाएंगे। तवाफ पुरा करने के बाद खाने काबा की तरफ पीठ करना जायज़ है उसमें कोई कराहियत नहीं है।



सफा और मरवा की सई :

सफा और मरवा पहले दो पहाड़ियाँ थीं। अब सिर्फ थोड़ी सी ऊँचाई है। हुक्मत ने सफा, मरवा और सई की सारी जगहों को हरम की इमारत में शामिल कर लिया है। पहले सफा और मरवा के बीच बाज़ार हुआ करता था और हाजी धूप और बाज़ार की भीड़ भाड़ में सई करते थे। अब सारी इमारत एयर कंडीशन है और फर्श पर संगे मरमर लगा हुआ है।

सफा पर पहुँच कर खाना काबा की तरफ रुख करके सई की नीयत इस तरह करें।

اللَّهُمَّ إِنِّي أُرْبِدُ السُّعْدَى بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ سَبَعَةً أَهْوَطْ لِرَجْهِكَ الْكَرِيمِ، فَيُسَرِّعُ لِي وَتَقْلِيلُهُ مِنِي

“अल्लाहुम्मा इन्नी उरीदुस सभ-या वैनस सफा वल मर्वता सब-अता अश्वतिल लि-वज-हि-कल करीम, फ-यस्सिर हु ली व तकब्ल हु मिन्नी।”

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! मैं सफा और मरवा के दरम्यान सात चक्करों से सई करना चाहता हूँ, महज़ तेरी जाते बुजुर्ग की रजा के लिए, बस मेरे लिए सई करना आसान फरमा और कुबूल फरमा।

नीयत करते वक्त हाथ दुआ की तरह उठाएं। नमाज़ की तकबीर की तरह न उठाएं।

- सफा, मरवा और सई की जगहें वह मुकाम हैं जहाँ दुआ ज़स्तर कुबूल होती है इस लिए सई के दौरान और सई पूरी कर के जब भी आप सफा और मरवा पर रुकें तो खूब दुआएं माँगें।

सफा और मरवा पर जब भी रुकें, तो तीन बार चौथा कल्पा और एक बार तीसरा कल्पा पढ़ें और सई के दौरान ज़्यादा चौथे कल्पे का विर्व करें। यह आसान इबादत का तरीका है। वैसे सफा मरवा की सातों सई की अलग अलग दुआएं हैं, जिन्हें आप हज की किताब से देख कर याद कर सकते हैं और पढ़ सकते हैं।

- हज़रत हाजरा (रज़ी.) सफा और मरवा के दरम्यान जो वादी थी वहाँ से दौड़ कर गुज़रती थीं क्योंकि हज़रत इस्माईल (अलै.) जो कि खाना काबा शरीफ के पास थे नज़रों से ओझल हो जाते थे। उनकी यह सुन्नत आज भी अदा

की जाती है। हुक्मन ने दो हरे रंग के सुतून और ट्युब लाईट निशान के तौर पर लगा दिये हैं इहें मिलीन अख्ज़रीन कहते हैं। इन के दरम्यान मर्दों को हल्के से दौड़ना होता है। औरतें अपनी रफ़तार से ही चलेंगी।

- सफा से चल कर मरवा तक पहुँचना यह एक का एक चक्कर हुआ। फिर मरवा से चल कर सफा तक पहुँचना यह दूसरी सई का दूसरा चक्कर हुआ। इस तरह आप सई के सात चक्कर पूरे करेंगे और सातवीं सई आप की मरवा पर खत्म होगी।

सई करने की जगह बहुत महदूद है इस लिए हज के खास दिनों में यहाँ लोगों का ज़बरदस्त हुज़म होता है और तवाफ़ से ज्यादा वक्त सई में लगता है। ऐसी हालत में अगर पहले मंज़िले या छत पर सई करें तो बहुत आसानी होगी।

- सई पूरी कर के दो रक्खत नमाज़ शुकाने की पढ़ना मुस्तहब है, वाजिब या ज़रूरी नहीं है।

दो रक्खत नमाज़ पढ़ कर मरवा की तरफ के दरवाजे से बाहर निकल जाएं। अब आप को उम्रह का आखिरी रुक्न अदा करना है, वह है सिर के बाल कतरवाना या मुंडवाना। मरवा के बाहर दर्जनों हज़ारों की दुकानें हैं। किनी भी दुकान में जाकर सिर मुंडवा दीजिए। औरतें अपने चौथाई सिर का अपनी ऊँगली के एक पौर बाल काटें। वह लोग जो उम्रह के सारे अरकान पूरे कर चूके हैं और सिर्फ बाल काटना बाकी हैं, वह अपने खुद के भी बाल काट सकते हैं और अपने जैसे दूसरे लोगों के भी बाल काट सकते हैं। जिन का सिर्फ बाल काटने का सिर्फ आखिरी रुक्न बाकी है, औरतों का सिर्फ अपने शौहर और महरम मर्द (जिन से किसी भी सूरत में निकाह नहीं हो सकता) से बाल कटवाना जाइज़ है। गैर महरम से बाल कटवाने पर गुनाह होगा।

मरवाह के नज़दीक हज़ारों की दुकान पर सिर मुंडवाने का हुज़म होता है। वक्त की किल्लत और लोगों की भीड़ की वजह से उनके पास बालों को देर तक नम करने का वक्त नहीं होता है और वह बड़ी तेजी से सिर मुंडते हैं। तेजी से काम करने की उनकी आदत सी हो गई है इसलिए सिर मुंडाते वक्त बहुत ही तकलीफ होती है। इसलिए जब आप अपने रिहायीश से हरम की तरफ जाएं तो रास्ते ही में हज़ारों की दुकान देख लीजिए और उम्रह कर के रिहायीश पर आते वक्त अपनी रिहायीश के हज़ारों के हज़ारों से सिर मुंडवाइये।

सिर मुंडाते ही एहराम की सारी पार्वदियाँ आप पर से खत्म हो गईं और अल्लम्पुलिल्लाह आप का उम्रह पूरा हुआ। अब घर जाकर नहा थोकर अपने रोज़ मर्ह के कपड़े पहन लीजिए।

- जो लोग मक्का शरीफ के रहने वाले हैं उन के लिए हरम में नफ़िल नमाज़ पढ़ना बेहतर इबादत है। मगर जो मक्का शरीफ से दूर रहते हैं उन के लिए हरम में नफ़िल तवाफ़, नफ़िल नमाज़ से ज्यादा अफ़्ज़ल है क्योंकि नफ़िल नमाज़ वह अपने वतन जाकर भी पढ़ सकते हैं मगर तवाफ़ का मौका और कहीं नहीं मिलेगा। इस लिए जब तक मक्का मुकर्रमा में है, ज्यादा से ज्यादा तवाफ़ करने की कोशिश करें और सारी नमाज़ हरम शरीफ में बाज़माअत अदा करें।
- हरम शरीफ की हुदूद ने १५ मुकामात दुआ की कबुलियत के हैं। इन मुकामात पर खुसूसी तौर पर देर तक दुआए माँगो।

मक्का शरीफ में १५ मुकामात ऐसे हैं जहाँ दुआएं ज़खर कुबूल होती हैं:

(१) मुताफ (जहाँ तवाफ किया जाता है), (२) मुल्तज़िम (खाना-ए-काबा की

चौखट), (३) मीज़ाबे रहमत के नीचे (खना-ए-काबा की छत का परनाला), (४) हतीम, (५) खाना-ए-काबा के अंदर, (६) ज़म ज़म के कुण्डे के करीब, (७) मकामे इब्राहीम के पीछे, (८) हज़े अस्वद के करीब, (९) सफा, (१०) मरवा, (११) सफा व मरवा के दरमियान सई की जगह खुसूसन दोनों सब्ज़ सुतूनों के दरमियान, (१२) अरफ़ात, (१३) मुज्जल्का, (१४) मिना में छोटे और दरमियानी शैतान के नज़दीक।



४० हदीसे याद करने की फ़ज़ीलत

हज़रत अबु दर्वा (रज़ी.) फरमाते हैं कि रसूल अल्लाह (स.) से पुछा गया: इल्म की कौनसी मिकदार और हज हैं जिस तक पहुँचने से आदमी “फ़की” यानी आलीम हो जाता है? (और आखिरत में उल्मा के जमरान में शुमार होने की सआदत हासिल कर लेता है) तो रसूल(स.) ने इशाद फरमाया: “जो शख्स मेरी उम्मत के नफे के लिए दीनी उम्र से मुतअल्लिक चालीस (४०) हदीसे याद करेगा, अल्लाह तआला (आखिरत में) इसको फकीह बनाकर उठाएगा, और मैं उसके लिए क्यामत के दिन शिकाअत करने वाला और उसकी नेकी व भलाई पर गवाही देने वाला हूँगा।” (बेहकी)

इस किताब में ४० से ज्यादा हदीसें हैं। हज के मालूमात के साथ अगर आप हदीसे भी गौर से पढ़ें और याद करतें तो इंशा अल्लाह क्यामत में आपका शुमार आलीमों में होगा।

पैदल चलने की फ़ज़ीलत

• हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ी.) ने बिमारी की हालत में अपनी औलाद के सामने बयान किया, मैंने रसूल अल्लाह (स.) से सुना हैं जिसने मक्का मुअज्ज़मा से पैदल हज किया उसके हर कदम पर ७०० नैकिया लिखी जाती हैं यहाँ तक की मक्का वापस आजाये और हर नेकी हरम की नेकी के बराबर होती हैं। इन्हे अब्बास (रज़ी.) से इनकी औलाद ने पूछा हरम की नेकी क्या है? फ़रमाया हर नेकी एक लाख नेकियों के बराबर हैं। (इने खज़िमा)

मतलब यह है की हाजी अपने मकान से तो सवारी कर जायें लेकिन मक्का पहुँचकर मिना और अरफ़ात पैदल जाएं और वापस मक्का मुअज्ज़मा भी पैदल ही आएं।

इस हिसाब से ७०० नैकियां, ७०० करोड़ नेकियों के बराबर होंगी और हर-हर कदम पर यह सवाब हैं तो सारे हज के सवाब का क्या अंदाज़ा हो सकता है।

• हज़रत इन्हें अब्बास (रज़ी.) फरमाते हैं कि अंबियाए किराम (अ.) का मामूल पैदल हज का था। (इन्हाफ़)

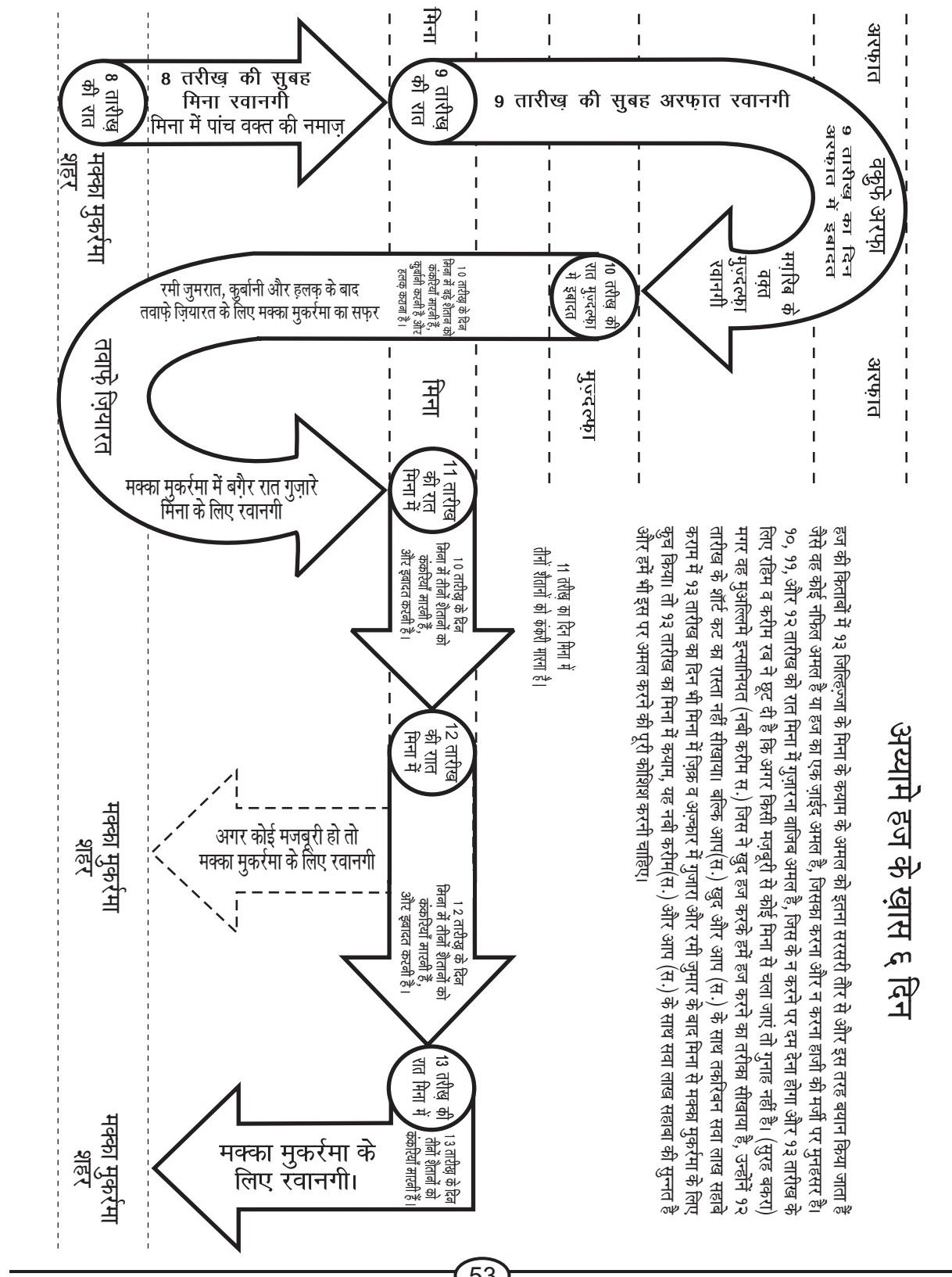
• हज़रत इन्हें अब्बास (रज़ी.) ने इन्तेकाल के वक्त अपनी औलाद को वसीयत फरमायी कि पैदल हज किया करों।

• नबी करीम (स.) उम्मत के लिए हमेशा आसान तरीका पसंद फरमाया है अपने आखिरी हज के मौके पर आप (स.) ने देखा कि एक बूढ़ा दो लोगों के सहारे पैदल चल रहा है। पूछने पर पता चला कि उसने पैदल हज करने की नज़र मानी है इसलिए मजबूरन चल रहा है। तो आप (स.) ने इसे सवार हो जाने के लिए कहा।

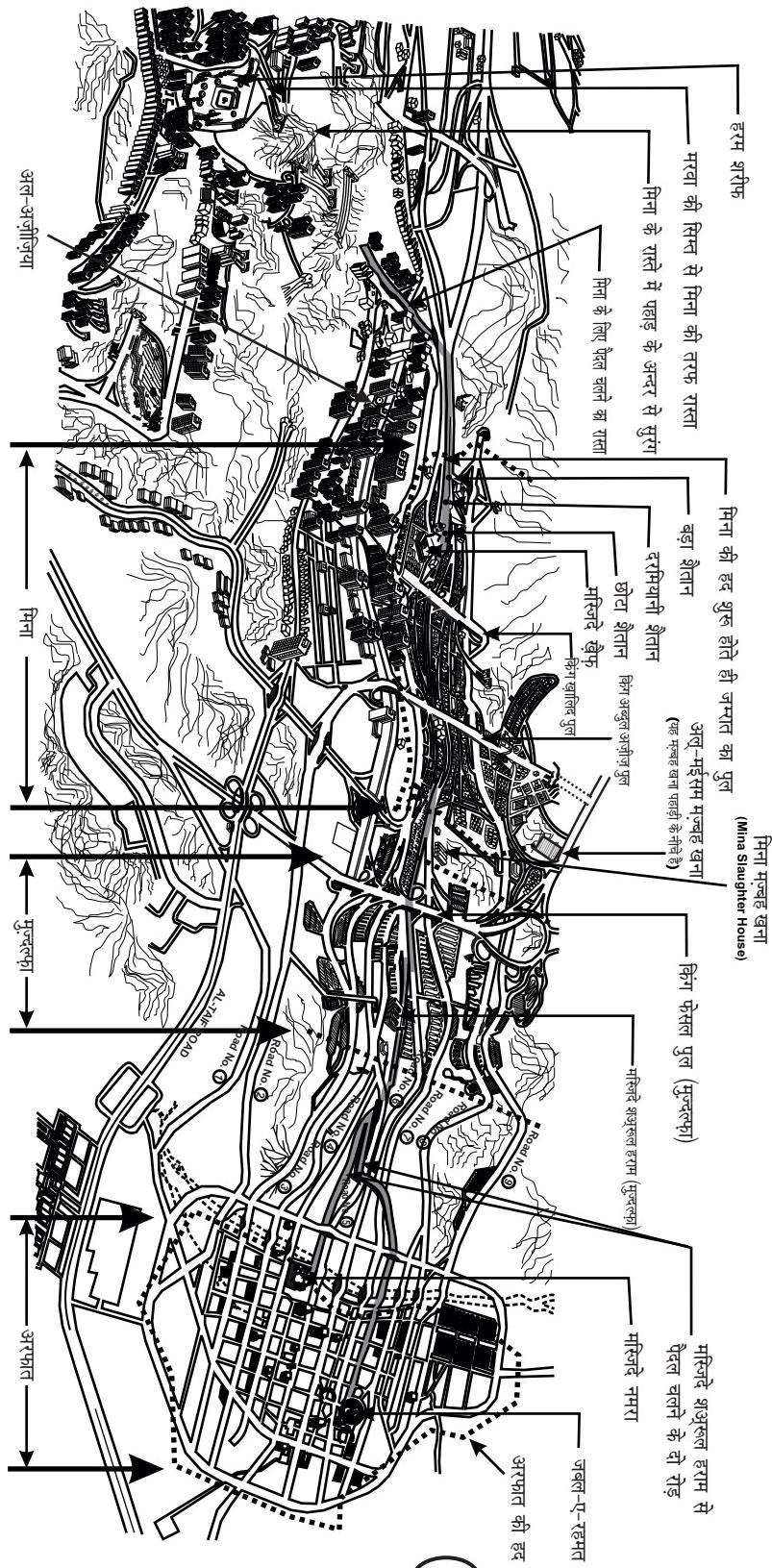
इस लिए पैदल चलना बहुत अफ़ज़ल हैं मगर अपनी कुक्त और इस्तकामत को देखते हुए मुश्किल उठाएं।

अय्यामे हज के खास ६ दिन

हज की निकायों में १३ जिल्हाज़ा के मिना के क्याम के अमल को इनाम सरणी तौर से और इस तरह बयान किया जाता है। जैसे वह कोई निर्भित अमल है या हज का एक ज़ाहिर अमल है, जिसका कानून और न करना हज़ी की मर्जी पर उन्नतरह है। १०, ११, और १२ तारीख की गत मिना में युग्रारा वाजिब अमल है, जिसके न करने पर स्थ देना होगा और १३ तारीख के लिए रहिम व करीम रब ने सूचूट दी है कि आर किसी मज़बूती से कोई मिना से चला जाएं तो गुनाह नहीं है। (मुख्य वक़र) मगर वह मुख्तिलमे इस्तानियत (नवी करीम स.) जिस ने छुट हज कार्फ़ा में हज करने का तरीका सीखवाया है, उन्हेंने १२ तारीख के शोर्ट कट का गराना नहीं सीखवाया। बहिक आप (स.) खुद और आप (स.) के साथ तकरिबन सवा लाख सहबा कराम में १२ तारीख का दिन भी मिना में ज़िक्र व अङ्करार में युग्रारा और रमी जुमार के बाद मिना से मक़बा मुकर्मा के लिए उक्त कुच किया गो १३ तारीख का मिना में कराम, वह नवी करीम (स.) और आप (स.) के साथ सवा लाख सहबा की मुन्त वै है। और हमें भी इस पर असल करने की पूरी कोशश करनी चाहिए।



हरम शरीफ, मिना, मुज्जल्फ़ा और अरफ़ात का क़रीबी नक्शा



हज कैसे करें?

८ ज़िल्हज्जा का दिन:-

- ८ ज़िल्हज्जा से १३ ज़िल्हज्जा हज के अव्याम हैं। इन्हीं दिनों में इस्लाम का अहम रुक्न हज मुकम्मल होता है।
- नया अंग्रेजी दिन या तारीख, रात के बारह बजे से शुरू होता है। मगर इस्लामी दिन या तारीख सूरज डूबते ही शुरू हो जाता है। इसलिए ८ ज़िल्हज्जा गुज़रकर जो शाम होगी वह ८ ज़िल्हज्जा की रात होगी। यानि हज के अव्याम शुरू हो जाएगी।
- ७ ज़िल्हज्जा के दिन ही अच्छी तरह साफ हो जाए। नाखून तराश लें। मुछे छोटी करवा लें। नापाक बाल साफ करले। सुन्नत के मुताबिक एहराम की नीयत से गुसल कर ले, तो अफजल है वरना वुजु भी कर सकते हैं। अगर पसीने में बदबू की शिकायत है, तो खुशबू लगा लें। मगर इतनी कम लगाएं कि एहराम की चादर पर इतर का दाग न लगें। इसके बाद एहराम की चादर पहन लें। (एहराम पहनने के पहले खुशबू लगाना सुन्नत है और बाद में मना है।)
- अगर आप के पास वक्त है, तो एहराम पहनकर हरम शरीफ तशरीफ ले जाए और अगर आप के लिए मुनक्किन हो तो तवाफे तहिया करें। (ये तवाफ फर्ज या वाजिब नहीं हैं। इस तवाफ में इस्तेबा और रमल भी नहीं हैं।) नफिल तवाफ करके सिर ढाक कर दो रक़अत वाजिबे तवाफ पढ़ें अगर भीड़ हो या कमजोरी कि वजह से नफिल तवाफ करने का इरादा न हो तो मकरू वक्त कि निगरानी करके अब्ल दो रकात तहियतुल मस्जिद की नीयत से पढ़ें, इसके बाद सिर खोलकर एहराम की (हज की) नीयत कर ले और तल्बिया पढ़ें।
- अगर आपके साथ कमज़ोर, ज़ईफ और औरते हैं और ९० वीं ज़िल्हज्जा “योमुल्हखर” के दिन तवाफे ज़ियारत में सफा-मरवा की सई करने में ज़्यादा भीड़ के ख्याल से पहले ही ८ ज़िल्हज्जा को सई कर लेना चाहते हैं, तो इस की भी इजाजत है। ऐसी सूरत में मगरिब की नमाज़ से पहले यानी ७ तारीख के दिन ही एहराम वैरा पहन लें, और हज की नीयत करलें। सूरज डूबने के बाद यानी ८ तारीख शुरू होते ही मगरिब की नमाज़ के बाद तवाफ और रमी कर लें। तवाफ के पहले इज्जेबा करें और तवाफ के पहले तीन चक्करों में रमल करें। फिर तवाफ के सातों चक्कर के बाद २ रक़अत तवाफ ए वाजिब अदा करें। इसके बाद सफा-मरवा की सई करें। सई के बाद बाल न तराशन न सिर मुंडायें। फिर अपनी आसानी के मुताबिक मिना रवाना हो जाएं। इस तरह पहले ही तवाफ और सई करने की वजह से हज के आधारी स्वक्तन तवाफे ज़ियारत में आपको तवाफ करना काफ़ी होगा, सई की ज़रूरत न होगी। (नोट: एहराम की चादर पहनने के पहले या बाद में और उम्ह और हज की नीयत करने के पहले या बाद में दो रक़अत नफिल नमाज़ पढ़ना या नफिल तवाफ करना वाजिब या फर्ज़ नहीं है।)
- सूरज निकलने के बाद मक्का मुकर्मा से मिना के लिए रवाना होना सुन्नत है। मगर लोगों की भीड़ कि वजह से मुअल्लिम हाजियों को रात ही से मिना ले जाना शुरू कर देते हैं। अगर वह आप को रात ही को ले जाना चाहें, तो आप को उनके साथ चले जाना चाहिए। इसमें आपके लिए आसानी है।
- अपने मुअल्लिम से आप बस की रवानगी का वक्त पता करले और वक्त

इजाजत दे, तो एहराम पहन कर हरम शरीफ जाए। अगर वक्त इजाजत न दे तो अपने कमरे में ही एहराम पहन कर दो रक़अत नफिल नमाज़ पढ़ कर हज कि नीयत करें और तल्बिया पढ़ ले। तल्बिया पढ़ते ही आप पर एहराम की तमाम पाबंदियाँ लाजिम हो जाएगी।

- नीयत इस तरह करें

اللَّهُمَّ إِنِّي أَرْبَدَتُكَ الْحَجَّ فَيَسِّرْهُ لِي وَتَقْبِلْهُ مِنِّي

“अल्लाहुम्मा इन्हीं उरीदुल हज्जा-फ-यस्सर-हू-ली व तकब्ल-हु मिन्नी।”

तर्जुमा: या अल्लाह में आप की रज़ा हासिल करने के लिए हज की नीयत कर रहा हूँ आप मेरे लिए आसान फरमाईए और कबुल फरमाईए। नीयत करके तलबीया पढ़।

لَبِيكَ اللَّهُمَّ لَبِيكَ

“लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक।”

हाजिर हूँ मेरे मौला आपके हुजूर हाजिर हूँ।

لَبِيكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبِيكَ

“लब्बैक ला शरी-क-ल-क-लब्बैक।”

मैं हाजिर हूँ आपका कोई शरीक नहीं, मैं हाजिर हूँ।

إِنَّ الْحَمْدُ وَالْعَمَّةُ لَكَ وَالْمُلْكُ

“इन्नल हम-दा वनिअ-मता लका वल मुल्का।”

सारी हम्द व सताईश के आपही सजावार है और सारी नेअमतें आप ही की हैं और सारी कायनात में हुक्मत भी आप की ही है।

لَا هُوَ كَفِيلٌ لَكَ

“ला शरीका लका।”..... आपका कोई शरीक नहीं।

तल्बिया एक बार पढ़ना फर्ज़ है और तीन बार पढ़ना सुन्नत है। तल्बिया पढ़ते ही आप मोहरीम हो गये और एहराम की सारी पाबंदिया आप पर लाजिम हो गई।

- मक्का मुकर्मा से मिना रवाना होने से पहले आप अपना मिना के लिए शिनाखी कार्ड, खेमे का पता और हो सके, तो मिना का नक्शा भी मुअल्लिम से ले ले, और मुअल्लिम की बस से मिना के लिए रवाना हो जाए।
- हज की कोई किताब साथ रखे और एक बार “एहराम की हालत में ममनु काम” को सरसरी नज़र से पढ़ें। मिना के क्याम का मक्कसद यह है कि बदा दुनिया से कटकर यक्सु होकर अल्लाह की इबादत में दिन रात गुजारें। मगर लोग इस मिना के क्याम और यक्सु का इस्तेमाल दुसरी तरह से करते हैं। इनका सारा वक्त बहस मुवाहिसा, गपशप और तफरीह में गुज़रता है। इसलिए आप किताबे, तसबीह वगैरा साथ रखें ताकि अल्लाह की इबादत और इल्म हासिल करने में आपके वक्त का बेहतरीन इस्तेमाल हो।
- मिना, अरफात में खाने का इंतेजाम मुअल्लीम की तरफ से होगा। इसलिए मिना में आपको जो रुपया खर्च करना है वह सिर्फ कुर्बानी और दिगर कही टैक्सी से जाना हुआ तो टैक्सी का खर्च इसके अलावा और कोई दूसरा बड़ा खर्च नहीं है। इसलिए बस इतनी रकम साथ ले लिजीए की ज़रूरत पूरी हो जाए। सारी रकम साथ ले कर मिना और अरफात का सफर करना सही नहीं है। बकिया रकम को मुअल्लिम या मदरसे सौलतिया में जमा करा कर रसीद ले ले।

- अगर आप ने आठ ज़िल्हिज्जा के पहले खुद कुर्बानगाह जाकर कुर्बानी के बारे में मालूमात हासिल कर ली है, तो फिर १० ज़िल्हिज्जा को खुद जानवर खरीद कर कुर्बानी कर सकते हैं और अगर आपने हज के अव्याप से पहले मालूमात हासिल नहीं की है, तो फिर मदरसा सौलतिया से या बँक के ज़रिए ही कुर्बानी कीजिए। वरना आप परेशान हो जाएंगे इसलिए मिना रवाना होने से पहले किसी एक जगह पर कुर्बानी का पैसा जमा करा दे।
- अगर मदरसे सौलतिया में आप पैसा जमा करते हैं, तो उनसे वक्त भी मालूम करले कि किस वक्त वह आपके लिए कुर्बानी करेंगे। उसी वक्त के मुताबिक फिर आपको सिर मुंडवाना आसान होगा। हनफी मसलक के मुताबिक अरकान की तरतीब लाज़मी है। यानि पहले रसी जुमार फिर कुर्बानी फिर कसर। अगर अरकान आगे पिछे हो गए तो दम लाज़िम होगा।
- मक्का मुकर्रमा से मिना को रवानगी के वक्त खाना खाने की प्लेट, ग्लास, एहराम के अतिरिक्त चादरे, शाल, हवाई तकिया, मिसवाक, आपकी दवाएं और ज़रूरी सामान साथ ले ले।
- मिना में खैमा में कालीन बिछा हुआ होगा। इसलिए बिस्तर की ज़खरत नहीं है। खाना मुअल्लिम की तरफ से होगा। टॉयलेट का अच्छा इंतेज़ाम है इसलिए बाल्टी वगैरह की ज़खरत नहीं। इसलिए आप जितना कम सामान ले कर सफर करेंगे उतनी आसानी में रहेंगे।
- मिना रवाना होने से पहले मक्का मुकर्रमा में अपना सारा कीमती सामान अपने बैग में लॉक कर दे, और बहुत कम और ज़रूरी सामान लेकर ही मिना को रवाना हो। अपना पहचान कार्ड और कलाई बंद और रेल की टिकट भी अपने साथ रखे।
- तल्खिया पढ़ते हुए मिना को रवाना हो। मिना में खैमे में पहुँचकर मर्दों को जमा करे और सलाह व मशिवरे से खैमा के दरम्यान का पर्दा गिराकर औरतों को एक तरफ कर दे और मर्द एक तरफ हो जाएं और हर एक आराम से सोने की जगह इन्साफ से आपस में बांट लें।
(२०१२ से मुअल्लिम पहले से ही मर्दों और औरतों के ठहरने का इंतेज़ाम अलग खैमे में करवाते हैं।)
- अगर खैमा दूर हो, तो मस्जिदे खैफ तक पाँचों नमाज़ों के लिए आना जाना मुमकिन नहीं होगा। इसलिए खैमे में दो इमाम और दो मुअज्जिन मुकर्रर कर ले। (दो इसलिए मुकर्रर करें कि अगर गैर हाजिर हो तो दुसरा नमाज़ पढ़ा सकते।)
- मिना में आठ ज़िल्हिज्जा के दिन, ज़ोहर, अस्र, मध्यरिव, इशा और ज़िल्हिज्जा कि फज्र पढ़ना सुन्नत है। आप मिना और मुज्दल्फा, मक्का मुकर्रमा शहर में दाखिल हैं। इसलिए हज के अव्याप को मिलाकर अगर किसी का कुल कायाम १५ दिनों से ज़्यादा होगा तो वह मुकामी होगा और उसे पूरी नमाज़े पढ़नी होगी इस तरह अब ज़्यादातर लोग मुकामी ही होते हैं। इसलिए ईमान को मुकामी हज़रात में से मुन्तखिब कर ले ताकि मुकामी हज़रात को नमाज़ पढ़ने में आसानी हो।
- अल्लाह तआला का हुक्म है: “और (कायामे मिना के) दिनों में (जो) गिनती के (चंद दिन ही है) अल्लाह को याद करो।” (सुरः बकरा)
इसलिए मिना के कायाम में पूरी कोशिश करें, कि आपका सारा वक्त अल्लाह की इबादत में गुज़रे। हज की नीयत करने से लेकर बड़े शैतान को कंकरी मारने तक हाजी के लिए सबसे अफ़ज़ल तसबीह तल्खिया कहना है इसलिए कसरत से इसका विर्द करो।
- हरम शरीफ की हुदूद में १५ मुकामात दुआ की कबूलियत के हैं। इसलिए इन मुकामात पर खुसूसी तौर पर देर तक दुआएं माँगो।

६ ज़िल्हिज्जा का दिन:-

- नवी करीम (स.) ने ६ ज़िल्हिज्जा को मिना में ही फज्र की नमाज़ अदा की थी और तुलूम्मे अफताब के बाद अरकान की तरफ कूच किया था। मगर मौजूदा जमाने में वैकिं ३० लाख से भी ज़्यादा लोग हज के अरकान एक साथ अदा करते हैं इसलिए लोगों की भीड़ की वज़ह से हज के अरकान अदा करते वक्त कई मसाईल पैदा हो जाते हैं और हाजियों को तकलीफों का सामना करना पड़ता है।

हाजियों की आसानी और भीड़ को कम करने के लिए और मुअल्लिम ६ ज़िल्हिज्जा की आरती को ही हाजियों की अरकान से जाते हैं।

किसी मुसलमान को तकलीफ देना हराम है। मुअल्लिम का रात ही में हाजियों की अरकान में ले जाने का मकसद सिर्फ हाजियों को इस तकलीफ से बचाना है। इसलिए सुन्नत के मुताबिक न होने के बावजूद भी ये जायज़ हैं और सुबह के पहले हाजियों का अरकान पहुँचने में कोई मुजाइका नहीं है। सुबह के वक्त अफरातफरी का माहोल होगा। सुबह को बस छूट गई तो फिर ११ या १२ बजे दुसरी बस मिलेगी और अगर नहीं मिली तो तनहा अरकान जाना, मुअल्लिम के खैमे से दूर रहने, खाने व पीने का खुद इंतज़ाम करना वौरा काफी मुश्किल काम है। इसलिए कोशिश करके मुअल्लिम के बस से ही अरकान पहुँचे। मुअल्लिम आपको अपने खैमे में ठहराएगा अरकान के खैमे मिना के खैमों की तरह बेहतरीन तो नहीं होते मगर ज़्यान पर एक दरी और सिर पर एक चादर ज़रूर होती है। यहाँ आप अपने खैमे के लोगों के साथ जमाअत बनाकर नमाज़ पढ़ सकते हैं, थोड़ी देर लेट कर आराम कर सकते हैं। दोपहर का खाना मुअल्लिम की तरफ से होगा इसलिए आप इत्मिनान से सिर्फ इबादत पर तवज्ज्ञ दे सकते हैं। खैम के करीब गुस्तुखाने और टॉयलेट भी ज़रूर होते हैं इसलिए आप को ज़रूरीयात से फारिग़ होने में आसानी होगी। वापसी के लिए बस भी खैमे के पास से ही रवाना होगी।

(२०१२ से सब मुअल्लिम के गाइड हाजियों को अपनी निगरानी में ट्रेन के जरिए मिना से अरकान और फिर अरकान से मुजदल्फा और मुज़दल्फा से मिना लाते हैं।)

वकुफे अरफाः-

- हुजुर (स.) ने फरमाया: “हज अरकान में ठहरने का नाम है।” (जामे तिरमीजी, हदीस टद्दू)। तो यही अरकान का कथाम और इसमें की जाने वाली इबादत ही असल हज है। अपने हज को मबरूर बनाने के लिए इन कीमती लम्हात को ग़नीमत जानिए और दिल की गहराईयों से अपने माबूद-ए-हकीकी की इबादत किजीए।
- नवी करीम (स.) ने ज़वाल के बाद खुत्ता दिया था और ज़ोहर और अस्र की नमाज़े एक अज़ान और दो तकबीरों से कसर करके अदा फरमाई थी और इसके बाद गुरुबे आफताब तक अल्लाह के हुजूर में खड़े होकर दुआ वज़ारी ने मसरूफ रहे।
हम में इनी ताकत नहीं कि नवी करीम (स.) की तरह इबादत कर सके मगर जितना मुमकिन हो नमाज़ के बाद किल्ला रुख होकर रो रो कर अपने रहीम व करीम रब से दुआएं और गिराया विज़ारी करनी चाहीए।
- हुजुर (स.), हज के अव्याप में मुसाफिर थे इसलिए आप कसर नमाज़ अदा करते थे। मस्जिदे हरम में आप मुकामी लोगों को पूरी नमाज़े पढ़ने की तलकीन करते मगर अरकान में जब मुकामी लोगोंने मुकामी होने के बावजूद कसर नमाज़ पढ़ी तो आपने मना नहीं किया। इसलिए मालिकी और हम्बली मसलक में अरफा के दिन सारी नमाजें कसर पढ़ने का हुक्म है। मगर हनफी मसलक में सिर्फ मुसाफिर ही कसर नमाज़ पढ़ सकते हैं। मुकामी को अपनी नमाज़ पूरी पढ़नी होगी। इसलिए अगर आप मस्जिद से दूर अपने खैमे में हैं और आप मुकामी हैं (कसर लाज़िम नहीं है) तो फिर हनफी वक्त के

मुताबीक ज़ोहर के वक्त अज्ञान देकर जमात से पूरी ज़ोहर पढ़े और अस्र के वक्त अज्ञान देकर जमात से पूरी अस्र पढ़े।

- वक्फ़े अरफ़ात का वक्त अरफ़ात के दिन जवाल-ए-अफ़ताब के वक्त से शुरू हो जाता है। नमाज से फारिग़ होकर वक्फ़-ए-अरफ़ा में मसरूफ हो जाए। मुक्किन हो सके तो किल्ला खखड़े होकर मगरिब तक वक्फ़ करें और अगर पूरे वक्त खखड़े रहना मुक्किन न हो, तो बैठना और लेटना भी जायज़ है।
- यह वक्त दुआओं, मनाजात, तौबा व इस्तग़फ़ार की कबूलियत का है। ऐसा मोहरम वक्त और ऐसी मुकद्दस जगह बस खुशनसीबी से मिलती है और पता नहीं जिंदगी में दोबारा इस बारासाहे रहमत में हाज़िरी का मौका नसीब होता है या नहीं। इसलिए हर लम्हा को ग़नीमत जानिए और हर दुआ को दिल से माँगिये।
- अल्लाह के पैगंबर मासूम होते हैं। अल्लाह तआला उन्हें सारे गुनाहों से बचाए रखता है। नबी करीम (स.) ने अरफ़ात में गुरुब-ए-अफ़ताब तक रो रोकर जो दुआएं माँगी, इसमें ज्यादा हिस्सा इस उम्मत-ए-मुस्लिमा के लिए था। इस शफीक नबी (स.) पर अगर हम दरुद न भेजे तो कैसी एहसान फरामोशी होगी इसलिए हूज़ूर (स.) पर बेर्इन्तिहा दरुद भेजें।
- हूज़ूर पाक (स.) और उनसे पहले जितने अभिया गुज़रें हैं उन्होंने चौथे कलमें को दुआ का दर्जा दिया और कसरत से इसी का विर्द किया। इसलिए वक्फ़-ए-अरफ़ा में सौ बार इस कलमें का ज़खर विर्द करें।
- अस्र का वक्त खास दुआ की कबूलियत का है। अल्लाह तआला आपसे आप की रग जान से भी ज्यादा करीब है और आपके दिल की धड़कन को सुन रहा है। अपने लिए दुआएं माँगें, अपनी औलाद के लिए, अपने वालिदेन के लिए, अपने रिश्तेदारों के लिए, अपने वतन के लिए और इस उम्मतें मुस्लिमा के लिए। हर एक के लिए निहायत आज़ीज़ी व इन्कसारी के साथ दुआएं माँगें।
- हमने मक्का मुकर्रमा से मिना और मिना से बस से सफर करने की सलाह इसलिए दी थी कि दोनों जगह खुद से मुअल्लिम का खैमा ढूँढ़ना एक मुश्किल काम है और अरफ़ात पैदल न जाने की एक वजह यह है कि दिन भर की इबादत के लिए आप तरौं ताज़ा रहें। मगर वक्फ़-ए-अरफ़ा के बाद आप बस से सफर करने में परेशानी होगी और पैदल चलने में सहुलत और आसानी है।
- अस्र का वक्त जो कि खास दुआ का वक्त है, बहुत सारे लोग इबादत तर्क करके बस की सवारी के लिए चल पड़ेंगे और कुछ ही देर में बस छतों के ऊपर तक भर जाएंगी। यह उनकी बड़ी महसूसी होगी।
- आप दुनिया से गाफिल हो कर अपनी इबादतों, दुआओं और गिरया विज़ारी में मसरूफ रहे और गुरुब-ए-अफ़ताब के बाद ही बगैर मबरीब पढ़े अरफ़ात से रवाना हो।

२०१२ से मुअल्लिम अपने हाजियों को अब देर रात तक अरफ़ात में ही ठहराए रहता है। फिर रात का खाना खिलाकर ट्रेन के जरिए मुज़दलफ़ा लाता है। उससे हाजियों को बहुत आसानी होती है।

मुज़दलफ़ा के लिए रवानगी:-

- पैदल चलने वाले और बसे सब गुरुब-ए-अफ़ताब के बाद एक साथ अरफ़ात से रवाना होंगे। मगर ईशा अल्लाह अगर आप पैदल चलते हैं तो ईशा के वक्त या इससे पहले मुज़दलफ़ा की हुदूद में दाखिल हो जायेंगे और बसे कभी बिल्ली ईशा तक अरफ़ात ही में खड़ी रह जाती हैं और मुज़दलफ़ा पहुँचते पहुँचते सुबह के चार बज जाते हैं।

इसलिए आप अपनी इबादत खत्म करके इतिमान से मुज़दलफ़ा की तरफ़

पैदल सफर किजिए। इस किताब में मक्का मुकर्रमा, मिना, मुज़दलफ़ा और अरफ़ात का नक्शा है, इसे भी समझ लीजिए, इसमें आप देखेंगे कि पैदल चलने के दो रास्ते अरफ़ात से निकल कर मुज़दलफ़ा में शास्त्रल हराम मस्जिद की तरफ जाते हैं। इस रास्ते पर मुज़दलफ़ा में बहुत भीड़ होती है। इसलिए हो सके तो रास्ता बदलकर मुज़दलफ़ा में दाखील हों।

(२०१२ के बाद अब ज्यादा आसानी मुअल्लिम के साथ ट्रेन में सफर करने में है। वह मुज़दलफ़ा में आपको ऐसी जगह ठहराएगा जहाँ पानी और बैतुलखला का इंतेज़ाम होगा।)

- अरफ़ात और मिना के दरम्यान मशरिक की जानिब एक ३ मील का मैदान है, इसको मुज़दलफ़ा कहते हैं। इस मैदान की आखिरी हट पर एक पहाड़ है जिसे मशअरूल हराम कहते हैं। इसी का ज़िक्र कुरआन शरीफ में आया है। नबी करीम (स.) मशरूल हराम के पास कायाम फरमाया था। मगर सारे मुज़दलफ़ा के मैदान में कहीं भी मौकूफ किया जा सकता है।
- मुज़दलफ़ा में रात के कायाम के लिए कोई खैमा वगैरह नहीं है। रात खुले आसमान के नीचे ज़मीन पर चार्टाई बिछाकर बैठकर गुजारी जाती है। वैसे तो जगह जगह मुज़दलफ़ा में टॉयलेट हैं, फिर भी आप जहाँ ठहरें, हो सकता है टॉयलेट वहाँ से दूर हो। इसलिए अरफ़ात के दिन अपने खाने पीने पर कंट्रोल रखें ताकि ज़खरियात से फारिग़ होने के लिए आप मुज़दलफ़ा में बैचैन न हो जाए। और कुछ ज्यादा पानी साथ रखें कि कभी टीले के पीछे ज़खरियात से फारिग़ होना हो तो पानी की किल्लत न हो।
- मुज़दलफ़ा अगर आप ईशा से पहले भी पहुँच जाएं तब भी ईशा कि नमाज़ के वक्त तक इंतजार करें और ईशा के वक्त एक अज्ञान और एक तकबीर से पहले मगरिब की फर्ज़ नमाज़ पढ़ें, फिर ईशा की फर्ज़ नमाज़ पढ़ें फिर मगरिब की सुन्नत व नफ़िल पढ़ें। फिर ईशा की सुन्नत, वितर और नफ़िल पढ़ें।
- मुज़दलफ़ा की यह रात हाजियों के लिए शब-ए-कदर से ज्यादा अफ़ज़ल है। अल्लाह तआला कुरुआन मजीद में फरमाता है:

فَإِذَا آتَيْتُمْ مِّنْ عَرَفَتٍ فَأَذْكُرُوا اللَّهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْعَرَامِ
وَإِذْكُرُوهُ كَمَا هَذِلْكُمْ وَإِنْ كُنْتُمْ قَبْلَهُ لِكُنْ الصَّالِحُونَ (١٩٨: ٣-٥)

“फ़-इज़ा अफ़ज़-तुम मिन अ-र-फ़ातिन फ़ज़ु कुरुल्लाहा इन्दल मशरिल हराम, वज़ कुरुहु कमा हदाकुम, व इन कुन्तुम मिन कब्ल्ही ल-मिन-ज्याल्लीन।”

“फिर जब अरफ़ात से चलो तो मशअरूल हराम (मुज़दलफ़ा) के पास ठहर कर अल्लाह को याद करों और इस तरह याद करों जिसकी हिदायत उसने तुम्हें दी है। वरना इससे पहले तो तुम लोग भटके हुए थे।”

(सुरे: बकरा-आयत १६८)

- नबी करीम (स.) उम्मत के लिए आसानी चाहते थे। इसलिए आपने इस रात आराम फरमाया था। इसलिए अगर आप थक कर चूर हों, तो घंटा दो घंटा आराम कर लें। फिर ताज़ा दम हो कर इबादत में मशगूल हो जाएं। सोने के लिए तो ज़िंदगी पड़ी है, यह रात खुशनसीबों को मयस्सर होती है, इसकि कदर करें। इसी रात के आखिरी पहर में जब नबी करीम(स.) ने जालिम और मज़लूम वाली अपनी दुआ दोहराइ जो अरफ़ात में कबूल होने से रह गई थी वह मुज़दलफ़ा में कबूल हो गई। तो यह मुकाम और यह रात दुआओं कि कबूलियत की रात है। यहाँ पर भी मालिक-ए-कायाम अपने एहत व आयात, अपने वालिदेन और उम्मते मुस्लिमा के लिए बखशिस और सेहत व करम की दुआए माँगें।
- सुबह सादिक के वक्त हुक्मत की जानिब से तौप का गोला दागा जाता है। ताकि सारे हाजी हज़रात फ़ज़्र की नमाज़ सही वक्त पर अदा कर सकें। तो

وَيَدْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ فِي آيَاتٍ مَعْلُومٍ عَلَى مَا رَزَقَهُمْ قُرْنَ
بِهِمْكُلُّ الْأَنْعَامِ فَكَفُلُوا مِنْهَا وَأَطْعُمُوا الْبَالِسَ الْفَقِيرَ
لِيُقْضُوا لِنَفْتَهُمْ وَلِيُبُوْذُونَ وَرَهُمْ وَلِيَكْتُبُوا بِالْبَيْتِ الْعَيْنِ
(١٩.٣٨: ت. ٤، ج. ١)

- आप गोले की आवाज़ के बाद अज्ञान दे कर जमात से फ़ज़र की नमाज़ अदा करें और तुलू अफताब से कुछ पहले तक दुआ व अज्ञार में मसरूफ रहें। सुबह सादिक के बाद थोड़ी देर मुज़दलफा में वकुफ करना वाजिब है।
- रमी जुमार के लिए मिना से भी कंकरी चुनी जा सकती है। मगर आप वहाँ हर जगह पक्की सड़क और क्रॉकिट का फर्श ही पाएंगे। इसलिए मुज़दलफा से ही ७० से ही कुछ ज्यादा कंकरीया चुन ले। अगर नापाकी का डर हो, तो थोंके से वरना धोना फर्ज़ या वाजिब नहीं है।
 - सूरज निकलने से कुछ पहले मिना कि तरफ कूच करें। आप मुज़दलफा के हुदूद में हैं तभी सूरज तुलू हो जाए तो कोई हर्ज़ नहीं है। मुज़दलफा से मिना में अपना खैमा तलाश करते वक्त अक्सर व बेश्तर लोग रस्ता भूल जाते हैं। इसलिए मिना में अपने खैमे के करीब सूतून का नंबर हमेशा याद रखें और अगर आप मिना में अपने खैमे के करीब से गुज़रने वाले पुल का नाम याद रखें, तो आपको अपना खैमा तलाश करने में बड़ी आसानी होगी। वरना सारे खैमे एक जैसे लगते हैं और लोग घंटों दर बदर भटकते रहते हैं।
 - मुज़दलफा और मिना के दरम्यान एक वादी है जिसे 'वादी-ए-महसर' (नया नाम 'वादी-ए-निहार') कहते हैं। इस जगह अस्वाब-ए-फिल पर आजाव नाज़िल हुआ था। हुकूमत ने इस जगह को खारदार तारों से घेर दिया है और पैदल चलने वाले हाजियों को दूर रखने के लिए पुलिस का पहरा भी होता है। इसलिए अगर इसके करीब से गुज़रना पड़ा तो बैड़कर गुज़रें।

९० ज़िल्हज्जा का दिन:-

- आज ईद उल अज़हा का दिन है। सारी दुनिया ईद की नमाज़ पढ़ेगी। मगर हाजी के लिए ईद की नमाज़ के बजाय कुछ और हुक्म है। आज उसे चार अहम काम करने हैं।
- १. रमी जमार, २. कुर्बानी, ३. हलक, ४. तवाफ-ए-ज़ियारत
पहले तीन काम तो वाजिब हैं जबके चौथा फर्ज़ है।

रमी जमार:-

- मुज़दलफा से रमी जमार के लिए सीधे न जाए क्योंकि अब सऊदी पुलिस वाले सामान लेकर रमी जमार के रास्ते पर ही चलने नहीं देते हैं। इसलिए पहले मिना में अपने खैमे पर आ जाए, ज़रूरियात से फारिग हो जाए, आराम कर लें। आज रमी जमार का अफ़ज़ल वक्त इशराक से ज़्याल तक है। इस अफ़ज़ल वक्त में रमी के लिए लोगों की बहुत भीड़ होती है। इसलिए सब्र से काम ले और ज़ोहर बाद जाएं सज़दी हुकूमत ने दुनिया के अलग अलग इलाकों के लोगों के लिए रमी का अलग अलग वक्त तय किया है। मुअल्लिम से पता करते कि हिन्दुस्तानी हाजियों के लिए कैनसा वक्त तय है। फिर इसी वक्त रमी करें। शदीद भीड़ का मसला २००६ इसवी तक था। इसके बाद सऊदी हुकूमत ने जमारत के मुकाम पर कई मन्ज़ुलात पुल बना दिए हैं कि अफ़ज़ल वक्त में सारे हाजी रमी कर सकें। इसलिए मिना में मुअल्लिम से हालात दरयाप्त कर लें और इसे सलाह मशिवरा के बाद ही जुमरात की तरफ जाएं।

आज के दिन सिर्फ जुमरा उक्बा (बड़े शैतान) को कंकरिया मारनी है। कंकरी मारने से पहले तल्खिया पढ़ना बंद कर दें। एक एक करके सात कंकरिया मारे और हर कंकरी मारते वक्त पढ़ें।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ رَغْمًا لِشَيْكَانِ وَرَضَى الرَّحْمَانِ

"बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर, रह-मशैतानि व रजियरमान।"

तर्जुरमा: मैं अल्लाह तआला के नाम से शुरू करता हूँ। अल्लाह सबसे बड़ा है। कंकरी मैं शैतान को ज़्लील करने और अल्लाह तआला को राज़ी करने के

लिए मारता हूँ।

- किसी भी जम्मह को चारों तरफ से कंकरी मारना जायज़ है। ९० ज़िलहिज्जा को नबी करीम (स.) ने जम्मह उक्बा को जब कंकरीया मारी थी, उस वक्त आपकी दाहनी जानिब मिना और बाएँ जानिब मक्का मुकर्मा (बेतुल्ला) था। इसलिए इस तरह कंकरी मारना सुन्नत है। (मुअल्लिमुल हज्जाज़: १७०)
- कंकरी मारने की जगह उस जमरात के सुतून या दीवार की बुनियाद है। इसलिए ऐसे कंकरीया मारे जैसे आप किसी हौज़ में कंकरीया फेंक रहें हैं। दीवार या सुतून को इतने ज़ोर से न मारे कि कंकरीया टकराकर अहाते से बाहर जा जिरें। अगर ऐसा हुआ तो वह गिनी नहीं जाएगी। इसके बदले आपको फिर एक कंकरी मारनी है वरना दम लाजिम होगा।

कुर्बानी:-

- अल्लाह तआला कुरुआन शरीफ में अरकाने हज़ के बारे में फरमाता है:
“व यज़-कुरुस्मल्लाहि फी अस्यामिम मअ-लूमातिन अला मा र-ज़-कहुम
मिम बही-मतिल अन्नाम, फ़कुलू मिन्हा व अत-इमुल बाइसल फ़कीर।
सुम्मल यकूजू त-फ-सहुम वल यूफू नुजू रहुम वल यत्तव्फू बिल बैतिल
अतीक।”
- “इन मुकर्ररा दिनों में (हज़ के अस्याम में) अल्लाह का नाम याद करें (अल्लाहु अक्बर कहते हुए कुर्बानी करें) इन चौपांहों पर जो पालतू हैं। फिर आप भी खाए और भूखे फ़कीरों को भी खिलाएं। फिर वह अपना मैल कुचैल दूर करें (सिर मुंडवाएं) और अपनी नज़रे पूरी करें और अल्लाह के करीब घर का तवाफ करें (तवाफ-ए-ज़ियारत करें)।” (सुरह अल हज़: २८-२६)
- अल्लाह तआला कुर्बानी के बारे में फरमाता है: “अल्लाह तआला को कुर्बानीयों का गोशत नहीं पहुँचता न उनका खून। बल्कि उसे तुम्हारे दिल की परहेज़गारी पहुँचती है” (सुरह अल हज़ ३७)
- नबी करीम (स.) ने तुलुओं आफताब के बाद रमी जमार किया था। उसके बाद खुत्बा दिया था। इसके बाद अकेले सात ऊंटों को कुर्बान किया था। और हज़रत अली (रज़ी.) के साथ ५६ ऊंट। इसके बाद हज़रत अली (रज़ी.) ने अकेले ३७ ऊंट कुर्बान किए, (इस तरह कुल ९०० ऊंट कुर्बान किए) कुर्बानी के बाद सिर मुंडवाया था। फिर ज़्याल से पहले मक्का मुकर्मा में तवाफे ज़ियारत के लिए रवाना हो गए और तवाफे ज़ियारत अदा करके रात गुज़राने फिर मिना वापस आ गए तो अरकान अदा करने का यह सुन्नत तरीका है।
- कुर्बानी के अरकान, यह इस अज़ीम कुर्बानी की यादि है, जो हज़रत इब्राहिम (अ.स.) ने अपने बेटे की अल्लाह तआला की बारगाह में पेश करके दी थी।
- इत्तेहाई खुत्सुक के साथ कुर्बानगाह जाकर खुद कुर्बानी करें। या बँक या मदरसे सौलतिया के ज़रीए कुर्बानी करें। फिर दिल में यह मज़बूत इरादा रखें कि बकिया ज़िंदगी में भी इसी तरह अल्लाह की राह में अपनी दैत्यत, वक्त और नफ्स की, खुशी की कुर्बानी देते रहेंगे।

हलक (सिर मुंडवाना) और तवाफे ज़ियारत:-

- अब दो अरकान बचे हैं, हलक करवाना और तवाफे ज़ियारत।
- मस्जिदे हराम में अगर बाहर के सहन को भी शामिल कर ले तो दस लाख लोग नमाज़ पढ़ सकते हैं।

- मुताफ में एक ही वक्त में अंदाजन २० से २५ हज़ार लोग तवाफ कर सकते हैं।
- जब लोगों कि भीड़ कम हो, तो एक तवाफ में आधा धंटे से ज्यादा वक्त लगता है और शरीद भीड़ के वक्त एक धंटे से ज्यादा वक्त दरकार है।
- अगर १० लाख हाजी जो मस्जिदे हराम में मौजूद हैं। एक के बाद एक (२५ हज़ार के गुप में) तवाफ करना चाहे तो सारे नमाजियों को तवाफे ज़ियारत करने के लिए तकरीबन २० धंटों से ज्यादा वक्त लगेगा।
- अगर हम मुकामी लोगों को शामिल किया जाए, तो हर साल तकरीबन ३५ से ४० लाख लोग हज करते हैं। अगर एक के बाद एक (२५ हज़ार के गुप में) यह सब हाजी तवाफे ज़ियारत करे तो कम अज़ २ दिन दरकार है। इसलिए हाजियों की तादाद ज्यादा होने की वजह से सुन्नत तरीके से और अफ़ज़ल वक्त पर अरकान अदा करना अब मुस्किन ही नहीं रहा। नवी करीम (स.) ने आसान तरीका (अगर ग़लत न हो तो) परसंद फरमाया। इसलिए खुद भी आसान रास्ता इख्तेयार कीजिए और दुसरों के लिए आसानी पैदा कीजिए।
- मेरी बहन कनीज़ फातमा ने सन २००६ इस्वी में हज किया था। ९० ज़िल्हज्जा के अस्त्र के वक्त जब वह मस्जिदे हराम पहुँची, तो पुलिस ने सारे मस्जिदे हराम के अंतराफे धेरा डाल रखा था, और किसी को अंदर दाखिल होने नहीं दिया। क्योंकि मस्जिदे हराम हाजियों से भरी हुई थी और अंदर मज़ीद हाजियों कि गुंजाइश नहीं थी। वह ईशा तक इंतज़ार करती रही और मज़बूरन खाली हाथ मिना लौट गई और दुसरे दिन ९९ ज़िल्हज्जा तवाफे ज़ियारत किया।
- अगर पुलिस आपको न भी रोके और आप किसी तरह अंदर दाखिल हो जाए तो भी इतनी शरीद भीड़ में आप को और दुसरे हाजियों को सख्त मुश्किलात का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए उल्मा और वह लोग जो बार बार हज कर चुके हैं, यह मश्विरा देते हैं कि आप ९९ ज़िल्हज्जा को मग़रिब मिना में पढ़कर मक्का मुकर्हर्मा के लिए पैदल रवाना हों, तो ईशा की जमाअत आपको मस्जिदे हराम में मिल जाएगी। बाहर सहन में नमाज़ पढ़े नमाज़ के बाद खाना खा लो। कुछ देर आराम करके फिर तवाफ़-ए-ज़ियारत और सई करे और फिर इत्मिनान से रात ही को मिना लौट जाएं। इस तरह अरकान अदा करने से काफी आसानी होगी और अरकान भी अच्छी तरह अदा होगे।
- अगर आप सौलतिया मदरसे के ज़रिए कुर्बानी करेंगे तो हाजियों कि तादात ज्यादा होने की वजह से वह आपको कुर्बानी का वक्त, १० तारीख की शाम या ९९ तारीख का कोई वक्त बताएंगे। आप उस वक्त तक इंतज़ार कीजिए और फिर इस से भी ९ या २ धंटा देरी से हलक करवा ले (मुँड़वा ले)। एहराम उत्तराकर रोजमर्राह के कपड़े पहन लें। वक्त पर नमाज़ पढ़े और अपनी आसानी के मुताबिक तवाफे ज़ियारत के लिए रवाना हो। तो कुर्बानी के वक्त के मुताबिक भी अगर आप हलक करेंगे, तो तवाफे ज़ियारत के लिए आप को ९९ ज़िल्हज्जा तक इंतज़ार करना ही होगा। इसलिए सब्र के साथ एहराम पहने रहे और सुकून व इत्मिनान और सहूलत के साथ अरकान अदा करें।
- तवाफे ज़ियारत का अफ़ज़ल वक्त तो १० वीं ज़िल्हज्जा है। मगर इसे १२ वीं तारीख के आफताब गुरुब होने से पहले तक कर सकते हैं। अगर १२ वीं तारीख गुज़र गई और तवाफे ज़ियारत नहीं किया तो ताखीर की वजह से दम वज़िब होगा, मगर फर्ज़ अदा हो जाएगा। चूँकि तवाफे ज़ियारत हज का एक फर्ज़ रुक्न है। इसलिए जब तक तवाफे ज़ियारत न कर ले हज पूरा न होगा। एहराम की एक पांचवीं आप पर आयद रहेगी यानी आप अपनी बीवी से अज़्जवाजी तालुकात कायम नहीं कर सकते। १२ तारीख गुज़र गई तो दम

लाज़िम होगा मगर आप फिर उसे कभी भी कर सकते हैं। जैसे नफिल नमाज़ पढ़ने की नीयत करने के बाद अगर आप नीयत तोड़ दें, तो फिर उसका अदा करना आप पर वज़िब हो जाता है इसी तरह हज की नीयत करके अगर आप उसे अधूरा छोड़ दें तो उसका दौहराना आप पर फर्ज़ ही रहेगा। इसलिए अगर आप का तवाफे ज़ियारत छूट गया तो ज़िदीयी भर इसका अदा करने का फर्ज़ आप पर बाकि रहेगा और अज़्जवाजी ज़िदीयी पर पांचवीं भी। इस तवाफ के पहले तीन चक्करों में रमल भी है। एहराम की चादरे जिस पर न होने की वज़ह से इस्तबा नहीं होती।

अगर आप ने ट ज़िल्हज्जा को एहराम बाँधने के बाद नफिल तवाफ किया है जिस में रमल इज्तबा और सई कर ली है तो फिर तवाफे ज़ियारत में दोबारा सई करने की ज़रूरत नहीं है और आपका तवाफ भी बगैर रमल होगा। क्योंकि जिस तवाफ के बाद सई होती है रमल इसी में किया जाता है।

शैतान को कंकरी मारना, कुर्बानी करना और सिर मुँडवाना यह तरतीब सुन्नत है और ज़सरी है। अगर यह रुक्न आगे पीछे हो गए तो हनफी मसलक के मुताबिक दम लाज़िम होगा।

हम्बली मसलक (सऊदी उल्मा) और इमाम ग़ज़ाली(रह.) के मुताबीक अगर मज़बूरी में अरकान आगे पीछे हो गए तो दम लाज़िम नहीं होगा।

(अह्या-उल-उल्म उर्दु ज़िल्द अब्वल सफा ४०८)

अगर किसी वजह से तवाफे ज़ियारत के बाद सई १२ तारीख के गुरुबे आफताब तक जो के अफ़ज़ल वक्त है न कर सके तो ज़िल्हज्जा महीने के आग्विर तक कर सकते हैं। ताखैर (देरी) की वजह से दम लाज़िम ना होगा। मगर शर्त यह है कि तवाफ और सई के दरमियान हज का रुक्न अदा ना किया जाए। अगर कोई दूसरा रुक्न अदा करेगा तो सई से पहले एक तवाफ करना वाजिब होगा।

११ और १२ ज़िल्हज्जा:-

तवाफे ज़ियारत में आप को चाहे जितना वक्त लग जाए मगर रात गुज़ारने आप को मिना ही लौटकर आना है। मक्का शरीफ में अपनी कथामगाह पर आप रात नहीं गुज़ार सकते।

- रात मिना में गुज़ारे, पाँचों वक्त नमाजे पढ़े।
- यह अस्याम तशरीक के दिन है, इस में कसरत से तकबीर कहना मसनून है।
- जुमारत को कंकरीया मारना भी अल्लाह का ज़िक्र करना है। ज़िवाल के बाद कक्करीया मारना अफ़ज़ल है मगर सहूलत के मुताबिक लोगों की भीड़ का ख्याल रखकर रमी जुधार के लिए जाए। पहले छोटे शैतान फिर दरम्यानी शैतान और फिर बड़े शैतान को कंकरी मारे। छोटे और दरम्यानी शैतान पर रमी के बाद नबी करीम (स.) ने किल्ला रुख हो कर इतनी देर तक दुआएं माँगी थी कि कोई उतने देर में सुरों बकरा (सवा दो पारा) पढ़ सकता है। इसी सुन्नत के मुताबिक आप भी दुआओं का एहतेमाम करें। बड़े शैतान पर रमी के बाद दुआएं न माँगें।
- हज की इबादत, इब्राहीम (अ.स) के ज़माने से है। आप इन्सानों के अलावा हजारों वलियों और सेंकड़ों पैग़म्बरों ने हज किया है। हर एक ने मिना में कथाम किया होगा और हर एक ने मस्जिदे खैफ में नमाज़ पढ़ी होगी। मिना के कथाम में वक्त फारिग करके इस मुबारक मस्जिद में नमाज़ पढ़ कर आप भी रुहानी फैज़ हासिल करने की कोशिश करें।

१३ ज़िल्हज्जा:-

- जुमा के दिन मस्जिदों को देखकर बड़ी खुशी होती है। मगर यह खुशी आरज़ी होती है। जहाँ इमाम ने सलाम फेरा कि लोग दुम दबाकर ऐसा भागते

(बाकी पेज ६६ पर)

हज्जे बदल

हज़रत इब्ने अब्बास रजि से रिवायत है कि एक औरत ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह (صلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) अल्लाह तआला ने अपने बन्दों पर हज फर्ज़ किया मेरे बाप पर ऐसे ज़माने में फर्ज़ हुआ कि वह बिल्कुल बूढ़े हो गये, सवारी पर ठहर नहीं सकते तो मैं उनकी तरफ से हज कर सकती हूँ, आप (صلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) ने कर्माया, “हा” (बुखारी, मुस्लिम)

हज़रत लुकीत बिन आमिर (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) से रिवायत है कि वह नवी करीम (صلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) की खिदमत में हाजिर हुए और अर्ज़ किया कि “या रसूलुल्लाह” मेरे बाप बहुत बूढ़े हैं, ना हज सकते हैं ना उम्रह और ना चलने और सवार हाने की कुव्वत है। आप (صلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) ने कर्माया तुम अपने बाप की तरफ से हज व उम्रह कर लो (अबु वाउद, तिर्मीज़ी)

हजे बदल के माझने हैं किसी दुसरे की तरफ से नफिले हज या उम्रह करने के लिए कोई शर्त नहीं है। सिर्फ हज करने वाले में अहलियत यानि इस्लाम और अङ्गत व तमीज़ का होना काफ़ी है। अलबत्ता किसी दुसरे शख्स से फर्ज़ हजे बदल करने के लिए (२०) शर्तें हैं।

इन शराइत को जानने से पहले यह याद रखें कि हज करने वाले को आमिर (हुक्म करने वाला) कहते हैं और जो दुसरे के हुक्म से हजे बदल करता है उसको मामूर (हुक्म के मुताबिक़ काम करने वाला) कहते हैं।

२० शर्तें ये हैं:-

- १) जो शख्स अपना हज कराये उस पर हज फर्ज़ हो।
- २) हज फर्ज़ होने के बाद खुद हज करने से आजिज़ या मजबूर हो गया हो।
- ३) मरते वक्त तक आजिज़ी रहा हो।
- ४) आमिर और मामूर दोनों मुसलमान हों।
- ५) आमिर और मामूर दोनों आकिल हों।
- ६) मामूर को इतनी तमीज़ हो कि हज के अफ़आल समझता हो। अगर औरत मर्द की तरफ से हज बदल करे तो जायज़ है मगर मर्द से हज कराना अफ़ज़ल है और अपना हज ऐसे शख्स से हज कराना अफ़ज़ल है जो आलिम बा अ़मल हो, मसाइल से वाकिफ हो और अपना हज अदा कर चुका हो।
- ७) अगर अपनी ज़िन्दगी में हजे बदल कराये तो दूसरे शख्स को अपनी तरफ से हज करने का हुक्म देना और अगर वसीयत कर के मर गया तो वारिस का हुक्म देना शर्त है। अगर मय्यत ने वसीयत नहीं की तेकिन वारिस या किसी अजनबी शख्स ने उस की तरफ से खुद हज किया या किसी दूसरे शख्स से करवाया तो इन्ष्सस अल्लाह तआला उस मय्यत का फर्ज़ अदा हो जायेगा और उस सूरत में आगे आने वाली कोई शर्त लाजिम नहीं होगी।
- ८) सफ़र में सारा माल या उस का अकसर हिस्सा हज करने वाले के माल से ख़र्च होना। अगर मामूर ने अपने रूपये से हज किया और बाद में आमिर के माल से वसूल कर लिया तो आमिर का हज अदा हो जायेगा। वर्ता नहीं होगा।
- ९) एहराम बांधते वक्त या हज के अफ़आल शुरू करने से पहले आमिर की तरफ से हज की नीत करना।
- १०) सिर्फ एक शख्स की तरफ से हज का एहराम बांधना।
- ११) सिर्फ एक एहराम बांधना।
- १२) अगर आमिर ने किसी मुईन शख्स का नाम लिया हो तो उसी शख्स का आमिर की तरफ से हज करना और अगर इख़िलयार दिया हो कि किसी से

भी करवाया जाये, तो किसी भी जा सकता है और आमिर के लिए भी यही मुनासिब है।

१३) मामूर मुईन का मुतअध्यन होना यानि अगर आमिर दल यह कहा हो कि फलां शख्स ही हज करे, कोई दूसरे से कराना जाइज़ ना होगा और अगर दूसरे की नफी नहीं की तो जाइज़ हो जायेगा, लेकिन जिसको नामज़द किया गया है अगर उस ने इंकार कर दिया और वारिस दल किसी दूसरे से कराया तो जाइज़ है।

१४) अगर तिहाई तर कि ख़र्च के लिए काफ़ी हो तो आमिर के वतन से हज कराना वर्ता मीकात से पहले गुंजाइश के मुताबिक जिस जगह से हो सके अदा करवाया जाये।

१५) अगर तिहाई माल में गुंजाइश हो तो सवारी पर हज करना।

१६) हज या उम्रह जिस चीज़ का हुक्म किया है उसी के लिए सफ़र करना। अगर हज का हुक्म किया था लेकिन मामूर ने अबल उम्रह किया फिर मीकात पर लौट कर उसी साल या आइंदा साल हज का अहराम बांधा तो आमिर का हज अदा ना होगा।

१७) आमिर की मीकात से एहराम बांधना अगर मामूर ने मीकात से उम्रह का उहराम बांधना और मक्का शरीफ जाकर हज का उहराम बांधा और हज कर लिया तो आमिर का हज अदा ना होगा। इस से यह मालूम हुआ कि मक्का या मदीना मुनब्वरा में रहने वालों से हज बदल कराना गलत है। इस सूरत में हज करने वाले का अपना हज अदा होगा। जिस की तरफ से कराया गया है उस का नहीं होगा, लेकिन नफली हजे बदल किसी से भी कराया जा सकता है।

१८) हज का फ़ासिद ना होना।

१९) हज का फैत ना होना।

२०) आमिर के हुक्म की मुख्यालिफ़ ना करना। अगर आमिर ने इफ़राद यानि सिर्फ हज का हुक्म किया था और मामूर ने तमत्तओं या किरान कर लिया तो मुख्यालिफ़ हो और आमिर को रूपये वापस करना होगा और वह हज मामूर का अपना होगा। यहाँ तीन बातें याद रखें।

(अ) हजे बदल करने कसे हजे अफ़राद करना चाहिए।

(ब) हजे किरान करना, आमिर की इजाज़त से जाइज़ है, लेकिन दमे किरान अपने पास से देना होगा। आमिर के रूपये से बिला इजाज़त देना जाइज़ नहीं है।

(क) हज तमत्तओं करना, हजे बदल में तमत्तओं करने का मस्ला जरा पेचीदा है और उस की वजह यह है कि तमत्तओं में हज का एहराम आमिर की मीकात ये नहीं होता बल्कि मक्का मुकर्मा में द ज़िल्हज्जा को बांधा जाता है इस लिए मुहूतात उल्मा ने हज में तमत्तओं की मुमानिज़त की है, बल्कि यहाँ तक लिया है कि अगर आमिर अपनी तरफ से हज तमत्तओं की इजाज़त दे देता भी आमिर का हज नहीं होगा, जैसा कि मुअल्लिमुहुज्जाज में उल्मा तहकीक़ से मनकूल है और इसी को राजेह करार दिया है।

बाकी दूसरी कुतुबे फिक़ह की इबादत से जो मालूम होता है वह यह है कि आमिर की इजाज़त से हज तमत्तओं करने से आमिर की तरफ से हज हो जायेगा। इस इख़िलाफ़ का हल यह है कि आमिर अगर खुद ज़िन्दा है, मआजूरी की बिना पर हज नहीं कर सकता, और हज तमत्तओं की इजाज़त देता है तो ऐसी सूरत में आमिर की इजाज़त से हज तमत्तओं हो जायेगा। इस तरह जिस पर हज फर्ज़ हुआ और मरते वक्त वसीयत की, कि मेरी तरफ से हज तमत्तओं करवाया जाये, तो ऐसी हज तमत्तओं करने से

आमिर की जानिव से हज हो जायेगा। लेकिन मरने वाले ने अगर मुतलक हज की वसीयत की है और वरसा ने हज बदल करने वाले को हजे तमत्तओं की इजाजत दे दी तो ऐसी सूरत में वरसा इजाजत से तमत्तओं करना दुर्लस्त नहीं है। क्योंकि मध्यत का हज मीकार्ती होना ज़रूरी है, और जो हज तमत्तओं करेगा उस का हज, हज मक्का हो जायेगा अगर वरसा की इजाजत से तमत्तओं करेगा तो मामूर पर रुपये वापस करना लाजिम नहीं है लेकिन आमिर का हज अदाना होगा। हज बदल करने वालों को इस मुआमले में खास एहतियात करनी चाहिए। एहराम की तवालत से आमिर का हज खराब ना करना चाहिए, इस मुआमले में अक्सर लोग हजे बदल के मसाइल से नावाकिफ होने की वजह से ग़लती कर बैठते हैं।

नोट:-

- 9) जिस पर खुद हज फर्ज़ नहीं है और उस ने पहले हज रही किया है उस को हजे बदल के लिए जाना इमाम अबू हनीफा (रह.) के नज़दीक जाइज़ है, लेकिन बेहतर यह है कि हजे बदल के लिए उस को भेजा जाये जिस ने अपना हज कर लिया है।
- 2) जिस पर हज फर्ज़ हो गया है और अभी अदा नहीं किया है, उस को हजे बदल के लिए जाना जाइज़ नहीं है।
- 3) वाल्डैन में से कोई फौत हो जाये और उन के ज़िम्मे हज फर्ज़ हुआ और अदाएँगी की वसीयत ना की हो तो बेटे के लिए मुस्तहब है कि वाल्डैन की तरफ से बतोर एहसान हज अदा कराये था खुद उन की तरफ से हज कर ले। ऐसी हालत में शर्त नम्बर ७, के बाद वाली शराइत आइद नहीं होंगी और अगर खुद या किसी देसरे शाख़ से मक्का मुकर्मा ही से हज कराये तो भी इंशा अल्लाह तआला मध्यत का फर्ज़ हज अदा हो जायेगा।
- 4) वाल्डैन में से कोई ऐसी हालत में फौत हो जाये कि उन पर हज फर्ज़ नहीं हुआ था और बेटे साहिबे हैसियत हो जायें तो वाल्डैन की तरफ से फर्ज़ वाला हजे बदल तो नहीं करवाया जायेगा, इस लिए कि उन पर हज फर्ज़ नहीं हुआ था, लेकिन फिर भी बेटे को चाहिए कि वाल्डैन की तरफ से बाराए सवाब हज करवा दे या खुद उन की तरफ से हज कर ले। ऐसी हालत में भी शर्त नम्बर ७, के बाद वाली शर्तें आइद नहीं होंगी और खुद या किसी दूसरे शाख़ से मक्का मुकर्मा से भी हज करा सकता है इस सिलसिले में यह हदीष याद रखें, रसूलुल्लाह (صلی اللہ علیہ وسلم) का पाक इर्शाद है कि वाल्डैन की वफात के बाद उन के लिए खैर व बरकत की दुआ करते रहो और अल्लाह से उन के वास्ते मग़फिरत और बख़िशश मांगो।
- 5) हज के ज़िरये वाल्डैन को सवाब पहुंचाना मग़फिरत और बख़िशश मांगने के बराबर है।
- 6) एक हदीष में है, जिस ने अपने मां-बाप की तरफ से हज किया या उनका कोई और फर्ज़ अदा किया तो बेशक उसने उनकी तरफ से हज अदा कर दिया और खुद उसको दस ज़ाइद हज का सवाब मिलेगा। एक और हदीष में है, जिस शाख़ से अपने वाल्डैन की तरफ से हज किया या उनका कोई और फर्ज़ अदा किया तो ऐसा करने वाला क्यामत के दिन अबरार के साथ उठाया जायेगा। (कन्जुल अमाल)
- 7) जिस ने अपना फर्ज़ हज अदा कर लिया हो उस के लिए नफ़िल हज करने के बजाए हजे बदल करना अफ़ज़ल है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ी.) से रिवायत है कि जिसने मध्यत की तरफ से हज किया तो मध्यत के लिए एक हज लिखा जायेगा और हज करने वाले को सात हज का सवाब होगा।
- 8) उज्रत पर हज करना किसी हालत में जाइज़ नहीं है इस लिए ठेका या उज्रत पर हज करने वालों से हजे बदल ना करायें। बअ़ज़ लोग मसारिफ का ठेका कर लेते हैं। ऐसा करना जाइज़ नहीं है। सूना गया है कि बअ़ज़ मुअ़लिमीन और ठेका पर काम करने वाले लोग चन्द आदमियों की तरफ से रुपये वसूल कर के एक आदमी से हज करा देते हैं और सब को सवाब

बख़्श देते हैं, अगर ऐसा होता हो, तो बहुत ही बुरी बात है, इससे एहतियात करें।

नोट:-

हजे बदल की नीयत इस तरह करें:

- (१) या अल्लाह! मैं अपने वालिद या फलां की तरफ से हज की नीयत करता हूँ उस को मेरे लिए आसान बना दे और कुबूल फरमा ले।
- (२) ज़िन्दा या मुर्दा लोगों की तरफ से तवाफ़ या उम्रह करें तो उसकी नीयत भी इसी तर्ज़ पर होगी।

हज बदल के अख्याजात से मुतअलिक ज़रूरी मसाइल:

- (१) हजे बदल करने वाले को इतना ख़र्च मिलना चाहिए कि आमिर के वतन से मक्का मुकर्मा तक जाने और वापस आने के लिए दरमानी तौर पर काफ़ी हो जाये, ना तंगी हो और ना फजूल ख़र्ची।
- (२) मसारिफ में सवारी, खाने पीने का सामान, सफर के कपड़े, कपड़ों की धुलाई, हमाली, मकान का किराया वगैरह जिन जिन चीज़ों की ज़रूरत हो, मामूर की हैसियत के मताविक सब दाखिल हैं और आमिर के माल से बिला तंगी व फजूल ख़र्च करना जाइज़ है।
- (३) मामूर को आमिर के माल से किसी की दावत करना, किसी को खाने में शरीक करना, या सदका देना या कर्ज़ वगैरह देना जाइज़ नहीं है। अगर आमिर ने सब आमूर की इजाजत दी हो तो जाइज़ है।
- (४) फर्कीह अबुल लैस (रह.) ने हर उस चीज़ में आमिर का माल सर्क करना जाइज़ कहा है जिस को आम तौर पर हुज्जाज करते हों, और ज़खीरा में उसी को मुख्तार लिखा है, मगर फिर भी एहतियात उसी में है कि आमिर से ज़ुम्ला अमूर में सर्क करने की इजाजत हासिल कर ले ताकि तंगी और मुअ़खिय़ज़ हो ना हो, आमिर को भी चाहिए कि मामूर को हज के नफ़के के अलावा कुछ जाइद रकम भी बतौर हदिया दे दे ताकि ख़र्च करने में सहूलत रहे और हिसाब किताब रखने की तकनीफ ना हो। अलबत्ता यह ख़याल ज़रूर है कि हज के लिए दिए जाने वाला नफ़क़ह मामूर को हिबा (बख़िशश) ना करे, क्योंकि इस सूरत में वह मामूर की मिल्क हो जायेगा और आमिर का हज अदा ना होगा।

(५) मामूर से कोई जिनायत हो जाये तो दमे जिनायत अपने माल से दे, बिला इजाजत आमिर उसके माल से देना जाइज़ नहीं है।

(६) हज से फरागत के बाद आमिर के माल से नकद रकम सामान वगैरह आमिर या उस के वरसा को वापस करना वाजिब है। हाँ! अगर वह हिबा कर दे तो लेना दुर्स्त है।

हज्जे बदल के मसाइल

- (१) फुकहा ने लिखा है कि हज्जे बदल में हज्जे अफराद या हज्जे किरान ही किया जाया सकता है, हज्जे तमत्तओं नहीं किया जा सकता है। मगर फुकहा की बअ़ज़ इबारतों से हज्जे तमत्तओं की भी जाइज़ होना मञ्ज़ुल होता है। चुनांचा दुर्रे मुख्तार में हज्जे बदल की सूरत में तमत्तओं की कुरबानी के खर्च उस शाख़ के ज़िम्मे रखे गए हैं जिस की तरफ से हज किया जा रहा है। किरान व तमत्तओं और जनायत की कुरबानी हज करने वाले ही पर होंगी। गो हज का हुक्म देने वाले ने (जिस की तरफ से हज्जे बदल कर रहा हो) इस की इजाजत दी हो। मुफ़्ती मुहम्मद शाफ़ी साहब (रह.) ने भी बअ़ज़ शर्तों के साथ इस की इजाजत दी है।

इस ज़माने में हज व उमराह करने में आम आदमी आज़ाद नहीं है कि जब और जिस वक्त चाहें जा सकें और लम्बे एहराम से बचने के लिए हज के

(बाकी पेज 66 पर)

मदीना मुनव्वरा के तारीखी मुकामात

मस्तिजदे नबवी (स.) :-

मस्तिजदे नबवी (स.) की दीनी कफ़्ज़ीलतें तो हैं ही दुनियावी लिहाज़ से भी इस का एक खास मुकाम है। इस की तफसीलात जान कर आप को हैरत होगी। यह दुनिया का खूबसूरत तरीन महल है। इतना कीमती और खूबसूरत महल इन्सानी तारीख में पहले कभी नहीं बना है। इसे बनाने में तकरीबन ३६० अरब रुपये खर्च हुए हैं। इसे टी. व्ही. के डिस्कवरी चैनल ने दुनिया की ८ अंजीम इमारतों में से एक कहा है और 'गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड' ने इसे दुनिया की सब से खूबसूरत इमारत तस्लीम किया है। इस की खूबसूरती देखने के साथ समझने से भी तअल्लुक रखती है। छज की इस मुख्तासर किताब में इस की ज्यादा तफसीलात बयान नहीं की जा सकती। आप इसे "तअमीरे मस्तिजदे नबवी" वीडिओ सी.डी. में देख लीजिए या फिर "तारीखे मदीना मुनव्वरा" किताब में पढ़ लीजिए। यह दोनों चीज़ें आप को मक्का मुकर्मा और मदीना मुनव्वरा में किसी भी किताबों की दुकान में मिल जाएगी।

इस मस्तिजद से मुतअल्लिक सिर्फ दो बातें यहाँ बयान करुणग। जिस से आप इस की तअमीर के बारे में कुछ अंदाज़ा कर सकेंगे।

- १) अगर आप सरसरी तौर पर मस्तिजदे नबवी (स.) का दरवाज़ा देखेंगे तो आप को बहुत खूबसूरत लगेगा। लकड़ी का यह दरवाज़ा खतिस सोने और गोल्ड लेटेड स्टील से जोड़ा गया है। इस दरवाजे को बनाने के लिए आफिका के जंगलों से खास लकड़ी चुनी गई। फिर इसे केज़ीग के लिए जर्मनी भेजा गया। फिर इसे कनाडा (Canada) के माहिर कारीगरों ने बेहतरीन टेक्नोलॉजी से बनाया है। हर दरवाजे का वज़न कई टन है। इतने वज़न के बावजूद एक आदमी आसानी से इसे खोल या बंद कर सकता है।
२. इस मस्तिजद कि टाइल्स बहुत खूबसूरत है आप सोच रहे होंगे कि यह बेहतरीन टाइल्स दुनिया कि सबसे बेहतरीन टाइल्स बनाने वाली कंपनीों से खरीदे गए होंगे। नहीं, बल्कि इस मस्तिजद के लिए सबसे पहले दुनिया की सबसे बड़ी और आला टेक्निक वाली टाइल्स बनाने कि फेक्टरी कायम की है। फिर इसमें टाइल्स बनाकर इस्तेमाल किए गए। इस तरह इस मस्तिजद में इस्तेमाल होने वाला हर पुर्जा और हर चीज़ अपनी मिसाल आप है। आप इसे दिमाग से समझकर अपनी आखों में बसा लें। तसव्वरात की दुनिया अपने महबूब(स.) के इस महल में जब आप कदम रखेंगे, तो आप अपने आप को जन्मत में महसूस करेंगे।

मस्तिजदे कुबा:- जब नबी करीम (स.) हिजरत फरमा कर मदीना मुनव्वरा पहुँचे, तो सब से पहले आप (स.) ने इसी मस्तिजद की बुनियाद रखी और खुद इस की तामीर में शरीक हुए। दर हकीकत यही वह पहली मस्तिजद थी जिस में आप ने अपने सहाबा (रज़ी.) को एलानिया बा-जमाअत नमाज़ पढ़ाई। मस्तिजदे कुबा में नमाज़ पढ़ने की कफ़्ज़ीलत के बारे में सहल बिन हनीफ़ (रज़ी.) से रिवायत है कि नबी करीम (स.) ने फरमाया "जो शऱक घर से निकल कर इस मस्तिजदे कुबा में आए और यहाँ २ रक्खतें नमाज़ पढ़े इसे एक उम्रह का सवाब मिलेगा।"

मस्तिजदे झजाबा:- इस मस्तिजद में नबी करीम (स.) ने तीन दुआएँ फरमाई थी, इन में से दो दुआएँ अल्लाह तआला ने कबूल फरमा लीं, लेकिन एक दुआ कि मेरी उम्त में आपसी इख्तेलाफ न हों इस दुआ को कबूल न फरमाया।

मस्तिजदे जुमा:- इसे 'मस्तिजदे जुमा' इस लिए कहा जाता है कि नबी करीम (स.) जब कुबा बस्ती में चंद दिन ठहर कर मदीना मुनव्वरा की तरफ

चले तो इसी मुकाम पर आप (स.) ने पहला जुमा पढ़ाया। सहाबा किराम (रज़ी.) ने इसी जगह मस्तिजद बना दी।

मस्तिजदे किल्लतैन:- नबी करीम (स.) बनी सल्मा के इलाके में अपने सहाबा (रज़ी.) के साथ जोहर की नमाज़ पढ़ रहे थे। आप (स.) ने अभी २ रक्खतें ही पढ़ी थीं किंबले की तब्दीली का हुक्म आ गया। आप (स.) नमाज़ ही में काबा की तरफ मुतवज्जा हो गए। इस मस्तिजद में एक नमाज़ दो किल्लों की तरफ मुंह कर के पढ़ी गई थी इस लिए इसे मस्तिजदे किल्लतैन कहा जाता है।

मस्तिजदे बनी हारसा (मस्तिजदे सुत्राह):- नबी करीम (स.), ग़ज़वा-ए-ओहद से वापसी के बक्त आराम करने के लिए इस जगह कुछ देर ठहरे थे इसे मस्तिजदे सुत्राह कहा जाता है। यह मस्तिजद, नबी करीम (स.) के दौरे मुबारक में ही तअमीर कर दी गई थी।

मस्तिजदे फ़तह:- मस्तिजदे फ़तह, मदीना मुनव्वरा की शुमाल में एक पहाड़ 'सल्लाअ' में वाकें है। इस को मस्तिजदे फ़तह इस लिए कहा जाता है कि अल्लाह तआला ने ग़ज़वा-ए-ख़ंदक के दौरान इस जगह नुस्रत व फतेह की वही नबी करीम (स.) पर नाज़िल की थी और नबी करीम (स.) ने सहाबा कराम (रज़ी.) से फरमाया था कि "अल्लाह तआला की तरफ से नुस्रत व फतेह की वही पर खुश हो जाओ।"

मस्तिजदे ग़मामा:- यह मस्तिजद, मस्तिजदे नबवी (स.) के जुनूब-मग़रिब में बाबे सलाम से आधा किलो मीटर के फासले पर वाकेअ है। यह इस मैदान में है जिसे रस्तुल अल्लाह (स.) ने नमाज़े ईद के लिए मुन्तखब फरमाया था। एक रिवायत के मुताबिक नबी करीम (स.) ने नजाशी (रज़ी.) की गायबाना नमाज़े जनाज़ा भी इस जगह पढ़ाई थी। इसे मस्तिजदे ग़मामा इस लिए भी कहा जाता है कि नमाज़ के दौरान एक बादल ने आप (स.) को धूप से साया किये रखा था।

जबले औहृद:- ओहद पहाड़ एक बड़ा पहाड़ है जो मदीना मुनव्वरा की शुमाल की जानिब और मस्तिजदे नबवी (स.) से साढ़े पांच किलो मीटर के फासले पर वाकेअ है। यह हरम की हुदूद के अंदर है। इस की लम्बाई ६ किलो मीटर और रंग सुर्खी माइल है।

नबी करीम (स.) ने इस की फ़ज़ीलत के बारे में इर्शाद फरमाया "यह एक ऐसा पहाड़ है, जो हम से मुहब्बत करता है और हम इस से मुहब्बत करते हैं।"

ओहद पहाड़ ही के पास ग़ज़वा-ए-ओहद हुआ था, जिस में नबी करीम (स.) के चचा सैविद्यना हमज़ा (रज़ी.) और दूसरे मुसलमान शहीद हुए थे। आप का स्वार्इ दांत टूट गया था। आप का चेहरे अनवर जख्मी हुआ था और आप के होठ मुबारक पर भी ज़ख्म आए थे। इस पहाड़ के दामन में शोहदा-ए-ओहद की कब्रें हैं।

जन्नतूल बर्की:- यह मस्तिजदे नबवी (स.) से बिल्कुल करीब एक कब्रस्तान है जिस में तकरीबन ९० हज़ार सहाबा (रज़ी.) मदफून हैं। नबी करीम (स.) की औलादे अतुहार (रज़ी.) और अज़्याजे मुतहरात (रज़ी.) भी यही मदफून हैं।

मदीना मुनव्वरा के कई बाज़ार मुहल्लों और बाग़ों का जिक्र हवीस शरीफ में आया है। इन मुकामात के कुछ आसार अब भी बाकी हैं। जिनकी फेहरिस्त नीचे दी गई है। मदीना मुनव्वरा में जब आप ज़ियारत के लिए निकलें, तो

(बाकी पेज ७० पर)

रौज़ा-ए-मुबारक की तफसील

- १) सन ८७ हिजरी तक मस्जिद नववी के मशरिकी जानिब अज्याजे मुतहरात के हुजरात शरीफा मौजूद थे और हुजूर (स.) की कब्र मुबारक मस्जिद के बाहर हज़रत आईशा सिद्दीका (रज़ी.) के हुजरे में थे। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) ने सन ८७ हिजरी में सारे हुजरात ख़रीद कर मस्जिद में शामिल कर लेने का फैसला किया क्योंकि उस वक्त तक सारी अज्याजे मुतहरात फौत हो चुकी थीं और मस्जिद में जगह की सख़्त किल्लत थी। मस्जिद के तौसी के वक्त हज़रत आईशा सिद्दीका (रज़ी.) के हुजरे को छोड़ कर सारे हुजरे मस्जिद में शामिल कर लिए गए। उस वक्त हज़रत आईशा (रज़ी.) के हुजरे की दीवारें कच्ची और छत लकड़ी की थीं। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) ने हुजरे के अतराफ़ बगैर खिड़की, दरवाज़े की ऊँची मज़बूत दीवार तभीमीर कर दी। हुजरा चौकोर था मगर बाहरी दीवारें पाँच कोनों की बनाई गई ताकि इस की मुमासिलत काबा शरीफ से न हो। अगले छः सौ साल तक मस्जिद की छत और हुजरा की ऊपर की छत एक ही थी कोई गुंबद न था, सिर्फ़ निशान के तौर पर रौज़ा-ए-मुबारक के ऊपर मस्जिद की छत को थौड़ा ऊँचा कर दिया गया था ताकि कोई ग़लती से रौज़ा-ए-मुबारक के ऊपर वाली छत पर न चला जाए।
- २) सन ६६८ हिजरी में पद्ली बार सुल्तान रूस्तन्दीन बेबरस ने हुजरा के अतराफ़ पाँच कोनों वाले कमरा के अतराफ़ लकड़ी की जाली लगवाई थी जो कि दस से बारह फ़िट ऊँची थी। सन ६६४ हिजरी में शाह जैनउद्दीन कुहुबग़ा ने इस जाली को ऊँचा कर के मस्जिद की छत तक कर दिया। फिर सन ८८६ हिजरी में सुल्तान कातिबाई ने इन जालियों को लोहे और पीतल से बदल दिया। अब किल्ला की तरफ़ की जाली पीतल की है और बाकी तीनों तरफ़ लोहे की जालियाँ हैं जिन पर सब्ज़ रंग चढ़ा हुआ है। इन जालियों में चार दरवाज़े हैं। एक किल्ला की तरफ़ बाब-उल्लौबा, दुसरा मगरिब की तरफ़ बाबे-उल्लफूद, तीसरा मशिरक की तरफ़ बाबे-फ़ात्मा और चौथा शुमाल की तरफ़ बाबे-उल्लहज़ूद। इन दरवाज़ों से दाखिल होकर भी पाँच कोनों वाले अहाते के बाहर तक ही पहँचा जा सकता है। रौज़ा-ए-मुबारक को देखना या इस तक पहुँचना किसी के लिए भी मुस्किन नहीं है।
- ३) सन ८७८ हिजरी में सुल्तान कातिबाई के दौर में दीवारें कमज़ोर हो जाने की वजह से इन की फिर तभीमीर की गई। ऊँची ईसाइ और यहूदी तरह तरह की साज़िशें किया करते थे। इस लिए सुल्तान ने हुजरे की दीवारों को भी मज़बूत पथर का बना दिया। सीधी (Flat) छत चूंकि कमज़ोर होती है और बार बार मरम्मत करना पड़ती है और मरम्मत के वक्त मज़दूरों को रौज़ा-ए-मुबारक के ऊपर छत पर भी काम करना पड़ता है जो एहतेराम के खिलाफ़ है। इस लिए सुल्तान ने छत को भी मज़बूत गुंबद की तरह बनाने का हुक्म दिया। इन दीवारों और गुंबद में कोई खिड़की या दरवाज़ा नहीं है। सिर्फ़ ऊपर के हिस्से में एक छोटा सा सूराख़ है जिस से रौज़ा-ए-मुबारक आसानी से नज़र आता है। सन ८७८ हिजरी में दीवारों की तजदीद के वक्त अल्लामा समहूदी को हुजूर (स.) की कब्र मुबारक की जियारत का शर्फ़ हासिल हुआ। वह लिखते हैं कि तीनों कब्रें कच्ची हैं। ज़मीन के बराबर हैं या सिर्फ़ थोड़ी से उभरी हुई हैं। कुबूर के अतराफ़ कोई पथर या ईंट बगैर हलगी हुई नहीं हैं। दीवारों और गुंबद की तभीमीर के बाद फिर किसी को यह सआदत हासिल नहीं हुई क्योंकि यह इमारत आज भी वैसी ही है।
- ४) रौज़ा शरीफ के ऊपर मस्जिद की छत पर पहली बार गुंबद, शाह मंसूर कलाउन सालेही ने सातवीं सदी के आखिर में बनवाया था। ये लकड़ी का था और ऊपर से सीसा (Lead) के पतरे चढ़े हुए थे। सीसा चूँकि सिलेटी होता है इस लिए गुंबद का रंग भी सिलेटी था। सन ८७९ हिजरी में मस्जिद में आग लग गई थी जिस से इस गुंबद को नुकसान पहुँचा इस लिए सुल्तान कातिबाई ने इसे देवारा मज़बूत इंटों और पथरों से तभीमीर करवाया। अगले साढ़े तीन सौ साल तक यह गुंबद इसी तरह रहा। इस वक्त गुंबद सफेद या सिलेटी रंग से रंगा जाता था।
- ५) सन ९१६ ई. में दो इसाईयों ने सुरंग लगा कर हुजूर (स.) के रौज़ा-ए-मुबारक तक पहुँचने की कोशिश की थी। नूरुद्दीन ज़ंगी ने उन्हें पकड़ कर कल दिया और रौज़ा-ए-मुबारक के चारों तरफ़ पानी की सतह तक मज़बूत सीसा और पथर की दीवार बना दी, जो आज तक मौजूद है। सन ९२३ ई. हिजरी में सुल्तान महमूद उम्मानी ने इसे फिर से तभीमीर करवाया, और हरे रंग से रंगा। यानी गुंबद खिल्ला तभीमीर हुए तक़ीबन दो सौ साल हो चुके हैं। इस गुंबद में एक छोटा सा सूराख़ है, जो कि नीचे बने हुजरा के गुंबद के ठीक ऊपर है। यह सूराख़ किल्ला की तरफ़ है। जब सूरज ठीक ऊपर होता है, सूरज की रौशनी रौज़ा-ए-मुबारक पर पड़ती है। बारिश के दिनों में बारिश का पानी भी रौज़ा-ए-मुबारक पर टपकता है।
- ६) हुजूर (स.) के रौज़ा-ए-मुबारक और मस्जिद का नक्शा जुबानी बयान किया जाए तो वह इस तरह है। के आप (स.) की कब्र मुबारक कच्ची है। कब्र ज़मीन से कुछ ही ऊँची है। उस के बाहर पथर का बना हुआ चौकोर कमरा है। जिस पर एक छोटा गुंबद है। उस के बाहर पाँच कोनों की दीवार का अहाता है। जो मज़बूत है और पथरों से बना है। पहले इस पर गिलाफ़ चढ़ाया जाता था। जो कि आज भी उस पर पड़ा हुआ है। इस अहाते के बाहर लोहे और पीतल की जाली का अहाता है। हम और आप इसी जाली के सामने जाकर अपना दुर्दद व सलाम पेश करते हैं। इन सारी इमारतों को धेरे हुए मस्जिद की इमारत है और मस्जिद की छत पर ठीक रौज़ा-ए-मुबारक के ऊपर हरा गुंबद है। रौज़ा-ए-मुबारक के अतराफ़ के कमरे और दीवारों में कोई खिड़की या दरवाज़ा नहीं है। ऊपर के दोनों गुंबदों में सिर्फ़ एक छोटा सा सूराख़ है। जो कि एक सीधे में है रौज़ा-ए-मुबारक से आसानी नज़र आता है। इस सूराख़ से सूरज की रौशनी कब्र मुबारक पर पड़ती है।
- रियाजुल्जन्नत, मिम्बर और सुतून का बयान:-**
- १) **रियाजुल्जन्नत:-**
- हज़रत अबु हुरैरा (रज़ी) से रिवायत है कि नबी अकरम (स.) ने फरमाया, “मेरे घर और मिम्बर के दरवाज़ा जो जगह है वह जन्नत के बाहरी ओंचों में एक बाहीचा है और मेरा मिम्बर क्यामत के दिन हैज़ (कौसर) पर होगा। (बुखारी शरीफ)
- पहले रियाजुल्जन्नत की लंबाई और चौड़ाई 15 x 26.5 मीटर थी। मगर अब चूंकि कुछ सिर्फ़ इससे जालियों के अंदर चला गया है इस लिए ये अब 15 x 22 मीटर बचा है।
- २) **मिम्बर शरीफ:-**
- शुरू शुरू में हुजूर (स.) ज़मीन पर खड़े होकर एक खुजूर के पेड़ के तना का सहारा ले कर खुत्ता दिया करते थे। मगर चूंकि देर तक खड़ा रहना

तकलीफेह था इस लिए सहाबा-ए-किराम (रजी.) ने तीन सीढ़ीयों का एक मिम्बर बना दिया। आप (स.) तीसरी सीढ़ी पर बैठते और दूसरी सीढ़ी पर पांव रख कर खुत्ता दिया करते थे।

ये मिम्बर लकड़ी का था जब बोसीदा हो गया तो हज़रत अमीर मुआविया (रजी.) ने इसे नीं सीढ़ीयों वाला बना दिया। उस के बाद ये कई बार बदला गया। अब जो मिम्बर मस्जिद नबवी में है वह सन ६६८ हिजरी में सुल्तान मुराद सुव्वम उस्मानी का भेजा हुआ है और बारह सीढ़ीयों का है। सऊदी हुकूमत ने इस पर सोने की पालिश वगैरह कर के और खुबसूरत बना दिया है।

मिम्बर कई बार बदले गए मगर जगह आज तक वही रही जो हुजूर (स.) के बक्त में थी।

निसाई में हज़रत उम्मे सलमा (रजी.) से रिवायत है कि रसूल अकरम (स.) ने फ़रमाया “मेरे मिम्बर के पास बहिश्त की सीढ़ी होंगी।”

३) मेहराबे नबवी:-

जिस जगह आप (स.) नमाज़ पढ़ा करते थे। आप (स.) की वफ़ात के बाद हज़रत अबुबकर सिद्दीक (रजी.) ने आप (स.) के सिजदा की जगह दीवार बना दी ताकि आप (स.) के सिजदे की जगह किसी के कदम न पड़े। चारों खुल्काए राशदीन के ज़माने में कोई मेहराब वगैरह नहीं थी। सन ६९ हिजरी में हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने अपने दौर में इस दीवार को एक मेहराब की शक्ति दे दी। जो कि आज तक कायम है। अब जो कोई इस मेहराब की सामने नमाज़ पढ़ेगा तो आप (स.) के कदम मुवारक की जगह पर सिजदा करेगा।

इस मेहराब के पीछे मेहराब की दीवार में ही एक सुतून है जिसे सुतून हिनाना भी कहा जाता है। इस जगह पहले एक खजूर का तना था हुजूर (स.) इसी जगह खड़े होकर खुत्ता दिया करते और नक़िल नमाज़ पढ़ा करते थे। आज कल जिस मेहराब या मुसल्लों पर इमाम खड़े हो कर नमाज़ पढ़ाते हैं यह मेहराब उस्मानी है क्योंकि यह हज़रत उस्मान जुलूरैन (रजी.) ने बनवाया था। हज़रत उमर फ़ारुक (रजी.) को मेहराबे नबवी पर ही खंजर से हमला कर के शहीद किया गया था। जब मस्जिद की तीसी हुई, तो हज़रत उस्मान (रजी.) ने किला की तरफ मस्जिद की तीसी कर के नया मुसल्ला या मेहराब बनाया और अगली सफ़ों को जाती से धेर दिया ताकि उसी तरह नमाज़ के दौरान उन पर भी हमला न हो। अब वह जालियाँ तो नहीं हैं। मगर मेहराब वही है।

४) सुतूने आईशा(रजी.):-

हुजूर (स.) ने फ़रमाया के मेरी मस्जिद में एक जगह ऐसी है कि अगर लोगों को इस की फ़र्जील मालूम हो जाए तो वहाँ नमाज़ की अदाईगी के लिए आपस में कुरा अंदाज़ी करें। चूंकि हज़रत आईशा (रजी.) ने इस जगह की निशानदी की थी इस लिए इसे सुतूने आईशा(रजी.) कहा जाता है।

५) सुतूने अबु लबाबा:-

ग़ज़्व-ए-ख़ंदक के बाद हज़रत अबु लबाबा से गैर शउरी तौर पर एक शुल्ती हो गई थी। जिस के लिए वह बहुत नादिम हुए और तौबा इस्तग़फ़र किया और अपने आप को इस सुतूने से बांध लिया और ये अहद किया कि जब तक अल्लाह तभाला मेरी तौबा कुबूल न करेंगे मैं इस सुतून से बंधा रहूँगा। अल्लाह तभाला ने इन की तौबा कुबूल की तब उन्होंने अपने आप को आजाद कराया। इस सुतून को इस लिए उन के नाम से याद किया जाता है। यहाँ आप (स.) नमाज़ अदा किया करते थे।

६) सुतूने सरीर:-

इस जगह रमज़ान के आख़री अश्रा में एतिकाफ के लिए हुजूर (स.) का विस्तर विछाया जाता था। आप (स.) के बाद हज़रत उमर फ़ारुक (रजी.) ने भी यहीं एतिकाफ किया और इमाम मालिक (रह.) मस्जिद में इसी जगह बैठा करते थे।

७) सुतूने हिर्स:-

इस सुतून के पास वे सहाबा किराम बैठा करते थे, जो आप (स.) की हिफ़ाज़त पर मामूर होते थे।

८) सुतूने वफूद:-

जब अरब के वफूद हाज़िरे ख़िदमत होते तो आप (स.) उन से इसी जगह मुलाकात फरमाया करते।

सुतूने सरीर, सुतूने हिर्स और सुतूने वफूद अब आधे जाली के अंदर हो गए हैं।

सहाबा किराम (रजी.) नमाज़ों के लिए सुतूनों की तरफ जल्दी पहुँचते क्योंकि सुतून नमाजियों के लिए सतरा (आड़) का काम भी देता है। हज़रत बुखारी (रह.) ने हज़रत अनस (रजी.) से रिवायत की है कि मैंने देखा कि बड़े बड़े सहाबा किराम (रजी.) मग़रिब के बक्त मस्जिद की सुतूनों की तरफ दौड़ पड़ते। सहाबा किराम (रजी.) ने सुतूनों के पास नमाज़ पढ़ी है इस लिए उन के पास नमाज़ पढ़ना मुस्तहब है।

९) सुतूने तहजुद:-

यह वह सुतून है जहाँ नबी करीम (स.) नमाज़े तहजुद अदा किया करते थे।

१०) सुतूने जिब्रईल:-

यह वह मुकाम है जहाँ नबी करीम (स.) की हज़रत जिब्रईल (अ.स.) से मुलाकात हुई थी। विसाल से पहले वाले रमज़ान में नबी करीम (स.) ने हज़रत जिब्रईल के साथ कुरआन शरीफ का दौर इसी जगह फरमाया था। यह दोनों सुतून बिल्कुल रोज़े मुबारकों के अंदर आ गए हैं। इसलिए बाहर से नज़र नहीं आते। गुम्बदे ख़िज़रा इन्हीं पर कायम किया गया है।

११) असहाबे सुफ़का:-

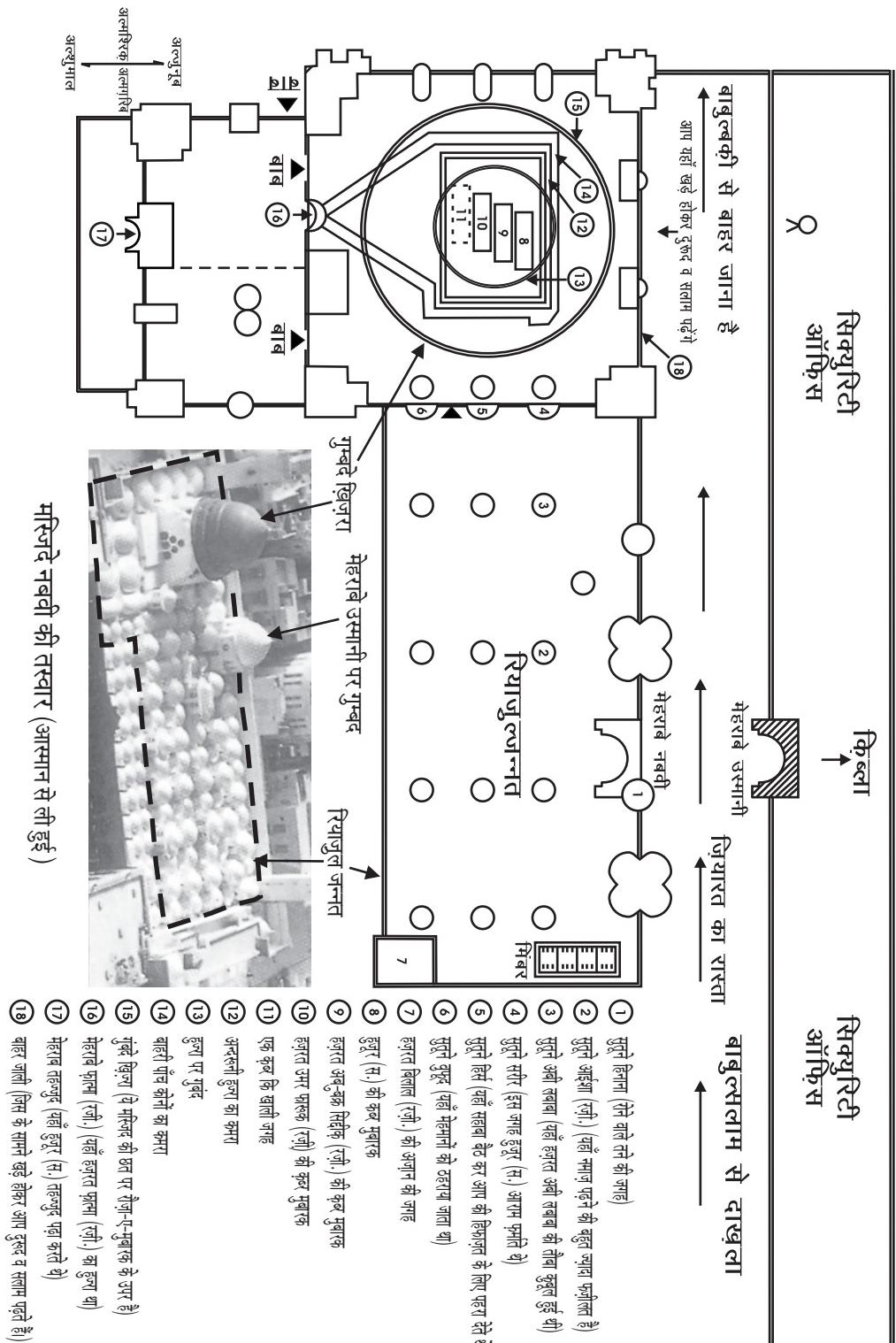
सुफ़ा साएबान और साएदार जगह को कहा जाता है। कदीम मस्जिदे नबवी के (स.) के शुमाल में मशरिकी किनारे पर मस्जिद से मिला हुआ एक चबूतरा था। यह जगह इस बक्त बाबे जिब्रईल से अंदर दाखिल होते बक्त मक़सूरा शरीफ के शुमाल में मेहराबे तहजुद के बिल्कुल सामने दो फिट उँचे कटहर्णे में घिरी हुई है। इसकी लंबाई चौड़ाई ४० X ४० फिट है इसके सामने खुदाम बैठे रहते हैं और यहाँ लोग कुरआन पाक की तिलावत में मसरूफ रहते हैं।

१२) सउदी हुकूपतने मदीना मुनव्वरा में शानदार म्युझीयम बनाया है। जिसमें नबी करीम (स.) के जमाने के घर और इस्तेमाल होने वाली चिज़ों को रखा है। इसे देखकर अपने इमान को जरूर ताजा करें।



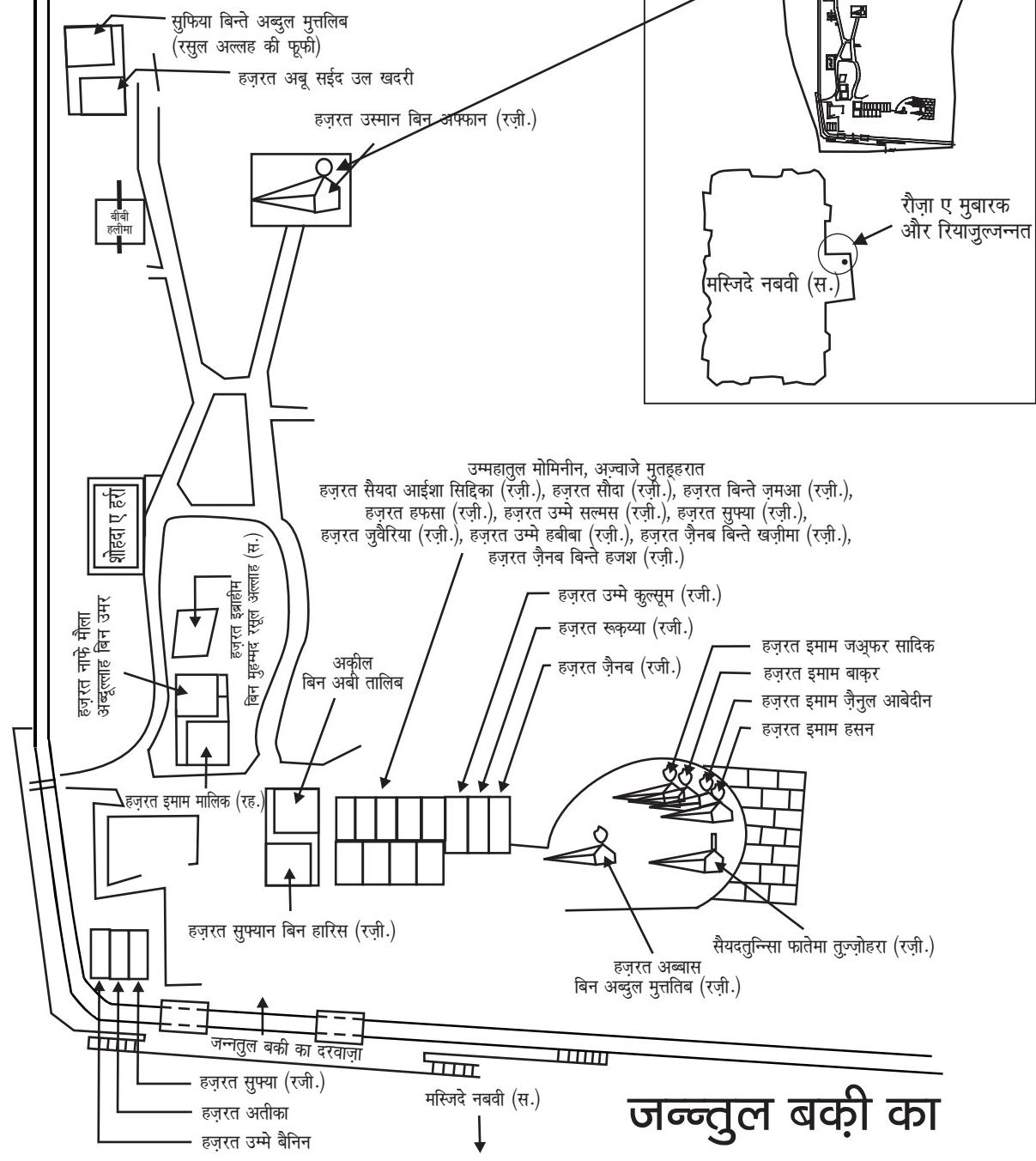
नबी करीम (स.) ने औरतों को वा जमानत नमाज़ पढ़ते बक्त उन्हें आखिरी सफ में खड़े होने का हुक्म दिया, और इस का भी हुक्म दिया के वह मर्दों के बाद सिजदे से सिर उठाएं, ताकि मर्दों के पोशिदा सतर पर नज़र ना पड़े।

इस हुक्म के सहाबा किराम रज़ि० की औरतें रास्ते के इतना किनारे चलती थीं कि उनके कपड़े दीवारों से रगड़ खते थे।



हज़ा आईशा (खाँसी) और रियाजुल्जन्नत की तफ़सील

जन्नतुल बकी का यह एक नायाब नवशा है। सदी हुकूमत ने कब्रों पर सारे निशानात मिटा दिए हैं, और ना ही किसी को किसी कब्र की निशान-दही की इजाज़त है। इस नवशा के ज़रिए आप हज़रत उस्मान (रज़ि.), उम्महातुल मोमिनीन, हज़रत हलीमा और दीगर मोहतरम हज़रात के मज़ारात की ज़ियारत कर सकते हैं।



जन्नतुल बकी का एक नायाब नवशा

पेज 58 का बक्तिया....हज कैसे करें?

है कि अगर किसी ने देख लिया तो बड़ी बदनामी होगी। चंद मिनटों में दरवाजे के बाहर तक लबालब भरी हुई मस्जिदे आधी से ज्यादा खाली हो जाती है।

- ऐसा ही मामला १२ जिल्हिज्जा की शाम को मिना में होगा। वह लोग जो अफ़ज़ल औकात में अरकान सही तरीके से करने के लिए दुटे पड़ते थे १२ तारीख कि शाम को अपना बोरीया बिस्तर लपेटकर मिना से गायब हो जाएंगे। क्योंकि १३ तारीख को मिना में रुक्ना वाजिब नहीं है। “बस सुन्नत ही तो है।”
- नबी करीम(स.) ने हज्जतुल विदा के मौके पर लोगों को बार बार फरमाया कि, “लोगो! मुझ से हज सीख लो, हो सकता है यह मेरा आखरी हज हो।” आप (स.) ने खुद ऐसा तरीका उम्मत के सामने पेश किया जो आसान था। मिसाल के तौर पर आप (स.) ने सहाबा (रजी.) से फरमाया कि अगर कुबानी के जानवर साथ नहीं है, तो उम्रह के बाद एहराम उतार दे और हाजे तमत्तओं करें। आप (स.)ने नमाजे करके पढ़ी। आप (स.) ने मुज्दल्का की रात आराम किया। आप (स.) ने औरतों और कमज़ोर लोगों को रात में मिना जाने की इजाजत दी। आप (स.) ने हज्जे अस्वद को दूर से ही इस्तलाम करने की इजाज़त दी वगैरह वगैरह।
- मगर जहाँ तक मिना से गैर हाजिर रहने की बात है तो सिफ हज़रत अब्बास (रजी.) ने आप (स.) से हाजियों को पानी पिलाने के लिए मस्जिदे हरम में रहने की इजाजत माँगी थी और मैंने एक भी ऐसी रिवायत नहीं पढ़ी जिसमें सभा लाख असहाये किराम में से किसी ने १२ तारीख की शाम मक्का लौटने की आप (स.) से इजाजत माँगी हो। नबी करीम (स.) और तकरीबन सभा लाख सहाये कराम(रजी.) जिन्होंने आप (स.) के साथ हज किया, १३ तारीख को रसी जुमार के बाद ही मक्का मुकर्रमा लौटे।
- अल्लाह तआला ने कुरआन शरीफ में फरमाया कि अगर कोई १२ तारीख को मक्का लौट जाएं तो कोई गुनाह नहीं, तो यह आसानी का मामला अल्लाह का करम है। मगर नबी करीम (स.) की सुन्नत १३ तारीख को ज़्यावल के बाद, रसी जुमार के बाद मक्का मुकर्रमा रवाना है।
- ६ जिल्हिज्जा से १३ जिल्हिज्जा यह अच्याम तशरीक कहलाते हैं। नबी करीम (स.) ने फरमाया, “अच्यामें तशरीक खाने पीने और अल्लाह का ज़िक्र व अङ्कारा करने के दिन होते हैं।”(मुस्लिम)। तो इन दिनों में कसरत से अल्लाह तआला का ज़िक्र और इबादत करनी चाहिए। इसलिए अगर कोई मजबूरी न हो तो १३ तारीख को मिना में ही रुके, इबादत में दिन गुजारे, ज़्यावल के बाद रसी जुमार करें और इसके बाद मक्का मुकर्रमा रवाना हो।
- अगर कोई मजबूरी हो तो कोशिश करें की १२ तारीख की शाम से पहले मिना से रवाना हो जाएं क्योंकि शरीयत के मुताबीक अगर मिना में सूरज गुरुब हो गया तो आपको मिना में रुक्ना ज़रूरी है। मगर अब चूँकि रसी जमार में ज़्यावल के बाद बहुत भीड़ होती है और उल्मा ने सुबह सादिक तक रसी जमार की सलाह दी है और कहा है कि इशा अल्लाह यह मकरुह नहीं होगा। इसलिए अब अगर आप सुबह सादिक तक भी मिना से निकल गए तो इन्शा अल्लाह गुनाह न होगा।
- इस तरह अल्लाह तआला के करम और फ़ज्जल से आप के हज के सारे अरकान पूरे हुए। मक्का मुकर्रमा में सिर्फ एक ज़रूरी और वाजिब अमल आप का बाकी रहा वह है तवाफे विदा।

तवाफे विदा:-

हज के बाद जब मक्का मुकर्रमा से वतन या मरीना जाना हो तो रुकसती का

पेज 60 का बक्तिया....हज्जे बदल

दिनों के बिल्कुल करीब सफर करें। हर तरफ हुक्मतों की पाबंदियां शरीद हैं। इसलिए अगर किसी हज्जे बदल करने वाले को वक्त से ज्यादा पहले जाने की मजबूरी हो तो और लम्बे एहराम वाजिबते एहराम की पाबंदी मुश्किल नजर आए तो उस के लिए हज्जे तमत्तओं कर लेने की गुन्जाइश है। (जवाहर्स्ल फिका, जिल्द अच्छा, पेज ५९६)

इस लिए मौजूदा हालात में अगर अफराद और किरान की वजह से इतने दिन हालते एहराम में रहना पड़े कि हाजी के लिए इस को बरदाश्त करना मुश्किल हो तो हज्जे बदल में भी हज्जे तमत्तओं की गुन्जाइश है। (जरीद फिकही मसाइल, जिल्द अच्छा, पेज १६७, २६८)

- 3) हज्जे बदल में मामूर को हज्जे अफराद करना चाहिए ताकि हज्जे आफाकी और हज्जे मीकाती हो जाए। क्योंकि तमत्तओं करने में उमराह तो आफाकी हो जाता है, मगर हज्जे-आफाकी नहीं होता बल्कि हज्जे मक्की हो जाता है। लैकिल गौर तलब बात यह है कि हज्जे बदल में मामूर कुल्ली तौर पर आमिर की नियाबत करता है और आमिर को हज्जे की तीनों किस्मों में से किसी एक का इख्तियार करने का हक हासिल था जो आमिर जो फाइल मुख्तार है अगर वह अपने मामूर को तीनों किस्मों में से किसी एक का इख्तियार दे दे तो क्या अश्काल है?

जवाब: इस लिए आमिर की इजाजत से हज्जे बदल में तमत्तओं बिला तरदुद जायज़ होना चाहिए। अब्बत्ता तमत्तओं का दम आमिर के माल से ना होगा बल्कि मामूर पर लाज़िम होगा। लैकिन अगर मामूर ब-खुशी अदा करता है तो यह भी जाइज़ है। हाँ अल्लत्ता हज्जे बदल में हज्जे अफराद करना ज्यादा अफजल होगा। (जवाहर्स्ल फिका, जिल्द अच्छा, पेज ५९३, ५९४, ईफाहुल मनासिक पेज १७२, अहसनुल फतावा जिल्द ४, पेज ५२३, अन्वारे मनासिक पेज ५५०)

- 4) इस जमाने में आफाकी का हज्जे तमत्तओं करना ही ज्यादा मञ्चस्फ है। इसलिए उरफन आमिर की तरफ से हज्जे तमत्तओं की इजाजत साबित होती है, लिहाज़ा सराहत के साथ इजाजत की ज़रूरत भी नहीं। (ईफाहुल मनासिक पेज १७२, अहसनुल फतावा जिल्द ४, पेज ५२३, अन्वारे मनासिक पेज ५५०)

- 5) अब हज्जे तमत्तओं का मसला गौर तलब है कि जब आमिर ने तमत्तओं की इजाजत दे दी तो कुरबानी भी उसी के माल में से होगी। मझेयत की तरफ से हज्जे बदल हो तब भी यहीं हुक्म है जबकि सब वारिस मिल कर ब-खुशी इस की इजाजत देते हों। (अन्वारे मनासिक पेज ५५१)
- 6) हज्जे बदल में चूंकि बहुत से फुकड़ा ने आमिर की इजाजत के साथ तमत्तओं करने की आजाए तो और तमत्तओं कर ले तो अल्लाह तआला से उम्मीद है कि हज कराने वाले का फर्ज़ अदा हो जाएगा। (अहकामे हज पेज १२०, हज़रत मौलाना मुहम्मद शफी साहब (रह.)

बच्चे के हज का सवाब माँ को

हज़रत इन्हे अब्बास (रजी.) से रिवायत है कि रसूल अल्लाह (स.) रोहा(१) में एक कफिले से मिले। आप (स.) ने फरमाया, तुम लोग कौन हो? अर्ज़ किया हम मुसलमान हैं और आप कौन हैं। फरमाया मैं अल्लाह का रसूल हूँ। तो एक औरत ने (कजावे से) बच्चे को ऊंचा कर के दिखाया और अर्ज़ किया “क्या इस के लिए हज है? आप (स.) ने फरमाया, हाँ! है, लैकिन सवाब तुम्होंने मिलेगा”।

मदीना मुनव्वरा का सफर

- नबी करीम(स.) का इशारा है कि जिस ने भी मेरी मस्जिद(मस्जिदे नबवी सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम) में ४० वक्त की नमाज़ें बा जमात अदा की और कोई नमाज़ कज़ा न की, तो वह निफाक और जहन्नुम के आज़ाब से निजात पाएगा।
- मस्जिदे नबवी (सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम) में ४० वक्त बा जमात नमाज़ पढ़ने की इतनी बड़ी फ़ज़ीलत है इसलिए आपका मदीना का कथाम कमअज़कम ६ दिन का होगा। ताकि ८ दिन आप पांचों वक्त की नमाज़ बाजमआत अदा कर सके।
- अगर आप की फ्लाईट हज के अव्याम से बहुत पहले है, तो पहले आप मदीना मुनव्वरा जाएँ। फिर वहाँ ४० वक्त की नमाज़ पढ़कर मक्का मुकर्रमा का सफर करेंगे।
- अगर मक्का मुकर्रमा से पहले मदीना मुनव्वरा का कथाम हो तो, सफर से पहले एहराम पहनने की ज़रूरत नहीं होगी। मदीना मुनव्वरा के कथाम के बाद में आप मदीना मुनव्वरा से मक्का मुकर्रमा के लिए सफर करेंगे तब आपको एहराम पहनना होगा।
- मदीना मुनव्वरा में रिहाईश के लिए सबके दर्जे एक जैसे है मक्का मुकर्रमा की तरह पहला, दुसरा और तीसरा दर्जा वर्गीरा नहीं है।
- मदीना मुनव्वरा में सर्दी का मौसम मक्का मुकर्रमा से ज्यादा शदीद होता है। इसलिए अगर आपका मदीना मुनव्वरा का कथाम सर्दीयों के मौसम में है तो गरम कपड़े जरूर साथ ले जाएं।
- मक्का मुकर्रमा कि बनिस्वत मदीना मुनव्वरा systematic और पुरस्कून शहर है। शहरी शरीफ और इमानदार है। अगर आप हस्सास तबीयत के मालिक हैं तो मदीना मुनव्वरा में आप को हमेशा रहमत व स्कीनत का एहसास होगा।
- मदीना मुनव्वरा भी मक्का मुकर्रमा कि तरह हरम शरीफ है। यहाँ पर भी जानवरों का मारना, डराना, झाड़ियों को या घास तोड़ना, झगड़ा करना, रास्ते पर पड़ी चीज़े उठाना वैरा हराम है।
- हदीस शरीफ के मुताबिक दुनिया में सिर्फ तीन मुकामात की ज़ियारत के लिए सफर किया जा सकता है। १. मस्जिदे हराम (मक्का मुकर्रमा), २. मस्जिदे नबवी(स.), ३. मस्जिदे अक्सा। तो जब आप सफर करें तो नीयत मस्जिदे नबवी(स.) में नमाज़ पढ़ने कि करें।
- एक हदीस के मुताबिक मस्जिदे नबवी की एक नमाज़ का सवाब दुसरी मस्जिदों से पचास हजार गुना ज्यादा है।

हाज़िरी के आदाब:-

- अल्लाह तआला का कुरआन शरीफ में हुक्म है कि :

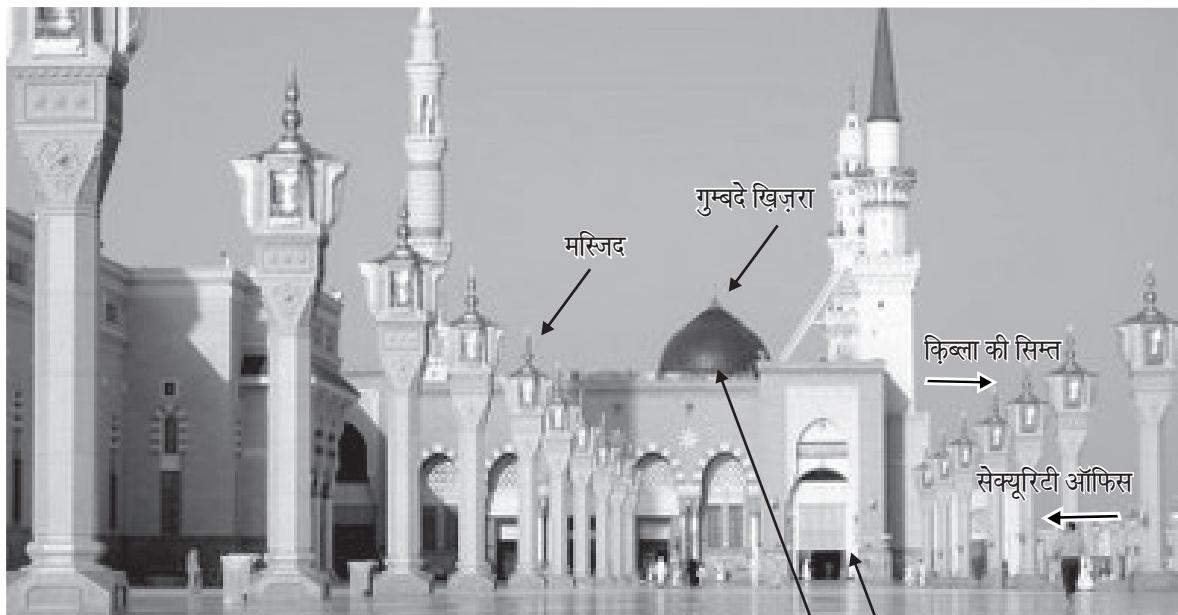
يَأَيُّهَا الْذِينَ آمَنُوا لَا تُرْفُقُوا أَصْوَاتُكُمْ فَوْقَ صُوتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوا إِلَيْكُمْ كَجَهْرٍ بَعْضُكُمْ لِيَعْضُ اُنْ تَجْبَطَ أَعْمَالُكُمْ وَإِنَّمَا لَا شَعْرُونَ
①
سُورَةُ الْأَعْدَاد، آية ٢٣

‘या अस्युहल्लज़ीना आमूनू ला तर फ़ज़ अस्वा-तकुम फौका सौतिन्नबिय्यी वला तज-हरू लहू बिल कौलि क-जहरि बअ-ज़िकुम लि-बअ-ज़िन अन तह-ब-त अअ-मालुकुम व अन्नुम ला तश-उरुन।’

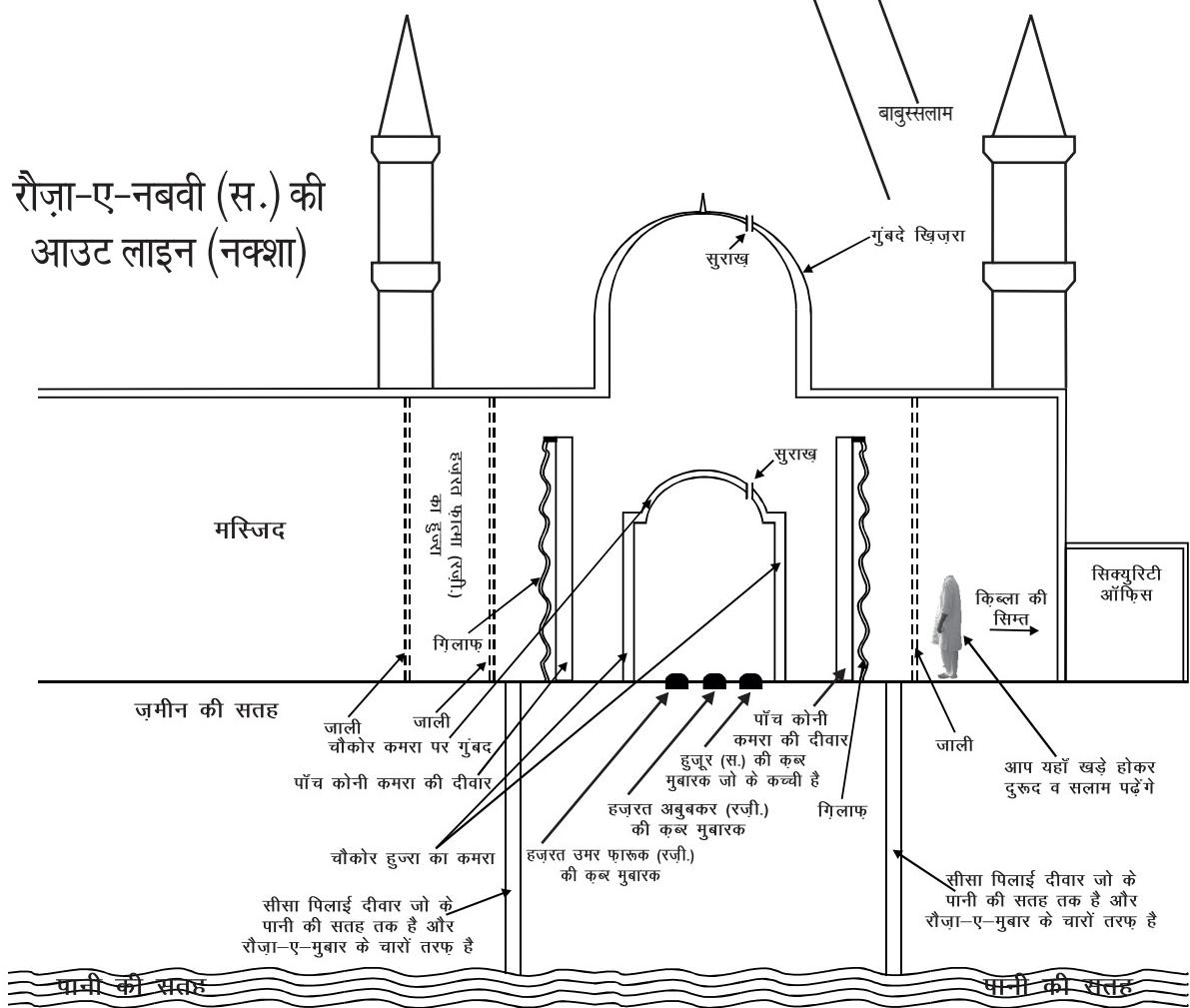
“ऐ इमानवालों! अपनी आवाज़ नबी की आवाज़ से बुलंद न करों और न नबी (स.) के साथ ऊँची आवाज़ से बात किया करों, जिस तरह तुम आपस में एक दुसरे से करते हो। कहीं ऐसा न हो कि तुम्हरे नेक आमाल सब बर्बाद हो जाएं और तुमको खबर भी न हो।” (सुर्हे हुजरात : २)

- मस्जिदे नबवी की हाजिरी किसी भी शहनशाह के दरबार में हाजिरी से बढ़कर हैं। एक बादशाह के दरबार में वे अदबी से सिर्फ जान का खतरा रहता हैं। और नबी (स.) के दरबार में वे अदबी से अखिरत की बरबादी का खतरा रहता है। इसलिए वह लोग जो नबी(स.) की अज़मत को समझते थे, उन्होंने नबी (स.) कि ताज़ीम की वह मिसाल कायम की है कि तारीख में और कहीं ऐसी मिसालें नहीं मिलती। इनकी ताज़ीम की चंद मिसाले नीचे दी गई है।
- हज़रत उमर बिन आस (रज़ी.) ईमान लाने के पहले नबी करीम(स.) और मुसलमानों के सख्त दुश्मन थे। नजाशी के दरबार में आप ही मुसलमानों को तकलीफ पहुँचाने गए थे। आप सख्त जंगजू और इन्तिहाइ ज़हीन थे। हज़रत उमर (रज़ी.) के जमाने में आप (रज़ी.) ही ने मिस्र फतेह किया था। हज़रत उमर बिन आस (रज़ी.) कहते हैं कि ईमान लाने के बाद मैंने कभी नज़र भरकर हुजूर (स.) के देहरे अनवर को नहीं देखा। नबी करीम (स.) के दरबार में अदब से हमेशा सिर झुकाए रखता।
- हज़रत इमाम बुखारी(रह.) की हदीस की किताब कुरआन शरीफ के बाद सबसे ज़्यादा मौअतबर मानी जाती है। हज़रत इमाम बुखारी(रह.) और हज़रों अल्लाह वालों ने मदीना शरीफ की मुकद्दस जमीन पर ऐहतराम की वजह से न कभी जुरे पहने और न कभी सवारी पर सवार हुए।
- तुर्की के हुक्मराह जिनसे धूरोप और एशिया के मुमालिक कांपते थे, जब मस्जिदे नबवी बनाने का इरादा किया, तो पहले हाफ़िज़ मर्द और हाफ़िज़ औरतों को चुना। फिर उनका निकाह किया। फिर उनसे जो औलाद हुईं उन्हें भी हुक्मत की सरपरस्ती में हाफ़िज़ बनाया और साथ-साथ इमारत बनाने का हुनर सिखाया और माहिर कारीगर बनाया। फिर इन माहिर कारीगरों ने दिली ऐहतराम के साथ दरूद व सलाम और कुरआनी आयत का विर्द करते हुए मस्जिदे नबवी की इमारत को तअमीर किया। पथर तराशने का काम शहर से बाहर करते और जब कभी किसी पथर को मज़ीद तराशने की नौबद आती तो फिर उसे मदीना मुनव्वरा से १२ मील दूर ले जाकर तराशा जाता है कि नबी करीम(स.) को आवाज़ से तकलीफ न हो।
- मस्जिदे नबवी (स.) एअर कंडीशन्ड हैं। मगर आज भी इसकी एअर कंडीशन्ड मैं नहीं है बल्कि मस्जिदे नबवी (स.) से ७ किलो मीटर दूर हैं और वह मशीनें इतनी दूर से मस्जिद को पाईपलाइन के जरिए ठंडा करती हैं।
- एक बार एक बुजूर्ग ने मदीना के कथाम के वक्त मदीना के दही की शिकायत की, कि वहुत खट्टी होती है। रात को एक बुजूर्ग हस्ती ने उनको तबी किया कि अगर आपको यहाँ की दही पसंद नहीं हैं, तो मदीना से निकल जाओ।
- एक बार मैं मस्जिदे नबवी (स.) में जमात से बहुत पहले पहुँच गया। नमाज़ी कम थे इसलिए मैं पलथी मारकर बैठ गया। जमात का वक्त करीब आया तो मस्जिद भर गई। एक हिंदुस्तानी भाई मुझे हिंदुस्तानी पहचानकर मेरे करीब आए और दरखास्त की, कि अगर मैं दो ज़ानों बैठ जाऊं, तो उनके बैठने

(बाकी पेज ८१ पर)



रौज़ा-ए-नबवी (स.) की
आउट लाइन (नक्शा)



दरबारे रिसालत कि पहली हाज़री

नबी करीम(स.) की अपनी उम्मत से मोहब्बतः-

- मौहसीन इन्सानीयत (स.) जो इस मस्जिदे नबवी में आराम फरमां है, वह आपसे बेइन्तिहा मोहब्बत करते हैं और इसकी गवाही कुरआन शरीफ इन अल्फाज़ में देता है:

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِمْ

عَيْنُهُ حَرِيصٌ عَلَيْهِمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١٨﴾ (سورة توبٰ، آية ١٨)

“ल-कद जा-अकुम रसूलुम मिन अन्फुसिकुम अज़ीजुन अलैहि मा अनित्तुम हरीसुन अलैकुम बिल मुअ्झ-मिनाना रऊफुरहीमा”

“बेशक तुम्हारे पास अल्लाह के पैगम्बर आए हैं, जो तुम ही में से हैं। उन पर वह चीज़ें गिराँ गुज़रती हैं जिस से तुम को तकलीफ़ पहुँचे। वह तुम्हारी भलाई का हरीस है। और इमान वालों पर बड़ा शफ़्क़त करने वाला है।”

(सुरहे तौबा आयत ٩٢)

- नबी करीम(स.) ने फरमाया: “मुसलमानों में जिसका कोई वारिस नहीं है उसका मैं वारिस हूँ और अगर वह अपना कर्ज़ चुकाए बगैर मर जाए, तो मैं उसका कर्ज़ चुकाऊंगा।” (बुखारी शरीफ)
- एक हवीस का मफ़हूम है कि “ऐ लोगो! मैं तुम लोगों को कमर से पकड़ पकड़ कर जहन्म के घड़े से दूर लिए जाता हूँ और तुम हो कि उसकी तरफ लपकते रहते हो।” (मुस्लिम)
- एक हवीस का मफ़हूम है कि एक मोमिन की जान पर खुद उस मोमीन से ज्यादा मेरा (नबी करीम (स.) का) हक़ है। (मिशकात)
- आप पर अल्लाह का कितना बड़ा एहसान व करम है कि उसने आप को अपने घर (खाने काबा) के दीवार का शर्फ बख्शा और हज का फरीज़ा अदा करने कि तौफ़िक अता फरमाई। इसके बाद अल्लाह तआता का मजीद एहसान व करम हुआ कि उसने आप को नबी करीम (स.) की मस्जिद में नमाज़ पढ़ने और आप(स.) के रोज़े मुबारक के स्वरूप खड़े होकर दरुल व सलाम पढ़ने की तौफ़िक अदा फरमाई तो अल्लाह का शुक अदा करें और दिल की गहराईयों से अदब और एहतराम के साथ मस्जिदे नबवी की तरफ कदम उठाएं।

मस्जिद में दाखलता:-

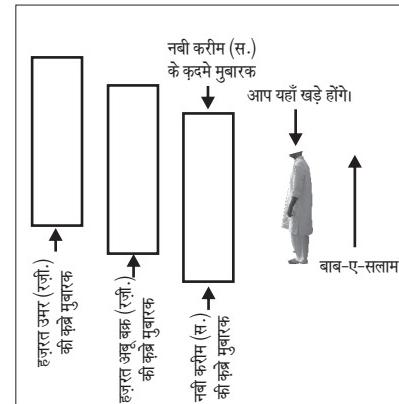
- 9) अच्छी तरह से नहा धो कर, नया कपड़ा पहन लें। खुशबू लगा लें और दुरुस्त व सलाम पढ़ते हुए मस्जिदे नबवी की तरफ चलें।
- 2) मस्जिद में दाखिल होते वक्त दाहिना कदम मस्जिद में रखें और ये दुआ पढ़ें
بِسْمِ اللَّهِ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ أَللَّهُمَّ اقْبِلْ لِيْ إِنَّمَا أَنْتَ مَوْلَايَ
 “बिस्मल्लाहि वस्सलातु वस्सलमु अला रसूलिल्लाहि।
 अल्लाहुम्मक-तह-ली अब्बा-ब-रह-मतिका।”
- तर्जुमा : अल्लाह का नाम लेकर दाखिल होता हूँ और रसूल अल्लाह (स.) पर दुरुस्त व सलाम भेजता हूँ। ऐ मेरे रब, मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दीजिए।
- 3) अगर जमाअत का वक्त न हो तो दो रक्खत तहीयतुल्मस्जिद पढ़ लें और अगर जमात का वक्त हो, तो पहले जमात से नमाज़ अदा कर लें।
- 4) रौज़ा मुबारक, मस्जिद में किल्ला की तरफ; (जुनूब की सिम्मा) है और रौज़ा

मुबारक की जियारत के लिए आप को मगरिब की सिम्मा से दरवाज़ा नंबर एक बायुस्लाम से दाखिल होना होगा।

- 5) इतेहाई अदब के साथ आहिस्ता आहिस्ता दुरुस्त व सलाम पढ़ते हुए आगे बढ़ें। यह अदब का मुकाम है। आवाज़ नीची रखें, किसी से गैर ज़रूरी बात चीत से परहेज़ करें और पूरा ध्यान दोनों जहाँ के शहिंशाह के सामने अपनी हाजिरी पर रखें।

- 6) रौज़ा मुबारक के सामने तीन जालियाँ हैं। मगर आप (स.), हज़रत अबुबक्र सिद्दीक (रज़ी.) और हज़रत उमर फारूक (रज़ी.) आप तीनों हज़रत दरम्यानी जाती के पीछे ही आराम फरमा हैं। अपने रौज़ा मुबारक में हुजूर(स.) का कदम मशिरक की तरफ, सर मगरिब की तरफ और चेहरा अनवर का रुख किल्ला की तरफ है (जुनूब की तरफ)। जब आप रौज़े मुबारक के सामने खड़े होंगे तो आप की पीठ किल्ला की तरफ होगी और आप का रुख हुजूर (स.) की चेहरा अनवर की तरफ होगा।

आप के पीछे (शुमाल की तरफ) और कांधों की बराबरी में हज़रत अबुबक्र सिद्दीक (रज़ी.) आराम फरमा हैं और हज़रत अबुबक्र सिद्दीक (रज़ी.) के पीछे (शुमाल की तरफ) और कांधों की बराबरी में हज़रत उमर फारूक (रज़ी.) आराम फरमा हैं।



हुजूर (स.) पर दरुस्त व सलामः-

- 7) दरम्यानी जाती में तीन गोल सूराख़ हैं। पहले सूराख़ के सामने आप (स.) का चेहरा अनवर है। यहाँ पहुँच कर रुक जाएं और इस तरह सलाम व सलाम पढ़ें।

الصلوة والسلام عليك يا رسول الله
الصلوة والسلام عليك يابني الله
الصلوة والسلام عليك يا حبيب الله
الصلوة والسلام عليك يا شير خلق الله
الصلوة والسلام عليك يا خاتم الانبياء
الصلوة والسلام عليك يا سيد
الانبياء والمرسلين ورحمة الله وبركاته.

अस्सलातु वस्सलामु अलैका या रसूलिल्लाह
 अस्सलातु वस्सलामु अलैका या नबीयल्लाह
 अस्सलातु वस्सलामु अलैका या हबीबल्लाह

अस्सलातु वस्सलामु अलैका या खे-र-खल्किल्लाह
 अस्सलातु वस्सलामु अलैका या खा-तमल अम्बिया
 अस्सलातु वस्सलामु अलैका या सम्यदल अम्बियाए वल मुस्लीन व रह-मतुल्लाहि
 व ब-र-कातुहू
 रहमत और सलामती हो तुझपर ऐ अल्लाह के रसुल (स.)
 रहमत और सलामती हो तुझपर ऐ अल्लाह के नबी (स.)
 दस्तुर और सलामती हो तुझपर ऐ अल्लाह के हबीब (स.)
 दस्तुर और सलामती हो तुझपर ऐ बेहतर अल्लाह कि मखतुफ
 दस्तुर और सलामती हो तुझपर ऐ खातम-उल-अंबीया (आखरी नबी)
 दस्तुर और सलामती हो तुझपर ऐ नवियों के सरदार
 और जेहु हुए पैगंबरों को अल्लाह कि रहमत और उसकी बरकत

हुज़रत अबु बक्र सिद्दीक (रजी.) पर दस्तुर और सलामः

- ८) हुज़र (स.) पर दस्तुर व सलाम पढ़ने के बाद एक फुट दाहीनी तरफ बढ़ कर दुसरे सूराख के सामने रुक जाएँ। इस सूराख के सामने हुज़रत अबुबक्र सिद्दीक (रजी.) का चेहरा मुबारक है। यहाँ इस तरह से सलाम पढ़ें।

**السلام عليك يا أبي بكر الصديق
 السلام عليك يا خليفة رسول الله
 السلام عليك يا وزير رسول الله
 السلام عليك يا صاحب رسول الله في الغار ورحمة الله وبركاته.**

अस्सलामु अलैका या अबा बकिरनिस्सिद्दीक
 अस्सलामु अलैका या खली-फता रसूलिल्लाह
 अस्सलामु अलैका या वज़ी-र-रसूलिल्लाह
 अस्सलामु अलैका या साहि-ब-रसूलिल्लाहि फील गारी व रह-मतुल्लाहि
 व ब-र-कातुहू।
 जनाब अबुबक्र सिद्दीक (रजी.) आप पर सलाम हो,
 रसूल अल्लाह (स.) के खलीफा आप पर सलाम हो,
 रसूल अल्लाह (स.) के वज़ीर आप पर सलाम हो,
 रसूल अल्लाह (स.) के गार के साथी आप पर सलाम, अल्लाह की रहमतें
 और बरकतें हों।

हुज़रत उमर फारूक (रजी.) पर दस्तुर व सलामः-

- ९) हुज़रत अबुबक्र सिद्दीक (रजी.) पर सलाम पढ़ने के बाद एक फुट दाहीनी तरफ बढ़ें और तीसरे सूराख के सामने रुक जाएँ। इस सूराख के सामने हुज़रत उमर फारूक (रजी.) का चेहरा मुबारक है। हुज़रत उमर फारूक (रजी.) पर इस तरह सलाम पढ़ें।

**السلام عليك يا عمر بن الخطاب
 السلام عليك يا عز اسلام والمسلمين
 السلام عليك يا وزير رسول الله
 السلام عليك يا امير المؤمنين
 والارامل والايتام ورحمة الله وبركاته.**

अस्सलामु अलैका या उ-म-रञ्जिल खत्ताब
 अस्सलामु अलैका या इज़ज़ल इस्लामि वल मुस्लिमीन
 अस्सलामु अलैका या वज़ी-र-रसूलिल्लाह
 अस्सलामु अलैका या अमीरूल मुभ्य-मिनीना वल अरमिलि वल जैतामि व
 रह-मतुल्लाहि व ब-र-कातुहू।
 आप पर सलाम हो, ऐ उमर बिन अल्खत्ताब (रजी.),
 आप पर सलाम हो, ऐ मुसलमानों के अमीर,

आप पर सलाम हो, ऐ इस्लाम और मुसलमानों की आबरू बढ़ाने वाले,
 आप पर सलाम हो, ऐ फ़कीरों, ज़ईफ़ों, बेवाओं और यतीमों की दस्तगीरी
 और मदद करने वाले और अल्लाह की रहमतें और बरकतें हों।

- १०) हुज़र (स.) का इर्शाद है कि जब कोई मुझ पर दुरुद व सलाम भेजता है तो अल्लाह तआला मेरी रुह को मेरे जिस्म में वापस भेज देता है और मैं उस का जवाब देता हूँ। (मिश्कात)

आप (स.) का इर्शाद है कि अल्लाह तआला ने एक फरिश्ता मेरी कब्र पर मुकर्र कर रखा है। दुनिया में जब कोई मुझ पर दुरुद व सलाम पढ़ता है तो वह फरिश्ता मुझे उस की ख़बर करता रहता है।

(तरगीब-रावी हज़रत हसन (रजी.))

आप (स.) का इर्शाद है कि फरिश्ते दुनिया में सियाहत करते रहते हैं, और दुनिया में जो कोई भी मुझ पर दस्तुर व सलाम पढ़ता है वह मुझ तक पहुँचाते रहते हैं। -(रावी हज़रत आली (रजी.))

इस लिए आप कहीं से भी हुज़र (स.) पर दस्तुर व सलाम भेजेंगे वह हुज़र (स.) को ज़ेरूर पहुँचेगा और आप (स.) उस का जवाब देंगे। इस लिए राजा मुबारक के सामने सकुरिटी गार्ड और लोगों के हुज़ुम को हटा कर जाती छूने, चूमने, रुकुभ की तरह झुकने और हर तरह की बेअदबी से बचें।

▼ ▼ ▼ ▼ ▼ ▼ ▼

पेज ६९ का बक़िया....मदीना मुनव्वरा के तारीखी मुकामात

अपने गाईड को इन मुकामात की सैर करने का ज़रूर इसरार करें।

- १) **खाके शिफ़ा:-** इस मिट्टी से हुज़र (स.) ने इलाज का तरीका बताया था।

- २) **कबीला बनी नज़र के मकानात:-** यह हुज़र (स.) कि वालिदा का कबीला था।

- ३) **बागे समून:-** यह उस यहुदी का बाग है जिसमें हज़रत अली (रजी.) काम करते थे।

- ४) **बागे सलमान फारसी:-** इस बाग को हुज़र (स.) ने हज़रत सलमान फारसी (रजी.) को गुलामी से आज़ाद कराने के लिए अपने हाथों से लगाया था।

- ५) **बैटे खातम:-** इस कुए में हुज़र (स.) कि अंगुठी हज़रत उस्मान (रजी.) की उंगली से निकलकर कुंए में गिर गई थी और बहुत तलाश के बाद भी न मिल सकी।

- ६) **बैटे उत्तमान:-** इस कुए को हज़रत उस्मान (रजी.) ने खरीदकर मुसलमानों के लिए वक्फ कर दिया था।

- ७) **कबीले बनु सलमा कब्रस्तान:-** इस कब्रस्तान में हज़रत जिब्रील (अ.स.) ने अल्लाह के हुक्म से मुर्दों को ज़िदा करके हुज़र (स.) के सामने गुफ्तगू की थी।

मस्जिदे सबक, कबीले सलमा, मस्जिदे बुखारी, कबीला बनु जाफ़र, कबीला ऐर, जबलै राया इन तारीखे मुकामात के बारे में गाईड से दरयापत्त करें।

▼ ▼ ▼ ▼ ▼ ▼ ▼

हज़रत जाबीर (रजी.) कहते हैं कि रसुले खुदा (स.) ने फर्माया: “सलाम कलाम से पहले हैं।” (यानी मुलाकात के ब़क्त पहले सलाम करों फिर बाताचित करों।) (तिरमिज़ी)

आप (स.) ने यह भी फर्माया कि, “पहले सलाम करने वाला तक्कबुर से पाक है” (बेहकी)

नबी-ए-करीम (स.) का ईसार और हमारी जिम्मेदारियां

- नबी करीम (स.) की हमसे मोहब्बत की रिवायतें हम ने पिछले सफ़हात में पढ़े। आप (स.) ने हमारे लिए जो तकलीफ बर्दाश्त कीं और कुर्बानियां दीं, उस की भी मुख्यसर तफ़सील पढ़ते हैं।
- नुबूवत के वक्त नबी करीम (स.) के पास पच्चीस हज़ार दीनार थे। (जो कि पांच हज़ार पांच सौ तीन सोना या तकरीबन जौ करोड़ रुपयों के बैंक बैलेंस के बराबर है) और अच्छी तरह चलता हुआ मुनाफा बख्ख कारेबार था। (एक हज़ार साढ़े तीन आना के बराबर है और सोलह आना का एक तौला होता है) यह सारी रकम जो कि आप (स.) ने कारोबार से कमाया था, मुसलमानों के लिए खर्च कर दिया। आप (स.) की वफ़ात के बहुत घर में चिराग जलाने के लिए भी तेल न था। माँ आयशा (रज़ी.) ने इंतकाल की रात एक पड़ोसी के घाँस से कर्ज़ लेकर चिराग रौशन किया था।
- नुबूवत के चौथे साल नबी करीम (स.) ने जैसे ही खाना काअब्बा की सिहन में तौहीद का ऐलान किया कुफ़्फ़ारे कौरैश आप (स.) पर टूट पड़े और आप (स.) को बचाने की कोशिश में हज़रत खदीजा (रज़ी.) के पहले शैहर के बड़े लड़के हज़रत हारिस बिन अबी हाले (रज़ी.) शहीद हो गये।
- अबु लहब और उक्बा बिन अबी मुअ़ीत, नबी करीम (स.) के पड़ोसी थे। एक दीवार का इस के घर से मिलती और उक दीवार उस के घर से। ये दोनों कमीने मुसलसल आप (स.) के घर में गंदगी फेंकते और दरवाजे पर गंदगी डालते।
- नुबूवत के पहले नबी करीम स. अ. की साहब ज़ादियां हज़रत रूक्या और हज़रत उम्मे कुलसुम (रज़ी.), अबु लहब के बेटों उत्ता और उत्तैबा के निकाह में थीं। (खुँसती नहीं हुई थी) अरब के शरीफ धरानों में तलाक बड़ी बे-इज़्ज़ती की बात समझी जाती थी। नबी करीम (स.) को ज़हनी अज़ीयत देने के लिए अबु लहब ने बेटों पर दबाव डालकर दोनों को तलाक देने पर मज़बूर कर दिया। एक मौके पर कमीने उत्ता ने नबी करीम (स.) के मुँह पर थूका और गिरेहबान पकड़ कर ऐसी गुस्ताखी की कि नबी करीम (स.) की जुबान से इस के लिए बद्रुआ निकल गई। इस तलाक के बाद तकरीबन दस साल तक हज़रत उम्मे कुलसुम (रज़ी.) बिन आयी अपने घर बैठी रहीं।
- नुबूवत के पांचवें साल एक बार आप (स.) हरम शरीफ में नमाज पढ़ रहे थे। जब आप (स.) सिजदे में गये तो आप (स.) के पड़ोसी उक्बा बिन अबी मंअ़ीत ने आप स.अ. की गर्दन मुबारक पर ऊंट की ओझ़झी (आंत) रख दी जो इन्हीं वज़नी थी कि आप (स.) अपनी गर्दन न उठा सके। जब आप (स.) के घर वालों को खबर हुआ तो बीबी फ़त्मा (रज़ी.) दौड़ी दौड़ी आर्यी और गंदगी को गर्दन से उतारा। इस मंज़ुर को देखकर कुफ़्फ़ार हँसते और मज़ाक उड़ाते रहे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद (रज़ी.) कहते हैं कि मैं गुलाम ओर मज़बूर था और आप (स.) की मदद न कर सका। आप (स.) की इस हालत पर मुझे बेहद तकलीफ हुई।
- एक बार नबी करीम (स.) हरम शरीफ में नमाज पढ़ रहे थे। नमाज की हालत में ही उत्ता बिन अबी मुअ़ीत आया और आप (स.) की गर्दन में चादर फ़ंदा डाल कर पेच देने लगा। गला मुबारक घुटने से आप (स.) की आँखें निकल पड़ी। हज़रत अबु बकर (रज़ी.) ने बीच में पड़कर आप (स.) को फ़दे से आज़ाद कराया।
- हज के क्याम में मिना में लोगों का बड़ा मज़म़ा (भीड़) होता था और आप(स.) अक्सर उन में तब्लीग के लिए तशरीफ ले जाते। ऐसे मुवाकओं पर अबु लहब भी पीछे चलता और लोगों से कहता कि यह शख्स लात व उज्ज़ा को छोड़ने की बात देता है। तुम इस की बात हरिंज़ न मानो, न ही इसे सुनों नुबूवत के तेहरवें साल भी आप (स.) मिना तशरीफ ले गये और बनी अमिर सअस़अ (कबीला) को दावते हक दी, तो उन्होंने आप (स.) की हिमायत की हामी भरी, मगर तब उनका सरदार बहरा बिन प्रास कैशरी आया तो आप (स.) से बड़ी बेस्थी से मिला और कहा, “जाइये और अपनी कौम से मिल जाइये”। अगर आप (स.) मेरी कौम की अमान मे न होते, तो मैं आप स.अ. का सिर तन से जुदा कर देता”। ये सुन कर हुजूर अकरम (स.) उठ खड़े हुए और अपनी ऊंटनी पर सवार हो गये इसके बाद उस बरब़त ने आप स.अ. की ऊंटनी के पेट पर इस ज़ोर से डंडा मारा। जिससे वह उछल पड़ी और आप (स.) ऊंटनी की पीठ पर से ज़मीन पर आ गिरे।
- एक सहाबी कहते हैं, कि इस्लाम करने से पहले मैंने देखा कि एक खूबसूरत नौजवान है और लोगों को दावत देता फिर रहा है। सुबह से चल रहा है और कलमे की तरफ बुला रहा है। मैंने पूछा, “यह कौन है?” किसी ने कहा यह कुरैश का एक नौजवान मुहम्मद (स.) है, जो बेदीन हो गया है। सुबह से वह नौजवान दावत देता रहा, यहां तक कि सुरज सिर पर आ गया। इतने में एक आदमी ने आकर उसके मुँह पर थूक दिया, दूसरे ने गिरहबान फाड़ दिया, तीसरे ने सिर पर मिट्टी डाल दी और चौथे ने चेहरे अनवर पर थप्पड़ मारा, लेकिन खूबसूरत नौजवान की ज़बान से बद्रुआ का एक लफ़्ज़ न निकला। इतने में एक लड़की ज़ारों कतार रोती हुई पानी का ध्याला लेकर आयी। लड़की को रोता हुआ देखकर आप (स.) की आंखें ज़रा नम हुईं और कहा, “बेटी अपने बाप का ग़म न कर तेरे बाप की अल्लाह हिफ़ाज़त कर रहा है, और मेरा कलमा बुनंद होगा। उन सहाबी (रज़ी.) ने किसी से पूछा, “यह लड़की कौन है?” किसी ने कहा इसकी बेटी जैनब (रज़ी.) है। (बसीरत अफरोज वाक़आत: सफ़े नंबर २२)
- हुजूर करीम (स.) की बड़ी साहबजादी हज़रत जैनब (रज़ी.) जब मक्का से मदीना के लिए रवाना हुयीं, तो रास्ते में मुशिरकों ने धेर लिया। उकरमा बिन अबु जहल और उसके साथियों ने आप (स.) के ऊंट को ज़ख्मी कर दिया जिससे आप ऊंट की पीठ से ज़मीन पर आ गिरीं और ज़ाज़े हो गये। सिर में चोट लगी, बहुत सा खून बह गया, और इसी ज़ख्म में कई साल बाद इंतकाल फ़रमाया।
- नुबूवत के दसवें साल आप (स.) ने तायफ का सफ़र किया ताके वहां भी इस्लाम की रोशनी फैलायें। वहां के निवासी सरदार अद्विद्या लैल मसउद और हबीब का जवाब गुस्तखाना और तकलीफ़दह था, न वह खुद सुनना चाहते थे और न यह चाहते थे, कि आप (स.) इनकी कौम में तब्लीग करें। इसलिए शहर के बदमाश और गुंडों को आप (स.) के पीछे लगा दिया कि आप जहां जायें आप की हंसी उड़ायें और आप (स.) जिधर से भी गुज़रें। आप पर पथर फेंके आप (स.) दस या बीस दिन तक ये मुसीबतें झेलते और सब्र करते रहे। आखिरी दिन उन्होंने जुल्म की हद कर दी। वह अपने हाथों में पथर ले कर सफ़-ब-सफ़ खड़े हो गये। आप (स.) कदम उठाते और ज़मीन पर रखते तो वह बद-बख्त आप (स.) के टज्ज़ों पर पथर मारते। चूंकि कल का इरादा न था सिर्फ़ अज़ीयत देनी थी इसलिए तीन मील तक वह आप (स.) का इसी

तरह पीछा करते रहे और पत्थर बरसाते रहे, भागते-भागते जब आप (स.) थक कर और ज़ख्मों से चूर होकर बैठ जाते तो फिर वह गुंडे आप (स.) का बाजू पकड़कर खड़ा कर देते, गालियां देते, तालियां बजाते, आवाज़ कसते और वलने पर मजबूर करते और फिर पत्थर की बारिश करते। पत्थरों से इतनी चोटें आर्यों कि आप (स.) के नालेन (जूता) मुबारक खून से भर गया। जिसम ज़ख्मों से चूर हो गया और फिर आप (स.) बेहोश होकर गिर पड़े। हज़रत जैद (रजी.) आप (स.) को अपनी पीठ पर उठा कर आबादी से बाहर लाये।

- मक्का में तकरीबन दस साल तक हुजूर (स.) तकालीफ़ उठाते, जलील हरकतें करते, उबाशों के झण्डे आप (स.) के पीछे आवाज़ कसते, रास्ते में गिलाज़त ऊपर डाली जाती, रातों में गुज़र गाह में काटे बिछाये जाते, गालियों से तवाज़ों की जाती, सिरे अकदस पर ख़ाक फेंकी जाती। अबु जहल ने खुद एक बार आप (स.) को पत्थर से हलाक करने की कोशिश कर डाली। इस तरह ऐसी हज़ारों मुसीबतें आप (स.) बर्दाश्त करते रहे। दौरे नुबूवत के तेहरवे साल कुरैश के चालीस दरिन्दों ने आप (स.) का शहीद करने के इरादे से रात भर आप (स.) के घर को धेरे रखा। मगर आप (स.) ब-हिफाज़त मदीना हिजरत कर गये।
- ग़ाज़-ए-अहद के दिन अब्दुल्लाह इब्न कुमैय्या ने इस ज़ोर एक हमला किया कि आप (स.) का रुख़सार मुबारक ज़ख्मी हो गया। उत्ता अबी वकास ने पत्थर फेंक कर मारा जिससे नीचे के दंदाने मुबारक शहीद हो गये और होंठ कट गया। अब्दुल्लाह बिन शहाब ज़ौहरी ने पत्थर मारकर पैशानी लहूलुहान कर दिया। हज़रत अबु उबैद इब्न जर्राह ने ‘खुद’ के एक हल्के को दाँतों से पकड़कर इस ज़ोर का खींचा कि ज बवह रुख़सारे मुबारक से निकला तो हज़रत अबु उबैद इब्न जर्राह का दांत भी टूट गया और हज़रत अबु उबैद (रजी.) पीठ के बल ज़मीन पर गिर पड़े। इसी तरह जब दूसरा हल्का दांत से पकड़कर खींचा तो इतना ज़ोर से लगाना पड़ा कि हल्का निकालते वक्त दूसरा दांत भी टूट गया। हुजूर (स.) के ज़ख्मों से खून किसी तरह बंद न होता था। ज़ख्मी हालत में कुछ दूर चले ताकि महफूज़ मकाम पर मुंतकिल हो जायें। कि अबु अमीर फ़ासिक के खोदे हुए गड्ढे से गिर गये। जिसे उसने पत्तों से ढांक रखा था। हज़रत अली (रजी.) और हज़रत तल्हा बिन अब्दुल्लाह (रजी.) की कदद से बड़ी मुश्किल से गड्ढे से निकल कर ऊँचाई पर तशरीफ़ ले गये।
- मदीना मुनव्वरा में भी आप (स.) और आप (स.) के घर वालों को जो भी माले ग़नीमत मिलता सब ग़रीबों पर ख़र्च कर देते। तीन तीन माह घर में चूल्हा जलता, तीन तीन दिन फ़ाके होते। रोटी खेते भी तो ‘जौ’ की। हर इंसानों को जहन्नम से बचान की इतनी फ़िक्र थी कि रात रात भर रो कर दुआएं मांगा करते और इस क़दर मशक्त उठाते कि वह अल्लाह जिस ने आप स.अ. को पैग़म्बर बनाकर लोगों तक दीन पहुंचाने की ज़िम्मेदारी थी थी, उसे भी कहना पड़ा कि :

﴿كَلَّكَ بِأَخْرَى نَفْسٍ كَلَّا يُكُوٰنُ مُؤْمِنٌ﴾ (سورة شوراء، آيات: ٣-٤)

“ल-अल्ल-क बाखिउन नफ-सका अल्ला यकून मुअ-मिनीन।”
(आप इस तरह मशक्त क्यों उठाते हो?) ऐ पैग़म्बर (स.)! शायद तुम इस रंज से कि यह लोग ईमान नहीं लाते। अपने आप को हलाक कर लोगे!

(कुराने करीम, सूरह शोभ्रा, आयत: ३)

- वह जिस के सदके में अल्लाह तज़्लीला ने इस कायनात को ज़ीनत बख्खी। वह जिसका हम पर हमसे ज़्यादा हक है। वह शफीक हजे अत्तिदा के मौके पर जब आप (स.) ने अपने सवा लाख सहाबा (रजी.) से पूछा कि क्या मैंने तुम तक अल्लाह तज़्लीला के फरमान पहुंचा दिया और अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया तो सब ने एक जुबान हो कर कहा कि बेशक हम गवाह हैं कि आप (स.) ने अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया।

● नबी करीम (स.) ने तो अपनी सारी दौलत और आराम व सुकून और सारी ज़िन्दगी हम तक दीन पहुंचाने के लिए कुर्बान कर दी और अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया। अब बारी हमारी है कि अपना फ़र्ज़ अदा करें। नबी करीम (स.) का इशारा है कि कोई शब्द स उस वक्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसे खुद उस की जान से ज़्यादा अ़ज़ीज़ न हो जाऊं। (मुस्लिम-बुखरी)

- जान से ज़्यादा अ़ज़ीज़ होने का क्या मतलब है? कि इंसान को नबी करीम (स.) के हुक्म के खिलाफ़ कुछ करने से ज़्यादा आसान जान देना लगे। क्या आप जानते हैं कि नबी करीम (स.) ने हमें क्या हुक्म दिया है?

यह किताब हज के मौजूदा पर है, इस लिए हम इस में नबी करीम (स.) के सारे इशारात शामिल नहीं कर सकते। नबी करीम (स.) ने अपने अधिकारी हज के मौके पर अ़स्फ़ा के मैदान में अपने उम्मियों को जो हुक्म दिया था सिर्फ़ वही यहाँनकल करते हैं। आप (स.) ने इशारा फ़रमाया:

“सारे इंसान बराबर हैं। न कोई किसी से बड़ा है न छोटा। अगर कोई किसी से ज़्यादा इज़्जत दार है तो वह तकवा के बुनियाद पर है।

“सारे मुसलमान आपस में भाई-भाई हैं।

“मुसलमानों की जान-व-माल और इज़्जत एक दूसरे पर हराम है। कोई एक दूसरे को न जान से मारे, न माल बर्बाद करे, न बेइज्जत करें।

“औरतों से बेहतर सलूक करो। तुम मैं बेहतर वह है जो उसकी बीवी के लिए सब से बेहतर है। सूद हराम है। न कोई सूद ले, न दो।”

“अल्लाह तज़्लील की किताब और मेरी सुन्नत को मज़बूती से पकड़े रहना। अगर तुम ऐसा करोगे तो कभी गुमराह न होगे। जिन लोगों तक मेरी बात पहुंची है वह उन लोगों तक पहुंचा दें, जिन तक नहीं पहुंची। चाहे वह एक ही आयत क्यों न हो। नबी करीम (स.) ने फ़रमाया कि, ऐ मुआसरूलमुस्लिमीन तीन बांडे सीने को पाक रखती हैं। (१) अमाल में इख्लास (२) दीनी भाईयों की ख़ेरख्वाही (३) मुसलमानों का आपस में इत्तेहाद।

क्या हम उन में से एक भी नहीं इशारे नबुवी पर अ़मल करते हैं? क्या हम मुस्तकबिल में आप (स.) के दूसरे अहकामत पर अ़मल करेंगे।

- एक समझदार के लिए हर दिन ज़िन्दगी की नई शुरूआत होती है। इस हज के मुबारक सफर में जब अल्लाह तज़्लीला इंसानों को गुनाहों से बिल्कुल पाक-व-साफ़ कर देता है, हम फिर से अपनी रुहानी ज़िन्दगी की शुरूआत करें। हम और आप अपने शफीक और करीम नबी (स.) के रौज़-मुबारक के सामने यह अहद करें कि जो हो चुका सो हो चुका। इन्हा अल्लाह नई ज़िन्दगी में आप (स.) के एक बार भी हुक्म की खिलाफ़ वर्जी नहीं करेंगे, और पूरे खुलूस के साथ सच्चा पक्का मुसलमान बनने की कोशिश करेंगे।

- हर पीर और जुमेरात के दिन उम्मत के अभ्यास नबी करीम (स.) के सामने पेश किये जाते हैं। हम और आप उस अ़हद के बाद जो कुछ करेंगे वह नबी करीम (स.) के सामने हर हफ्ता पेश होंगी अगर हम आप (स.) के इशारात की खिलाफ़ वर्जी की तो शफीक और करीम (स.) को उससे बड़ी सख्त तकलीफ़ होंगी, और हमारा शुमार भी सच्चे और पक्के मुसलमानों में नहीं होगा बल्कि उन मुशिरकीन और मुनाफ़ीकीन की तरह के लोगों में होगा जो ज़िन्दगी भर नबी करीम (स.) को सख्त तकलीफ़ पहुंचाते रहे, और अब हम और आप (स.) की आराम गाह (कब्रे अनवर) में भी तकलीफ़ पहुंचा रहे हैं।

इस लिए आईये! हम वतन वापसी के सफर के साथ एक नई ज़िन्दगी की शुरूआत करें जो पूरी तरह नबी करीम (स.) की सून्नत के मुताबिक हो।

अल्लाह तज़्लीला हमें, आप को और सारी दुनिया के मुसलमानों को दुनिया और आधिकार में सुर्ख़रूह और कामयाब फ़रमाये। आमीन !!



हज से मुतअल्लिक चन्द मशहूर ग़लतियाँ

- नबी करीम (स.) ने दौलत होने के बावजूद हज न करने वालों से सख्त नारायणी का इज़हार किया है। बहुत सारे लोग बहाना करते हैं कि कारोबार संभालने वाला कोई नहीं है। बच्चे छोटे हैं वैग्रह वैग्रह आज कल कुछ दूर वाले सिर्फ सात से दस दिन में हज करते हैं। इन्हें सारे वसाइल और पैसा होने के बावजूद हज न करना एक बहुत बड़ी ग़लती है।
- कुछ लोगों के पास पैसा नहीं होता, मगर फिर भी ह करना चाहते हैं। वह इसके लिए लोगों से पैसा मांगते फिरते हैं। बहुत ग़लती और लोगों को तकलीफ देने का काम है। जब आप के पास पैसा होगा तब ही हज फ़र्ज होगा। इसके बाद ही हज कीजिएं चंद मांग कर लोगों को परेशान मत कीजिए।
- ऐसा खानदान जो पहले गरीब था फिर बच्चे बड़े हुए और रूपया कमाने लगे और हज हो गया। तो हज उस पर फ़र्ज होता है जो रूपया कमाता है। अगर लड़का कमाता है तो हज लड़के पर पहले फ़र्ज होगा। अगर ऐसा लड़का हज सिर्फ माँ-बाप को कराता है और खुद हज किए बैग्रह मर जाता है तो गुनाहगार होगा। माँ-बाप को हज ज़खर कराएं मगर हज फ़र्ज होते ही खुद भी हज करें वरना गुनाहगार होंगे।
- नबी करीम (स.) की एक हवीश का मफ्हूम है कि आने वाले ज़माने में लोग तीन वजह से हज करेंगे। अपीर तफ़रीह के लिए हज करेंगे, गरीब भीख मांग कर हज करेंगे और दरम्यानी तबके के लोग तिजारत के लिए। इन तीनों वजहों से हज करना बहुत बड़ी ग़लती है।
- उम्मह हज-ए-असग़र है और हज, हज-ए-अकबर है। अब यह हज चाहे जिस अदन भी हो, हजे अकबर ही माना जायेगा। सिर्फ़ जुमझे के दिन के हज को 'हजे-अकबर' समझना ग़लत है।
- अपने हज का बार बार तज़किरह करना ताकि ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को आप के हाजी होने का इल्म हो। एक रियाकारी है।
- धर से हज के सफर पर कफ़न ले जाना और उस हज का एक हिस्सा समझना ग़लत है। पचास साल पहले सज़दी अरबिया एक गरीब मुल्क था। हज का बहरी और रेगिस्तानी सफर भी बहुत मुश्किल था। ऐसे में किसी की मौत हो जाये, तो कफ़न का इंतेज़ाम मुश्किल होता है। इसलिए हाजी अपने साथ कफ़न रखते थे। आज के दौर में सज़दी अख दुनिया का अगीर तरीन मुल्क है। सफर भी आसान हो गया है। कफ़न अब आसानी से हर जगह मिल जाते हैं। इसलिए कफ़न साथ ले जाना ज़रूरी नहीं रहा। हज के बाद बहुत से लोग अपने इस्तेअमाल शुदा एहराम को अपने कफ़न के लिए महफूज़ कर लेते हैं। ऐसा करने में कोई हर्ज नहीं।
- लोग हज से पहले न हज का तरीका अच्छी तरह सीखते हैं, न हरम के चालीस दिन के क्याम के बारे में मअलूमात हासिल करते हैं। इस वजह से कभी कभी खुद उनकी अपनी ग़लती की वजह से और कभी दूर और हिंदौस्तानी सफारत खाने की मज़बूरी या लापरवाही की वजह से हाजियों को सऱज़ तकलीफ़ का सामना करना पड़ता है। जिसे तकलीफ़ हूई है, पहले इस बात को समझे कि उसे ऐसी तकलीफ़ क्यों हुई? फिर कानूनी व दीगर तरीकों से कोशिश करें कि दूसरे हाजियों को फिर ऐसी तकलीफ़ न हो। दौराने हज की अपनी तकलीफ़ों का बार बार बयान करने से लोग सफरे हज से खौफज़दा हो जाते हैं, और हज न करने या देर से करने के बहाने तलाश करने लगते हैं। इसलिए अपनी तकलीफ़ों का इस तरह ज़िक्र करना कि कोई

खौफ ज़दा हो जाये, ग़लत काम है। हज के सफर में जितनी तकलीफ़ आप को होगी अल्लाह तआला उसका अज़र आप को देंगे।

- मुक्का मुकर्मा और मदीना मुनव्वरा में इबादत का मज़ा और मस्जिदों की पूर नूर फिज़ा जनत से कम नहीं। इसलिए हज के मुद्रतों बाद तक लोग उसके सरवर और मस्ती में मस्त रहते हैं, और वे इस्लियारी तौर पर उनके ज़बान से वहाँ की ऐसी तअरीफ़ निकलती है, कि दिल वहाँ की इबादत की ख़ाहिश में तड़पते लगता है। ग़रीबों के सामने ऐसी तअरीफ़ों और बयानात से बचना चाहिए। जिससे उनके दिल अपने मालिक का घर और महबूब का गुम्बद देखने के लिए तड़प जाये और फिर अपनी मज़बूरी और बेबसी पर उदास और गमगीन हो जाये। किसी मोमिन का दिल दुःखाना और तकलीफ़ पहुंचाना बहुत बड़ा गुनाह है।
- हज नमाज़ की तरह एक इबादत है। हज के सफर पर, अज़मत, वकार, सादगी और आज़िज़ी के साथ निकलना चाहिए। फूलों का हार पहन कर ढोल बाज़ों के साथ धर से निकलना गैर इस्लामी तरीक़ा और रियाकारी है।
- इस्लाम किसी भी औरत को बैग्रह महरम के, न किसी सफर की इजाज़त देता है और न इसके साथ तन्हाइ में रहने की इजाज़त देता है। एक औरत चाहे वह किसी भी उम्र की हो, अगर बैग्रह महरम के हज के सफर पर जाती है, तो एक बड़ा गुनाह करती है। और हरम का एक गुनाह एक लाख गुनाहों के बराबर है।
- लोगों के पास हज न करने का एक और बहाना है, कि हमारा पैसा हलाल नहीं है। पहली बात तो यह कि जब पैसा हलाल नहीं था, तो कमाया ही क्यों? और दूसरी बात यह कि हज दौलत आने पर फ़र्ज होता है, न कि सिर्फ़ हलाल दौलत के आने पर। जब आप अपनी दौलत से खा पी रहे हैं और बच्चों की परवरिश कर रहे हैं तो हज भी कीजिए। अगर आप नहीं करेंगे तो अल्लाह तआला वे नियाज़ भी हैं और कहार और जब्बार भी हैं। उसे किसी की भी इबादत की ज़खरत नहीं है और उसने वज़ादा भी किया है कि मैं जहन्नम को इंसानों और जिन्नों से भर दूंगा।
- बड़े उम्मह और छोटे उम्मह की कोई हकीकत नहीं है। जो आफ़ाकी हैं उन्हें उम्मह का एहराम 'हील' की बाहरी सरहद (मिकात) से बांधना होता है। जो अहले हिल हैं वह हिल की हुदूद में कहीं भी एहराम बांध सकते हैं। जो अहले हरम या मक्की हैं उसका असर उम्मह या हज की फ़ज़ीलत पर नहीं पड़ता। अगर अहले हरम तज़ीय के बदले, जुहु़ैफ़ा जाकर उम्मह का एहराम बांधें, तो यह उनके उम्मह की फ़ज़ीलत तो नहीं बढ़ायेगा अल्बत्ता वक्त बर्बाद ज़खर करेगा।

हज और उम्मह की अदाएँगी के दौरान होने वाली बअज़ आम ग़लतियाँ:-

- एहराम की इब्दों से मुनासिक हज की इन्तेहा तक इज़ित्बाअ़ की हालत में रहना। (तवाफ़ के इलावा इज़ित्बाअ़ करना मकरूह है।)
- एहराम बांधने के बाद नीज़ अरफ़ात व मुजल्फ़ा में तल्बिया कहते वक्त आवाज़ बुलन्द न करना या तल्बिया छोड़ ही देना।
- तवाफ़ या सई के दौरान हर चक्कर के लिए बाअ-ज़ दुआओं को खास करना, जबकि इस दौरान सिर्फ़ यह मशरूअ़ है कि जो चाहे दुआ मांगे या

अल्लाह का ज़िक्र करे या कुरू-आन मजीद की तिलावत करे।

- तवाफ़ के दौरान बुलन्द आवाज़ से मिल कर दुआएँ पढ़ना जो दूसरों के लिए तश्वीश का बायेस बनती है।
- सफा पर चढ़ते हुए क़ब्बा की तरफ इशारा करना।
- सब्ज़ निशानियों के दरम्यान बाझ़-ज़ औरतों का दौड़ना, जबकि यह हुक्म सिफ़ार मर्दों के लिए है।
- बाझ़-ज़न लोग यह समझते हैं कि ‘सफा’ से सई शुरू करके वापस ‘सफा’ पर पहुंचना यह एक चक्कर है, यह सही नहीं है। सही यह है कि जब ‘सफा’ से शुरू करके ‘मरवा’ पर पहुंच गया, और जब ‘सफा’ पर वापस आयेगा तो यह दूसरा चक्कर होगा।
- एहराम से हलाल होते वक्त सिर का कुछ हिस्सा मुंडवा देना और कुछ छोड़ देना। या पूरे सिर के बाल मुंडवाने या कटवाने की बजाय चन्द बालों को काट लेना।
- वक्फ़े अरफ़ात के दौरान दुआ मांगते वक्त किल्ले रखने न होना।
- अरफ़ात में दुआ के लिए ‘जब्ते रहमत’ पर चढ़ने की कोशिश करना।
- अरफ़ात में मिना में और अच्यामे तशरीक की रातों के दौरान बिला मक़सद कामों या बातों में वक्त जाओ करना।
- ऐसा जानवर ज़बाह करना जो कुर्बानी की उम्र को न पहुंचा हो, या ऐबदार जानवर ज़बाह करना या ज़बाह करने के बाद जानवर को फेंक देना।
- अरफ़ा के दिन असर के बाद बहुत से हाज़ी कूच की तैयारियों में लग जाते हैं, बावजूद इसके कि यह वक्त दुआ के लिए अफ़ज़ल तरीन वक्त है, और इस वक्त अल्लाह तज़़्ाला अपने बन्दों का ज़िक्र फिक्रिया अंदाज़ में फ़रमाता है।
- बहुत से हुज्जाजे किराम का मुज्ज़ल्फ़ा की रात म़ारिब और ईशा की नमाज़ों के लिए किल्ले की सिम्म म़ालूम किये बगैर जल्दी करना और इसी तरह फ़ज़ की नमाज़ में भी करना जबकि वाजिब यह है कि किल्ला की सिम्म म़ालूम करने की कोशिश करनी चाहिए या जिसको म़ालूम हो उससे पूछ लेना चाहिए।
- बहुत से हुज्जाज का मुज्ज़ल्फ़ा से आधी रात से कब्ज़ ही निकल जाना, हालांकि मुज्ज़ल्फ़ा में रात गुज़ारना हज के वाजिबात में से है।
- बाझ़-ज़ कुव्त रखने वालों का किसी दूसरे को रसी जुमार के लिए वकील बनाना, जबकि यह इजाज़त सिफ़ म़ाज़ूरों के लिए है।
- ज़मरात कंकरियां मारते वक्त ज़ूतियां या बड़े बड़े पथर बैरह फेंकना।
- बाझ़-ज़ हाज़ी (अल्लाह इनको हिदायत दे) ईद के रोज़ यह समझते हुए दाढ़ी मुंडवाते हैं, कि यह जीनत का बायस है। हालांकि ऐसा करना अफ़ज़ल जगहों और अफ़ज़ल वक्त में अल्लाह की नाफ़रामी है।
- बाझ़-ज़ औकात हजरे अस्वद के बोसा के लिए धक्कम पेल करना, जिसमें कभी-कभार लड़ाई, गली गलौच और दुश्मनी तक जा पहुंचती है।
- बाझ़-ज़ लोगों का यह समझना है कि हजरे अस्वद ब-ज़ाते खुद नफा देता है, लिहाज़ा आप उन्हें हजरे अस्वद को हाथ लगाते हुए बड़ा तारीखी जुम्ता कहा था: “मैं जानता हूँ, कि तुम एक पथर हो और अपने तौर पर किसी को नफा या नुकसान नहीं दे सकते। अगर मैंने रसूल (स.) को तुम्हें बोसा देते हुए न देखा होता, तो तुम्हें कभी बोसा न देता”।
- बाझ़-ज़ हाज़ी साहिबान क़ाबा के तमाम कोनों को छूते हैं और कभी उसकी

दीवारों को हाथ लगाते हैं और फ़िर उनको अपने जिस्म पर फेरते हैं, हालांकि यह जिहालत है।

- बाझ़-ज़ लोग रुकने यमानी को भी बोसा देते हैं और यह ख़ता है इसलिए कि रुकने यमानी को सिफ़ हाथ लगाने का हुक्म है, बोसा देने का नहीं है।
- बाझ़-ज़ हाज़ी साहिबान हत्तीम के अन्दर से तवाफ़ करते हैं। यह सही नहीं है।
- बाझ़-ज़ लोग मिना में क्याम के दौरान नमाज़े जमा करके पढ़ लेते हैं। यह भी ठीक नहीं।
- बाझ़-ज़ हाज़ी साहिबान सबसे पहले बड़े जम्रह को फ़िर दरम्यानी जम्रह को और अश्विर में छोटे जम्रह को कंकरियां मारते हैं। जबकि सही यह है कि इसके बरअक्स तरतीब से कंकरियां मारी जायें।
- बाझ़-ज़ लोग सातों कंकरियां मुट्ठी में लेकर एक ही बार फेंक देते हैं, और यह बहुत बड़ी गलती है। अहले इत्म कहते हैं कि अगर किसी ने एक ही बार एक से ज्यादा कंकरियां फेंक दीं, तो वह एक ही कंकरी शुमार होगी। वजिब यह है, कि एक एक कंकरी करके फेंकी जाये जैसा कि नबी करीम (स.) ने किया था।
- काबा से अल्विदा होते वक्त उसकी ओर हाथ से इशारा करना गलत है।

बच्चे का हज़:

ना बालिग पर हज़ फ़र्ज़ नहीं है, लेकिन अगर वह हज करे, तो उसे और उसके बालिदैन को सवाब मिलेगा। अलबत्ता बालिग होने के बाद उसे फ़िर हज़ करना होगा अगर बच्चा समझदार है, तो वह अपने सरपरस्त की हिदायत और रहनुमाई में खुद हज की नीयत करे और तमाम अरकान जो खुद कर सकता है अदा करें। और जो काम वह नहीं कर सकता वह उस के सरपरस्त करें, जैसे रसी जमार, कुबानी बैरह और अगर बच्चा बहुत छोटा और ना समझता है, तो उसके सरपरस्त उसकी तरफ से नीयत करें और तमाम मुकामाते हज पर उसे साथ ले जायें। जो वह कर सकता है उससे करवायें और न कर सकता हो, तो खुद करें अगर बच्चा तवाफ़ व सई करने के क़ाबिल न हो, तो बच्चे को उठाकर तवाफ़ और सई की जायें। अफ़ज़ल ये है, कि अपने और बच्चे की तरफ से मुश्तरका तवाफ़ व सई न करें बल्कि पहले अपने तवाफ़ और सई करें फिर बच्चे की तरफ से करें बच्चे के एहराम की एहकाम भी बालिग के एहकाम जैसे ही हैं।

बच्चे का हज़

हज़रत साइब (रजी.) बिन य़ज़ीद से रिवायत है कि मेरे बाप ने हज़रतुल विदा में मुझे रसूल अल्लाह (स.) के साथ हज कराया। उस वक्त मैं सात साल का था। (बुखारी)

हिक्मत व दानाई की बात मोमीन की खोइ हुई चीज़ है। लिहाज़ा जहाँ भी उसको पाएं वह इसका ज्यादा हकदार हैं।

(तिरमीज़ी-इब्ने माज़ा-बरिवायत हज़रत अबु दुरैरा(रजी.))

हज का सफर किस के ज़रिए करें...? (हज कमेटी या दूर)

हज का सफर हज के ज़रिए किया जाये या दूर से? यह एक मुश्किल सवाल है, मैं आप से इन दोनों की हकीकत बयान करता हूँ। फैसला आप खुद करें कि सफर किस के ज़रिए किया जाये।

सऊदी हुक्मत ने हाजियों की अच्छी मेअऱ्यारी रिहाईश और आसानी के लिए मुंदरजा जैल (नीचे दिये गये) कवानीन बनाये हैं।

- १) हर हाजी को रहने के लिए ९.मी. ग ४ मी. की जगह मिलनी चाहिए।
- २) हर हाजी को पलंग, गद्दा, तकिया और कम्बल मुअल्लिम की तरफ से मिलना चाहिए।
- ३) बस का सारा इंतेज़ाम मुअल्लिम करेगा।
- ४) कथाम गाह में गैस का चूल्हा और गैस पहली बार मुफ्त मिलेगा।
- ५) हर हाजी को उसके कमरे के बाहर ज़मज़म का पानी पीने के लिए मिलेगा।
- ६) हर बिल्डिंग में लिफ्ट होगा।
- ७) हाजी साहिबान सिर्फ दो जगह अपना सामान उठायेंगे। एक मक्का में बिल्डिंग की लिफ्ट से अपने पलंग तक और दूसरी जगह मदीना में बिल्डिंग के नीचे से अपने पलंग तक। बाकी एयर पोर्ट तक, बस डिपो या हर जगह मुअल्लिम या एयर पोर्ट के कुली सामान उठायेंगे।
- ८) हज कमेटी के ज़रिए जाने वालों के लिए मक्का शरीफ या मदीना मुनब्वरा पहुँचने पर पहले एक वक्त का खाना मुअल्लिम की तरफ से होगा। इसी तरह अरफ़ात के दिन भी दोपहर का खाना मुअल्लिम की तरफ से होगा।
- उपर लिखी हुई सारी ज़रूरियात और सहूलतें मुहैय्या कराने का काम दूर वाले और हज कमेटी वाले किस तरह अंजाम देते हैं। उसका बयान मुंदरज़ाज़ेल है।

हरम से नज़दीकी:-

हज कमेटी:

हज कमेटी ने हाजियों के रिहाईश गाह के तीन ग्रेड(दर्जे) बनाये हैं।

- १) फर्स्ट ग्रेड(श्रीन): फर्स्ट ग्रेड की कथामगाहें हरम से ० से १२०० मीटर की दूरी पर होती हैं।
- २) सेकंड ग्रेड(द्वाहट): सेकंड ग्रेड की कथामगाहें १२०९ से २००० मीटर की दूरी पर होती हैं।
- ३) थर्ड ग्रेड (अज़ीजिया): थर्ड ग्रेड की कथामगाहें अज़ीजिया इलाके में होती हैं, जहाँ से सिर्फ सवारी से ही आया जा सकता है।

हज कमेटी वाले इस बात की कोशिश करते हैं के वायदे के मुताबिक रिहाईश दें। व अपने वायदों और कोशिशों में ६०: कामयाब भी होते हैं। अलबत्ता कभी रिहाईशी बिल्डिंगों कि कमी की वजह से कुछ हाजियों को वायदे के मुताबिक रिहाईश नहीं मिलती।

दूर:-

दूर वाले अक्सर हाजियों का कथाम बिल्कुल हरम के पास ही रखते हैं मगर दूर वालों के भी ग्रेड होते हैं। जो बिल्कुल कम रूपयों पर हज कराते हैं, उनकी कथाम गाहें भी हज कमेटी की दूसरी या तीसरी ग्रेड की तरह दूर होती हैं। और जब कम दाम पर नज़दीक के होटलों में हाजियों को रखते हैं,

वह हज से तीन या चार दिन पहले और हज के तीन या चार दिन बाद तक आरज़ी तौर पर हाजियों को इतनी दूर के होटलों में रखते हैं कि टैक्सी या बस के ज़रिये हरम आना जाना पड़ता है। यह इसलिए के नज़दीक के होटलों में रिहाईश हज के अव्याम के दौरान बहुत ज्यादा महंगे होते हैं और गैर मुल्क अमिर हाजी उसे पहले ही से बुक किये रहते हैं।

मिना में खैम मुअल्लिम की तरफ से होते हैं। कभी कभी मुअल्लिम और दूर का तालमेल न होने की वजह से दूर के हाजियों को मिना में खैमा भी नहीं मिल पाता। बेचारे हाजियों को दुसरों के खैमों में पाँच दिन गुज़ारने पड़ते हैं।

हाजियों के रहने का म्यारः-

हज कमेटी:

सऊदी हुक्मत के कानून के मुताबिक हाजी किसी भी ग्रेड कि रिहाईश वाला हो (याने रिहाईश पास में हो या दूर हो) हर एक को उपर लिखे गये म्यार के मुताबिक सारी सहूलतें देना जरूरी है और हज कमेटी वाले अपनी पूरी कोशिश करते हैं की उस म्यार को पूरा करें और हकिकत में वह इस कोशिश में ६० फीसद से ९०० फीसद कामयाब हो जाते हैं।

दूरः

दूर वालों के लिए हज का सफर एक कारोबार हैं और मुनाफा हासिल करने का एक ज़रिया हैं इस लिए दूर वाले हर जगह खाली बचाते हैं और सारी सहूलतें आप के पैसे के मुताबिक होती हैं। दरम्यानी और कम खर्च वाले दूरस्ट बहुत सारे हाजियों को एक ही कमरों में ठहराते हैं, वह भी कभी बगैर पलंग के। अच्छे दूर वाले हर ग्रेड के हाजि को रिहाईश पर अच्छी सहूलत देते हैं आम दूर वाले सिर्फ लक़झरी (Luxury)या (Delux) बगैर ग्रेड के हाजियों को अच्छी सहूलतें मुहैय्या होती हैं।

खाना:-

हज कमेटी:

हज कमेटी हज कमेटी तकरीबन २६ हजार रुपये वापस देकर और कथाम गाह पर गैस और चुल्हा वगैरा देकर बरी उज़ ज़िम्मा हो जाती है। हाजियों को खरीदकर या खुद पकाकर खाना होता है। हाजी अपनी पसंद आसानी और बजेट के मुताबिक पकाकर या खरीदकर खाते हैं।

दूरः

दूर वाले कोई रूपया वापस नहीं करते, खाना दूर की तरफ से होता है, अगर बावर्ची आपके बतन का है और खाना भी अच्छा बनाता है तो खैरियत हैं वराना चालीस दिन मज़बुरन जो कुछ मिले आपको खाना पड़ेगा। (मैं एक ऐसे दूर वाले को जानता हूँ जिसने सन् २००७ हिजरी में हाजी औरतों से भी खाना पकवाया था) कुछ अच्छे दूर वाले बहुत अच्छा खाना देते हैं।

मसलक का मसला:-

हज कमेटी:

हज कमेटी से जाने वाले लोग मुख्तलीफ इलाकों के और मुख्तलीफ मसलकों

पर अमल करने वाले होते हैं, इसलिए रिहाईशगाह पर भी एक मसलक वालों की अक्सरियत नहीं होने पाती, मकान का खौफ और मुअल्लिम के आदामियों का डर भी होता हैं इसलिए सब अपने काम से काम रखते हैं और मसलकी बहस व मुबाहसों में नहीं उलझते हैं।

टूर:

टूर में अक्सर लोग ग्रुप बनाकर जाते हैं। टूर ऑपरेटर को भी रुपया और खिदमत का मौका देकर एहसान मंद बना चुके होते हैं। होटलों में मुअल्लिम या मकान मालिक का डर नहीं होता इसलिए लोग आपस में बहस और मुबाहिसा बहुत करते हैं। कुछ मसलक वालों हरम शरीफ के इमाम के पीछे नमाज़ नहीं पढ़ते, इन लोगों को हरम में ज़मात छूट जाने का डर तो होता नहीं इसलिए कर्मचार या रिहाईश के हॉट में बहुत वक्त गुज़ारते हैं, मजलिस करते हैं, तकरीर करते हैं। जिसकी वज़ह से दुसरे मसलक वालों को ४० दिन गुज़ारना मुश्किल हो जाता है।

हवाई सफर:-

हज कमेटी:

हज कमेटी अपनी तरफ से पूरी कोशिश करती हैं की हाजियों को जर्ज़ भर तकलीफ न हो, इसलीए हाजियों की सारी फ्लाइट हिन्दुस्तान से सीधे मकान शरीफ या मदीना मुन्वरा के लिए होती है। हज कमेटी से जाने वाले हाजियों की हवाई सफर में जो भी तकलीफ होती है वह उनकि अपनी हटडररी या नावाकफियत या फिर एअर पोर्ट के अमला और एअर इंडिया कि उनकि कारकर्दगी और सियासत की वजह से होती है। इसमें हज कमेटी का कोई कसूर नहीं होता।

टूर:

हज के दिनों में सजदी अरब कि सारी डायरेक्ट फ्लाइट पहले से रिजर्व (Reserve) होती है। इसलिए टूर वालों को अक्सर डायरेक्ट फ्लाइट में सीटें नहीं मिलती इसीलिए वह अरब के किसी शहर का पहले टिकट निकालते हैं फिर उसी शहर से सजदी की टिकट निकालते हैं इसलिए अक्सर हाजियों को कुछ धंटों से लेकर कुछ दिनों तक अरब के किसी एअर पोर्ट पर रहना पड़ता है और अगली फ्लाइट का इंतज़ार करना पड़ता है। और यह एक बहुत तकलीफ दाह मरहला होता है। जाने और आने में कुछ बड़े टूर वाले से साथ परेशानी का मामला होता ही है। यह मामला हज पर जाने और हज से वापस आने दोनों बार होता है। और दोनों बार (जाने और आने वक्त) जहाज़ बदलते वक्त अक्सर सामान भी छुट जाता है और कई महिनों बाद मिलता है।

घोका दही:-

हज कमेटी:

हज कमेटी से अगर आप का नाम कुर्रा अंदाज़ी में आ गया तो आपका हज के सफर पर जाना यकीनी है।

टूर:

हज के दिनों में हज के एक वीजा की काले बाज़ार में कीमत ८० हजार रुपए से भी ज़्यादा होती है इसलिए ऐसे भी वाक्यात होते हैं की टूर वाले हाजियों से पहले पूरा पैसा ले लेते हैं फिर हज के कुछ दिनों पहले वह सारे पैसे यह कहकर लौटा देते हैं कि विजा का इन्तेजाम नहीं हो सका। दरअसल होता यह है कि अगर वह हाजी को हिन्दुस्तान से ले जाकर हज कराकर वापस लाते हैं तो एक हाजी पर तीस हजार से पचास हजार तक मुनाफ़ा कमाते हैं,

जब कि अगर वह विजा बेच दे तो बगैर मेहनत के हर विजा पर ८० हजार तक मुनाफ़ा होता है। इसलीए धोकेबाज़ ट्रीस्ट काले बाज़ार में विजा बेचकर हाजियों का पैसा आखरी दिनों में लौटा देते हैं।

शिकायत किससे और कहाँ करें?

हज कमेटी:

हिन्दुस्तान कि हुदूद के अन्दर हज से मुतालिक सारे इन्तेजामात कि जिम्मेदारी, हज कमेटी ऑफ इंडिया, की है। मगर हिन्दुस्तान से बाहर हज से मुतालिक सारे इन्तेजामात हज कमेटी ऑफ इंडिया के बजाय “हिन्दुस्तानी हज मिशन” नामी इदारा करता है। यह इदारा हिन्दुस्तानी कॉन्सलेट की निगरानी में काम करता है। इसलिए अगर आप को हिन्दुस्तान के अंदर कोई शिकायत हो तो “हज कमेटी ऑफ इंडिया” में शिकायत करें। मगर हिन्दुस्तान के बाहर कोई शिकायत हो तो हिन्दुस्तानी हज मिशन के दफ्तर में शिकायत करें और वह भी हिन्दुस्तान लौटने से पहले करें। हिन्दुस्तानी हज मिशन और हिन्दुस्तानी सफारत खाना (कॉन्सलेट) के पत्ते और फोन नं. इस किताब के आखरी सफे पर दर्ज हैं। हज कमेटी का पता नीचे दिया है।

चीफ एक्ज़ीक्यूटिव ऑफिसर, हज कमेटी ऑफ इंडिया
हज हाऊस, ७-ए, एम.आर.ए. मार्ग, पलटन रोड, मुंबई ४०० ००९.

www.hajcommittee.com,

Fax: 022 22630461, 22620920, Tel.: 022 22612989 (6 Lines)

टूर:

टूरीज़म एक बहुत बड़ा और अच्छा कारोबार है। उसमें टूर ऑपरेटर बहुत ईमान दारी के साथ ग्राहकों को बेहतरीन खिदमात देते हैं। मगर हाजियों के साथ ऐसा मामला नहीं होता है। इसलीए के अक्सर हाजी भोले भाले, नेक और शरीफ होते हैं। चुंकि जैसे वह खुद नेक होते हैं वैसे ही वह दुसरों को भी नेक समझते हैं इसलिए वह टूर ऑपरेटरों पर भी भरोसा करते हैं और इसी भरोसे का अक्सर टूर ऑपरेटर गलत फायदा उठाते हैं। (कुछ टूर वालों का म्यार बेहतरीन है और किसी को भी किसी मामले में शिकायत का मौका नहीं देते मगर अक्सर टूर वालों से हाजियों को शिकायत होती है।)

इन टूर वालों का हज टूर के अलावा अक्सर इंस्पोर्ट, एक्सपोर्ट, (Foreign Exchange) बैरून मुतालिक में रोज़गार दिलाने वगैरा के कारोबार होते हैं। यह एक पावर फुल लॉबी है। या तो यह खुद भाई होते हैं या भाई के भाई होते हैं। इसलीए किसी शरीफ हाजी की इल्लज़ा या एहतेजाम का इनपर कोई असर नहीं होता अगर किसी को इन से शिकायत हो तो कानूनी कारबाई करें और इस नीयत से करें कि इन्शा अल्लाह आइंदा दुसरे हाजी उनकी शरारतों से महफूज़ रहेंगे।

टूर ऑपरेटरों का मुन्दर्ज़िज़ेल दफ्तरों से किसी न किसी तरह का रिश्ता या राबता होता है। यह सारी जगहें आम हाजी कि पहुँच से बाला तर हैं। मगर अल्लाह से उम्मीद है कि आप की शिकायत पर किसी न किसी के कान पर जुँ ज़रूर रेंगेंगी।

ASSOCIATION OF ALL INDIA HAJ UMRAH TOUR ORGANISERS

Head Office: Post Box No. 17377, 2nd Floor,

Halima Manzil, 4th Gavthan Lane,

Opp. P.O. Andheri (West), MUMBAI-400 058

Phone Nos: 26283011-26204886-26204887-26245572

Fax Nos: 022-2628 8453 & 022-2623 6040

E-mail: info@aihutoa.com, chairman@aihutoa.com

Website: www.aihutoa.com

बुनयादी तौर से यह टूर ऑपरेटर के मफाद की हिफाज़त के लिए बनायी गई

(बाकी पेज ४१ पर)

सन् १८६८ ई. का एक समंदरी सफरे हज

नवाब सैयद सिद्दिक हसन खान (रह.) सन् १८३२ ई. में पैदा हुए। बचपन में अपने बड़े भाई के पास रहे। उत्तमा से इब्लैदाई दीनी तभूलीम हासिल की। फिर चंद साल कानपुर और फरख आबाद में पढ़ते रहे। आखिर में मुफ्ती सदरुद्दिन खान साहब सदरुस्सदूर देहली के पास हाजिर हो कर तकमील ए इल्म की। हदीस में वह हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ (रह.) और सौकानी के शारीरिक हैं।

सन् १८६८ ई. में हज किया। इस सफर के मुख्तसर हालात उन्होंने 'इतहाफुल नब्वा' और 'ईजाहुल मुहम्मद' में लिखे हैं। फरमाते हैं:

बदा ए शर्मिंदा १३ दिसंबर सन् १८६८ ई. (सन् २७ शब्दुल ई. हिजरी) बाद नमाज़े ज़ाहर घर से वा इरादा ए फरीजे ए हज बाहर निकला। २४ दिसंबर (१६ रमज़ान) की नमाज़े अस्से से पहले बम्बई से फतेह सुल्तान नामी जहाज़ में सवार हुआ। जब जहाज़ का लंगर उठाया गया तो हवा अच्छी चल रही थी। इस लिए जहाज़ ने करीब ५० मरहते दिन में तय कर लिए। फिर हवा रुक गई। तीन दिन तक सर दर्द रहा और कै होती रही। चौथे दिन तबीअत कुछ संभली। इस जहाज़ में ३०० आदमी सवार थे। हम वुजू और गुस्त समंदर के खारे पानी से करते और खाना पीना मीठे पानी से, जो हम ने जहाज़ में साथ रख लिए थे। ९ नवंबर १८६८ ई. को बाबे सिकंदर (बाब उल म़ज़हब) से गुज़र हुआ। १० जन्वरी को जहाज़ हदीश में लंगर अंदाज़ हुआ। अभी हमारे हिसाब से २८ ही तारीख थी कि वहाँ रुपते हिलाल ठार गई। चार व नाचार बंदरगाह के लोगों के साथ इत्तेफाक करना पड़ा। ईद गाह में करीब २००० लोगों के साथ नमाज़ ईद पढ़ी। बक्या कज़ा रोज़े रखे। और १० शवाल को वापस जहाज़ पर आना हुआ।

जहाज़ ६ दिन और बंदरगाह में लंगर अंदाज़ रहा और १७ शवाल को लंगर उठा। जब जहाज़ चला, राह में फिर हवा बंद हो गई। तीन दिन तक जहाज़ वर्षी खड़ा रहा। जब हवा चली तो रात को अब्र व बाराँ भी आया। जिस से दिन को जहाज़ जितना सफर तै करता, रात को हवा की सिस्त मुखालिफ होने की वजह से फिर पलट आता। ऐसा कई दिन तक होता रहा। कुछ न पूछे क्या हाल हुआ? न पानी बाकी रहा न खाना। सिर्फ एक वक्त आधा पाव खिचड़ी और दो धूंप टांपानी वा मुश्किल मिलते थे। दम खुट कर नाक में आ गया। "हिस्ने हर्सिन" का खत्म किया। हवा चली और जहाज़ रवाना हुआ। एक अंधेरी रात में जहाज़ किसी पहाड़ से टकराते टकराते बचा। वह तूफानी रात श्वेत्ह जिद्दा से ज्यादा सियाह, सख्त व दराज़ थी। सनीचर के दिन जहाज़ में जिल्कभूदा का चांद दिखाई दिया। चार जिल्कभूदा को 'यत्म लम' पठाई (मीकात) का सामना हुआ। बाद नमाज़े पूर्ण नहा थी कर उम्रह का एहराम बांधा। हज्जे तमत्तू भी की नीयत की। अल्लाह अल्लाह करके जहाज़ २९ फरवरी (६ ज़ी-क-अद्वा) को जिद्दा बंदरगाह पर लंगर अंदाज़ हुआ। जान में जान आई। हदीश से जिद्दा का सात दिन का बहरी रास्ता तकरीबन एक माह में तै हुआ। जिद्दा हैं तीन दिन की क्याम रहा। १४ ज़ी-क-अद्वा को महसूल जमरक (जग) दे कर आगे बढ़े। अधीरी रात को अपने एक साथी सैयद अबू बक्र के साथ बाबुस्सलाम से मस्जिद उल हराम में दाखिल हुए।

खाना ए काबा पर निगाह पड़ते ही सारी तकलीफे राह व मसाईबे सफर व मताईबे बहर व बर मूल गए। अमाले उम्रह तरतीब वार अदा किए। भीड़ न होने की वजह से हज्जे अस्वद का बोसा हर चक्कर में वा खूबी मयस्सर आया। सई के बाद शब हरम में ही बसर की। सुबह अब्लू वक्त में मुसल्ला ए शार्फ एर फ़र्ज़ की नमाज़ पढ़कर मजिल पर आना हुआ। २६ जिल्कभूदा (१३ मार्च) की काज़ी के सामने चांद देखने की शहादत गुज़री। मगर मैं ने या किसी मुसाफिर ने चांद नहीं देखा।

ट जिल्हिज्जा को हज का एहराम बांध कर मिना पैदल गए, फिर वहाँ से सवारी के ज़रिए गए। अरफात में कब्ले वकूफ सारी "हज़फुल आज़म" पढ़ी। बाद मगरिब मुज्दल्का की तरफ कृच किया। अरफात व मिना में वा औकाते फुरसत किताबत भी की। १३ जिल्हिज्जा को मिना से मक्का आना हुआ। १५ सफर १८६८ हिजरी सन (२७ मई १८६८ ई. सन) को काफिला मदीना की तरफ चला। खिलाफे आदत २० दिन में पहुँचा। एक हफ्ता क्याम हुआ। मस्जिदे नबवी मआ मरकद व मुतह्रहर व

दीगर मजारात ए बकी व शोहदा ए उहद वगैरा मयस्सर आया। वापसी में खास मदीना से उम्रह का एहराम बांधा। १२ दिन में काफिला मक्का पहुँचा। उस वक्त भी निस्फ शब थी। मुताफ व सई को खाली पाया और इस को गनीमते बारदा समझा। मुहल्लाह हिदी में क्याम था। हरम में आने जाने के लिए बाबुज़ियारा था।

मक्का मदीना में कुल कायम तकरीबन चार माह का रहा। वापसी में फैजुल बारी नामी जहाज़ मिला। इस में नौ सो आदमी सवार थे। इस का लंगर भी हदीदा में तीन दिन रहा। इस बंदरगाह का मुअब्बिर निहायत बदतर है। वहाँ से चल कर अदन तक ऐसी गर्मी हुई के सारे बदन पर दाने हुए। अदन से आगे बारिश का मौसम मिला। करीब ए बम्बई तूफान ने जहाज़ को तह व बाला करना शरू कर दिया। तूफानी मौजों ने मुसाफिरों के औसान खता कर दिए। २२ दिन में जिद्दा है बम्बई पहुँचा। बारिश की वजह से बड़ी मुश्किल से जून के दूसरे हफ्ते में भोपाल पहुँचना हुआ। सारी मुद्रत इस सफर की सात माह है।

(बा शुक्रिया : माहनामा हज मेगजीन, मुंबई)

यह था अपने ज़माने के एक नवाब का हज का सफर। पहले ज़माने में नवाबों को भी हज के सफर में जो तकलीफ होती थीं, इस नए ज़माने में क्या इस का एक फीसद भी किसी को तकलीफ होती है? इस लिए इस मज़मून को कई बार पढ़ कर ज़हन नशीन कर लीजिए। फिर आप के अपने सफर में आप को अगर कोई तकलीफ हुई, तो आप शिकायत के बजाए अल्लाह का शुक्र अदा करेंगे।

अल्लाह तआला आप का सफरे हज आसान और खैर व आफियत वाला बनाए और आप को हज्जे मबस्तर अता करे। आमीन

बद नसीब कौन?

हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ी.) से रिवायत है कि नबी करीम (स.) ने इर्शाद फरमाया: "अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल कहता है कि जिस बन्दे को मैं ने सेहत और तन्तुरस्ती बख्ती और राजी में फ़राही और कुशादगी दी और फिर पांच साल की मुद्रत गुज़र जाए मेरे पास ना आए तो ऐसा शख्स मेहरुमुल किस्मत और बद फिस्मत है।"

तशरीह: तन्दुरस्ती और रोज़ी की कुशादगी अल्लाह तआला की बहुत बड़ी नेभ्रमत है। यह दोनों नेभ्रमतें जिसे हासिल हों उस को ज्यादा से ज्यादा खुदा से तअल्लुक जोड़ना चाहिए, और कौतन व अमलन हर तरह से शुक्रगुज़र बन्दा बनना चाहिए। लेकिन यह बदा नेभ्रमतें पाकर एक दिन या एक हफ्ता या एक दिन या एक महीना या एक साल नहीं बल्कि पांच पांच साल तक खुदा के पास यानी बैतुल्लाह हज के लिए नहीं जाता तो इस से ज्यादा महसूली की बात क्या होगी? उसे जानना चाहिए कि जिस ने उस को सेहत दी है वह छीन भी सकता है। और जिस ने उस को रिक्झ की कशाइस से नवाज़ा है उसे पल भर में दाने दाने का मोहताज बना सकता है। इस सेहत और दौलत को गनीमत समझें और जल्द अज़्ज जल्द फ़रीज़ा ए हज से कारिग़ हो। मालूम नहीं कि आईदा यह नेभ्रमतें उसे हासिल भी रहेंगी या नहीं।

(तरगीब बहवाला इन्हे हव्वान)

हज और उमराह की बरकतें

- हज़रत इमाम हुसैन फरमाते हैं कि नबी करीम (स.) ने अर्ज किया, “‘हुजूर मैं कमज़ोर भी हूँ और बुज्जिल भी।’” फरमाया, “तू ऐसा जिहाद किया कर जिस में कांटा भी न लगे।” उस ने अर्ज किया, “ऐसा कौन सा जिहाद है जिस में तकलीफ ना पहुँचे?” फरमाया, “हज किया करा।” (तिवरानी)
 - हज़रत अबू हुरैरह (रजि.) से रिवायत है कि नबी करीम (स.) ने फरमाया, “जिस ने हज किया और कोई बेहयाइ का काम नहीं किया और फस्क व फुजूर से दूर रहा तो वह गुनाहों से इस तरह पाक हो जाएगा जैसे आज ही पैदा हुआ है।” (बुखारी, मुस्लिम)
 - हज़रत अबूज़र खुदरी (रजि.) से रिवायत है कि नबी करीम (स.) ने इरशाद फरमाया, “अल्लाह तआला फरमाता है कि जिस बन्दे को मैं ने सेहत और तन्तुरस्ती बख्शी और रोज़ी में फराखी और कुशादगी दी और फिर पांच साल की मुद्रदत गुज़र जाए और मेरे पास ना आए तो ऐसा शख्स महसूलत किस्मत और बद किस्मत है।” (तरीक़ व तरहीब, बहवाला इन्डिया ब्लॉग, ज़ादे राह ५८)
 - हज़रत अब्दुल्लाह इन्डिया मसउद (रजि.) से रिवायत है कि रसूलल्लाह (स.) ने फरमाया, “ऐ दर ऐ हज व उमरह किया करो, क्यूंकि हज व उमरह दोनों मुफ़लिसी व मोहाताजी और गुनाहों को इस तरह दूर कर देते हैं जिस तरह लोहार और सुनार की भट्टी लोहे और सोने चांदी का मैल कुचलै दूर कर देती है। और हजे मबरूर का सिला और सवाब तो बस जन्मत ही है।” (जामेतिरमिज़ी, सुनन नसाई, बहवाला मआरिफुल हदीस पेज १६६)
 - हम में से अक्सर बहोत ज्यादा बहादुर नहीं हैं, कमज़ोर हैं, गुनाहगार हैं। अल्लाह ने जो भी माल व दैलत दिया है उस से बहोत ज्यादा कमाने की तमन्ना भी है और हज जा करने पर अल्लाह तआला की तरफ से लभून्तें भी है। इस लिए जहाँ तक मुस्किन हो हज जल्द अज़ जल्द कर लेना चाहिए। हज के बाद अल्लाह तआला की जो बे पनाह रहन्होंने नाज़िल होती है इन का कुछ जाती मुशाहिदा मन्दर्जा खैल है। हज और उमरह ज़िन्दगी में खुशहाली का सबब बनते हैं इसलिए इस मौजूद को हम ने इस किताब में शामिल किया है।
 - एक हदीस शरीफ का मफूह है कि अगर बन्दे को एक पहाड़ के बराबर (या एक वादी के बराबर) सोना मिल जाए तो दूसरे पहाड़ की तमन्ना करेगा। यही हाल मेरा था। २००४ई.सन में अल्लाह का करम था कि मेरी माली हालत अच्छी थी मगर और ज्यादा की तमन्नाएं भी थीं जो पूरी नहीं हो रही थीं। हज करने के बाद अल्लाह ने करम किया और ज़िन्दगी एक दम चमक गई। मिसाल के तौर पर मेरे कारखाने की इमारत को रंग लगाए काफी अरसा गुज़र चुका था, दीवारें काली हो गई थीं। हज के बाद एक पेंटर मिला जिस ने मध्यमूली उजरत पर सारे कारखाने को रंग दिया। और यही काम हज के पहले लाख कोशिश के बा-वजूद किसी ना किसी वजह से टलता रहा।
- हज के बाद अल्लाह तआला ने १७ मजिले पर बेहतरीन फ्लैट अता किया। हज के बाद मेरा कारोबार हर साल तकरिबन ८० से १००% बढ़ जाता, इस तरह ४ साल में तकरीबन चौगुना होने के बाद तरकी की रफतार रुक गई। यही तजुरबा मेरे कई दोस्तों का रहा। मिसाल के तौर पर मेरे दोस्त यूनुस भाई ने हज के बाद तीन महीनों में इतना कारोबार किया जितना वह साल भर में करते थे। आज उन के पास पूना शहर के आस पास करोड़ों की जायदाद है। और तरकी की यह उछाल उन्हें हज के बाद हासिल हुई।
- इसी तरह मेरे कई दोस्त हैं जिन की खुशहाली हज के बाद हज के बाद बहोत बढ़ी। मगर जिस तरह इस अज़ीम इबादत का सवाब और बरकतें बे-पनाह हैं उसी तरह इस अज़ीम इबादत में अगर कुछ लापरवाही की जाए या मन मानी की

जाए तो लभून्तें भी बेपनाह हैं। मैं तीन मिसाले आपके सामने बयान कर रहा हूँ ताकि आप इस अज़ीम इबादत के बक्त इन्तेहाई एहतेयात से काम लें।

- निसार शेख मेरे अच्छे दोस्त हैं। उन का भी मशीनें बनाने का कारखाना है। पिछले कुछ सालों से उन का कारोबार अच्छा चल रहा था। इस खुशहाली में उन्होंने ने घर तभीमीर किया, अपनी शादी की और वालिदैन के साथ हज भी किया। मगर किसी वजह से वह मक्का और मदीना शरीफ में इमाम के पीछे नमाज़ नहीं पढ़ते थे और कई बार हरम की सेक्यूरिटी वसलों से खूब बहस भी की। हज के बाद उन के हालात बदल गए। उन की बनाई मशीनों में खराबी आने लगी। वक्त पर माल नहीं दे पाते, माली हालत इन्तेहाई खराब हो गई। लोगों के कर्ज़ के नीचे दब गए। मेरा भी कुछ कर्ज़ उन पर बकाया है। और अब वह मुंह छुपाए फिरते हैं।
- ज़ियाउद्दीन अन्सारी का प्लास्टर ऑफ पेरिस (POP) का कारोबार था। मसलक के मसले में उन्होंने भी हरम की सारी नमाज़ें अकेले पढ़ीं। वक्त वापसी पर वह कारोबार में भी अकेले रह गए। उन का सारा कारोबार भांजे भतीजे चलाते थे और साल में तकरीबन ८० लाख का कारोबार करते थे। मगर हज के बाद एक एक कर के सारे मुलाज़िमों ने अपना खुद का कारोबार शुरू कर दिया। अब अन्सारी साहब मक्की मारते हैं। कुछ दुकानें किराए पर दी हुई हैं उन की आमदानी से घर का खर्च चलता है।
- इरफान शेख ने हरम में जमाअत से नमाज़ पढ़ने से परहेज़ किया। हज के बाद माली हालत तो खराब नहीं हुई मगर हज के बाद अब खाने पीने में बहोत परहेज़ करते हैं। हज के पहले नए और ऑरडर के लिए सफर करते थे, अब नए नए डाक्टरों की तलाश में घूमते हैं। इस लिए बरकत के लिए बार बार हज और उमरह कीजिए, इन्शा अल्लाह बहोत बरकत होगी। मगर दीन के उस्लों का और हरमैन शरीफैन के एहतराम का बहोत ज्यादा ख्याल रखिए। (ऊपर बयान की गई तीनों मिसालों में मैं ने नाम तबदील कर दिए हैं वरना वह लोग डंडा ले कर मेरे पीछे दौड़ पड़ेंगे।)



ਸਫਰੇ ਹਜ ਮੌਂ ਪਢੀ ਜਾਨੇ ਵਾਲੀ ਮਸਨੂਜ ਦੁਆਏ

| नं. | दुआ पढ़ने का मौका | अरबी में दुआ | हिंदी में दुआ | तजुर्मा |
|-----|----------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| १. | घर से निकलते वक्त की दुआइसे बतन, हरम और हर जगह पढ़ें। | بِسْمِ اللَّهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ، وَلَا حُوْلَ، وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ. | बिस्मिल्लाहि तवक्कल-तु अल्लाही, वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह। | शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से, मेरा अल्लाह तआला पर ईमान और उसी पर भरोसा है। और गुनाहों से बचने की ताकत और नेक काम करने की कुव्वत अल्लाह ही की तरफ से है जो बड़ी शान वाला और अऱ्जमत वाला है। |
| २. | सवारी पर सवार होते वक्त की दुआ | سُبْحَانَ الَّذِي سَخَرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِبِينَ وَلَمَّا إِلَى رَبِّنَا لَمْ نَقْبِلُونَ | सुझानल्लजी सख्वरा लना हाजा वमा कुन्ना लहू मुकरेनीना व इन्ना इला रब्बना लमुन्कलिबून। | अल्लाह तआला की जात हर किस्म के ऐबों और नुक्स से पाक है जिस ने यह सवारी हमारे काबू में करदी। वरना हमारे पास इस को काबू में करने की ताकत नहीं थी। और हम एक दिन हमारे परवरदिगार की जानिब यकीन वापस लौटने वाले हैं। (सूरह ज़ख्रफ, आयत १३-१४) |
| ३. | जब जहाज रवाना होने लगे | بِسْمِ اللَّهِ مُجْرِهَا وَمُرْسِهَا إِنْ رَبِّي لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ | बिस्मिल्लाहि मुज्रेहा व मुर्सीहा इन्ना रब्बी ल-गफूररहीम | जहाजों का चलना और ठहरना अल्लाह ही के नाम की बरकत से है। बेशक मेरा रब बखशेने वाला और रहम करने वाला है। (सूरह हूद, आयत ४९) |
| ४. | उमरह करने की नीयत | الْهُمَّ إِنِّي أُرْبِدُ الْعُمَرَةَ فِي سُرُّهَا لَوْ تَقْبِلَهَا مِنِّي | अल्लाहुम्मा इन्नी उत्तुल उमरता फ-यसिस-रहा-ली व तकब्बल-हा मिन्नी। | मैं उमराह की नीयत करता हूं/करता हूं। पस इस को मेरे लिए आसान फरमा और मेरी जानिब से कुछूल फरमा ले। |
| ५. | तलबियाह | لَبِّيَكَ الْهُمَّ لَبِّيَكَ لَبِّيَكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبِّيَكَ إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ، لَا شَرِيكَ لَكَ | लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक। लब्बैक ला-शरीका लका लब्बैक। इन्ना हम्दा वन्हिन्अम-ता लका वल्मुत्क। | हाजिर हूं, मेरे मौला हाजिर हूं। हाजिर हूं आपका कोई शरीक नहीं हाजिर हूं। सारी हम्द व सताइश के आप ही सजावार हैं। और सारी नेभ्रूमतें आप ही की हैं। और सारी कायनात में हुक्मत भी आप ही की है। आप कोई शरीक नहीं। |
| ६. | मकान शहर में दाखिल होते वक्त की दुआ | الْهُمَّ أَنْتَ رَبِّي وَأَنَا عَبْدُكَ، جَئْتُ الْأَوْذْيَ فَرُضَكَ وَأَطْلَبُ رَحْمَتَكَ وَالْتِمْسَ رَضَاكَ مُتَبَعًا لِّأَمْرِكَ رَاضِيًّا بِبَقَائِكَ | अल्लाहुम्मा अन्ता रब्बी व अना अब्दुक। जे अत्तुल उअद्दी फर्जका व अतलबु रह-म-त-का वल तमिसु रेजिका मुत्तवि अल लि-अप्रिक, राजियम बिवकाइक। | या अल्लाह आप मेरे रब हैं और मैं आपका बन्दा हूं। आपका फर्ज “हज्जे बैतुल्लाह” अदा करने आया हूं। और आपकी रहमत के दरवाजे खोल दीजिए और मैं आपकी हमेशा रहने वाली जात के पास आपके हुक्म की इत्तेबा करते हुए आपकी रजामन्दी तलाश करने आया हूं। आप मुझ से राजी होकर अपनी रजा का एलान कर दीजिए। |
| ७. | मस्जिदे हरम और किसी भी मस्जिद में दाखिल होते वक्त की दुआ | بِسْمِ اللَّهِ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ الْهُمَّ افْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ. | बिस्मिल्लाहि वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिल्लाह। अल्लाहुम्म तह-ली अब्बाबा रह-म-तिक। | अल्लाह का नाम ले कर दाखिल होता हूं और और रसूल अल्लाह (स.) पर दस्त भेजता हूं। मेरे रब मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाजे खोल दीजिए। |
| ८. | खाना-ए-काबा पर पहली नज़र पढ़े तो यह दुआ पढ़ें। | اللَّهُ أَكْبَرُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ | अल्लाहु अक्बर। ला इलाहा इल्लाह। | अल्लाह सब से बड़ा है। नहीं है कोई मअबूद सिवाय अल्लाह के। |

| नं. | दुआ पढ़ने का मौका | अरबी में दुआ | हिंदी में दुआ | तर्जुमा |
|-----|-------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| | दुआ के बजाए आप तकबीरे तशीक भी पढ़ सकते हैं। | اللَّهُ أَكْبَرُ طَالِلَهُ أَكْبَرُ طَالِلَهُ إِلَالَهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ طَالِلَهُ أَكْبَرُ طَوْلَلَهُ الْحَمْدُ. | अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर। ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर। अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्द। | अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह सब से बड़ा है। नहीं है कोई मध्यबूद्ध सिवाय अल्लाह को। और अल्लाह सब से बड़ा है, अल्लाह सब से बड़ा है। और तमाम तारीफें सिर्फ अल्लाह के लिए हैं। |
| ६. | तवाफ की नीयत | الْهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ طَوَافَ بِيَتِكَ الْحَرَامَ، سَبْعَةَ أَشْوَاطٍ لِلَّهِ تَعَالَى ، فَيَسِّرْهُ لِي، وَتَقْبِلْهُ مِنِّي. | अल्लाहुम्मा उरीदु तवाफा बैतिकल हरामा। सब्बता अश्वतिल लिल्लाहि तआला। फ-यसिसहु ली व तकब्बल-हु मिन्नी। | ऐ अल्लाह! मैं आपके इस हुरमत वाल घर का तवाफ आपकी रजा और खुशनदी के लिए कर रहा हूँ, आप इस को मेरे लिए आसान फरमा दें और मेरी जानिब से कुबूल फरमा लें। |
| १०. | तवाफ के चक्कर शुरू करते वक्त की दुआ या तकबीर | بِسْمِ اللَّهِ، اللَّهُ أَكْبَرُ طَوْلَلَهُ الْحَمْدُ | बिस्मिल्लाही अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्द। | शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से। अल्लाह सब से बड़ा है और सब तारीफें अल्लाह के लिए हैं। |
| ११. | तवाफ करते वक्त पढ़ने की आसान तस्वीह (तीसरा कल्पा) | سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ، وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ. | सुब्हानल्लाही वल हम्दु लिल्लाही। व ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर। वला हैला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम। | पाक है अल्लाह की जात। सारी तारीफों की मुस्तहिक जात अल्लाह तआला ही की है और अल्लाह के सिवा कोई मध्यबूद्ध नहीं और अल्लाह बड़ा है। और नेक काम करने की कुव्वत अल्लाह ही की तरफ से है जो बड़ी शान वाला और अऱ्जमत वाला है। |
| १२. | खँके यमानी और हज़े अस्वद के दरमियान पढ़ने की आसान दुआ | رَبَّنَا اتَّسَافَى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقَنَا عَذَابَ النَّارِ | रब्बना आतिना फिहन्या ह-स-न-तव व फिल आखिरति ह-स-न-तंव व किना अजाबन्नारं | ए हमारे रब हमें दुनिया में भी भालाई अता फरमा और आखिरत में भी और हम को दोऱ्यथ के अज़ाब से बचाले। (सूरह बकरह, आयत २०९) |
| १३. | मकामे इब्राहीम पर यह दुआ पढ़ें। | وَاتَّخِذُو مِنْ مَقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلِّي | वत्तखिजु मिम मकामे इब्राहीमा मुसल्ला। | तुम मकामे इब्राहीम के पास अपना मुसल्ला बनाओ। (सूरह बकरह: १२५) |
| १४. | ज़म ज़म का पानी पीते वक्त यह दुआ पढ़ें। | الْهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا، وَرِزْقًا وَاسِعًا وَ شَفَاءً مِنْ كُلِّ دَاءٍ | अल्लाहुम्मा इन्नी अस-अलुका इल्मन नाफिअव व रिक्न वासिअव व शिफाउम् मिन कुल्ली दा। | ऐ अल्लाह! मुझे नफा वाला इल्म दे, रिक्न में वुस्अत और फरारी दे और हर बीमारी से शिफा अता फरमा। |
| १५. | सफा और मरवाह पर सई के लिए जाते वक्त यह दुआ पढ़ें। | أَبْدِأْ بِمَا بَدَأَ اللَّهُ بِهِ، إِنَّ الصَّفَا ^١ وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ. | अब्द-उ बिमा बदाउल्लाहु बिहि। इन्स्सफा वल मर्वता मिन शआइरल्लाह। | इक्वेदा करता हूँ मैं उस से जिस से इक्वेदा की है अल्लाह तआला ने। यकीनन सफा और मरवाह अल्लाह तआला की निशानियों में से है। (सूरह बकरह, आयत १५८) |
| १६. | सई की नीयत | الْهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ السَّعْيَ بَيْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ سَبْعَةَ أَشْوَاطٍ لِوَجْهِكَ الْكَرِيمِ، فَيَسِّرْهُ لِي وَتَقْبِلْهُ مِنِّي | अल्लाहुम्मा उरीदुस स-अय्या बैनस्सफा वल मर्वता सब्बता अश्वतिल लि वज- हि -कल करीम। -यसिसहु ली व तकब्बल-हु मिन्नी। | ऐ अल्लाह! मैं सफा और मरवाह के दरमियान सात चक्करों से सई करना चाहता हूँ। महज़ तेरी जाते बुजुर्ग की रजा के लिए। पस मेरे लिए सई करना आसान फरमा और कुबूल फरमा। |

| नं. | दुआ पढ़ने का मौका | अरबी में दुआ | हिंदी में दुआ | तर्जुमा |
|-----|-----------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| १७. | सफा और मरवाह पर यह (चौथा कल्मा) पढ़ें, (और तीसरा कल्मा भी पढ़ें जो ऊपर ११ वाँ दुआ में बयान हुआ है।) | لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ، وَلَهُ الْحَمْدُ، يُحِبُّ وَيُمِيَّ بِيَدِهِ الْخَيْرُ. وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ. | ला इलाहा इलल्लाहु वह-दहू ला शरी- क-लहू। लहुल मुल्कु व-ल-हुल हम्दु युमीरी व युमीरु बि-यदिहिल खेरा। व हुवा अला कुल्लि शइ-इन करीरा। | नहीं है काई मध्यबूद मगर अल्लाह। वह एक है। उस का कोई शरीक नहीं। उसी की बादशाहत है, और सब तारीफ उसी के लिए है, वही ज़िदा रखता है और वही मौत देता है और वह हर चीज़ पर कादिर है। |
| १८. | सई के दौरान पढ़ने की दुआ | رَبِّ اغْفِرْ، وَارْحَمْ، أَنْتَ الْأَعْزَزُ الْأَكْرَمُ | रब्बिग फिर। वर-हम। अन्तल अ-अज्जुल अकरम | ए मेरे रब तू मुझे बख्श दे और रहम फरमा, तू ज़बरदस्त बुजुर्गी वाला है। |
| १९. | हज की नीयत | اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ الْحَجَّ فَيسِّرْهَا لِي وَتَقْبِلْهَا مِنِّي | अल्लाहुम्मा इन्नी उरीदुल हज्जा-फ-यसिसहा ली व तकब्ल-हा मिन्नी। | ए अल्लाह मैं हज की नीयत करता हूँ, इसे तू मेरे लिए आसान कर और कुबूल फरमा। |
| २०. | शैतान को कंकरी मारते वक्त पढ़ने वाली तकबीर | بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ لِلشَّيْطَانِ وَرِضَى لِلرَّحْمَانِ | बिस्मिल्लाही अल्लाहु अकबर। रग्मा लिशैतानी व रजियल लिरहमान। | मैं अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ। अल्लाह सब से बड़ा है। यह कंकरी शैतान को ज़लील करने और अल्लाह पाक को राजी करने के लिए मारता हूँ। |

पेज 67 का बक़िया....मदिना मुनव्वरा का सफर

की ज़गह निकल आएगी। दो ज़ानों पर ज़्यादा देर बैठना आसान नहीं है। इसलिए मैरें इन्कार किया और वह चले गए मगर इसके बाद बगैर किसी वजह के मुझे बहुत गुस्सा आया और दिल बार बार चाहता था कि मैं मस्जिद से निकल जाऊँ और कहीं दूर जाकर सुकून से नमाज़ पढ़ूँ।

एक अर्से बाद जब मैं उस वाकिआ को सोचता हूँ, तो मुझे एहसास होता है, कि नबी करीम (स.) के मेहमान को इन्कार करने पर मुझपर लानत हो रही थी और मैं खुद मस्जिद से निकाला जा रहा था। अल्लाह तआला मेरी उस गलती को माफ करें।

मस्जिदे हराम और मस्जिदे नबवी (स.) दोनों जगह मुझसे कुछ गलतियाँ हुईं और मुझे फौरन सज़ा का एहसास हुआ। इससे मैं इस नीरों पर पहुँचा कि इन दोनों मस्जिदों में हमें अपनी आसानी और आराम से ज़्यादा दुसरें नमाजियों की आसानी और आराम का ख्याल रखना ज़रूरी है। क्योंकि वह अल्लाह और उसके रसूल (स.) के मेहमान हैं और अगर हमने ऐसा नहीं किया, तो हम इस गुमान में रहेंगे कि उस मुकद्दस मुकाम पर हम ख़ूब सवाब कमा रहें हैं, जबकि हकीकत में हम पर लानत बरस रही होगी।

- नबी करीम (स.) के रोज़े मुबारक पर जब हाजिरी दे, तो इन्टिहाई अदब से हाजिरी दें। किसी तरह की बातचित से परहेज़ करें और दुसरों का ख्याल अपने आप से ज़्यादा रखें। क्योंकि वह सारे हाजी नबी करीम (स.) के मेहमान हैं।



i \$ 76। svks-gt dkI Qj fd। d\$ f, dj &

एक असोसीएशन है। लेकिन हो सकता है हाजियों की मुसलसल शिकायतें पहुँचनें पर हाजियों के मफाद के बारें में भी संजीदा हो जाएं।

Ministry of External Affairs (MEA) Govt. of India

Administrative officer/Under Secretary (Haj cell)

Akbar Bhavan, New Delhi.

E-mail: aohaj@mea.gov.in

Website: http://meaindia.nic.in

यह हिन्दुस्तानी हुक्मत का एक दफ्तर है। जहाँ सारे दूर ऑपरेटरज़ को अपने आप को रजिस्टर करवाना होता है।

Moassasa Mutawaffiy hujjaj (South Asia countries)

Second Ring Road, Al-Rusifa Makka Al Mukarammah

(Kingdom of Saudi Arabia) Tel: 5342144

Fax No. 009662-2-5342182

यह सऊदी हुक्मत का दफ्तर है जो जुनूबी एशिया से हज और हाजियों से जुड़े मामलात पर नज़र रखता है। इनकि नज़र दूर ऑपरेटरों पर भी होती है।

आपकी शिकायत का आखरी पत्ता पुलिस चौकी है। मगर वहाँ कदम रखने से पहले ज़रा अपनी आप का जायज़ा ले लें। क्योंकि यहाँ के कानून कुछ कुछ ज़ंगल से मिलते जुलते हैं। वहाँ जीत उसी की होगी जिसमें देर तक और दूर तक आने कि ताकत होगी। ▼▼▼▼▼

नबी करीम (स.) ने फरमाया: “अल्लाह तआला फरमाता है, कि ऐ औलादे आदम! तू मेरी इबादत के लिए अपने आप को फारिग कर ले, मैं तेरे सीने को गिना से भर दूंगा और मुश्किलात को आसान करूंगा, और अगर तूने मेरी इबादत से मूँह मोड़ा तो न मैं तेरे हाथों को मसरूफियत ये ख़ली करूंगा और न तेरे फिक्रों फांका को दूर करूंगा”।

(इन्हे माज़ा: हदीश नम्बर- ४९०७)

अ़रफ़ात में मांगने वाली दुआएँ

१) नबी करीम () ने फर्माया, “हज, अ़रफ़ात में ठहरने का नाम है।” (तिर्मिज़ी हदीष ८८६)

यानि हज जैसी अ़ज़ीम इबादत का म़ाज़ अ़रफ़ा के दिन की इबादत है। इस लिए अपने हज को हजे मबरुर बनाने के लिए उस दिन ख़ूब खुश व खुजु के साथ इबादत करें। नबी करीम () ने कई तस्वीहात और कल्पों की ख़ास फ़ज़ीलत बताई है। इस मुबारक दिन इन मस्नून तस्वीहात और कल्पात का खुसूसी विर्द करें। कुछ मस्नून तस्वीहात और कल्पात मुन्दर्जा ज़ेल हैं:

२) एहराम की हालत में लब्बैक (तल्बिया) पढ़ना अल्लाह को बहुत पर्संद है। इस लिए अ़रफ़ा के दिन इस के विर्द का ख़ास एहतिमाम करें।

३) नबी करीम (स.) ने फर्माया, “कसम है उस पाक ज़ात की जिसके कब्जे में मेरी जान है, जब किसी ऊँची जगह पर कोई शश्वत लब्बैक या तकबीर कहता है तो उस के सामने का सारा हिस्सा ज़मीनके के ख़त्म होने तक लब्बैक या तकबीर कहने लगता है।” इसलिए अ़रफ़ा के दिन तकबीर भी ख़ूब पढ़ें।

४) नबी करीम (स.) से रिवायत है कि आप (स.) ने फर्माया:

दुआओं में सब से बेहतर यौमे अ़रफ़ा की दुआ है और मैं ने और मुझ से पहले अंबिया ने इस रोज़ जो अफ़ज़ल तरीन कल्पात कहे वह ये हैं:
“لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحُمْدُ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

“ला इलाहा इल्लल्लाहु वह-दहू ला॒ शरी॑ क-लह॑। लहुल मुल्का॑ व लहुल हम्दा॑ व हुवा॑ अला॒ कुल्ली॑ श़य्�क्न कदीरा॑”

तर्जुमा: कोई मअ़बूद नहीं सिवाय अल्लाह तभ़ाला के, वह तन्हा है, उसका कर्के शरीक नहीं, उसी के लिए सारी बादशाही है, उसी के लिए सारी हम्द है, वह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है।

५) एक सही हदीष में है कि नबी करीम (स.) ने फर्माया: अल्लाह के हां महबूब-तरीन कल्पात चार हैं:

سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرٌ

“सुब्हानल्लाह वल्ह-म्दु लिल्लाह व ला॒ इलाहा॑ इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर”

तर्जुमा: पाक है अल्लाह तभ़ाला, सारी तअरीफों की मुस्तकब ज़ात अल्लाह तभ़ाला ही की है, और अल्लाह जभ़ाला के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और अल्लाह बड़ा है।

६) नबी करीम (स.) ने फर्माया: दो कल्पात ऐसे हैं जो ज़बान पर बहुत हल्के हैं, मीज़ाने अ़ज़माल में बहुत भारी हैं और रहमान को बहुत महबूब हैं। (बुखारी)

سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ، سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ

“सुब्हानल्लाह व बिहम्दिहि, सुब्हानल्लाहिल अ़ज़ीम”

तर्जुमा: पाक है अल्लाह तभ़ाला की ज़ात, तअरीफ उसी के लिए है, पाक अल्लाह तभ़ाला निहायत अ़ज़मत वाला।

७) हुजूर (स.) ने अ़रफ़ात के मैदान में अपनी उम्मत को नहीं भुलाया है और रो रो कर मग़रिब तक अपनी उम्मत के लिए दुआएं मांगी हैं। अपने महबूब और करीम आका (स.) पर हम अगर अ़रफ़ात में दुरुद नहीं भेजते तो यह बड़ी अहसान फरामोशी होगी।

इसलिए अ़रफ़ा के दिन ख़ूब दुरुद शरीफ पढ़ें।

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَّعَلَىٰ آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَعَلَىٰ آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ، مَّجِيدٌ.

اللَّهُمَّ بارِكْ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَّعَلَىٰ آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَعَلَىٰ آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ، مَّجِيدٌ.

“अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिंव व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैता अला इब्राहीम, व अला आलि इब्राहीम म इन्न् क हमीदुम् मजीद,

“अल्लाहुम्मा बारिक अला मुहम्मदिंव व-अला आलि मुहम्मदिन, कमा बारकू त, अला इब्राहीम, व-अला आलि इब्राहीम म इन्न् क हमीदुम् मजीद”

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! रहमत भेज मुहम्मद() पर और मुहम्मद की आल पर, जिस तरह तू! ने रहमत भेजी इब्राहीम पर और इब्राहीम की आल पर, बेशक तू! तअरीफ के लायक बुजुर्गी वाला है।

ऐ अल्लाह! बरकत नाज़िल फरमा मुहम्मद() पर और मुहम्मद की आल पर, जिस तरह तू! ने बरकत भेजी इब्राहीम पर और इब्राहीम की आल पर, बेशक तू! तअरीफ के लायक बुजुर्गी वाला है।

८) नबी करीम (स.) ने फर्माया: “कुरान की तिलावत बेहतरीन इबादत है। इस लिए दुरुद शरीफ और तस्वीह पढ़ने के बाद जो बक्त मिले उस में कुरान शरीफ की तिलावत करें। खुसूसी तौरपर मुन्दर्जा ज़ेल सूरतें पढ़ें; सूरह यासीन, सूरह रहमान, सूरह मुल्क, सूरह तौबा, सूरह वाक्या, सूरह फतेह।

हज की तअ्लीम कहाँ से हासिल करें?

• मुअल्लिमुल हुज्जाज़: (मौलाना अलहाज कारी सईद अहमद साहब)

अगर आप गहराई से हज और उसके मसाइल का मुतालआ करना चाहते हैं तो किताब “मुअल्लिमुल हुज्जाज़” पढ़ें। यह एक जामे और बहतरीन किताब है, मगर चूंकि इस किताब में अक्सर मसाइल का गहराई और हर पहलु से जिक्र है इसलिए अवाम के बदले उलमा ए कराम इसे ज्यादा पसंद करते हैं। अगर आप किताबों के शौकिन हैं, तो इसे आप एक डिक्षणेरी की तरह अपने पास रखें और हज के दौरान अगर किसी मसअत से का हल जानना हो तो उसे खोलकर पढ़ ले। उसकी कीमत सिर्फ ७०/- रुपये है और मिलने का पता है:

हनफी कुतुब खाना, नंबर २३, लालबाग, फोर्ट रोड, मस्जिद (मसावली) बैंगलोर-४.

• मसाइले हज और उमराह (तालीफ़ : मुहम्मद मोईनुद्दीन अहमद)

अगर आप कम वक्त में हज़ के खास मसाइल के बारे में मालूमात हासिल करना चाहते हैं तो यह किताब जरूर पढ़ें। एक तरह से यह मुअल्लिमुल हुज्जाज़ के खुलासे की तरह है। कीमत १५/- रुपये है। मिलने का पता:

कलासीक आर्ट्स, ३४४ गली गढ़वाल, मटीया महल, जामा मस्जिद, देहली नं-६. Off:- 011-23281481, 011-023528638

• हज और उमराह फलाही के हमराह :

(मुफ्ती अहमद देवलवी साहब)

यह हज के मौजू पर एक बेहतरीन किताब है। लिखने का अंदाज बेहतरीन है। किताब के आखरी सफरे तक आप की दिलचस्पी बनी रहेगी। इस किताब में हज की मुकम्मल मालूमात आसान लफ़ज़ों में व्यान कि गई है। मगर मसला यह है कि यह किताब बाजार में दुकानों पर दस्तियाब नहीं है। मुफ्ती अहमद देवलवी साहब उसे मुफ्त तकसीम करते हैं। मगर चूंकि किताब की छपाई किंमत ५०/- रुपये तक होगी इसलिए मुफ्ती साहब उसे महंदुद तादाद में छापते हैं। उनकी ईजाज़त से हमने इस किताब को इंटरनेट पर डाल दिया है। अगर अल्लाह तआला ने आपको माली तौर पर खुशहाल किया है तो इस किताब को छापने और बांटने में मुफ्ती साहब की मदद करें और खुद भी फायदा उठाएं, और दुसरों की भी मदद करें या फिर उसे इंटरनेट पर पढ़ ले। आप उसे मंदरजाजेल वेब साईट से मुफ्त डाउन-लोड कर सकते हैं।

www.freeducation.co.in, www.tanveerpublication.com.

किताब मिलने का पता:-

मुफ्ती अहमद देवलवी, जामिया उल्मुल कुरआन, जम्बूसर, तालुका भरुच,
(गुजरात)-३६२९५०

Phone:- 02644-220786. Fax: 02644-222677.
www.jamiahambusar.com, Email: jamia@satyam.net.in

• सूए-हरम:

हज के उनवान पर यह एक बैहतरीन किताब है। इसमें मालूमात बहोत है। बयान का अंदाज बेहतरीन है। तसरीरे बेहतरीन और बेशुमार हैं। और छपाई भी लाजवाब है। ५६८ सफ़ाहत पर मुशतमिल यह किताब आपके लिए बहोत कार-आमद साहब और अताउर रहमान साहब, अताउर रहमान साहब ने ही उसे अपने इदारे अर्रहमान प्रिंटर्स कोलकत्ता से शाए किया है। इस खुबसूरत किताब कि किमत २००/- रुपया है। किताब मिलने का पता:

अर्रहमान प्रिंटर्स, ९८ जकरया इस्टेट, ग्राउंड फ्लोर,
कोलकत्ता- ७०००७३. Phone :- 2223-4079
Email :- alrahmanpnp@gmail.com

• हज कमेटी की तरफ से भी हुज्जाजे कराम की तरबियत का इतेज़ाम किया जाता है, वहाँ से मालूमात हासिल करें।

● इंटरनेट पर और यु-ट्युब पर (You tube) पर बहोत सारी वेबसाईट हैं जहाँ से हज के बारे में मालूमात हासिल हो सकती है।



हमारी किताबे जो इंटरनेट पर मौजूद हैं और जिन्हे आप मुफ्त डाउनलोड कर सकते हैं उनके Links अगले सफ़ाहा पर दर्ज हैं।

हज से मुतअल्लिक और दीगर कई दीनी किताबें इंटरनेट पर मुफ्त पढ़ने और डाउनलोड करने के लिए लिंक्स (Links) दर्ज-जैल हैं।

१. सफरे हज की मुश्किलात और उनका मुम्किन हल (तालीफ़: क्यू.एस.खान): इस किताब का तर्जुमा पांच ज़बानों में हुआ है।

<http://www.scribd.com/doc/8966044/Hajj-Guide-Book-English-PDF>

<http://www.scribd.com/doc/7949973/Hajj-Guide-Book-Urdu>

<http://www.scribd.com/doc/15223840/Hajj-Guide-Book-Hindi>

<http://www.scribd.com/doc/8965793/Hajj-Guide-Book-Gujarati>

<http://www.scribd.com/doc/8997495/Hajj-Guide-Book-Bengali>

२. हज और उम्राह, फलाही के हमराह (उर्दू और हिंदी ज़बानों में)

<http://www.scribd.com/doc/47877259/Haj-Wa-Umrah-Falahi-Ke-Hamrah-Urdu>

<http://www.scribd.com/doc/51027154/Haj-Aur-Umrah-Falahi-Ke-Hamrah-Hindi>

३. मसाइले हज व उम्राह, तालीफ़: मुहम्मद मुईनुद्दीन अहमद (उर्दू और हिंदी ज़बानों में)

<http://www.scribd.com/doc/51027667/Masaile-Haj-Wa-Umrah-Urdu>

<http://www.scribd.com/doc/51035090/Masaile-Haj-Wa-Umrah-Hindi>

४. दीगर किताबें (तालीफ़: क्यू.एस.खान):

<http://www.scribd.com/doc/37987436/Law-of-Success-for-both-the-Worlds-English>

<http://www.scribd.com/doc/18753559/Teachings-of-Vedas-and-Quran>

<http://www.scribd.com/doc/48562793/Pavitra-Ved-Aur-Islam-Dharam>

<http://www.scribd.com/doc/37932859/How-to-prosper-Islamic-Way-Vol-1>

<http://www.scribd.com/doc/46098862/How-to-Prosper-Islamic-Way-Vol-2>

मुस्तिनिफ क्यू. एस. खान की चन्द अहम किताबों का तात्परफ

• पवित्र वेद और इस्लाम धर्म (हिंदी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती)

यहूदी अपने आप को सबसे बेहतर समझते हैं, और वह नहीं चाहते हैं कि कोई गैर यहूदी, यहूदी मज़हब को इखतियार करे। इसाइ अपने मज़हब को सबसे ज्यादा सही मानते हैं, और दिलो-जान से अपने मज़हब की इशाअत की कोशिश करते रहते हैं। और इन की इसी कोशिश का नतीजा है कि आज दुन्या में ईसाइ सब से ज्यादा हैं।

हिंदू भाई फिरतरन ज़हीन है। मगर इन की रुहें व्यासी हैं। वह हक की तलाश में हैं। मगर हक तक पहुँचना उनके लिए मुश्किल है। इस सूरते हाल को सामने रखते हुए यह किताब लिखी गई है। इस्लाम से दूरी या अज्ञवियत कम करने के लिए इस किताब में पहले कुरआन और वेदों का तआरुफ कराया गया है, फिर ऐसे इस्लामी मौजूदात और हकाइक बयान किए गए हैं जो हिंदु मज़हब की किताबों में भी हैं। जैसे खाना-ए-काबा का जिक्र, हज़रत इब्राहीम (अ.स.) की कुरबानी का जिक्र, हज़रत नुह (अ.स.) के तूफान का जिक्र, नबी करीम (स.) की आमद के मुतालिक पेशनगोइयाँ वरैरह। फिर बहोत आसान अल्फाज़ में इस्लाम की तालिमात को पेश किया गया है।

इस किताब को पढ़कर कई लोग इस्लाम कुबूल कर चुके हैं। इस किताब की कीमत सिर्फ २५/- रुपये है। इस किताब के मुस्तिनिफ क्यू. एस. खान ने इस किताब और अपनी दीगर किसी भी किताब का कोई कॉपी-राइट नहीं रखा है। इस लिए खरीद कर या छपवा कर इस किताब को ज्यादा से ज्यादा गैर-मुस्लिम भाईयों को तक्सीम करने की कोशिश करें, ताकी दअवत का फरीज़ा का कुछ तो हक अदा हो सके।

• डिज़ाइन एंड मेन्युफॉर्मिंग ऑफ हाईड्रोलिक प्रेसेस

(Design & Manufacturing of Hydraulic Presses)

इन दिनों ज्यादा तर मशीनें हाईड्रोलिक सिस्टम पर चलती हैं। हिंदुस्तान में अभी इंडस्ट्रीयल हाईड्रोलिक टेक्नोलॉजी गैर-मुस्लिम या गैर-मध्यरक्षक है। उसकी वजह यह है कि मुख्य के इंजिनियरिंग कॉलेजों में इंडस्ट्रीयल हाईड्रोलिक्स पर कोई खास कोर्सेस मौजुद नहीं हैं। इस किताब के मुस्तिनिफ क्यू.एस. खान १६८७ से हाईड्रोलिक मशीनों के डिज़ाइन और मेन्युफॉर्मिंग के मैदान में हैं। इस मैदान में उन्हें २४ साल का तजुर्बा हासिल है। हाईड्रोलिक्स के मौजूदू पर अपने तर्जुबात की रौशनी में उहोंने कई किताबें लिखी हैं। यह किताबें इंजिनियर्स और इंजिनियरिंग के तलबा दोनों के लिए मफीद हैं।

• लॉ ऑफ सबसेस फॉर बोथ दी वर्ल्ड्स

(Law of Success for Both the World)

(यह किताब मराठी ज़बान में छप चुकी हैं और उर्दु, हिंदी में तर्जुमे का काम जारी है।)

जैसे इन्सान जिस्म और रूह से बना है, अगर रूह निकल जाए तो जिस्म किरी काम का नहीं रहता इसी तरह खुशहाली अल्लाह की रहमत के साथ दौलत का नाम है, अगर अल्लाह की रहमत हटा ली जाए तो वही दौलत

इम्तिहान और मुसिबत का सबब बनती है। इस किताब में कामयाबी अल्लाह की रहमत के साथ हासिल करने का तरीका बताया गया है। और साथ में गैर मुस्लिमोंको इस्लाम कि दअवत भी दी गई है।

नबी करीम (स.अ.) ने हुज्जतुल विदा के मौके पर फर्माया था, जो हाजिर है वह मेरी बात जो नहीं हाजिर है उन तक पहुँचा दें, चाहे वह एक आयत ही क्वों न हो। जिस मुसलमान तक नबी करीम (स.अ.) की तालीम पहुँची हैं उसपर यह फर्ज़ बनता है कि आप (स.अ.) कि तालीम को उनतक पहुँचाएं जिन तक यह इस्लाम कि तालीम नहीं पहुँची है। कयामत के दिन गैर मुस्लिम खुदा के दरबार में हमारा दामन पकड़ेंगे कि “ऐ अल्लाह, यह सब जानते थे उहोंने वह दअवत हमें नहीं दी इसलिए हमारे साथ जहन्नम में इनको भी दाखिल करा।” तो आप उसका क्या जवाब देंगे, और यह दावा वह लोग करेंगे जिनसे आपका रोज साबेका पड़ता है। गैर मुस्लिम से आपने दोस्ती की, कारोबार किया, रोजाना घंटों बातें करते हैं लेकिन इस्लाम कि दअवत आप कभी न दे सके। तो कयामत में आप अपनी सफाई कैसे पेश करेंगे।

जाती तौर से इस्लाम कि दअवत गैर मुस्लिम दोस्तों को न देने कि कई वजूहात हैं, जैसे कि:

१. हम खुद सच्चे पक्के मुसलमान नहीं हैं। जब हम खुद इस्लाम पर पुरी तरह अमल नहीं करते तो दुसरों को किस मुंह से दअवत दें।

२. हमें इस्लाम का पुरा इल्म नहीं हैं और न हम यह जानते हैं कि इस्लाम की दअवत कैसे दी जाती है।

३. मुसलमानों का इमेज बहोत खराब है, गैर मुस्लिम इस्लाम को मुसलमानों की ज़िन्दगी से जोड़ता है यानी जब मुसलमान इतने गए गुजरे हैं तो उनका मज़हब भी ऐसा ही होगा। हम मुसलमानों को इस बात का इल्म है और अहसास कमतरी भी है, इसलिए हम ना तो खुद को सच्चा पक्का मुसलमान साबित करने की कोशिश करते हैं और न खुलकर इस्लाम कि दावत देते हैं।

इसी मसले को हल करने के लिए यह किताब लिखी गई है। मुस्तिनिफ ने युरोप और अमरीका की सबसे बेहतरिन और मशहुर (Best Seller) बिज़नेस मैनेजमेंट की किताबों का मुतालआ किया और उनका निचोड इस किताब में ३०० सफहात में जमा कर दिया और आधिकर के ९०० सफहात में यह बात समझाने की गई है कि ईमानदारी के बगैर कामयाबी मुक्किन नहीं है और ईमानदारी के सबक कि आड़ में दुनिया के पांच मशहुर मज़ाहिब की किताबों से इस बात को साबित करने की कोशिश की है कि “खुदा एक है और नबी करीम (स.अ.) आखरी पैगम्बर हैं।”

जैसे शहद के साथ कड़वी दवा दी जाती है वैसे ही इस किताब में बिज़नेस मैनेजमेंट की तालीम के साथ इस्लाम कि बुनियादी तालिम दी गई है।

यह किताब खास तौर से गैर मुस्लिमों को नज़र में रखकर लिखी गई है इसलिए बायबल और वेद के श्लोक का अवसर जिक्र है और इस बात की कोशिश की गई है कि इस्लाम की दावत का पैगाम इस अंदाज में पहुँचे के गैर मुस्लिम को पता भी नहीं चले की उसको इस्लाम कि तरफ बुलाया जा रहा है।

अगर आप कयामत में गैर मुस्लिम दोस्तों से अपना दामन छुड़ाना चाहते हैं तो इस किताब को बिज़नेस मैनेजमेंट की बेहतरीन किताब कहकर तोहफा दे दीजिए और इत्मिनान का सांस लिजिए। (इस किताब कि कीमत ९००/-

रूपया है।)

• क्या हर माह चांद देखना ज़रूरी है? (उद्धु, अंग्रेजी, अरबी)

जिस तरह सूरज के तुतू और गुरुब का एक मुकरर टाइम टेबल है उसी तरह चांद के तुतू और गुरुब का भी एक मुकरराह टाइम टेबल है। नए चांद के दिन चांद सारा दिन आसमान में सुरज के कुछ पिछे चलता रहता है और सूरज के गुरुब होने के कुछ वक्फे बाद वह भी गुरुब हो जाता है। मगर यूंकि उफक पर सूरज गुरुब होने के बाद कुछ रौशनी कम हो जाती है इसलिए चांद गुरुब होने के पहले नज़र आता है।

अगर हम अपने जाती मुशाहिदे से इस बात का पता लगा लें कि चांद सूरज से कितने वक्फे बाद गुरुब होगा तो गुरुब होने से पहले नज़र आएगा, तो चांद देखने का एक बड़ा मसला हल हो सकता है। यूंकि चांद और सूरज अपने तुतू और गुरुब के वक्फ से ना एक सेकंड पहले गुरुब होते हैं ना एक सेकंड बाद में। यानी इन का टाइम टेबल एक दम परफेक्ट है। इस तरह हम सिर्फ टाइम टेबल से ही कह सकते हैं कि किस तारीख को चांद ज़रूर नज़र आएगा?

इसी नज़रया और फलसफा को क्यू.एस.खान ने अपनी इस किताब में वाज़ेह किया है। (किताब की कीमत २५/-रु. है।)

दौलत मन्द कैसे बनें?

इन्सान ३ साल की उम्र से ७० साल की उम्र तक पढ़ाइ, मुलाज़मत और कारोबार की शक्ति में एक बड़ी कामयाबी के लिए जिद्दोजहद करता रहता है। मगर दुन्या में सिर्फ ३ से ५ फीसद लोग ही कामयाब माने जाते हैं और बकिया नाकाम। इतनी ज़्यादा तभ्रुदाद में लोग नाकाम क्यूं होते हैं?

क्यूंकि उन्हें कामयाबी कैसे हासिल की जाए इस का इत्म नहीं होता।

“दौलत मन्द कैसे बनें?” इस किताब में इस मौजूद़ पर तफसील से गुप्तगू की गई है, और सिर्फ कुरआन व हदीस की रौशनी में मालूमात दी गई है।

उन तमाम लोगों को इस किताब को पढ़ना बहोत ज़रूरी है जो माली तौर से परेशान हैं और जिन्दी में तरक्की करना चाहते हैं। बिल्खुसुस मुस्लिम नौजवानों के लिए यह किताब बहोत मुफीद है। अल-कलम पब्लिकेशन और फरीद बुक डिपो के किसी भी डीलर से आप यह किताब हासिल कर सकते हैं। (कीमत: ४०/- रु)

आम तौर से उद्द मेडियम के स्कूलों का मेऽयार बुलन्द नहीं होता है। इसलिए खुश्हाल लोग अपने बच्चों को इग्लिश मेडियम से ही पढ़ाने की कोशिश करते हैं। ऐसे बच्चों की तअ्याद रोज़ बरोज़ बढ़ती जा रही है। यह बच्चे उद्द अच्छी तरह समझ तो लेते हैं मगर पढ़ नहीं पाते। यीनी इत्म का सारा ख़ज़ाना अरबी, फारसी और उद्द में ही है, जिस से यह बच्चे कभी फायदा नहीं उठा सकेंगे। यह कौम का एक अल्मिया है।

क्यू.एस. खान ने ऐसे बच्चों के लिए रामन उद्द में कुरआने करीम छपवाया है जिस में अल्फाज़ उद्द के हैं लिखावट अंग्रेजी जैसे ‘आप’ को Aap लिखा गया है। इस कुरआन में तरजुमा मौलाना जूना गढ़ी साहब का है और तफसीर मौलाना फतेह मुहम्मद जालन्थरी साहब की है। आप एक ऐसा कुरआन खरीद कर करीब की मस्जिद में रख दें ताकि लोगों को इस बात का इत्म हो कि इस तरह का कुरआन करीम मौजूद है जिस से इग्लिश मेडियम के बच्चे फायदा उठा सकते हैं। अगर आप किसी के इत्म हासिल करने का ज़रिया बनेंगे तो जब तक वह लोग दीन पर अमल करेंगे तो आप को सवाब भी मिलता रहेगा। इस एक कुरआन की छपाई लागत ११०/- है।



आखिरी लफ़ज़

- इस किताब का मक्सद आप को हज के सफर में पेश आने वाली मुश्किलात से आगाह करना है जो अल्लम्दु लिल्लाह पूरा हुआ।
- आखिर में अपना एक और मुशाहिदा आप को बताना चाहता हूँ। वह यह है कि अल्लाह तभाला के करम और फ़ज़ल से ही हज की तौफीक होती है और अल्लाह तभाला ही अपने करम और फ़ज़ल से सारे अरकान पूरे कराता है।
- हम अपनी तरफ से हज की पूरी तैयारी करें मगर हज के सारे अरकान पूरे होने और हज मकबूल होने के लिए खुदा की ज़ात पर ही भरोसा रखें और उसी से हर नमाज़ में हजे मबरूर के लिए दुआ करें।
- दुनिया के लाखों दौलतमंद बगैर हज के इंतकाल कर गये क्योंकि उनको हज की तौफीक ना मिली और हर साल लाखों बूढ़े और मज़ूर लोग हज के सारे अरकान पूरे कर के फ़रीज़-ए- हज बखूबी अदा करते हैं यह अल्लाह तभाला का करम और उसकी दी हुई तौफीक है। इसलिए हज की पूरी तैयारी ज़रूर करें मगर भरोसा सिर्फ उसकी ज़ात पर रखें और उसी से मदद मांगें।
- हज अजीम तरीन इबादत है। जिसे करने के बाद अल्लाह तभाला बंदे के ना सिर्फ सारे गुनाह मुआफ कर देता है बल्कि उस की दुआ भी कुबूल करता है। इस लिए अपनी दुआओं में अपने साथ अपने अहल-व-अ़्याल और उम्मते मुसल्मा को मत भूलिए। अगर इस गुनाहगार कमस्ल्दीन खान को भी याद रखेंगे तो आप की बड़ी महेरबानी होगी।
- मैंने अब तक हज और उम्रह के अरकान के बारे में जो किताबें पढ़ीं उन में “हज और उम्रह फ़लाही के हमराह” किताब सब से ज़्यादा मुफीद और आसान मञ्जूल हुई। हज से पहले आप भी उस किताब को एक बार ज़रूर पढ़ें (इस किताब और दीगर किताबों की तफसीलात सफेह नम्बर 2, पर दी गई हैं, आप उसे वेब साइट से मुफ्त डाउन लोड कर सकते हैं। डाउन लोड टिंक्स किताब के आखिरी में दी गयी हैं)
- हरम शरीफ में हरम के एहतराम का पूरा ख्याल रखें। सारी नमाजें हरम में जमाझत से पढ़ें। एक हवीष शरीफ के मुताबिक हज और उम्रह से रिक्क में बरकत होती है। उसे मैंने भी महसूस किया है और हज के बाद दोस्तों को भी बहुत तरकी करते देखा है उसी के साथ जो हरम का एहतराम नहीं करते (हरम में झगड़ा करते हैं) और हरम में जमाझत से नमाज़ नहीं पढ़ते या नमाजें क़ज़ा करते हैं, मैंने उन्हें हज के बाद बर्बाद और शर्दीद बीमार भी होते देखा है। (इस तरह बर्बाद होने वालों में मेरे दो दोस्त शामिल हैं) इस लिए हरम में सिर्फ नेकी करने की कोशिश करें और गूनाहों से पूरी तरह बचने की कोशिश करें।
- आप का हज का सफर ३५ से ४० दिन का होगा। हज के सफर से वापसी पर आप महसूस करेंगे कि आप की गैर हाज़री से ना तो आप का कारोबार ही बर्बाद हो गया और ना ही आप का ख़नदान तितर बितर हो गया बल्कि अल्लाह तभाला ने उन्हें ऐसे ही बरकरार रखा है जैसे आप उन्हें छोड़कर गये थे। हमारा यह सिर्फ गुमान है कि घर और कारोबार को हमारे सिवा कोई और नहीं चला सकता। हम तो सिर्फ ज़रिया या वजह हैं, उन्हें चलाने वाली ज़ात तो खुदा की है और वह किसी ज़रिये और वजह के बगैर भी उन्हें चला सकता है। इसलिए अपने आप को ज़्यादा अहम (Indispensable) ना समझें और कुछ कुछ वक़फ़ा के लिए घर और कारोबार से अल्लाह तभाला के लिए वक़त निकाला करें। एक हवीष कुदसी का मफ़ूह है कि:
- नबी करीम (स.) ने फरमाया: अल्लाह तभाला फरमाता है, “ऐ औलादे आदम! तू मेरी इबादत के लिए अपने को फ़ारिग़कर ले, मैं तेरे सीने को गिना से भर दूंगा और मुश्किलात को आसान कर दूंगा और अगर तूने मेरी इबादत से मुंह मोड़ा तो ना मैं तेरे हाथों को मसरूफियत से ख़ाली करूंगा और ना तेरे फ़िकरों फ़ाका को दूर करूंगा।” (इब्ने माजा, हवीष नम्बर: ४९०७)
- हम और आप अगर एक इज़्जतदार और खुशहाल ज़िन्दगी चाहते हैं तो हमें अल्लाह तभाला की इबादत से कभी ग़ाफ़िل नहीं होना चाहिए।
- सारी तअ़िरीकें सिर्फ अल्लाह तभाला के लिए हैं और नबी करीम (स.) और सहाबा किराम (रज़ि.) और नबी करीम (स.) के अहल व अ़्याल और सारी उम्मत पर अल्लाह तभाला बहुत बहुत अपनी रहमत और बरकतें नाज़िल फरमाये। व मा अलैना इल्लल्लाहु अल्लुबीन